जैनबाल गुटका दूसराभाग

शुद्ध मंगलाचरण ।

ॐनमः सिद्धेभ्यः ।

ओंकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यंध्यायन्ति योगिनः कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमोनमः । अविरलशब्दघनौघप्रक्षालित सकल भूतल कलङ्का मुनिभिरुपासित तीर्था सरस्वती हरतुनोदुरितम् । अज्ञानतिमिरान्धानां ज्ञानाञ्जनशलाकया चक्षुरुन्मीलितंयेन तस्मै श्री गुरवे नमः । परमगुरुभ्यो नमः परंपराचार्य्य गुरुभ्योनमः । सकलकलुषविध्वंसकं श्रेयसांप्रवर्द्धकं धर्म्मसम्बन्धकं भव्यजीवप्रतिबोधकारकमिदंशास्त्रं श्रीअमुकनामधेयं अस्यमूलग्रन्थकर्त्तारः श्रीसर्व्वज्ञदेवाः तदुत्तरग्रंथकर्त्तारः श्रीगणधरदेवाः प्रतिगणधरदेवा स्तेषांवचोनुसारमासाद्यकर्त्ता श्री अमुकाचार्य्येण विरचितम् ॥

मंगलं भगवान्वीरो मंगलंगौतमोगणी । मंगलंकुन्दकुन्दाद्या जैनधर्म्मोस्तुमंगलम् । श्रोतारः सावधानतया श्रृण्वन्तु ।

नोट—इस मंगलाचरण के पहले शब्द (ओंकारं) में ओ, है ओं नहीं जो ओं पढ़ते हैं वह गलत है ॥

मंगलाचरण का अर्थ ।

अब हम बच्चों को मंगला चरण का मतलब समझाने के वास्ते इसका अर्थ लिखते हैं बिन्दु संयुक्त जो ओकार उस को योगी नित्य ध्यावते हैं वो कैसा है कामदं मनोवांछित वस्तु का देनेवाला च और मोक्षदं मोक्ष का देने वाला ऐसे ओंकार कोनमस्कार करता हूं ।

अविरल बहुत शब्दघनौघ शब्दरूपी मेघ के समूह करि प्रक्षालित धोये हैं सकल सम्पूर्ण भूतल संसार संबन्धी कलंका (पाप) जिसने मुनिभिः उपासिततीर्थामुनिभी जिस द्वादशाङ्ग वाणी को तीर्थ जानकर सेवते हैं ऐसी सरस्वती जिन वाणी नः हमारे दुरितं पाप को हरतु नाश करो—अज्ञान तिमिरांधानां अज्ञानरूपी अन्धेरे कर अन्धे हुये जीवों को ज्ञानाञ्जनशलाकया ज्ञानरूपी काजल की शलाई से येन जिसने चक्षुः नेत्र उन्मीलितं खोल दिये तस्मै उस गुरवे गुरु को नमः नमस्कार हो—परम गुरुभ्यः उत्कृष्ट गुरुओं के ताईं नमः नमस्कार हो—परम्पराचार्य गुरुभ्यः परंपरा से चले आये आचार्य गुरुओं को नमः नमस्कार हो सकलकलुषविध्वंसकं संपूर्ण कलंकों के नाश करने वाला श्रेयसां कल्याणों का प्रवर्द्धकं बढ़ाने वाला (देने वाला) धर्म संबन्धकं धर्म का सम्बन्ध रखने वाला भव्यजीवप्रतिबोधकारकं भव्यजीवों को सचेत करने वाला इदं यह शास्त्रं शास्त्र अमुकनामधेयम् (जो शास्त्र स्वाध्याय में हो) उस का नाम लेना चाहिये। अस्य इस शास्त्र के मूल ग्रंथकर्त्तारः मूल ग्रंथ के रचने वाले श्री सर्वज्ञदेवाः प्रथम तो सर्वज्ञ देव हैं तदुत्तरग्रंथ कर्त्तारः उन के पीछे ग्रंथों के गूंथने वाले श्री गणधर देवाः गणधर हैं प्रति गणधरदेवाः उन के पीछे मुख्य आचार्य हैं तेषां उन के वचोनुसारं वचनों का आशय आसाद्य लेकर कर्त्ता रचनेवाले (जो उस ग्रंथ का रचने वाला हो उन आचार्य का नाम लेना चाहिये) आचार्य ने विरचितं रचा ॥

भगवान् वीरः प्रथम तो महावीर स्वामी मंगलं मंगल के कर्त्ता हैं गौतमः गणी द्वितीय गौतम गणधर मंगलं मंगल के कर्त्ता हैं कुन्दकुन्दाद्याः तृतीय कुन्द कुन्द स्वामी को आदि लेकर सर्व आचार्य मंगलं मंगल के कर्त्ता हैं जैनधर्मः चतुर्थ जैनधर्म मङ्गलं मङ्गल कर्त्ता है श्रोतारः श्रोता जन सावधानतया ध्यान लगाकर शृण्वन्तु सुनो ॥

नोट—हे बालको जब तुम कोई शास्त्र पढ़ो पहिले यह मंगलाचरण पढ़कर फिर शास्त्र बांचना शुरू करो। इस में अमुक शास्त्र की जगह उस ग्रंथका नाम उच्चारण करो जो तुम बांचोगे। और अमुक आचार्य्य की जगह उस आचार्य का नाम लो जिस का बनाया हुवा वोह ग्रन्थ हो जो तुम पढ़ोगे हमने थोड़े संस्कृत के पाठी पंडित सभाओं में अनेक वार गलत मंगलाचरण पढ़ते देखेहैं इस वास्ते हमने यह परम शुद्ध मंगलाचरण का पाठ इस जैन बालगुटके दूसरे भाग के प्रारम्भ में लिख दिया है ताकि जैन पाठशालाओं में हरएक बालक यह शुद्ध पाठ याद कर लेवे ॥

जैनबालगुटका दूसरा भाग

प्रथम अध्याय।

इस प्रथम अध्याय में जैनमुनियों के आहार की विधि जो ३२ अंतराय ४६ दोषटार जैनमुनि आहार लेवें हैं, और श्रावक उनको किस विधि से आहार देवे और श्रावक जैनमुनियों की किस प्रकार वैयावृत्य करे, और जैनमुनि कैसी कैसी कठोर परीषह सहते हैं उनके गुणानुवाद के पद, बिनती आदि का वर्णन है।

मुनिराज के आहार की विधि।

अब हम मुनिराज को आहार देने की विधि लिखते हैं, हमने कई वार दूसरे जैनियों के घर जैनमुनि को आहार देते हुए देखा है और हमने भी जैनमुनि को आहार दिया है, जैनग्रंथों में भी मुनि के आहार की विधि पढ़ी है, उसी अनुसार लिखते हैं।

मुनि के आहार का समय।

शास्त्रों में जब तीन घडी दिन चढ जाय उस के बाद, और जब तीन घडी दिन बाकी रहे उससे पहले मध्याह्न (दुपहर) के वक्त सामायिक का वक्त टार, इतने वक्त में मुनि को आहार लेना लिखा है और अमूमन वक्त दश बजे से ग्यारह बजे तक और तीन बजे से तीन घडी दिन बाकी रहे उससे पहले मुनि के आहार लेने का वक्त है, सो मुनिराज देश काल का जैसा शास्त्रानुकूल अवसर योग्य समझें उस समय मुनिराज आहार को जायें हैं, जब मुनि एक स्थान में ठहरे हुए हों तब तो अकसर दश बजे के बाद ही जाते हैं। परन्तु जब विहार (सफर) में हों तो आहार को जल्दी जाते हैं

क्योंकि मुनि दिनमें ही सफर करते हैं रात को नहीं और मध्याह्न के वक्त की सामायिकसे पहले या बादमें आहर लेते हैं अगर आहार करके सफर करें तो जलदी आहार को जाते हैं अगर सफर करके आहार करें तो देरी से आहार को जाते हैं परंतु तीन घड़ी दिन चढेके बाद और तीन घडी दिन बाकी रहे मध्याह्न की सामायिकका वक्त टार उस समय में ही आहार लेते हैं इस में दूषण नहीं लगाते ॥

जैन मुनिका आहार के वास्ते गमन।

जैनके मुनि जब बन गुफा आदि से आहारके निमित्त नगर ग्रामादिक को गमन करें तब ऐसे विचारे हैं, कि आज मार्ग में क्षेत्र जल सहित है वा जलादि रहित है, तथा काल शीत उष्ण वर्षादिक रूप जान कर तथा भाव जो आपका परिणाम में श्रद्धा तथा उत्साह तथा आप का शरीर का बल तथा आपकावीर्य जो संहनन जान करके और जैसे आचरांग में उपदेश किया तैसे अशन समिति पालन करे "जैसे वात, पित्त कफादिक रोग नहीं बधे तैसे" प्रामाणिक आहार में प्रवृत्ति करें और तीन घड़ी दिन चढ़ जाय तिस पीछे और तीन घड़ी दिन बाकी रहे उससे पहले साधुवों का भोजन का काल है। तिन में तीन महूर्त में भिक्षा का काल सो जघन्य आचरण है। मध्यम दोय मुहूर्त का है। एक मुहूर्त का काल उत्कृष्ट आचरण है। जब भोजन का समय जानें तदियतन से स्वाध्याय को समेट करके और देव बंदना करके और भिक्षा की वेला जान कर कमंडलू पींछी का ग्रहण कर काय की स्थिति के अर्थ आपके आश्रय तैं धीरे धीरे निकले और कोमलपींछिका से शोधा है अंगका अगला पिछला भाग जिन्होंने ऐसे साधु मार्गमें अति उतावले गमन नहीं करते और अति बिलम्ब तैं गमन नहीं करते और मार्गमें बचनालाप रहित बन, नगर, ग्राम, स्त्री, पुरुष, आभरण वस्त्र, बाग बगीचे महल, मकान, नहीं अवलोकन करते पंचसमिति तीन गुप्ति सहित संयम शीलादिक की रक्षा करते मार्गमें गमन करें और संसार देह, भोगों से, बिरक्त बीतरागता भावते हुये धर्मध्यान चिंतवन करते अथवा द्वादश भावना भावते जिनेंद्रकी आज्ञा पालते

बिहार करें और स्वेच्छाप्रवृत्ति तथा मिथ्यात्व की आराधना तथा आपका नाश तथा संयम की विराधना होती होय तो उन कारणों को दूरही तै त्यागे हैं और दिगम्बर साधु आहार के अर्थि गमन करे तदि परिणाम में दातार का बिचार न करे, जो मोको कौन देवेगा अथवा कैसा मिलेगा तथा दातार की कहा परीक्षा है तथा आहार का विचार नहीं करै जो शीघ्रता से मिल जाय तो भला है, अथवा शीतल भोजन का लाभ होय हमारे उपवासादिक की दाह है, शीतल जल मिले तो भला है वा उष्ण मिले तो भला है हम शीत कर पीड़ित हैं। वा मिष्ट रसका अभिलाष वा चिरपरा खाटा सचिक्कण दुग्ध दही घृत पकवान इत्यादिक आहारका संकल्प रूपअभिलाष दिगंबर मुनीश्वर नहीं करे हैं, मार्ग में धर्म भावना आत्म भावना करते गमन करे हैं। आचारांग की आज्ञा करके देश की प्रवृत्ति का ज्ञाता, तथा काल की प्रवृत्ति का ज्ञाता, लाभ में अलाभ में मान में अपमान में शमभाव रूप है मन की वृत्ति जिसकी और लोकनिंद्य कुल छोड़ करके उत्तम कुलों के गृह में चंद्रमाकी नाईं धनाढ्य घरमें भी प्रवेश करें और निर्धन के घर में भी प्रवेश करते परिणाम में ऐसा संकल्प नहीं करें जो ये तो धनवानों के गृह हैं ये निर्धन के गृह हैं। घरों की पंक्ति रूप क्रम करके घरों में प्रवेश करें, दीन के गृह होंय, अनाथों के गृह होंय, तहां प्रवेश नहीं करें और जहां दान बटता होय ऐसी दान शाला तथा विवाह जहां होय तथा यज्ञादि जहां होय तथा मृतक का सूतकादिक जहां होय तथा रुदन गीत गान वादित्र कलह विसंवाद बहुत जनों का संघट्ट जहां होय तहां गमन नहीं करें। कपाट जुड राखा होय तहां कपाट खोल प्रवेश नहीं करें। तथा

कोऊ मनै करै, तहां प्रवेश नहीं करें। और गृहों में कहां तांई प्रवेश करें, तहां तांई गृहस्थों का कोऊ भेषी अन्य गृहस्थों के आने की अटक नाहीं होय और आंगण में जाय खड़े नहीं रहें आशीर्वादादिक मुख ते नहीं कहैं। हाथकी समस्या नहीं करें। उदर की कृशता नहीं दिखावें। मुखकी विवर्णता नहीं करैं। हुंकारादि का सैन (संज्ञा) समस्या नहीं करें, पडगाहे तो खड़े रहें, नहीं पड़गाहे तो निकस अन्य गृह में प्रवेश करें।

जैनमुनिआहार इस विधि से लेवें हैं।

जैनमुनि विधि पूर्वक प्रति ग्रह किया हुवा योग्य पृथ्वीतल में तिष्ठे,तहां आप खडा रहे सो भूमि तथा जहां दातार खड़ा रहे सो भूमि तथा भोजन के पात्र की भूमि जंतु रहित देख और त्रस जीवादि रहित होय तहां पगनि कूं चार अंगुल अंतरालकर खड़ा छिद्र रहित दोऊ हस्त की अंजुलि कर तिष्ठें। फिर सिद्ध भक्ति कर पाछे निर्दोष प्राशुक अन्न विधिकर दिया, आहार क्षुधा की हानिके अर्थि भोजन करें। तहां रस सहित वा नीरस ताकूं स्वाद छोड गोचरादि पंच विधिकर भोजन करें, जैसे गौ घास देने वाले जो पुरुष वा स्त्री उस का यौवन, रूप, आभरण, वस्त्र को अवलोकन नहीं करे, तैसे साधु भी आहार देने वाला जो पुरुष वा स्त्री उसका यौवन, रूप, आभरण, वस्त्र को राग कर नहीं देखे भोजन से प्रयोजन है, तथा जैसे गौ बन में जाय तहां घास तृणादिक चरने का उद्यम करे है बन की शोभा को नहीं देखे है, तैसे साधु भी जिस गृहमें भोजन करे तिस घर की शोभा पात्रादिक को राग भाव से नहीं अवलोकन करे है सो गोचरी वृत्ति है॥ १॥ और

जैसे किसी वणिक से रत्नादिक कर भरी हुई गाडी नहीं चाले, तदि उसको घृतादिक से वांग कर आपके वांछित स्थान लेजाय तैसे मुनीश्वर भी रत्नत्रय रूप गुण कर भरी जो देहरूप गाड़ी सो नहीं चाले, तदि योग्य आहार देय निर्वाणपत्तन पहुंचावे, सो अक्षम्रक्षणवृत्ति है ॥२॥ और जैसे भंडार में अग्नि लग जावे, तदि जैसे तैसे अग्नि बुझायकर भंडार के माल की रक्षा करे, तैसे रत्न त्रय रूप गुण रत्नोंका भरा जो साधुका शरीर रूप भंडार, तामें क्षुधादिक अग्नि लागी उसको रस नीरस भोजन से बुझाय गुण रूप रत्नों की रक्षा करना सो उदराग्नि प्रशमन है ॥३॥ और जैसे कोई के घर में खाड़ा होय उसे पाषाण धूली सो भर कर बरोबर करे तैसे साधु भी उदर रूप खांडा को जैसे तैसे आहार से पूर्ण करना, सो गर्तपूर्ण है ॥ ४ ॥ और जैसे भौंरा (भ्रमर) पुष्पको बाधा नहीं करता पुष्प का गंधग्रहण करे है, तैसे साधु भी दातार को किंचिन्मात्र बाधा नहीं उपजावता भोजन ग्रहणकरे ताको भ्रामरी वृत्तिकर भोजन जानना ॥

जैन मुनि ६ कारणों के वास्ते भोजन करे हैं।

१–जब यह देखे हैं कि मैं तीव्र क्षुधा की वेदना कर पीड़ित हूं, इस वेदनाकर चारित्र पालने को असमर्थ हूं इस वेदना से चारित्र विगड जायगा इसलिये भोजन करना उचित है, ऐसा विचार कर जो जैनके साधु भोजन करने में प्रवृत्ति करें सो प्रथम कारण है।

२–जब वह जाने हैं कि हम आहार विना योगियों का वैयावृत्य करने को सामर्थ नहीं हैं यातैं वैयावृत्य की सिद्धि के वास्ते भोजन करें क्योंकि संघ में कोऊ मुनी रोग कर पीडित होय वा

संन्यास मरण करता होय तो उसकी रात दिन सेवा करना तथा उपदेश देना, उठावना बैठावना इत्यादि क्रिया आहार करे बिना बने नहीं, इससे मुनियों की वैयावृत्य के निमित्त भोजन करना सो दूसरा कारण है ॥

३-षट् आवश्यक की पूर्णताके अर्थ मुनिवर आहार करे हैं कि आहार बिना हम षट् आवश्यक क्रिया करनेको असमर्थ हैं इससे षट् आवश्यक करने के अर्थि भोजन करना, सो तीसरा कारण है।

४-षट् कायके जीवों की रक्षा निमित्त जैन के मुनि आहार करे हैं कि हम क्षुधा की वेदना कर षट् काय के जीवों की रक्षा करने को असमर्थ हैं, इस लिये संयम की सिद्ध(रक्षा) के अर्थ भोजन करना सो चौथा कारण है ॥

५-दशलक्षण धर्म पालने के अर्थ जैनमुनि आहार करे हैं कि मैं आहार बिना दश लक्षण धर्म का आचरण करने में असमर्थ हूं इस से धर्म्म चिंतवन के अर्थि भोजन करना पांचवां कारण है।

६-प्राणों की रक्षा के अर्थ मुनिवर आहार करें हैं क्योंकि आहारबिना दश प्राण रहें नहीं मरण ही होय इस से प्राण रक्षा के अर्थि भोजन करना सो छठा कारण है सो ऐसे छै प्रकारके कारणों कर भोजन करते साधु के कर्मबंध नहीं होय है पुरातन बांधे जो कर्म्म उनकी निर्जरा ही होय है ॥ जैनमुनि केवल ज्ञानाभ्यास के अर्थ तथा संयम के अर्थ तथा ध्यान के अर्थ मन, वचन, काय, तथा कृत, कारित-अनुमोदना कर रहित जो भोजन शुद्ध होय और उद्गमादि ४६ दोषों कर रहित नवधाभक्ति कर सप्तगुण सहित जो दातार आहार देवे सो आहार करे हैं ॥

जैन के मुनि ६ कारण होते हुए आहार नहीं लेवे हैं

१–शरीर में ऐसी व्याधि उपजआवे जिससे संयम का नाश होय, तदि रोग का नाश के अर्थ क्षुधा की वेदना होते भी भोजन का त्याग करे हैं।

२–दुष्ट मनुष्य, तिर्यंच, देव, अचेतन कर किया जो प्राण नाश करने वाला उपसर्ग हो तो भोजन का त्याग करें॥

३–इन्द्रियों की तथा काम की उत्कटता के रोकने को तथा ब्रह्मचर्य्य की रक्षा के निमित्त भोजन का त्याग करें।

४–जो आज आहार ग्रहण करने को जाऊंगा तो जीवों की हिंसा होयगी मार्ग में टीडी अथवा कीड़ी आदि जीवों का संचार बहुत है इससे जीव दया के निमित्त भोजन का त्याग करें॥

५–बारह प्रकार के तप के निमित्त भोजन का त्याग करें॥

६–जब साधु के रोग तथा जरादिक करके जर्जरापणा होजाय तदि संन्यास की सिद्धि के अर्थ भोजन का त्याग करें। ऐसे छे प्रयोजन कर जैन के मुनि भोजन का त्याग करें हैं, जैनके मुनि शरीर में बल होने के वास्ते कि मेरे शरीर में ऐसा बल होजावे कि मैं युद्धादिक में समर्थ होजाउं ऐसा विचार कर आहार नहीं करे हैं तथा मेरी आयु की वृद्धि होउ तथा शरीर की पुष्टता होउ ऐसा विचार कर आहर नहीं करे हैं, तथा शरीर की दीप्ति के अर्थ भोजन नहीं करे हैं।

जैनमुनि १४ मल रहित भोजन लेवे हैं।

जैनके साधु १४ मलरहितभोजन लेवे हैं॥ १ नख, २ केश (रोम), ३ जंतु कहिये बेइन्द्रियादिक मृतक जीव का शरीर, ४ अस्थि

कहिये हाड, ५ कण कहिये जौ, गेहूं आदि का वाहरला अवयव, (चोकर), ६ कुंड कहिये शाल्यादिकों का अभ्यंतर सूक्ष्म अवयव, ७ पूति कहिये राधि, ८ चर्म कहिये त्वचा, ९ रुधिर, १० मांस, ११ बीज कहिये उगने योग्य जौ गेहूं आदि का बीज १२ फल कहिये आम्र नारियल इत्यादिक साबत फल १३ कंद कहिये घेला के नीचे उगने, का कारण, १४ मूल कहिये नीचे जड़, ये चौदह मल हैं॥

१ जैनके यति इन १४ मल रहित भोजन लेवें हैं॥ इनमें कितने ही तो महा दोष हैं, कितने अल्प दोष हैं, इन में रुधिर मांस, हाड, चाम, राधि यह पांच तो महा दोष हैं। इन ते सर्व आहारका त्यागभीकरें और प्रायश्चित्त भी लेवें और बेइंद्रिय त्रेइंद्रियचतुरिंद्रिय के मृतक शरीर बाल, इन दोय मल का आहार में संयोग होय तो आहारकात्याग करें और नख आहारमें आवे तो भोजनकात्याग भी करें और किंचित प्रायश्चित्त भी करें और कण, कुंड, बीज, कंद फल मूल यह छे, प्रकार के अल्प मल हैं यह भोजन में से टालने योग्य हैं और यदि भोजन थकी निकासने को समर्थ नहीं होय अर्थात् भोजन में से न्यारे नहीं निकलसकें तो भोजन का त्याग करें और जो भोजन एकेंद्रिय जीवों कर रहित होय सो प्राशुक है द्रव्य थकी शुद्ध है और जो भोजन द्वींद्रियादिक जीवोंके निर्जिव कलेवर सहित होय सो दूर थकी ही त्यागने योग्य है जातें वह द्रव्यही अशुद्ध है और शुद्ध भी भोजन साधु के निमित्त किया होय सो द्रव्य तें ही अशुद्ध है ग्रहण करने योग्य नहीं अब कोई कहे पर जो गृहस्थ तिन के अर्थ किया आहार साधु के शुद्ध कैसे होय सो आगममें दृष्टान्त है सो कहे हैं जैसे मत्स्या के निमित्त किया जो मद का जल उस करके मंतस्य जे मच्छ ते ही मद को प्राप्त होय हैं मांडके मंद कों

प्राप्त नहीं होय हैं जिस जल विषे मच्छ उसी जल में मींडके बसे हैं तथापि मींडके मदको प्राप्त नहीं होते तैसे गृहस्थ आपके निमित्त किया जो भोजन तिस करके साधु दोषको प्राप्त नहीं होय है और गृहस्थ आप के निमित्त करे ही है। गृहस्थ आहार दान देय साधुवों के गुणों में अत्यंत भक्ति युक्त होय स्वर्ग गामी होय है तथा संयम भाव में अनुराग के प्रभाव कर आप संयम को प्राप्त होय है और पाछे कर्म काट निर्वाणको प्राप्त होय है और मिथ्या दृष्टि भी साधु को दान देने के प्रभाव कर भोग भूमि को प्राप्त होय है॥

अथ ३२ अंतराय और ४६ दोष का वर्णन।

जैन के मुनि ३२ अंतराय ४६ दोषटार आहार लेवें हैं अब उनका खुलासा वर्णन लिखते हैं॥

३२ अंतराय।

१ काक वीट, २ अमेध्य, ३ छर्दि, ४ रोधन, ५ रुधिर, ६ अश्रुपात, ७ जान्वधः परामर्श, ८ जानूपरिव्यतिक्रम, ९ नाभ्यधोनिगमन, १० स्वप्रत्याख्यात सेवन, ११ जीववध, १२ काकादिपिंडहरण, १३ पिंडपतन, १४ पाणिजंतुवध, १५ मांसदर्शन, १६ उपसर्ग, १७ पंचेंद्रियगमन, १८ भोजनपात, १९ उच्चार, २० प्रस्रवण, २१ अभोज्य गेह प्रवेश, २२ पतन, २३ उपवेशन, २४ दष्ट, २५ भूमिस्पर्श, २६ निष्ठीवन, २७ कृमिनिर्गमन, २८ अदत्त, २९ शस्त्रप्रहार, ३० ग्रामदाह, ३१ पादग्रहण, ३२ हस्तग्रहण, यह ३२ अंतराय होते जैन के साधु भोजन नहीं करे हैं॥

३२ अंतराय का भिन्न भिन्न वर्णन।

१ काकवीट–आहार के निमित्त गमन करते वा तिष्ठते जे मुनीश्वर उनके ऊपर काक पक्षी वा और ही कोई पक्षी वीट करे तो काक वीट नामा भोजन का अंतराय है॥

२ अमेध्य–गमन करते साधुका पग के अमेध्य जो विष्टा मल लग जाय तो अमेध्य नामा अंतराय है॥

३ छर्दि–साधु को वमन होजाय तो छर्दिनामा अंतराय है।

४ रोधन–कोई जो मुनिको गमन करते को मार्ग में रोक देवे सो रोधन नामा अंतराय है॥

५ रुधिर–आपका वा अन्यका रुधिर वा राधि बहता देखे सो रुधिरनामा अंतराय है॥

६ अश्रुपात–दुःख शोकादि करके जो साधुके अश्रुपात आजाय अथवा निकटवर्ती लोकनिका मरणादिक करके अतिरुदन विलाप श्रवण करे तो अश्रुपात नामा अंतराय है॥

७ जान्वधःपरामर्श–जब मुनि आहार के वास्ते जारहे हों रास्ते में किसी पुरुष कर या स्वयमेव कोई वस्तु का मुनि के जानू जो गोडे तिनतैं नीचे स्पर्श हो जाय तो जान्वधःपरामर्श नामा अंतराय है॥

८ जानूपरिव्यतिक्रम–जानू जो गोडे तिन तैं अधिक उल्लंघन हो जाय तो जानूपरिव्यतिक्रम नामा अंतराय है॥

९ नाभ्यधोनिगमन–नाभी से नीचे मस्तक करके कोऊ छोटे द्वारमें प्रवेश करे तो नाभ्यधोनिगमन नामा अंतराय है॥

१० स्वप्रत्याख्यात सेवन-जिस वस्तु का त्याग होय सो भक्षण में आजाय तो स्वप्रत्याख्यात सेवन नामा अंतराय है॥

११ जीव वध-आपके अग्रभाग विषे कोऊ प्राणी को मार नाखे तो जीव वध नामा अंतराय है॥

१२ काकादि पिंड हरण-भोजन करते समय भोजन में से काकादिक पक्षी ग्रास ले जाय तो काकादि पिंड हरण नामा अंतराय है॥

१३ पिंड पतन-भोजन करता साधुका हस्त ते ग्रास का पतन होजाय ग्रास गिर जाय, सो पिंड पतन नामा अंतराय है॥

१४ पाणिजंतुवध-हस्तके विषे द्वींद्रीयादिक जीव आय करके मरजाय सो पाणिजन्तुवध नामा अंतराय है क्योंकि तप्त भोजन में वा सचिक्कण में मक्षिका मच्छर इत्यादिक पडकर मरण ही करे हैं॥

१५ मांस दर्शन-मृतक पंचेंद्रिय का शरीर का देखना, मांस दर्शन नामा अंतराय है॥

१६ उपसर्ग-साधु को मनुष्य देव तिर्यंचों कर किया उपसर्ग आजाय सो उपसर्ग नामा अंतराय है॥

१७ पंचेंद्रिय गमन-साधुके दोऊ चरणों के बीच होयकर पंचेंद्रिय जीव मूंसा मींडका इत्यादि गमन कर जाय सो पंचेंद्रिय गमन नामा अंतराय है॥

१८ भोजन पात-भोजन देने वाले के हस्त ते भोजन गिर पडे सो भोजन पात नामा अंतराय है॥

१९ उच्चार-जो साधु के शरीरसे रोगादिक के वश ते मल निकल आवे सो उच्चार नामा अंतराय है॥

२० प्रस्रवण–जो साधु के मूत्र का स्राव होजाय सो प्रस्रवण नामा अंतराय है ॥

२१ अभोज्यगृहप्रवेश–भिक्षा परिभ्रमण करता जो साधु का भील चांडालादिक के गृह में प्रवेश होजाय, सो अभोज्य गेह प्रवेश नामा अंतराय है ॥

२२ पतन–साधु का मूर्छादिक कर पतन होजाय, सो पतन नामा अंतराय है ॥

२३ उपवेशन–साधु बैठजाय सो उपवेशननामा अंतरायहै॥

२४ दष्ट–स्वानादिक जीव काट खाय सो दष्ट नामा अंतराय है ॥

२५ भूमि स्पर्श–सिद्ध भक्ति करे पाछे जो साधुका हस्त करके भूमिका स्पर्श हो जाय, सो भूमिस्पर्श नामा अंतराय है ॥

२६ निष्ठीवन–कफ थूक इत्यादिक नाखि देवे, सो निष्ठीवन नामा अंतराय है ॥

२७ कृमिनिर्गमन–साधु का उदर तें कृमिका निर्गमन कहिये निकसना होय सो कृमिनिर्गमन नामा अंतराय है ॥

२८ अदत्त–साधु हस्त करके किंचित् पर की वस्तु लोभ कर ग्रहण करे, सो अदत्त नामा अंतराय है ॥

२९ शस्त्र प्रहार–खड्गादिक शस्त्र कर साधु का कोउ घात करे, वा अन्य का घात करे, सो शस्त्र प्रहार नामा अंतरायहै॥

३० ग्रामदाह–ग्राम में अग्नि लग जावे, सो ग्राम दाह नामा अंतराय है ॥

३१ पाद ग्रहण–पग करके कोऊ वस्तु का ग्रहण होजाय सो पाद ग्रहण नामा अंतराय है ॥

३२ हस्तग्रहण-हस्त करके किंचित् वस्तु का ग्रहण होय जाय सो हस्तग्रहण नामा अंतराय है॥

नोट—भोजन के त्याग के कारण बत्तीस अंतराय कहे, तैसे ही और भी चांडालादिकनिका स्पर्श कलह इष्टमरण साधर्मिक संन्यास पतन प्रधान पुरुषनका मरण भोजन के त्यागके कारणहैं। औरभी राजाका भय तथा लोकनिंद्यादिक अंतराय कहे, सो जैनधर्म के धारक साधुनके भोजन का त्याग तथा आधा भोजन कीया अल्प कीया एक ग्रास लिया वा ग्रास नहीं लिया होय और जो अंतराय होय तो भोजन का त्याग ही करे उस दिन फिर ग्रासादिक नहीं ग्रहण करे ऐसा आचारांगकी आज्ञाप्रमाणशुद्ध भोजनपान तथा प्रामाणिक हलको रसादि रहित रूक्ष भोजन कर नित्य ही तप अंगीकार करे॥

अथ ४६ दोष का वर्णन।

१६-उद्गमदोष यह भोजन देने वाले गृहस्थ के तालुक दोषह॥
१६-उत्पादन दोष यह आहार लेने वाले मुनिके तालुक के हैं॥
१०-एषणा दोष॥
४-और दूसरे दोष॥

यह ४६ दोषटार जैन के मुनि आहार लेवे हैं॥

१६ उद्गमदोष।

१ उद्दिष्ट, २ अध्यवधि, ३ पूति, ४ मिश्र, ५ स्थापित, ६ बलि, ७ प्राभित, ८ प्रादुष्कार, ९ क्रीत, १० ऋण, ११ परावर्त्त, १२ अभिघट, १३ उद्भिन्न, १४ मालारोहण, १५ अच्छेद्य, १६ अनिसृष्ट यह भोजन देनेवाले गृहस्थ के तालुक के हैं॥

१ उद्दिष्ट दोष-आज हमारे घर भेषी या गृहस्थीया निग्रंथ मुनि कोईभी आवे सबको भोजन देवेंगे ऐसा विचार कर तैय्यार किया जो भोजन सो उद्दिष्ट दोष सहित है ऐसा भोजन साधु को

नहीं देना जो भोजन गृहस्थी ने अपने निमित्त किया होय और साधु आजावे तो उसे आहार देवे खास साधु के निमित्त भोजन नहीं बनाना ॥

२ अध्यवधिदोष-संयमी को भोजन के अर्थ आवता देख आप के निमित्त रांधे जो चावल दान देने को उन में और मिला देना या दाल वगैरा में और पानी डाल देना भोजन बढा लेना या इतने वह भोजन तैय्यार हो साधु को देरी लगाय देना सो अध्यवधि दोष है।

३ पूतिदोष-जो प्राशुक में अप्राशुक मिला देवे मसलन घर में भोजन प्राशुक बना था बहुत संजमी आए जान और प्राशुकसामग्री न होनेसे उसमें अप्राशुक मिलादेवे या नये मकान में प्रवेश किया हो या चूल्हा नया बनवाया हो सो उसे पवित्र करने को यह इरादा कर भोजन बनाया हो जो पहिले इस रसोई में साधु को आहार करालेवें तब आप भोजन करें या गैर को देवें ऐसा भोजन पूति दोष सहित है मुनि को अप्राशुक मिला भोजन अप्राशुक स्थान में नहीं देना।

४ मिश्रदोष-प्राशुक भोजन किया भी अन्य भेषी पाषंडी वा अन्य गृहस्थ तिनकी साथ ही साधु को भी भोजन देवे, सो मिश्र दोष है। क्योंकि इस में असंयमियों से स्पर्श और दीनता और अनादरादिक बड़ा दोष आवे है।

५ स्थापित दोष-रांधने के पात्र तें भोजन निकाल और अन्य पात्र कटोरी आदिक में घालि भोजन गृह से अन्य परगृह में लेजाय स्थापन कियाहोय जो भोजन सो भोजन स्थापितदोष सहित है जिस बरतन में जिस घर में भोजन हो उसी में से मुनि को देना

उठाये धरा नहीं देना इस में उठाकर धरा और फेरिनवीन आ भादिक दोष आवे हैं॥

६ बलिदोष–देवी देवता माता सीतला यक्षनागादिक के निमित्त किया जो भोजन। या उस में का बचा भोजन सो बलि दोष संयुक्त है मुनि को देने योग्य नहीं है॥

७ प्राभित दोष–किसी गृहस्थ ने ऐसा संकल्प किया हो जो हमारे दान का शुकल अष्टमीका नियमहै या किसी और दिन मास, साल वकत का नियम करे कि हम फलाने दिन या फलाने मास में या फलाने वकतमें मुनिको आहार देवें जो संयोग मिल जाय तो भोजन देवें और दिन या और वकत हमको अवसर नहीं ऐसा संकल्प करि और उसके विरुद्ध पलटकर अन्य काल का अन्य काल में देवे तो प्राभित दोष है। क्योंकि इस से परिणाम में क्लेशकी बहुलता होय है।

८ प्रादुष्कार दोष–जो भोजन को अन्यस्थान से अन्य स्थान में लेजाना तथा भाजन जे पात्र तिनि को भस्मादिक से मांजना तथा जल से धोवना तथा भाजनों को विस्तारना तथा मंडपका उघाड़ना उद्योत करना तथा दीपक का उद्योत करना सो सर्व प्रादुष्कार दोष है। क्योंकि इस में ईर्यापथादिक दोष देखिये है॥

९ क्रीत दोष– जो संजमी भिक्षा के अर्थि आवे घर में भोजन तैय्यार न हो मुनि को देख आप का सचित्त द्रव्य वा अचित्त द्रव्य देय करके आहार मोलि लाय साधु को आहार देवे सो क्रीत दोष है॥

१० ऋण दोष–जो मुनि आहार के अर्थि आवै तदि अन्य गृहसे भोजन उधार ले आवे हमारे घरि साधु को भोजन देना है सो एक पात्र प्रमाण भोजन देवो हम तुम को एक पात्र भोजन उलटा दे देवेंगे वा ब्याज सहित सिवाय अधिक दे वेंगे इत्यादिक ऋण कर

भोजन लाय साधु को देवे सो ऋण दोष है इस से दातार के क्लेश वा खेद होय है ॥

११ परावर्त्त दोष—अपने घर बाजरे का भात या कोदा सांवक जवार आदि की रोटी बनी थी साधु भोजन को आये जान पड़ोसी से या दूसरे घर से जा साधुके वास्ते चावल का भात या गेहूं की रोटी बदल लाकर साधु को आहार देवे सो परावर्त्त दोष है यह दातार के क्लेश का कारण है।

१२ अभिघटदोष—किसी एक मुलकसे या अनेक मुलकों से आया भोजन या किसी एक ग्राम से या कई ग्रामों से या अपने मकान के सामने वाली पंक्ति में से किसी मकान से या जिस पंक्ति में अपना मकान है सात मकानों की पंक्ति से और जो परे मकान उनसे आया भोजन अभिघट दोष सहित है साधु को देना योग्य नहीं इसमें बहुत इर्यापथिक दोष है मसलन जिस मकान में आप रहे उस में रसोई नहीं बनती दूसरे में बनती है जो वह मकान रसोई का उस मकान को सात घरों की पंक्ति में है तो उस में से लाया भोजन आछिन्न है साधु को देने योग्य है, सात घरों की पंक्ति से परले मकान का वा पंक्ति विरुद्ध स्थान से लाया भोजन अनाछिन्न है साधु को देने योग्य नहीं अभि-घट दोष संयुक्त है ॥

१३ उद्भिन्न दोष—जो औषधि तथा घृत वा शक्कर गुड़ खांड इत्यादिक वस्तुके छांदा माटी का लग रहा होय वा चिपड़ी लग रही होय वा कोई चिन्हकर राखा होय वा नाम के अक्षर वा प्रतिबंध की महोर करि राखी होय ताको उघाड़ कर भोजन

साधु को देवे सो उद्भिन्न दोष सहित है। जाते पीपिलिकादिक का प्रवेश होना इत्यादिक दोष आवे हैं॥

१४ माला रोहण दोष—जो पूड़ा लाडू मिश्री घृतादिक ऊपरले मकान में गृह का ऊर्द्ध भाग में धरा होय ता को पौड़ी चढ़ कर वा काष्ट की सीढ़ी इत्यादिक पर चढ़ कर लाय साधु को देवे सो माला रोहण दोष है॥

१५ आछेद्य दोष—संयमी को देखकर जो राजा वा जबर मनुष्य ने कहा कि या नगर में आपके गृह में आया संयमी को जो भोजन नहीं करावेगा उस के द्रव्य को हरण करूंगा अथवा ग्राम के बाहर निकास दूंगा या प्रकार आप के कुटुंबियों का राजा का भय वा राजा के मंत्री वा जोरावरों के भय से जो साधु को भोजन दान देवे सो कुटुंब आदि के भय के कारणपने तें आछेद्य दोष सहित है॥

१६ अनिसृष्ट दोष—जो आप घर का मालिक न हो मुनीम नौकर हो भोजन पर दाम मालिक का खर्च हुआ हो तो स्त्री पुत्र पितामंत्री मुनीम आदि देने से मने करें कलह करें वलसे रोकें सो भोजन अनिसृष्ट दोष सहित है।

नोट—यह १६ दोष भोजन देने वाले गृहस्थ के आश्रय हैं। मुनि के आहार की विधि जानने वाला गृहस्थ ऐसे दोष लगाय मुनि को भोजन नहीं देवे और यदि मुनि को मालूम होजाय तो भोजन का त्याग कर मुनि पाछे जावे॥

१६ उत्पादन दोष।

१ धात्री, २ दूत, ३ निमित्त, ४ आजीवन, ५ वनिपक, ६ चिकित्सा, ७ क्रोध, ८ मान ९ माया १० लोभ, ११ पूर्वस्तुति १२ पश्चात् स्तुति, १३ विद्योत्पादन, १४ मंत्रोत्पादन, १५ चूर्ण-

त्पादन, १६ मूल कर्म्म। यह १६ दोष आहार लेने वाले मुनि के आश्रय हैं॥

१ धात्री दोष १७—जब साधु गृहस्थ के घर में भोजन को जावे और गृहस्थ बालक सहित साधु के पास आवे तब साधु ऐसे कहे कि इस बालकको ऐसे स्नान कराओ ताकि नीरोग रहे बालकको आप प्यार करने लग जाय उसके केश जेवर वस्त्र वगैरा आप संवारने लग जाय उसके सिंगार की विधि बतावे बालक को आप खिलाने लगजाय या कहे इसे खिलाओ इसे इस प्रकार दूध पिलाओ खवाओ यूं मोटा होगा बली होगा फलानी दवाका सेवन करो मालिश करा करो ऐसे सुलाया करो इत्यादिक जो धाय कर्म उन को साधु बालक की साथ आप करे या करने का उपदेश दे जैसे अन्य मत के भेषी करते हैं अगर अनजान पने से कोई दिगंबर मुनि ऐसी क्रिया करे जिससे गृहस्थी यह समझ कर कि मुनि की हमारे बालक में बड़ी प्रीति है सो दया जान उस को खूब भोजन दें ऐसा भोजन धात्री दोष सहित है जैन मुनि ऐसी क्रिया नहीं करें॥

२ दूतदोष १८—कोई साधु एक ग्राम से दूसरे ग्राम में या अन्य देश में जाता होय तब जाते हुये साधु को कोई गृहस्थी ऐसे कहे हे महाराज हमारा एक संदेशा लेते जाओ सो साधु गृहस्थियों के समाचार लेजाकर पर ग्राम परदेश में उनकी पुत्री मित्रादिक से कहे सो गृहस्थ आप के संबंधी के समाचार श्रवण कर जो साधु को आहार दान देवे उस का दिया भोजन दूत दोष सहित है।

३ निमित्त दोष १९–जो साधु गृहस्थके बदन पर तिल, मसा आदि देख अथवा मस्तक गरदन हाथ पैर की रेखा तथा शरीर में सांथिया चमर छत्र कलशादि का चिन्ह देख उनका शुभ अशुभ फल कहे या जानवर का शब्द बादलकी गरज हवा नक्षत्र तारों भूकंप आदिक को देख कर मंहगा सस्ता काल दुकाल का होनहार आगामी बतावे इत्यादिक जो ज्योतिष नजूम सरोधा रमल गणित आदि आठ प्रकार के निमित्त ज्ञान के कारण से लोगों को आगामी बताय अपना महंतपना जनाय उनका मन अपने में अनुरागी कर जो भोजन लेना सो निमित्त दोष सहित है जैनी साधु ऐसी क्रिया नहीं करे॥

४ आजीवन दोष २०–माता की संतति सो जाति पिता की सन्तति सो कुल है, सो लोगों में आप की जाति की शुद्धता वा कुल की शुद्धता तथा आप की शिल्प करि हस्त की कला चातुर्यता तथा तपश्चरण की अधिकता तथा ऐश्वर्यादिक प्रकट कर लोकों तैं उपजाया आहार सो आजीवन दोष सहित है॥

५ बनिपक दोष २१–कोई गृहस्थ साधुसे पूछे कि हे भगवन कुत्तों को तथा कृपणों को तथा कुष्टव्याधि रोगादिक कर पीडित को तथा मध्यान्ह काल में कोई आपके घर भोजन को आवे ऐसे अतिथियों को तथा ब्राह्मणों को तथा मांसादिक भक्षण करने वालों को तथा पाखंडियों को तथा भिक्षा कर आजीविका करने वालोंको तथा श्रवणनि को कांजिका हारियोंको तथा काकादिक पक्षियों को जो दानादिक दीजिये ताकर पुण्य होय है या नहीं सो कहो ऐसे दातार पूछे तब कहे पुण्य होय है ऐसे दातार के अनकूल वचन कहे सो बनिपक नामा उत्पादन दोष है॥

६ चिकित्सा दोष २२-जो लोगों के शरीर तथा उन की स्त्री पुत्रादिक के रोगों की चिकित्सा कर उनका इलाज मालजा कर उन से जो भोजन उत्पन्न करना सो चिकित्सा नामा दोष सहित भोजन है॥

७ क्रोधोत्पादन २३-जो क्रोध कर भिक्षा को उपजावे सो क्रोधोत्पादन दोष है।

८ मानोत्पादन २४-जो गर्व (अभिमान) कर भिक्षा उत्पन्न करे सो मानोत्पादन दोष है॥

९ मायोत्पादन २५-जो माया कर भोजन उत्पन्न करे सो मायोत्शादन दोष है॥

१० लोभोत्पादन २६-जो रसायन आदि का लोभ दिखाय भिक्षा उत्पन्न करे सो लोभोत्पादन दोष है॥

११ पूर्व स्तुति दोष २७--जो दान के देने वाले पुरुष की साधु दान लेने से पहले तारीफ़ (कीर्ति) करें कि तुम दानियों में प्रधान हो तुमारी कीर्ति लोक में विख्यात है इत्यादिक दान के ग्रहण करने से पहले दातार का स्तवन करे सो पूर्वस्तुति दोष है॥

१२ पश्चात् स्तुति दोष २८-दान ग्रहण किये पश्चात् दातार का स्तवन करे सो पश्चात् स्तुति दोष है।

१३ विद्योत्पादन दोष २९-दातार को कोई विद्या देने की आशा लगाय भोजन करे सो विद्योत्पादन दोष है॥

१४ मंत्रोत्पादन दोष ३०-पढ़ने मात्र ही ते मंत्र सिद्ध होय ऐसा मंत्र देने की दातार के आशा लगाय दान ग्रहण करे सो मंत्रो त्पादन दोष है॥

१५ चूर्णोत्पादन दोष ३१—नेत्रों की निर्मलता का कारण जो अंजन तथा मंजन जो तिलक पत्र बल आदिक के निमित्त चूरण या शरीर के शोभा का निमित्त जो चूर्ण ता का उपदेश देय भोजन उत्पन्न करे सो चूर्णोत्पादन दोष है ॥

१६ मूलकर्म दोष ३२—जो वश नहीं ताका वशीकरण तथा जिनके परिणाम में अपूठापना हो रहा होय तिनका मिलाप कराय देना ताकर भोजन उत्पन्न करे सो मूलकर्म दोष है ॥१६॥

नोट—यह १६ उत्पादन दोष साधुके आश्रय हैं इन दोषों से भोजन उपजाय जो साधु भोजन करे उस का साधुपना विगड़ जाय है ॥

१० एषणा नामा दोष ।

१ शंकित, २ म्रक्षित, ३ निक्षिप्त, ४ पिहित, ५ व्यवहरण, ६ दायक, ७ उन्मिश्र, ८ अपरिणत, ९ लिप्त, १० परित्यजन ॥

१ शंकित दोष ३३—भात, रोटी, दाल, खिचड़ी इत्यादिकों को अशन कहिये और दुग्ध दही शर्बत इत्यादिक को पान कहीये लड्डू घेवर पाक इत्यादिक को खाद्य कहिये, और इलायची लवंग सुपारी इत्यादिक को स्वाद्य कहिये सो अन्न पान खाद्य स्वाद्य इस चार प्रकार के आहार में कोई अवसर पाय किसी जैन मुनि को ऐसी शंका उपजे जो यह आहार भगवान् के आगम में साधु के लेने योग्य है अथवा नहीं लेने योग्य है तथा यह आहार अधःकर्म कर उपज्या है वा अधःकर्म से नहीं उपज्या है जो आहार में ऐसी शंका उपज आवे तब शंका सहित आहार को जो साधु करे उस के शंकित दोष आवे है ॥

२ म्रक्षित दोष ३४—तैल घृतादिक कर लिप्त जो हस्त वा पात्र तिस कर दिया जो भोजन सो म्रक्षित दोष सहित है जिस

से संमूर्छन सूक्ष्म जीव मक्खी मच्छर चिकने पात्र के वा हाथ के लगजाय सो जीवता रह नहीं, तातैं त्याज्य है ॥

३ निक्षिप्त दोष ३५–सचित्त पृथिवी, जल, अग्नि, वनस्पति तथा बीज तथा त्रस जीव के ऊपर धरा हुवा आहार निक्षिप्त दोष सहित है ॥

४ पिहित दोष ३६–जो भोजन सचित्त कर ढका होय अथवा भारी जो पाषाण शिला काष्ठ धातुमय मृत्तिका का पात्र अचित्त हू तैं ढका होय उस को उठाय जो भोजन देवे सो पिहित नामा दोष सहित है ॥

५ व्यवहरण दोष ३७–भोजन के दातार का वस्त्र जमीन पर लटक गया होय ताको यत्नाचार रहित खैंच ले अथवा भोजन का पात्र वा चौकी पट्टा इत्यादिक को जमीन पर रगड़ता हुआ खैंचलें घीसले यत्नाचार रहित इर्यापथादिक बिना जो ग्रहण करे और भोजन पान इत्यादिक देवे सो भोजन व्यवहरण दोष सहित है ॥

६ दायक दोष ३८–इतनों का दिया भोजन साधु के योग्य नहीं जो बालक को सुवाती होय, तथा मद्यपान लंपटीहोय, रोग व्याधि कर व्याप्त होय, मृतक मनुष्य को स्मशान में क्षेप कर आया होय, अथवा मृतक का सूतक सहित होय, तथा जो नपुंसक होय, तथा पिशाच का उपद्रव सहित होय, और वस्त्र रहित नगन होय, तथा मलमूत्र मोचन कर आया होय, तथा मूर्छा को प्राप्त भया होय, तथा वमन कर के आया होय वा रुधिर सहित होय, तथा वेश्या होय वा दासी होय, तथा आर्यिका होय, तथा रक्त पटिकादिक पंच श्रमणि का होय, तथा अंग के मर्दनादिक करती होय, तथा अति बालक होय वा अतिवृद्ध होय, तथा ग्रास

लेती वा कुछ भक्षण करती होय, तथा उस को पांच महीने का गर्भ का भार या इस से अधिक होय, तथा चक्षु रहित आंधी होय, तथा भित्ति वा पड़दा के माहीं बैठी होय, तथा उच्च स्थान बैठी होय, तथा नीचे स्थान में बैठी होय, ऐसा पुरुष होहू वा स्त्री होहू तथा चूल्हा इत्यादिकों में सिंधूषण देती होय, तथा मुख का पवन कर तथा बीजणे कर अग्नि काष्ठादिकों का प्रज्वालन वा उद्योतन करता होय, तथा काष्ठादिकों को उत्कर्षण करता होय, तथा भस्म कर अग्नि को ढांकता होय, तथा अग्नि को जलादिक कर बुझावता होय तथा और भी अग्निके अनेक कार्य्य करता होय, तथा गोबर माटी इत्यादिकों कर भूमि वा भित्ति को लीपता होय, वा कोई स्त्री बालक को स्तन पान करावती वा बालक को जमीन में क्षेप मेल आई होय, इत्यादिक और हू क्रिया करती स्त्री वा पुरुष जो भोजन देवे, तदि वह भोजन दायक दोष सहित है साधु के योग्य नहीं है॥

७ उन्मिश्र दोष ३९-जो भोजन पृथिवी जल हरित काय पत्र पुष्प फल बीज इत्यादिक कर मिला होय सो उन्मिश्रदोषसहित है॥

८ अपरिणत दोष ४०-तिलोंके प्रक्षालों का जल तथा चावल धोवने का जल तथा जो जल तप्त होयकर शीत हुवा होय, तथा चणेके धोवने का जल तुष धोवने का जल, तथा हरड़े का चूरण उसमें मिला ऐसा जो आपका वर्णरस गंधको नहीं पलटा सो अपरिणत दोष सहित है। और जो वर्ण रसगंध इत्यादिक जामें पलट गया होय सो परिणत है साधु के लेने योग्य है॥

९ लिप्त दोष ४१-गेरू तथा, हरताल खडी पांडुमेणशिल मांटी तथा कच्चा चून वा चावल वा पत्र शाक अप्राशुक कच्चा

जल इन कर लिप्त जो हस्त वा भाजन ताकर दिया जो भोजन सो लिप्त दोष सहित है॥

१० परित्यजनदोष ४२–जो हस्त का अथिर पणाकर तथा छाछि दुग्ध घृतादिक झरता अथवा छिद्रसहित हस्त करि जो भोजन बहुत तो गिर जाय और अल्प ग्रहण में आवे ऐसा भोजनत्यक्त दोष सहित है ऐसे दश भोजन के दोष कहे ते सावद्य जो हिंसा ताका कारण पणा तैं साधु को त्यजने योग्य हैं।

११ संयोजना दोष ४३–शीतल भोजन में उष्ण जल मिलावे तथा उष्ण भोजन में शीतल जल मिलावे वा शीत उष्ण जलका परस्पर मिलावना तथा अन्य हू परस्पर विरुद्ध वस्तु मिलावे सो संयोजना नामा दोष है।

१२ अप्रमाणदोष ४४–साधु को आधा उदर तो भोजन तथा व्यजन कर पूर्ण करना और चतुर्थ भाग जल कर पूर्ण करना और चतुर्थ भाग उदर का रीता राखना सो प्रामाणिक आहार है और यातैं जो अधिक भोजन करे ताके अप्रमाण नामा दोष है। प्रमाणतैं अधिक आहार करे ताके स्वाध्याय नहीं प्रवर्तती है तथा षट् आवश्यक क्रिया करने को नहीं समर्थ होय है, बहुत भोजन करने तैं ज्वरादिक संताप करे है निद्रा तथा आलस्यादिक दोष होयहैं॥२॥

नोट—अमरकोश तृतीय काण्ड में लिङ्गादि संग्रहवर्ग के २३ वें श्लोक में व्यंजन शब्द है उसके अर्थ में भाषाटीका कारने दही छाछ आदि का ग्रहण लिखा है॥

१३ अंगार दोष ४५–अति आसक्तता तैं आहार में अति लंपटी होय भोजन करे, ताके अंगार दोष होय है॥

१४ धूम्र दोष ४६–भोजन को निंदतो मन बिगाड़तो ग्लानी करतो जो भोजन करे और जो यो भोजन सुंदर नहीं अनिष्ट है

इत्यादिक परिणाम में क्लेश करतो भोजन करे ताके धूम्र नामा दोष होय है, ऐसे छियालीस दोष कहे तिनको टालदिगम्बर साधु भोजन करे हैं॥

अथ अधःकर्म महादोष–यह अधःकर्म्म महादोष ४६ दोष ३२ अंतराय से अलग है जो मुनिनाम धराय इस अधःकर्म सहित आहारकरे वोह मुनि नहीं महाभ्रष्टा चारी है, इस अधःकर्म दोष का खुलासा इस प्रकारहै कि जिन क्रियाओं में ६ कायके जीवों के प्राणों का घात होय उसे आरंभ कहिये और जिस में ६ काय के जीवों को उपद्रव होय उसे उपद्रवण कहिये और जिसमें ६ कायके जीवों के अंग का छेदन होय उसे विद्रावण कहिये और जिसमें ६ काय के जीवों को संताप उपजे उसे परितापन कहिये सो जिन क्रिया कार्यों से ६ काय के जीवों को आरंभ उपद्रवण विद्रावण परितापनकर होय उस कर जो आहार आप किया होय अथवा अन्य तें कराया होय अथवा अन्यकरे उसे भला जाना होय मन करके बचन करके काय करके ऐसे नव भेद कर जो आहार उपजा सो अधःकर्म दोष करके दूषित जानना सो संयमी को दूर ही तैं परिहार करना जो अधःकर्म करके आहार किया सो मुनि ही नहीं वह गृहस्थी है। सो यह अधःकर्म दोष ४६ दोषों से भिन्न महा दोष है।

नोट—अगर यहां कोई प्रश्न करे कि मन बचन काय करछै काय के जीवों का घात कर भोजन आप करे अन्य तैं करावे अन्य करते को भला जाने ताको अधःकर्म दोष कहा है सो मुनि आपका हस्त तैं भोजन करे नहीं फिर यह दोष यहां कैसे कहा ताका उत्तर जो कहे बिना मंद ज्ञानी कैसे जाने जगत में अन्यमत का भेषीकरें भी हैं करावें भी हैं तथा जिन मत में भी अनेक भेषी करे हैं कहकर करावें हैं इस से ऐसे महा दोष जान इसका त्याग करना और अन्य अधःकर्म से आहार लेने वाले को भ्रष्ट जानना॥

मुनिराज को देने योग्य भोजन

जब कभी अपने देश तथा नगर में मुनि पधारें और यह उमैद हो कि शायद मुनि हमारे स्थान में भी आहार को आवें तो रसोई का ऐसा प्रबंध करो कि गेहूं चावल दाल वगैरा सब भोजन की सामग्री भले प्रकार निरख संवार कर तैय्यार कर लो, चक्की साफ करके दिन में आटा जैन स्त्री अपने हाथ से पीसे, घी, सोधका उत्तम जाति के घर का हो, सुभे को जब दिन निकल आवे तब खूब चांदनी जगह में देख भालकर बडी हिफाजत से रसोई का काम शुरू करो, और जो स्त्री रसोई बनावे स्नान कर के सुफेद धोती धोकर सुखा करके रसोई करे स्त्री रजस्वला न हो, पानी खूब पका हुआ (खूब गरम किया हुआ) रख छोड़े यह पानी श्रावक स्नान करके आप कूए से छान कर भर लावे ऐसे कुएसे भर कर लावे जिस पर उस वक्त नीच जाति पानी न भरते हों ताकि कुए में उनके पानी की छींट अपने वर्तन के न लगे इस पानी से रसोई बनावे जिस भोजन में खटाई का आमेज़ हो वह पत्थर की या अल्यूमिनयम की या रांग की कटोरी या लकड़ी का कठड़ा या कोरे मिट्टी के बरतन में रखनी चाहिये कांसी पीतल के वरतन में खटाई चटनी सूंठ या कढी दही वगैरा नहीं रखनी चाहिये हरे पत्तों पर भी नहीं रखे, और बड़ी हिफाजत से रसोई बनावे ताकि वाल न पड़जावे कोई सुरसरी कीड़ा वगैरा न पड़जावे जब मुनिराज के आने का वकत हो उससे आद घंटा पहले रसोई तैय्यार हो जानी चाहिये रोटी ऐसे तरीके से रखनी चाहिये जो गरम रहें सूकने न पावें रसोई के आगे परदा तान देवे ऊपर से भी रसोई खुली हुई न हो अर्थात् ऊपर चंदवा बंधा

हुआहो परदे के आगे एक संदली(मेज)लगावे उसे खूब धोले उसके ऊपर एक थाल में पूजन तथा अर्घ के लिये अष्ट द्रव्य बनाकर सुफेद साफे (पलासने) से ढक कर रख छोडो तीन गड़वे यानि लोटो में वही प्राशुक पानी भर कर उनके ऊपर सफेद छलना डाल कर मेज पर रख छोड़ो एक परात में सूका हुआ थोड़ा घास रख कर उस परात को मेज के आगे जमीन पर रख छोड़ो उस परात के आगे एक बड़ा पटड़ा रक्खो उस पटड़े के आगे एक और पटड़ा रक्खो इन मेज पटड़ों के ऊपर सफैद चांदनी तान देवें ताकि हवा या पक्षियों के सबब से मेज पर वा भोजन में ऊपर से कुछ पड़ने नहीं पावे ।

मुनिराज को पड़गाहने (भोजन के वास्ते आए मुनि का सत्कार करने) की विधि ।

अगर भोजन के वास्ते कोई जैन मुनि को नोता देवे या बुलाने जावे तो जैन मुनि नोता लेवें नहीं बुलाये से किसी के घर जावें नहीं स्वयमेव ही अपनी इच्छानुसार भोजन के वास्ते वस्ती में जावें हैं सो जब भोजन के वास्ते मुनिराज के आने का समय होवे उस वक्त एक पुरुष या स्त्री स्नान करके शुद्ध सुफेद धोती पहन कर सुफेद चद्दर या दुपट्टा ओढ़कर सबसे अगले पटड़े की बराबर में खड़ा हो जावे अगर रसोई अपने मकान में करी है और मुनिराज के वहां आने की आशा है तो अपनी हवेली के बाहरले दरवाजे पर खड़ा हो जावे। और मेज़ पर जो तीन लोटे प्राशुक पानी के भर कर रखे थे उन में से एक लोटा दोनों हाथ में ले लेवे उसके ऊपर सुफेद छलना ढका हुआ हो जब सामने से मुनिराज आवें चार पांच गज

का फासला रह जावे तो यह कहे आइये भो मुनिराज आहार पानी शुद्ध है तिष्ठ तिष्ठ तिष्ठ सो जो पटड़ा सब से परे है मुनिराज उस पर आनकर खड़े हो जावेंगे उस वक्त जो लोटा हाथों में लेरखा है, उसकेजलसे मुनिराजके चरण धोवेजब चरण धो चुको तब जो छलना लोटे के ऊपर था उस से मुनिराज के चरण पूंछकर वह छलना और लोटा दोनों जमीन पर रखदो मेज पर न रक्खो और जिसने चरणधोये उस के हाथ दूसरा जैनी धुला देवे जिसने हाथ धोए हाथ झड झड़ा वे नहीं धोती वगैरा अपवित्र वस्त्र से नहीं पूंछे, जब मुनिराजके चरण साफ हो जावेंगे तब मुनिराज दूसरे पटड़े पर जा खड़े होंगे तब जो सामग्री थाल में है एक जैनी उस से मुनिराज की पूजन करे या अर्घ देवे, जो अपने को अर्घ का पाठ याद न हो तो यह पाठ पढे:—

गुरुपूजन पाठ॥ दोहा॥

जल अक्षत और पुष्प ले, नेवज बहु परकार।
चंदनकुंकुम घसलियो,दीप धूप फल सार॥ १॥
अष्ट द्रव्यको अर्घकर, गुरु,चरणन ढिगलाय
पूजूं मन वचकाय सो, श्री मुनिवर के पाय॥२॥
भोग विलासादिक सर्व, तजे गुरुनिर्ग्रंथ।
बारह विधि तप तप्त हैं, साधत हैं शिवपंथ॥ ३॥
जो पूजत गुरुचरण को, आठों द्रव्य चढाय।
अष्ट कर्म को नाश कर, ज्ञान अमर पद पाय।

ओंह्रीं श्री गुरुभ्योनमः॥ अर्घम्॥

नोट—अगर पूजन करनी हो तो मुनिराज को पूजन जो नीचे लिखते हैं चाहे वह पढ कर पूजा करो चाहे कोई और।

अथ श्री मुनिराज की पूजा ।

(हकीम ज्ञानचन्द जैनी लाहौर निवासी कृत)

दोहा--श्री जिनवर को वंदके शारद को सिर नाय,
पूजूं गुरुनिर्ग्रंथ को चरणन में सिरलाय ।

अडिल छंद ।

तेरह विधिचारित्र गुरू पाले सही,
रूपदिगम्बर धरत गुणनके हैं मही ।
तिन चरणन सिर नाय अरज इक मैं करूं,
आवो तिष्ठो यहां पूज दुख को हरूं ।

ओं ह्रीं श्री गुरुभ्यो नमः अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् अत्रमम सन्निहितोभव भव वषट् संनिधीकरणम् ॥

अथ अष्टकं लिख्यते चाल योगीरासे की ।

निर्मल जलकी भरकर झारी गुरु सन्मुख मैं लाऊं। जलधारा दे श्री गुरु पूजूं कर्म कलंक बहाऊं ।श्री गुरु यह मुनिराज दिगम्बर इन चरणन चितलाऊं। भवकी त्रास मिटै अब तासों मनवांछित फलपाऊं ॥ ओं ह्रीं श्री गुरुभ्यो नमः जलमर्पयामि ॥

चंदन केसर जल में घिसकर और कपूर मिलाऊं । भव,आताप निवारणकारण श्रीगुरु चरण चढाऊं । श्रीगुरु यह मुनिराज दिगम्बर इन चरणन चितलाऊं । भवको त्रास मिटै अब तासो । मन वाञ्छित फलपाऊं । ॐ ह्रीं श्री गुरुभ्यो नमः चंदनमर्पयामि ॥

तंदुल शशि सम धवल अनूपम भरकर थारी लाऊं । मन वच तनुसे गुरुपद पूजूं महा अखयपद पाऊं॥ श्रीगुरु यह मुनिनराज

दिगम्बर इन चरणन चित लाऊं। भवकी त्रास मिटै अब तासौं मनबांछित फल पाऊं। ॐ ह्रीं श्री गुरुभ्यो नमः अक्षतानर्पयामि।

पारिजात मन्दार कलपतरु पुष्प अनेक सुहाई सोले तुम पद पूज करत ही काम व्याधि मिटजाई। श्री गुरु यह मुनिराज दिगम्बर इन चरणन चित लाऊं। भवकी त्रास मिटै अब तासों मन वांछित फलपाऊं॥ ॐ ह्रीं श्री गुरुभ्यो नमः पुष्पाण्यर्पयामि॥

लाडू घेवर और कलाकंद फेणी आदि मंगाई। क्षुधारोग के दूर करणको लाकर तुरत चढाई। श्रीगुरु यह मुनिराज दिगम्बर इन चरणन चित लाऊं। भवकी त्रास मिटै अब तासौं मन बांछित फल पाऊं। ॐ ह्रीं श्री गुरुभ्यो नमः नैवेद्यमर्पयामि।

रत्नदीप मणि ज्योति ललितवर कंचन थाल धरीजे। सो ले तुमपद पूज करत ही मोह महातम छीजे॥ श्रीगुरु यह मुनिराज दिगम्बर इन चरणन चितलाऊं। भव की त्रास मिटै अब तासौं मन बांछित फल पाऊं॥ ॐ ह्रीं श्री गुरुभ्यो नमः दीपमर्पयामि॥

अगर तगर कृष्णागुरुचन्दन धूपदशांग बनाई। भर धूपायन आगेखेऊं दुष्ट कर्म जर जाई॥ श्री गुरु यह मुनिराज दिगम्बर इन चरणन चित लाऊं। भवकी त्रास मिटै अवतासौं मनबांछित फलपाऊं॥ ॐ ह्रीं श्री गुरुभ्यो नमः धूपमर्पयामि॥

श्री फल पिस्ता लौंग सुपारी केला आम मंगाऊं। सो ले तुम पद पूज करत ही मोक्ष महाफल पाऊं॥ श्री गुरु यह मुनिराज दिगम्बर इन चरणन चितलाऊं। भव की त्रास मिटै अब तासौं मन बांछित फल पाऊं॥ ॐ ह्रीं श्री गुरुभ्यो नमः फलमर्पयामि।

जल चंदन इत्यादिक लेकर सुन्दर अर्घ बनाऊं। सो ले तुमपद पूज करत ही शिव रमणी वर पाऊं॥ श्रीगुरु यह मुनिराज दिग-

म्बर इन चरणन चित लाऊं। भव की त्रास मिटै अबतासें मन-वांछित फल पाऊं॥ ॐ ह्रीं श्री गुरुभ्यो नमः। अर्घंमर्पयामि।

(जयमाल) सोरठा॥

ठाइसगुणजेमूल तिन को पालत यह गुरू।
परम दिगम्बर रूप नमूं चरण सिरनायके।

छंद--जय रूपदिगम्बर मुनि जी, वंदित तुमको निशिदिन जी। यह भरतखंड है सुन्दर। इसमें शोभें जिन मन्दिर। यह स्वर्गपुरी सम सोहे। भवियन का मन अति मोहे। जहां झालर घंटा वाजें। श्री जिनवर बिम्ब विराजें॥२॥ जहां श्रावक मिलकर आवें गुरु चरणन सीस नवावें। आहारादिक क्रिया करके। जय जय ध्वनि श्रावक भरकै॥३॥ रत्नत्रय निधि तुम लीनी शिव पद में मनशा कीनी। हम चरणन शीश नवावें। भव भव के पातक जावें। तुम करत तपस्या भारी। कभी करते हार विहारी। कभी ध्यान धरत हो वनमें। नवकार जपत हो मनमें। कभी शास्त्र पढ़त हो दिन में, व्रत नेम करो छिन छिन में। तुम ध्यान अगम्य अपारा। को वरण सके वह सारा। इस पंचमकाल के माहीं। तुम सम अरु दूजा नाहीं। तुम काम तजा अतिभारी। तातैं जी भये ब्रह्मचारी। इत्या-दिक गुण तुम माहीं। वर्णन करिये कहां ताईं। देश देशन करत विहारा। भवि जीव संबोधे सारा। तुम देत धर्म उपदेशा। जासो कटते कर्म कलेशा। तुम को भविजन जे ध्यावें। ते स्वर्गादिक सुख पावें। यह अरज सुनो प्रभुमेरी। हनोकर्म न लावो देरी। मैं वार वार यह चाहूं। तुमरे गुण हा नित गाऊं॥

दोहा--श्री गुरु यह मुनिराजका पूजन परमरसाल।
ज्ञानचंद जेभविपढ़े, पावेंमोक्षविशाल॥ इति गुरुपूजनं संपूर्णम्॥

मुनिराज को आहार इस प्रकार देना चाहिये।

जब मुनिराज आहार के लिये आवें तुम उनको पडगाहो तब रसोई में एक स्त्री एक बहुत बड़े थाल में जो जो सामग्री बनाई हैं अलग अलग कटोरियों में भरकर थाल में रख कर ऊपर सुफैद कपड़ा ढक कर जब मुनिराज की पूजा बाहिर होने लगे अर्थात् जब मुनिराज पटड़े पर आकर खड़े हों एक श्रावक या श्राविका रसोई में से वोह भोजन का थाल लाकर संदली पर रख छोडे, जब अर्घ उतार ले या पूजन के बाद मुनि को आहार देना शुरू करो उससे पहले मुनि के हाथ धुलाओ मुनि के हाथों का धोया हुआ पानी उस परात में पड़े जिस में सूका हुवा घास थोड़ासा रखा हुवा है जो संदली के आगे रखी है घास उसमें इस वास्ते रखते हैं ताकि पानी की छींट नहीं उडे जब हाथ धुलावो भोजन के थाल परसे कपड़ा अलग कर दो और भोजन देना शुरू करो॥

आहार देना शुरू करो।

रोटी के छोटे छोटे टुकड़े पांच सात तोड़ कर जिस चीज के साथ मिलाकर देने हों उस में मिला लो मसलन दाल के साथ मिलाकर देना चाहते हो तो वह टुकड़े दालवाली कटोरी में डालकर उन को दाल में रौंथ लो फिर दाहने हाथ से उस टुकड़े का ग्रासला बना कर मुनिराज के हाथ में देदो मुनिराज भोजन लेने को दोनों हाथ मिला कर आगे पसार देते हैं सो श्रावक एक ग्रास उनके हाथ में रख देता है, उस ग्रास को मुनिराज बायें हाथ की तरफ करके दोनों जुड़े हुए हाथों से खाते हैं और जब खाते हैं तो दोनों हाथ अलग अलग नहीं करते दोनों की कुल्ले (कनिष्ठा) उंगली

एक की साथ दूसरी फंसी रहती हैं सो मुख तक दोनों हाथ साथ ही जाते हैं और यह कायदा नहीं कि वह सारा ग्रास मुनिराज एक साथ ही मुख में डाल लेवें नहीं जितना आवे उतना उतना करके खाते हैं सो अगर ग्रास बड़ा है एक दफे मुखमें नहीं आता तो उस ग्रास को दो या तीन वार मुख में डाल कर खा लेते हैं खा कर फिर हाथ श्रावक के आगे कर देते हैं श्रावक फिर उसी तरह ग्रास हाथ पर रख देता है इसी प्रकार जितने ग्रास लेने मञ्जूर हों तब तक हाथ आगे करते रहते हैं जब लेना मञ्जूर नहीं होता तब हाथ आगे नहीं करते, जब भोजन ले चुकते हैं तब अपनी नजर जल की तरफ करके हाथ आगे करते हैं सो श्रावक जल देताहै सो जितना जल पीना हो उतनी बार अंजली आगे करते हैं जब जल और नहीं पीना चाहते तो धोने को दोनों हाथ जोड़ कर आगे कर देते हैं श्रावक जल डाल कर धुलवा देते हैं जो वरतन नीचे रखा जिस में सूकाहुआ घास है वह पानी उस बरतन में पड़ता है फिर उसी दम एक श्रावक दाहने एक बायें खड़ा हो दोनों छलनों से हाथ पूंछता है मुंह पूंछ देता है अगर मूंछ या दाड़ीमें कुछ लग रहा हो तो वह भी साफ कर देता है अगर आंख में कुछ लग रहा हो या बदनमें कुछ चुभरहा हो या मिट्टी गारा कुछ लगा हुआ हो तो उसी वकत बदन साफकर देता है इधर तो दो जैनी हाथ साफ करते हैं उधर एक जैनी कमंडलु धोकर जो उसमें पहला पानी है,उस पानी को उसमें से निकालकर उसी घासवाली परातमें डाल देता है और प्राशुक पानी उस कमंडलुमें भर देता है। बस मुनिराज हाथसाफ होजाने के बाद अपना कमंडलु पीछी उठाकर चल देते हैं इस प्रकार मुनियों को आहार देना चाहिये अब आगे कछ और समझाते हैं॥

समझावट।

१—ग्रास इस तरह से दो कि जब ग्रास दो दाहने हाथ की अंगुलियों में ग्रास बोच कर अंगुलियों का रुख ऊपर को करलो दूसरा बायां हाथ उस के नीचे करलो ताकि हाथ से भोजन देती दफे गिरे नहीं क्योंकि अगर हाथसे भोजन गिरजावे तो मुनि को अंतराय होजाता है फिर उस दिन वह आहार नहीं लेते वापिस चले जाते हैं ॥ और भोजन का ग्रास मुनिराज के हाथों में बायें हाथ की तरफ को रखो और ऐसी हिफाजत से और इतना रखो जो उन के हाथ से उछल कर नीचें न गिरे परंतु जहां तक हो ग्रास बड़ा सारा बना कर देना चाहिये क्योंकि मुनिराज गिनती के ग्रास लेते हैं परंतु बहुत बड़ा भी नहीं देवे और पानी भी इसी तरह पिलाओ इतना पानी हाथों में डालो जो ऊपर को उछलकर न खिंडे और सहज से डालो ताकि छीटें न उडें।

२—जो भोजन का ग्रास मुनिराज के हाथ में दो वह इतना गरम न हो कि मुनिराज का हाथ भी जले और खातेहुए मुख भी जले।

३—आहार में नमक मिरच ठीक हो जियादा कम न हो।

४—काली मिरच ऐसी बारीक पीस कर डालो जो मुनिराज को आहार लेती दफे मक्खी का भ्रम न हो।

५—जीरा सौंफ वगैरा ऐसा बारीक पीस कर डालो जो उन्हें कीड़े आदि का भ्रम न हो॥

६—लाल मिरच भी डाल सकते हो।

७—नमक सींधा या सांभर दोनों दे सकते हो॥

८—हर प्रकार की चटनी दे सकते हो अगर चटनी देनी हो तो ग्रास देती दफे ग्रास के लगादो।

९—इमली में पकौड़ी डालकर भी दे सकते हो।

१०-जब आहार दो कभी दाल में ग्रास बना कर दो कभी तरकारी में कभी सूंठिये में कभी पकोड़ी में कभी क्षीर का ग्रास दे दिया कभी हलवे का ग्रास देदिया कभी छौंकी हुई दाल का कभी सीवीं (भुजिया) का कभी बनाए हुए आम वगैरा मेवे का इस प्रकार जो२ चीज खिलानी मंजूर हों उनका अलग २ ग्रास बना कर खिलाओ।

११-मिट्ठे भोजन की साथ नमकीन या खट्टा मिलाकर ग्रासमत दो मसलन हलवे का ग्रास देना चाहते हो तो उसके साथ दाल मत मिलाओ खीरमें दही मत मिलाओ गोया जैसे तुम आप खाते हो उसी प्रकार अलग२ ग्रास दो, अगर कोई बे समझ भाषा ग्रंथों के पाठी पंडित जिन्होंने आचारांग के संस्कृत प्राकृत ग्रंथ नहीं देखे हों कलियुगी अभिमानी पंडित तुम्हें यह कहें कि मुनिराज को हलवा दाल खटाई क्षीर दही सब एक साथ मिलाकर दो तो उस मूर्ख का कहा मत मानो मुनिराज इनसान हैं जिस प्रकार इनसानको खिलाना चाहिये उसी तरह मुनिराज को खिलावो सर्व गालिया गोल एक करके तो पशु को दिया करते हैं इसलिये किसी कलियुगी पंडित का कहना मत मानो और ४६ दोषों के वर्णन में ४३वां दोष देखो। वह लेख तो सिरफ मुनि के वास्ते है कि अगर मुनिको कोई सब वस्तु मिलाकर देवे तो जैसा देवे मुनि सब खालेवे, स्वाद नहीं देखे मुनिके तो सिरफ अभक्ष्य का त्याग है अगर मुनिके आहार में अभक्ष्य आजावे या भोजन

४६ दोष १४ मल सहित होय तो अंतराय करें वरना जैसा दातार देवे वैसा खावें अपने मुख से कुछ भी नहीं कहैं।

१२—जब मुनिराज भोजन करके चले जाते हैं तो जो भोजन उस थाल में बच रहे सो बाज़ २ भाई तो उसे आप खाते हैं और बाज२ उसको जूठा समझ कर गऊ वगैरा जीवों को खिला देते हैं सो हमारी राय में वह भोजन बिलकुल जूठा नहीं होता क्यों कि मुनिराज को भोजन देने वाला ऊंचे से देता है और मुनिराज का जूठा हाथ भी उस भोजन के नहीं लगता फिर वह भोजन क्यों फैंका जाता है पस हमारी राय में उस थाल में बचे हुए भोजन को अगर आप खा लेवें या अपने बाल बच्चों को खिलादें तो कोई दोष नहीं है परंतु इसकी बाबत शास्त्र में कोई लेख नहीं है जैसा जिसका परिणाम हो वैसा करे।

१३—मुनिराज के वास्ते पका हुआ (खूब गरम किया हुआ) पानी रख छोड़ना चाहिये॥

१४—गरमियों की मौसम में उनके भोजन में बहुत गरम मसाला नहीं डालना ताकि शरीर में गर्मी की वाधा न हो।

१५—गर्मी की मौसम में उन्हें बहुत गरम वस्तु आहार में नहीं देनी सरदी की मौसम में बहुत सरद नहीं देनी॥

१६—जब मुनिराज को आहार करा चुको फिर जो मुनिराज के साथ क्षुल्लक या कोई और श्रावक हो उसे बुला कर जिमाना चाहिये॥

१७—अगर मुनिराज को भोजन के समय कुछ फल मेवा खिलाना चाहो मसलन आंम खरबूजा अंगूर सेब कश्मीरी नासपाति संतरे लीची, लकाठ, केला वगैरा जो खिलाना चाहो तो

साबत फल नहीं देना साबत फल का उनके त्याग है तुच्छ फल का भी उनके त्याग है जो फल आम वगैरा मुनि के खाने योग्य हो उन को खिलाना हो पहले से ही छील बनाकर कटोरियों में भोजन वाले थाल में रख लो ग्रास के बीच में कभी २ उनका ग्रास भी देदो सीधी पकौड़ी पापड़ छौंकी हुई दाल जो चाहो दो, पापड़ तोड़ कर चूरा कर के दो, अगर दूध पिलाना चाहो तो भोजन के बाद पानी पिलाने के बाद पिलावो! और उन के भोजन के थाल के पास दूध पहिले से ही एक बर्तन में खुला हुआ रख छोड़ो ताकि अगर वह दूध को देख कर पीना पसन्द करें तो पानी थोडा पीवें।

१८—मुनिराज को सबजी चौदश अष्टमी को भी देसकते हो इनके तिथी का विचार नहीं होता यह तो अतिथी हैं सदाही व्रती हैं। इनके तिथी का विचार नहीं होता।

१९—भोजन करती दफे मुनिराज बीच में भी जलपीते हैं सो जब जल की तरफ रुख देखो जल दो जब वह हाथ धोना चाहें हाथ धुलाओ॥

२०—मेज पर तीन लोटे इस वास्ते रखते हैं एक जल पिलाने को एक हाथ धुलाने को एक पांव धोने को; सो जिस लोटे से पहले पांव धोये वह अलग रख दो, भोजन के हाथ धोकर पूंछ कर लगाओ जो मुनिराज के चरण पूंछे वह भी हाथधो डाले और जिन वस्त्रों से चरण पोंछो उन्हें भी अलग रक्खो वह भोजन की मेज पर नहीं रखना और पानी पिलाने वाला लोटा अच्छा बड़ा हो ऐसा न हो पानी पिलाने के समय उसमें पानी थोड़ा रह जावे॥

२१—आहार के समय रसोई में कई श्रावकों को कपड़े बदलने

चाहियें ताकि कोई पूजा करे कोई चरण धोवे कोई जल देने पर खड़ा हो कोई ग्रास देवे॥

२२-भोजन देती दफे बोलो मत सैन से काम लो और जो भोजन देना हो एक बार ही रसोई में से ले आवो और रसोई में से दुबारा भोजन वगैरा लाओ तो मुनि के अंतराय हो जाता है।

२३-जो स्त्री उन का आहार तैय्यार करे माहवारी स्त्री धर्म वगैरा से पवित्र हो।

२४-मुनिराज के वास्ते जो भोजन थाल में लावो सब कटोरी पत्थर लकड़ी मिट्टी कली चान्दी वगैरह ऐसी वस्तु की हों जो भोजन कसने न पावें॥

२५-बरतन सब साफ हों॥

२६-हरे पत्तों पर थाल में कोई वस्तु नहीं रखना॥

२७-भोजन के थाल में साबत फल न हो बनारा हुआ हो। अगर अंगूर भी देने हों तो बनार कर गुठली निकालदो साबत फल का मुनि के त्याग है।

२८-मुनिराज के भोजन में २२ अभक्ष्य न हों॥

२९-भोजन में बाल न पडने पावे अगर बाल निकल आया तो मुनिराज भोजन छोड़ कर चले जावेंगे॥

३०-रसोई में गोबर से न लीपा जावे न कहीं चमड़ा नजर आवे न रंगीन कपड़ा न भोजन पर रेशम ऊन का कपड़ा हो न आहार देने वाला रेशम या उन का वस्त्र पहने न मुनिराज को आग बलती दीखे न धुवां निकलता दीखे चूल्हे के सामने परदा लगा देवे ताकि मुनिराज को अग्नि नजर न आवे उन के आने से पहिले लकड़ी बुझा देवे।

३१-रसोई में कोई अपवित्र कपड़े पहन कर न घुसे न जूता लेजावे चाकू के सींग वगैरा का दस्ता न हो ।

३२-मेज के आगे धरती में घास सूका हुआ पराली वगैरा इस वास्ते रखते हैं कि मुनिराज उसके ऊपर हाथ धोते हैं उस में घास होने से जूठा पानी नहीं उछलता छींट वगैरा नहीं आती और जमीन पर पानी फैंकना नहीं पड़ता कमंडलु धोकर उस का पानी भी उसी घास वाली परात में डाल देते हैं ।

३३-मुनिराज को कच्ची रोटी आहार में मत दो खूब सेककर जैसी हम गृहस्थी आप खाते हैं वैसी दो। चिट्ठीदार से यह मतलब है जली हुई न हो और सुभे ही पकाकर मत रखो जो ठंडी ठीकरे होजावे उनके आने से थोडी देर पहले बनावो जो गरम गरमदे सको।

३४-पक्के पानी की आठ पहरकी मियाद है इस लिये पानी खूब औंटालेना चाहिये उसमें लौंग डालने की कोई जरूरत नहीं अगर डालो तो गरमी की मौसम में छोटी इलायची सरदी की मौसममें एक दो लौंग डालो बहुत मतडालो अगर मुनि बीमार नजर आवें तो मुनिको प्राशुक दवा भी देनी चाहिये ।

३५-जबतक मुनि आहार न करजावें तबतक आप मतखावो।

३६-आठसात बड़े बड़े सुफैद छलने पांच सात सुफैद धोती चार पांच सुफैद चादर बनालेनी चाहियें ।

३७-जब मुनि आहार को आवें आप नंगे सिर मत खड़े रहो ।

३८-मुनियों को स्त्री भी आहार देसकती हैं स्त्री आहार देना चाहें तो मरदों की तरह सब काम आप भुक्ता लेवें ॥

३९–स्त्रियों को चाहिये कि जो मुनिके वास्ते आहार बनावें या उन को आहार देवें अपने सिरके केशों को एक सुफैदरुमाल से बांधलेवें या सिर के केश खूब गूंथे हुए हों ताकि सिर के कपड़ा के लगने से भोजन में बाल न गिरसके क्योंकि अगर भोजन में बाल गिरपड़ा तो मुनिराज ग्रास में बाल देखकर भोजन नहीं खावेंगे उनके अंतराय हो जावेगा।

४०–मुनिराज को न कोई नौता दे सकता है और न उनसे भोजन के बारे में कुछ कह सकता है।

दातारके २१ गुण।

९ नवधा भक्ति, ७ गुण, ५ आभूषण, दान देनेवाले दातार में यह २१ गुण होने चाहियें।

दातार की नवधा भक्ति।

१—प्रति ग्रह—तिष्ठ, तिष्ठ, तिष्ठ, ऐसे तीनवार कह खड़ा राखे॥

२—मुनि को उच्चस्थान देवे॥

३—मुनिके चरणों को प्रमाणीक प्रासुक जल से धोवे॥

४—मुनिकी पूजा करे।

५—मुनि को नमस्कार करे।

६—दातार अपना मन शुद्ध राखे।

७—दातार वचन शुद्ध (सत्य) बोले।

८—दातार अपनी काया शुद्ध राखे

९—दातार मुनिवर को शुद्धभोजन देवे॥

दातार के सप्त गुण।

१—दातार के दान देने में धर्म का श्रद्धान हो।

२—सांधुके रत्नत्रयादि गुणों में अनुराग रूप भक्ति।

३—दातार दयावान होय।

४—दानकी शुद्धता अशुद्धता का ज्ञाता होय।

५—दान देने से इस लोक तथा पर लोक संबंधी भोगों की अभिलाषा जिस के नहीं होय।

६—दातार क्षमावान होय, दातार दान देने की सामर्थ्य रखता होय

दातार को इन सात गुणों सहित दान देना कल्याण कारी है।

दातार के ५ आभूषण।

१ आनंद पूर्वक देना। २ आदरपूर्वक देना। ३ प्रियवचन कह कर देना। ४ निर्मल भाव रखना। ५ जन्म सफल मानना।

दातार के ५ दूषण।

१—विलंब से (देरी करके) देना, २ विमुखहोकर (नाकचढ़ाकर) देना। ३ दुर्वचन कहकर, [खफाहोकर] देना, ४ निरादर करके [भिक्षुक की तौहीन अपमान करके] देना, ५ दान देकर पछताना।

दातारमें यह पांच दूषण नहीं होने चाहियें।

मुनि के आहार की विधि जैनियों के न जानने से वर्त्तमान के मुनिराजों को तकलीफें।

मुनि को आहार देने की विधि न जानने से ऋषभदेव स्वामी की साथ जो हजारों राजा दीक्षित हुये थे सब भ्रष्ट हो गये थे ऋषभदेव स्वामी जो तीर्थङ्कर थे उन्हों को भी छह मास तक आहार मयस्सिर नहीं हुवा था, सो वह तो अतुल बल के धारी तीर्थङ्कर थे वे तो छह महीने का योग और छह महीने तक अन्तराय एवं बारह मास तक आहार की पीड़ा से व्याकुल नहीं हुये क्षुधा की परीषह को सहगये परन्तु सामान्य मुनि हीन शक्ति के धारी के तो बगैर आहार के प्राण नहीं रह सकते चूंकि इस काल में दिन बदिन शरीरों के बल आयु और कद घटते २ चले जारहे हैं यह ही कारण है कि श्री ऋषभदेव ने छः मास का पारणा करा था और श्री महावीर स्वामी ने सिर्फ बेलाही किया था सो जितनी ताकत महावीर स्वामी के समय में शरीरों में थी अब उस से भी बहुत घट गई है इस लिये अगर आहार की विधि न जानने से इस समय के मुनियों को आहार न मिले या विधि के विरुद्ध मिले तो मुनिधर्म पलना बड़ा कठिन है सो इस समय में जैनियों में विद्या का अभाव होने से कुछ ऐसा रिवाज चल पड़ा है कि जो बारहखड़ी पढ़ लेता है उस ही के नाम पर पण्डित जी का खिताब लगाया

जाता है और जो दो चार,भाषा के शास्त्र पढ़ लेता है वह तो इनकी सभा का शिरोमणि बन जाता है सभा के बीच में आप शास्त्र पढ़ता हुआ अपने आपको बड़ा भारी आचार्य के समान समझने लगता है और मनमाने उपदेश देता है वे रोक टोक उलटे पुलटे मन कल्पित गपोड़े सुनाता है सो ऐसों से मुनिराज के आहार की बाबत अनजान जैनियोंने दरयाफत किया तो कलियुगी पण्डित जी ने यह कह दिया कि मुनिराज को ऐसी रोटी आहार में दो जिस पर तवे की चिट्टी न पड़ी होवे सो नावाकिफ जैनियों ने क्या काम करा चिट्टी पड़ने के डर की मारी रोटी को जरा ही सेक कर उतार कर रख लेते जो अन्दरसे बिलकुल कच्ची होती थी ऐसी कच्ची रोटी मुनिराज को आहार में देनेसे मुनिराज के पेटमें अनेक बार सखत दरद हुआ किसी कलियुगी पण्डित ने यह कहा कि जब मुनिराज आहार को आवे उन्हें आग बलती या धूवां नजर न आवे सो भोले लोग सुभे ही सात बजे रोटी पका रखने लगे जो आहार के वकत तक सूककर ठीकरे समान करड़ी हो जाती, किसी कलियुगी पंडित ने यह कहा कि मुनिराज की रसोई में कलीका बर्तन न हो सो जैनी पीतल के बर्तनोंमें पकाकर रख देते सो जिन दाल भाजी में खटाई का आमेज होता, देर तक पीतल के बर्तन में पड़ी रहने से उस भोजन में कल चढ़ जाने से मुनिराजको आहार के बाद वमन होगया किसी कलियुगी पंडित ने यह कहाकि मुनिराज को आहार देने की जो रसोई में पानी लगाया जावे वह लौंगों से चरच लेना चाहिये और गरम करके पानी बर्तना चाहिये सो लोग पानी में खूब लौंगें डालकर पानी पकाकर रसोई में वर्तते और वही पानी पीने को देते सो इधर तो जेठ साढ़ की सखत गरमी उधर पीने को मिला लौंगों का पानी सो मुनिराज का तमाम मुंह आगया हलक तक अंदर छाले पड़ गए, इस प्रकार ना वाकिफों के आहार देने से जैन मुनियों को बहुत सी तकलीफें उठानी पड़ती हैं॥

इस का कारण यही है कि कुछ जमाने से जैनियों पर जुलम करने वालों तथा जैनियों का संघार करने वालों के जुलम से जैन मुनियों का होना बंद होगया था इसी सबब से जैनियों में मुनियों के आहार की विधि के जान-कार बहुत कम हो गए हैं सो विधि न जानने से मुनियों को आहार ठीक तरह नहीं दिया जा सकता और ठीक तरह आहार ना मिलने से मुनि धर्म पलना बड़ा कठिन है सो जैनियों के शुभ के उदय से हिंदुस्तान में मुसलमानों की सलतन फैली जिस में जैनियों के दुशमन जालिम जुलम की चक्की में पीसे गए चूंकि यह नीति है कि अपने दुश्मन का दुश्मन अपना मित्र होता है सो इस नीति से मुसलमानों के अहदमें जैनियों का पीछा जालमों से छूट गया और जैनियों ने मुसलमानों के अहद में इतनी तरक्की पाई

कि अकबरबादशाह ने तो अपने राज्य में जैनियों के पर्व के दिनों में कुल जीव हिंसा बंद करदी थी और उन दिनों में आप मांस भक्षण नहीं करता था ॥

और जैनियों के शुभ के उदय से ही इस समय गवरमिंट अंगरेजो के राज्य का प्रकाश हुवा जिसमें जालमों का रहा सहा जुलम भी नेस्तनाबूद हो गया और जैनियों ने हटकर अपना धर्म संभाला पस जैन धर्म का हट कर प्रचार होने से जैन मुनियों का होना फिर संभव हो गया है क्योंकि शास्त्रों में जैनमुनियों का होना पंचमकाल के अंत तक लिखा है ॥

इस लिये अब जैनियों को मुनिवर के आहार की विधि से ज्ञात होने को हमने इस पुस्तक में मुनिवर के अहार की विधि लिखी है सो हर जैन पुरुष स्त्री बाल गोपाल को हमारी यह पुस्तक पढ कर मुनिवर के आहार की विधि से वाकिफ हो जाना चाहिये यह पुस्तक हर जैन पाठशाला में और कन्या पाठशाला में बालकों को जरूर पढा देनी चाहिये ॥

बाईस परीषह भाषा वचनिका।

(हकीम ज्ञानचन्द जैनी लाहौर निवासी कृत)

जैन धर्म के साधु जिन को जैन यति या जैन मुनि कहते हैं तप के समय अनेक प्रकार की परीषह सहते हैं परीषह नाम तकलीफ का है बहुत सी तकलीफें जो एक जाति की हैं उन सब को यहां एक ही गिना है ऐसी ऐसी जैन के मुनि २२ प्रकार की महां घोर तकलीफें सहते हैं उन में से किसी समय कोई मुनि के एक साथ १९ तक उदय आजाती हैं सोना चलना बैठना इन तीनों में से एक काल में एक उदय आती है और शीत उष्ण इन दोनों में से एक उदय आती है सो इन २२ प्रकार की परीषहों का वर्णन जैन कवियों ने छन्दो बद्ध लिखा है इस को मन्दज्ञानी अनपढ़ पुरुष स्त्री बालक तथा कन्या अच्छी तरह नहीं समझ सकते सो हमने यह भाषा वचनिका रूप सरल कथन इस वास्ते लिखा है ताकि आसानी से हर एक की समझ में आजावे ॥

अथ बाईस परीषहों के नाम (सवैया)

भूख[१] सहैं प्यास[२] सहैं शीत[३] सहैं घाम[४] सहैं।
काटैं जीव[५] सोभी सहैं और सहैं नग्न[६] की ॥

७ ८
होयजी अरती सहैं नारीकृत और सहैं।
९ १० ११
चालन की आसन की और सहैं शयन की।
१२ १३
दुष्ट कहैं वाक् सहैं बाधैं दुष्ट वह भी सहैं।
१४ १५ १६ १७
याचे नहीं पावें नहीं रोय होय तृण की॥
१८ १९
तन लगो मैल सहैं किया अपमान सहैं।
२० २१ २२
प्रज्ञा जी अज्ञान सहैं दर्शन मलीन की॥

दोहा-कही परीषह बीस द्वय, सहैं यती धर ध्यान।
उन्निस तक आवें उदय जिन आगम परमान॥
आसन शयन विहार में, शीत उष्ण में जोय।
ज्ञानचन्द इन पांच में, एक समय हो दोय॥

१ प्रथम क्षुधा (भूख) परीषह।

जैनमुनि भूख की महान तकलीफ सहते हैं जब भोजन को जाते हैं किसी से मांगते नहीं बिना मांगे मिले तो लेना वोह भी क्षत्रिय वैश्य ब्राह्मण आदि उत्तम कुलका दिया लेवें शूद्र का दिया नहीं लेवें और उत्तम कुलका भी ४६ दोष ३२ अंतराय टार आहार लेवे हैं और इस में भी अनेक ऐसी ऐंडी बैंडी प्रतिज्ञा करें ताके भोजन बहुत ही कठिनता से मिले जैसे इस प्रकार नियम कर आहार को जावें कि आज ग्राममें आहार को नहीं जावेंगे वन में ही मिलेगा तो लेवेंगे और वन की फलानी दिशा में ही लेवेंगे दूसरी दिशा में नहीं लेवेंगे आहार देने वाला फलाने रंग का मनुष्य होगा तो लेवेंगे नातर नहीं, और भोजन में भी आहार फलानी वस्तु का बना हुआ मिलेगा तो लेवेंगे नातर नहीं, अपने मनकी बात किसी को कहें नहीं स्वयमेव उसी ही वस्तु का बिना मांगा पर कर दिया शुद्ध भोजन मिल गया तो लेवें वरना फिर उसी तरह तप स्थान में

वापिस आकर कई दिन का योगधारतिष्ठ फिर जब आहार को जावें तब भी आहार की विधि नहीं मिले तब फिर उसी तरह वापस आकर ध्यान धरतिष्ठें इस तरह जैन मुनियों को महीनों तक आहार की प्राप्ति नहीं होती जिससे शरीर सूख कर पिंजरे समान होजाता है भूख की इतनी बाधा होते हुये भी लेटें नहीं हाय हाय करें नहीं ऐसी अवस्था में भी उसी तरह बराबर दृढ़ता से योगधार जैनके यति तप करें हैं॥

२ दूसरी तृषा (प्यास) परीषह।

जैनमुनि तृषा कहिये प्यास की महान तकलीफ सहते हैं जब जेष्ठ, आषाढ आदि गरम ऋतु में जब कई दिनतक आहार को नहीं जाते या आहार की विधि नहीं मिलती तो मारे प्यास के कंठ खुश्क हो जाता है, गले में कांटे हो जाते हैं आप किसी जल स्थान पर पानी पीने नहीं जावें अपने हाथ से लेकर नहीं पीवें दूसरा लाकर देवे तो भी नहीं पीवें जब आहार को जावें अगर आहार योग्य विधि से मिलजावे तो थोडा सा जल आहार की साथ पीवें वह भी गरम पका हुवा लेवें उस में भी अगर आहार में जियादा मिरच हों सूंठ का पानी हो जिससे और दूनी प्यास भडके जो मिले सो ही लेवें मुख से शीतल जल को नही कहें न मन में इच्छा करें न मन में खेद करें उससे जो और दूनी प्यास भडके कंठ में प्यास की दाह से जो नेत्र चलायमान होने लगें ऐसी प्यास की बाधा होते हुये भी उसकी वेदना कम करने को धूप में से लूवों में से उठकर छाया में नहीं जावें ठंडे स्थान में नहीं बैठें कुरला या स्नान नहीं करें उसी तरह दृढता से प्यास की दाह की वेदना सहते हुये बराबर जैन के यति तप करते रहते हैं॥

३ तीसरी शीत (हिम) परीषह।

जैन मुनि शीत परीषह कहिये जाडे के मौसम में शीत की महान बाधा सहते हैं जाडे के मौसम में नदी (दरया) के किनारे तप करते हैं ऊपर से नग्न शरीर पर बरफ पडती है जोर की ठंडी हवा के झकोरे लगते हैं वारिश होती है ओले पडते हैं ऐसी शीत की सखत तकलीफ, के कम करने को शरीर पर वस्त्र वगैरा कुछ भी नहीं ओढ़ें शरीर को ढकें नहीं उठकर धूप की गरमी साये में नहीं जावें हवा की ओट नहीं करें अग्नि से नहीं सेकें कहीं छिपें नहीं उसी तरह चौडे मैदान में पत्थर के खंभ समान नदी के किनाने पर तिष्ठे हुए शीत की ऐसी महान् बाधा सहते हुए जैन के यति तप करते रहते हैं॥

४ चौथी (गरमी) की परीषह।

जैन मुनि उष्णता कहिये गरमी की महान् परीषह सहते हैं ग्रीष्म ऋतु में जब जेठ आषाढ आदि मासों में महान् सखत धूप पडती है तब पर्वतों की चोटी पर तप करते हैं नीचे पत्थर सखत गरम हो आता है ऊपर से धूप की दताड पडती है सखत गरम लूवां शरीर को जलाये डालती हैं, अंदर प्यास की ऐसी सखत वेदना होती है कि हफतों से पानी नहीं मिला मारे गरमी के शरीर से पसीने चू रहे हैं ऐसी सखत गरमी की वेदना को कम करने के लिये वृक्ष वगैरा की छाया में नहीं जावें, अन्य मत के साधुओं की तरह छतरी वगैरा ऊपर नहीं ताने उसी तरह पहाड की चोटी पर ऐसी सखत गरमी की बाधा सहते हुए शांत चित्त जैन के यति तप करते रहते हैं॥

५ दंशमशक जानवरों के काटने की परीषह।

जैन मुनियों के नग्न शरीर में दंश मशकादि कहिये अनेक डांस मच्छर मक्खी भिरड ततैये बिच्छू आदि डंक मारते हैं महाल की मक्खियां आन कर चिमटजावें बिच्छू शरीर पर चढ कर दवादव शरीर में डंक मारें कानखजूरे, सांप शरीर के ऊपर चढजांय, शेर, रीछ, बघेरे, भेडिये आन कर सताने लगें खाने लगें काटने लगें तौ भी जैन के यति जरा नहीं घबराते उन से डरकर भागे नहीं छिपे नहीं उनको मारें नहीं हटावें नहीं अपने शरीर पर से अपने हाथ से उतारें नहीं दूसरे से कहकर उतरवावें नहीं ऐसा घोर उपसर्ग होते हुए भी जैन के यति दृढता से तप करते रहते हैं देखो सुकुमाल मुनि का शरीर गिदडी तीन दिन तक अपने बच्चों सहित मुनि के दोनों पग खाती रही आंतों तक खागई उसी तरह श्री सुकुमाल महामुनि धीरवीर अंत समय तक ध्यानारूढ तप करते रहे भाईयो धन्य हैं जैन के यति जो ऐसी सखत तकलीफ सह कर तप करते रहते हैं हम जैसे निर्बल कायर पुरुषों के तो ऐसी तकलीफों के चिंतवन मात्र से ही आंखों से आंसू टपकने लगते हैं॥

६ छठी नग्न परीषह।

जैन के यति सदाकाल निरावरण कहिये आवरण रहित अर्थात् बिलकुल नग्न रहते हैं, शीत काल में चाहे उन्हें कितनी ही शरदी सतावे और गरम ऋतु में चाहे कितनी ही गरमी लगे परन्तु जैन के यति कपडा वगेरा से कभी भी अपने शरीर को नहीं ढके हैं और नग्न रहने से जो मन में तो काम वेदना और बाहिर लोक लाज का भय उत्पन्न होता है इन दोनों को त्याग कर जैसे नग्न बालक किसी के देखने से

अपने मन में नग्न पने से नहीं सुकचावें उसी तरह जैन के यति जैसे माता के उदर से पैदा हुए उसी तरह वस्त्रादि रहित निर्विकार चित्त बिलकुल नग्न रह कर नग्नपने की परीषह सहते हुए तप करते रहते हैं ॥

यदि यहां कोई अन्यमती यह सवाल करे कि जैन के यति कपड़ा क्यों नहीं ओढते सो उसका उत्तर यह है कि जैन के यति जब गृहस्थ अवस्था को त्याग कर साधु अवस्था को ग्रहण करते हैं तो जो जगत की वस्तु धन दौलत जायदाद मकान सवारी नौकर चाकर स्त्री पुत्रादिक जो कुल उनके शरीर को सुखदाई वस्तु उनके पास होती है सब को छोड कर गृह में बसने का त्याग कर निर्जन बन तथा पहाड़ों की कंदरा में रह कर तप करते रहते हैं चूंकि कपड़ा भी शरीर को आराम देने के वास्ते पहनते हैं इस वास्ते वह कपडा भी नहीं रखते दूसरे जब वह सर्व धन दौलत असबाब का त्याग करते हैं तो कपडा भी तो धन दौलत असबाब में शामिल है इस वास्ते उन की साथ कपडे का भी त्याग करते हैं, तीसरे कपडा भी जीव हिंसा और ध्यान में विघ्न डालने का कारण है इस हेतु से भी कपडे का त्याग करते हैं जैसे जब वस्त्र में पसेव आवे तथा वस्त्र के शरीर का मैल लगे तो पसेव तथा शरीर के मैल में उपजने वाले जूं आदि जीव जब वस्त्र में उत्पन्न होंय तब जिस समय उस वस्त्र को पहने या ओढने बठने में निद्रा लेने में बदन से मसला जाने में पटकने में धोवने में धूप के तावडा में डालने से जीवों की हिंसा होय है तथा वस्त्रके मलिन वस्तु रुधिर मलादिक लगे तब धोवे तो असंजमी होय जल काय के अनेक जीवों की हिंसा होय और न धोवे तो देखने वालों को ग्लानि आवे पसीने की बदबो आवे रुधिर राध मलके संयोग से मक्खी वगैरा जीव आवें उन्हें उडावे तो असंयमी होवे वस्त्र फटजावे तो उसे सीवना पडे सूई तागा कैंची की जरूरत होने से किसी से मांगने पडें तथा आप का वस्त्र कोई उठा कर चुराकर लेजावे तो क्रोध उपजे तथा लज्जा उपजे लज्जा से नगर ग्राम में जाने से असमर्थ होय सुकच आवे तब वस्त्र के वास्ते सवाल करना पडे अर्थात् मांगना पडे, सो जो मांगे वह सब में नीच है क्योंकि दुनियां में सब से तुच्छ मंगता है तब उनके साधुपना उच्चपना पूज्यपना कैसे रहा याचना दीनता कर मांगने पर लाभ में हर्ष अलाभ में विषाद (रंज) उपजे अगर वस्त्र उमदा कीमती मुलायम महीन मिलें तो अभिमान उपजे बन पर्वत निर्जन स्थानों में रहने से उसके हरण का भय उपजे कीमती होने से बनादिक में चोर के डर से छिपा राखे तो मायाचार उपजे मोटा सस्ता पुराना कमजोर मैला छोटा मिले तो परिणामों में कलुषता उपजे शीत ऋतु में मोटा वस्त्र चाहे

गरमी में वारीक वस्त्र चाहे बहुत मैला पुराना हो जावे फट जावे तब दातार के सन्मुख जाता हुआ सुकचावे लज्जा आवे स्वाध्याय, ध्यान के समय जोर से पवन चलने से वस्त्र हाले तब स्वाध्याय ध्यान में विघ्न होय वर्षा में भीगे, भीगा पहने तो बिमारी उत्पन्न होने का भय लगे तब उनको सुकाने पड़ें जब सुकाने डाले तो उनकी चौकसी करे, कि कोई उठाकर न लेजावे वस्त्र में कान खजूरा, बिच्छू, सांप वगैरा बडजावे तब उनको झटकावे, सो कहां तक लिखें वस्त्र रखने से साधुपने में अनेक दोष आवे हैं इस कारण से जैन के दिगम्बर साधु कपडा नहीं रखते उनका तो मुख्य काम तप करना आत्मध्यान करना धर्म्मोपदेश देना जीवों की दया पालनाही है, इसलिये जैन के यति बरफानी तथा गरम ऋतु में सदाकाल नग्न रह कर ही तप करते रहते हैं॥

७ अरति (ग्लानि) की परीषह।

जैन मुनि अरति कहिये ग्लानि (नफरत) का महापरीषह सहते हैं जब जैन यति तप कर रहे हों कोई जैन मत का द्वेषी उनके पास गंदगी वगैरा या सडी हुई सखत बदबूदार वस्तु लाकर डाल दे या उन के शरीर पर लाकर डालदे बहेसदे तब वह मुनि बदबू से बचने को स्थान छोड कर अन्यत्र जावें नहीं अपने हाथ से, शरीर वगैरा साफ करें नहीं किसी से कह कर साफ करवावें नहीं इसको कर्म जनित उपसर्ग जानना जिंदगी आहार पानी का त्याग कर एकासन ध्यान धरतिष्ठें, अगर कोई जैन भक्त उन का यह उपसर्ग देख दूर न करे तो वह मुनि उसी हालत में योगधार उसी स्थान पर प्राण देवें अगर विहार कहिये सफर करते हुए रास्ते में कहीं कोई स्थान ऐसा गलीज (गंदा) आजावे जहां मांस का ढेर तथा चाम का ढेर तथा खून राधि हाड बिष्टा वगैरा पडे हों तथा मरे हुये कुत्ते वगैरा का शरीर सड गया हो जिस की बदबो के मारे नाक फटी आती हो ऐसे स्थान को देखकर जैन के मुनि नाक मूंह को नहीं सकोडते उस वस्तु का वैसा ही स्वभाव जानकर उस से घृणा नहीं करते तथा अपने या पास के मुनि के शरीर से राधि रुधिर जखमों से झिरती नजर आवे या कोई कुष्टी पास आ बैठे इत्यादिक अवस्था होते हुए भी अपने तथा पर के शरीर से नफरत नहीं करते इस प्रकार अरति कहिये नफरत नहीं करने की परीषह को जीतते हुए जैन के यति तप करते रहते हैं॥

८ अथ स्त्री परीषह।

तरुण सुंदर रूपवान् स्त्री को देख कर अच्छे अच्छे धीरवीरों का मन चलायमान होजाय है स्त्रियों के नेत्र रूपी बाणों से बडे, बडे, योधा घायल हो जाते हैं वैष्णव

मत में यह लिखा है कि सुंदर स्त्री को देख कर ब्रह्मा जी का भी मन डिग गया महादेव पार्वती के ऐसे वशीभूत थे कि उसकी जुदाई सहने को असमर्थ थे हे जैनी भाइयो इस काम पिशाच रूपी योधा ने तमाम जगत जन जीते हैं सब को अपने वश कर रखा है गुलाब के फूलों की माफिक सुंदर कोमल तरुण स्त्रियें अपने पास तिष्ठते हुए अपने को हाव भाव दिखाते हुए काम सेवन की प्रार्थना करते हुए तरुण अवस्था में काम अग्नि को मारना जीतना काबू में रखना कोई आसान बात नहीं है यह सिरफ जैन मुनि ही हैं जो इस काम के काबू में नहीं आए जैन के यति ऐसे धीर वीर होते हैं कि कैसी ही सुंदर स्त्री उनके पास आवे उन्हें काम रूपी वचन कहे उनका ध्यान डिगाने को उन के शरीर पर हाथ फेरे तथा उनके शरीर से लिपट जावे तो भी उनका मन चलाय मान नहीं होय ऐसी दुष्ट स्त्री कृत परीषह को जैन के यति अपनी अवस्था बालक समान रख कर जीते हैं ।

९ चर्य्या कहिये सफर की परीषह ।

साधु को चतुरमास टार एक स्थान में नहीं रहना तीर्थ भूमि में विहार करना यह साधु के वास्ते आवश्यक है और जैन मुनियों के हर प्रकार की सवारी का त्याग है जैन मुनि पैदल ही चलते हैं और जैन मुनि अन्यमत के साधुओं की तरह पांव में जूता तथा पावड़ी वगैरा नहीं पहनें, पांव के रस्सी चीथडा वगैरा कुछ भी नहीं बांधे नग्न पैर ही सफर करते हैं जब सफर करते करते पांव में छाले पड जावें तथा बहुत थक जावें पहले गृस्थ अवस्था में जो हाथी घोड़ा पालकी गाडी वगैरा में चलते थे उन सुखों को जरा भी याद नहीं करते थकावट के खौफ से आराम करने को विहार बंद नहीं करते पैर में छाले पडे हुए भी तीर्थ क्षेत्रों में घूमते रहते हैं मार्ग में जो हिम ऋतु में शीत की गर्म ऋतु में गरमी के आताप का पैरों में कांटे वगैरा चुभने का दुख होता है जैन मुनि सब शम भावन से सहते हैं इस कदर सफर की परीषह होते हुए जरा भी नहीं घबराते सुभे के वक्त सफर करके मंजिलपर पहुंच कर लेटते नहीं पैर वगैरा दबवाते नहीं ज्यूंही पहुंचते हैं त्यूंही ध्यान धर कर जैन के धीर वीर मुनि तप करने लगते हैं ॥

१० निषद्या (एकासन) परीषह ।

जैन मुनि निषद्या कहिये एक आसन तिष्ठने की महान घोर तकलीफ सहते हैं, जैन के यति जहां स्त्री, बालक तथा मूढ जनों का आना - जाना नहीं होय, वहीं पहाड़ की कंदरा तथा गुफा तथा चोटी पर या निर्जन वन विषे जहां तप करें कीड़ा आदिक

जीव रहित प्राशुक भूमि देख कर वहां ध्यान धर तिष्टे हैं, सो जहां बैठ कर तथा खडे हो कर ध्यान धर कर तप करते हैं तथा रात्री के समय लेटे हैं जिस आसन तिष्टे उसी आसन रहैं, जब बैठे बैठे अंग अकड जावें तथा लात पैर आदि सो जावें तो भी आसन नहीं बदलें, करवट नहीं लेवें हलन चलन क्रिया नहीं करें जिस अवस्था में हो उसी तरह रहैं आसन को इधर उधर नहीं फेरें चतुरमास वगैरा में अब कभी बहुत से दिनों तथा पक्षों तथा मासों का ध्यान धरें तो शरीर पर बेलें चढ जाती हैं दीमक घर बनालेती हैं वन के जीव आन कर खुजलाते हैं चाहे बीमारी में कैसी ही सख्त तकलीफ हो पेट में सख्त दरद हो जाडा देकर धुडधुडी से बुखार चढता हो आंखें दुखती हों शरीर म जखम हो होरहे हों या बन में जहां वह तिष्ठे हों अग्नि लग जावे या भूकंप से जिस पहाड पर वह तप कर रहे हैं वह पहाड फट जावे सख्त बारिश से चारों तरफ पानी भर कर मार्ग रुक जावे या देश में राज में विघ्न पड़ने से उपद्रव हो जावे या कोई जैन मत का द्वेषी व जैन मुनियों का संघार करने लगे उन को पकड़ पकड़ कर अग्नि में जलाने लगे चीरने लगे विदार ने लगे ऐसी अवस्था होते हुए भी जैन के यति उसी आसन तिष्ठे रहते हैं न तो स्थान छोड़ कर भागते हैं न आसन बदलें न हलन चलन क्रिया करें इस प्रकार आसन परीषह को जीत कर जली लकडी के ठूंठ समान तिष्ठ कर जैन के यति तप करते रहते हैं ॥

११ शय्या (सोने) की परीषह।

जैन के यति जब रात्री को निद्रा लेने को लेटें तो जमीन को कंकर पत्थर डले आदि रहित न तो अपने हाथ से आप करें न दूसरे से करवावें उसी कंकर पत्थर वाली जमीन पर बगैर बिस्तरे के ही लेट जाते हैं चाहे कंकर चुभे चाहे पत्थर चुभे गृहस्थ अवस्था में जो नरम नरम बिस्तरों पर सोते थे उस सुख को जरा भी याद नहीं करते उसी तरह जिस आसन सांझ से लेटें उसी आसन मुरदे समान सुभे तक लेटे रहते हैं जीव रहित पृथ्वी देख कर चांदने से लेट जाते हैं और सुभे को जब चांदना हो जाये तब सहज में उठते हैं ताके जीवों को बाधा न हो और जैन के यति दूसरे मत के साधुवों की तरह यह नहीं करते सांझ से, सो गये सुभे को जागे, नहीं अब दीक्षा धारण करते हैं तो सहज सहज निद्रा को घटाकर अपने वश में कर लेते हैं दिन में कभी नहीं सोते रात्री को भी बहुत रात्री गये रात्रि के चौथे भाग में बहुत ही अल्प काल निद्रा लेवे हैं रात्री को बाकी समय लेटे हुए जागते हुये दिनकी माफिक ही ध्यान म लौलीन हो आत्मा के निज स्वभाव का तथा धर्म ध्यान का चिंतवन करते रहते हैं,

सो जिस निद्रा ने जगत को जीत लिया बाल, वृद्ध, तरुण स्त्री, पुरुष कोई भी नहीं छोडा जो निद्रा सूली सारखी तकलीफ में भी आन दवाती है उस अजीत निद्रा को जैन के यती जीत कर तमाम रात्री में अल्प काल निद्रा ले कर बाकी तमाम रात्री आत्म ध्यान में तथा धर्म ध्यान में लौलीन हो एक ही करवट पडे हुये तप करते रहते हैं ॥

१२ आक्रोश दुष्टवाक्य परीषह ।

जैनके यति दुष्टवाक्य कहिये दुष्टोंकरकहे कठोर वचन गाली आदि सदाही सम भावन से सहते हैं जन के यति तमाम जगत जीवों के हितु सब के रक्षक परमदयालु होते हैं किसी काल में भी किसी जीव पर क्रोध नहीं करते जब जैनमत के द्वेषी या दुष्ट जन जैन मुनियों को मर्मछेदक दुरवचन कहैं कि यह पाखंडी हैं, ठग हैं भेशी हैं, चोर हैं, रहजन हैं, पापी हैं, मलीन हैं, वेशरम हैं लज्जा रहित हैं, या गालीदेवें तो ऐसी अवस्था में जैन के मुनि अगर क्रोध करें तप का अतिशय उनमें इतना है अगर पहाडकी तरफ भी क्रूरदृष्टी करें तो पहाड़ भस्म होजावे परंतु जैनके मुनि महा धीर वीर दुष्टों के कठोर मर्म छेदक वचनों को अशुभ कर्म का फल जान कर मन में जरा भी क्रोध नहीं करते दुर्जनों के दुर्वचन रूपी बाणों को क्षमा रूपी ढाल की ओट कर आक्रोश परीषह सह कर तप करते रहते हैं ॥

१३ वध परीषह ।

जैन के यति अनेक प्रकार की वध बंधन परीषह सहते हैं जब जगत के दुष्ट जन तथा जैन मुनियों के द्वेषी जैनमुनियों को लाठी सोटा इत्यादि से मारते हैं दरख्त में बांध देते हैं तथा खंभ से बांध कर उन के नग्न शरीर पर चाबुक मारते हैं, बैंतें मारते हैं खाल को रूम रूम उडा देते हैं । उलटे लटका देते हैं कोल्हू में पीडते हैं भारी पत्थर के नीचे दबा देते हैं बसोलों से आरी से उनके हाथ पैर चीर डालते हैं नाक कान भुजा पग आदि काट डालते हैं जलती अग्नि में डाल जला देते हैं ऐसे महान संकट होते हुये भी जैन के यति न रोते हैं न चिल्लाते न दुख देने वालों पर क्रोध करते हैं उसे अपने अशुभ कर्म का फल जान कर ऐसी वध परीषह को चुप चाप सम्भावन से सहते हुए तप करते रहते हैं ॥

१४ याचना (न मांगने की) परीषह ।

जैन के यति अपनी सारी उमर में कभी किसी से याचना कहिये सवाल नहीं करते जब भोजन के वास्ते बसती आदि में जावें तब भोजन न मांगने से जैन के यति

को मुद्दत तक आहार की विधि न मिलने से भोजन प्राप्त नहीं होता तब तमाम तन सूक कर पिंजर हो जाता है तथा कैसे ही सखत बिमार हो तथा कितनी ही सरदी लगे अपने उपकारार्थ किसी से भी कुछ नहीं मांगते, जैन के यति अपनी तमाम उमर में कभी भी किसी से सवाल नहीं करते न मांगने की उनके सखत प्रतिज्ञा होती है भोजन भी विना मांगा दूसरे कर दिया मिले तो लेवें वरना प्राण जावो तो जावो पर मांगे नहीं इस प्रकार जैन के यति याचना परीषह को जीत कर तप करते रहते हैं ॥

१५ अलाभ (न मिलने) की परीषह।

जैन के यति के अलाभ कहिये न मिलने की तकलीफ सदा ही बनी रहती है जब कभी जैन के यति जितने दिनों का योग धार ध्यान अवस्था में तिष्ठें और जब पारने का दिन आवे तो आचारांग सूत्र के अनुसार दिन के समय मौन धार एकबार नगर में भोजन के अर्थ जावे हैं रास्ते में अगर ३२ अन्तराय में से कोई भी न होवे तो बस्ती में उत्तम कुलों के द्वारे दर्शन मात्र ठहर कर सात गृहतक जावें जियादा स्थानों पर नहीं जावें विना पडगाहे किसी के मकान के निज स्थान में प्रवेश करे नहीं और मुख से भोजन मागें नहीं सैन कर कहें नहीं अगर कोई आप से ही कहे के महाराज आहार पानी शुद्ध है आइये अंदर पधारिये तो अंदर जावें वहां भी अगर ४६ दोषों में से कोई भी दोष आहार में देखें या ३२ अंतराय में से कोई भी अंतराय हो जावे तो आहार नहीं लेवें विना भोजन करे ही वापिस आजावें ३२ अंतराय और ४६ दोष टार जो मुनि के आहार लेने की विधि है वह इतनी कठिन है कि जैन मुनि को आहार की प्राप्ति ऐसी कठिन है जैसे निर्धन को निधि की प्राप्ति का होना अर्थात् बहुत ही कठिन है इस वास्ते जैन मुनियों के सदा ही अलाभ का कारण है अगर भोजन विधि से न मिले तो फिर उसी तरह कितने ही दिनका योगधार तिष्ठे हैं भोजन न मिलने की इतनी तकलीफ होते हुये भी जैन के मुनि अपने मनमें जरा भी खेद नहीं मानते इस तरह जैन मुनियों को महिनों तक भोजन नहीं मिलता जिस से बदन सूक कर पिंजर हो जाता है ऐसे अलाभ परीषह होते हुये भी जैन के धीर वीर मुनि तप करते रहते हैं ॥

१६ रोग परीषह।

जब जैन मुनि के शरीर में कोई बिमारी उत्पन्न होवे या बहुत से फोड़े शरीर में हो जावें पकजावें उन के अंदर राध पीड़ा करे तब किसी पर चीरा नहीं दिलवावें न उस के ऊपर फटने को कुछ बांधें जब जखम पड़जावें उन पर अपने हाथ से मरहम नहीं

लगावें जब पेट में छाती में सिर में सखत दरद हो कोई दवा किसी से मांगकर नहीं खावें और हमारे दरद हो रहा है हमारा इलाज करो हमें कोई दवा दो ऐसे वचन भी किसी को नहीं कहें इस प्रकार जब आंखे दुख कर सूज जावें जाडा दे कर सखत बुखार चढे कभी भी किसी बिमारी में लेटें नहीं हाय हाय करें नहीं तन पर कुछ ओढें नहीं जब शरीर में बलगम बढ जावे और भोजन ऐसा मिले जो उस से और बढ जावे तो आहार दाता से यह नहीं कहें कि इस से हमारी बिमारी बढ जावेगी जैसा मिला वैसा ही लेवें अपने मुख से कुछ भी नहीं कहें इस प्रकार सखत से सखत बिमारी में भी जैन के यति पर से सहायता नहीं मांगे और अपने आप भी अपना इलाज नहीं करें ऐसी रोग परीषह को सहते हुये जैन के यति तप करते रहते हैं॥

१७ तृणस्पर्श (कांटे चुभने की) परीषह।

जैन मुनियों के तृण परीषह कहिये जब चलती दफे पैरों में कांटे चुभ जाते हैं गोखरू चुभ जाते हैं पैरों में काच की कोर तथा मेख चुभ जाती हैं तथा शरीर के चिमटने वाले जहरीले घास के कांटे चिमट जाते हैं तो अपने हाथ से अपने तन से उन्हें दूर नहीं करें न किसी को कहें कि यह हमारे शरीर से निकाल दो या दूर कर दो उसी तरह पैरों में कांटे गोखरू मेख काच की कोर चुभे हुये ही चलें ज्यूं ज्यूं पैर धरें वह और अंदर को घुसे सो उस का दरद कम करने को पांव को जमीन पर सहज से या मोड कर नहीं राखें ऐसी हालत में भी जैसे अच्छा पग रख कर गमन करना चाहिये उसी तरह पग रखकर गमन करें मंजल पर पहुंच कर भी अपने हाथ से नहीं काढें किसी दूसरे को कह कर निकलवावें नहीं ऐसी तृण परीषह सहते हुये जैन के यति तप करते रहते हैं॥

१८ मल (मल के काटने की) परीषह।

गृहस्थ अवस्था में हर रोज स्नान करते थे सुगंधादि लगाते थे सो मुनि पने में स्नान का त्याग भया सखत गरमी में जब पसीने चूवें तो ऊपर से उड कर उस में गरदा आनकर शरीर पर जम जावे सो उस के दूर करने को स्नान नहीं करें न उसे अपने हाथ से पूंछे न दूसरे को पूंछने को कहें न उसे देख कर मन में यह विचार करें कि इससे हम कुरूप हो रहे हैं बुरे लगे हैं और जब हाथों के नाखून बढ जावें तो उन को अपने हाथ से नहीं उतारें न दूसरे को उन के उतार ने को कहें और जब बाल बढ आवें तो किसी से नहीं कटवावें आप भी कैंची वगैरा से न काटें इस खयाल से कि उन में जूं पडने से

जीव हिंसा का कारण पैदा न हो उन्हें अपने हाथ से पकड कर खैंच खैंचकर फैंक देते हैं सिर के मूंछ के दाढ़ी के हाथ से सब उखाड़ डालते हैं उन को उखाड़ने के समय उनकी साथ जो शरीर का मांस उखड़ आवे था खून निकलने लगे या नाक मूंछ के बाल उपाडते हुये दरद हो उस की जरा भी परवाह नहीं करते ऐसी मल परीषह सहते हुए जैन के यति तप करते रहते हैं ॥

१९ सत्कार पुरस्कार (मान अपमान) परीषह।

जैन मुनि मान अपमान कहिये सदाकाल इज्जती बेइज्जती की सर्व परीषह सरल भावों से सहते रहते हैं जब कोई जैन मुनियों को बे अदबी करे बे इज्जती करे उन का जरा भी आदर नहीं करे अच्छी जगह में से उन को उठाकर बुरे स्थान में फेंक देवे तथा उन को झिड़के गाली दे उन के लात मारे मुख पर रहपट मारे तथा ऐसे कहे के कल तो यह हमारे नौकर था हमारा गुलाम था खोमचा वेचता था भीख मांगता फिरे था आज यह मारे मान के मुनिवर बन बैठा इस प्रकार जो उन की सखत तौहीन करे बेइज्जती करे, था कोई उन के आगे आन कर हाथ जोडे, चरणों में सिर देवे शरीर दबावे विनयरूप खुशामद के वचन कहे ऐसी हालत में जैन के यति बेअदबी अविनय करने वाले से नाराज नहीं होवें उस पर खफा नहीं होवें उसे अपना दुशमन नहीं समझें और जो विनय सतकार करे उसे मित्र नहीं समझें दोनों में समभाव राखें इस प्रकार जैन के यति सत्कार पुरस्कार परीषह सहते हुये तप करते रहते हैं ॥

२० प्रज्ञा (ज्ञान के मद न करने की) परीषह।

जैनमुनि आगम अलंकार तर्कछंद व्याकरण आदि हर किसम की विद्या गुरुओं से पढते रहते हैं जब पढकर विद्या के ऐसे सागर हो जाते हैं कि जिन को कोई भी वादीवाद में नहीं जीत सके इस कदर विद्या हासिल करने पर भी जैनमुनि कभी भी विद्याका मद नहीं करते जब बोल बडी नम्रता से हित मित वचन कहें कटुक वचन हृदय विदारक वचन कभी भी मुख से नहीं निकालें इस प्रकार जन के यति प्रज्ञा परीषह को जीतते हुये तप करते रहते हैं ॥

२१ अज्ञान परीषह।

जब मुनि जो पाठ गुरु के पास पढें और उस के ज्ञानावरणी कर्म का तीव्र उदय होने से जो याद करे सो भूल जावे तथा पाठ को बहुतेरा घोके पर शुद्ध पाठ याद ही नहीं होवे और जब पाठ याद न होवे तब अगर गुरु या कोई दूसरा ऐसे वचन कहे कि यह तो मूर्ख है, पशु है, अज्ञानी है जड़बुद्धि है कुछ भी नहीं समझे, सो जैनमुनि अपनी

ऐसी हालत होते हुये भी अपने परिणाम निर्विकार रख कर इस महान परीषह को सहते हुये तप करते रहते हैं ॥

२२ अदर्शन परीषह।

जब जैनमुनि को घोर तप करते और कठिन परीषह सहते हुये बहुत से वर्ष गुजर जाव और उस के प्रभाव कर कोई ऋद्धि तथा ज्ञान चमत्कार उन को सिद्ध न होवे तो ऐसी अवस्था में अपने मन में ऐसा विचार नहीं करते कि मैं इतनी मुद्दत से ऐसे घोर तप कररहा हूं कोई ऋद्धि वगैरा सिद्ध नहीं हुई ग्रन्थों में जो तप बल से अनेक ऋद्धि अवधि वगैरा की सिद्धि होना लिखा है कहीं यह झूठ धोकेबाजी गपोड़े तो नहीं जनमुनि अपने मन में ऐसा भ्रम कभी भी नहीं करते दृढ श्रद्धानी हुवे हुवे अदर्शन परीषह को जीत कर तप करते रहते हैं ॥

जैन मुनियों के ठहरने का स्थान।

अब वह जमाना नहीं है कि जैनमुनि जंगल तथा पहाड़ों में रह कर अपने प्राण बचा सकें मुनि की बात तो दूर ही रहने दो पिछले जमाने में तो गृहस्थी जैनी भी बाल बच्चे सहित कतल किये जाते थे और जैनियों के ग्रंथ जलाए तथा डबोए जाते थे यह जो इस समय जैनी और जैन धर्म दिखलाई देता है यह सब मुसलमानी सलतनत और अंग्रेजी राज्य की कृपा है, अगरचे अंग्रेजी राज्य में कोई दूसरे फिरके वाला किसी पर जुलम नहीं कर सकता तो भी समय के प्रभाव से इस समय दुष्ट प्राणी इतने पैदा हो गए हैं कि जैनमुनियों के प्राणों की रक्षा जंगल तथा पहाड़ो में हो ही नहीं सकती और पिछले जमाने में भी कोई सारे ही मुनि वन तथा पहाड़ों में नहीं रहते थे पिछले जमाने में भी अनेक जैनमुनि जैन मंदिरों में रहते थे जिनकी हजारों नजीरें जैन पुराणों, और चरित्रों तथा कथाओं में मौजूद हैं कि अमुक श्रावकने जैन मंदिर में जाकर मुनि से यह पूछा था अमुक कन्या अमुक मुनि के पास जैन मंदिर में पढ़ने आया करती थी इतनी मुद्दत उनके पास पढ़ कर मुनि से अमुक २ व्रत लिया बस इस जमाने में जैनमुनि को जंगलों में रहना सख्त गलती है और जान बूझ कर दुष्टों के कबजे में आकर प्राण देने हैं इस में खुद कुशी (स्वहिंसा) (आत्म घात) पाप का दोष लगता है शास्त्रों में पर जीव की हिंसा का पाप तो लिखा ही है पर स्वहिंसा का भी महान् पाप लिखा है परन्तु जान कर अपने को मारना वा अपने को मारडालने का कारण बनाना यह भी जैनमत में पाप लिखा है देखो शास्त्रों में अनेक लेख हैं कि जब किसी

देश में बहुत वर्षों का दुर्भिक्ष पड़ता था तो अनेक जैनमुनि दूसरे देश में विहार कर जाते थे इसलिये इस जमाने में जैनमुनि के ठहरने का स्थान नगर में या नगर से बाहिर चार दिवाली वाले किसी जैनी के महफूज बाग में या नशियों के मकान में होना चाहिये और वह मकान ऐसा हो जिस में मुनि महाराज पडदे में खुली जगह में टट्टी पिशाव क्रिया कर सकें और धर्मोपदेश वा शास्त्र सभा और अपना संयम भली भांति साध सकें जिस मकान में मुनिराज ठहरें उस के आस पास नीच जाति न रहती हों और गैर जातिका आसपास कोई ऐसा मकान हो जो ऊपर से अपने मकान पर चढ़कर उस कमान में की कार्रवाई देखसकें ॥

जहां महाराज बैठें उनके नीचे चटाई बिछा देनी चाहिये और उनको उच्च स्थान तखत चौकी वगैरः पर चटाई बिछा कर बैठाना चाहिये आप ख्वाह कितना ही बड़ा धनवान् तथा राज्याधिकारी हो नीचे बैठे ॥

जब मुनिके पास जाओ उनको नमस्कार करो अगर पास बैठो और मुनिराजका ध्यान खुला हुवा हो तो उनको नमोस्तु कहो । यदि उसके उत्तर में मुनिराज तुमको आशीर्वाद देवें याने धर्मवृद्धि या पापक्षयोस्तु कहें तो उनका आशीर्वाद दोनों हाथ जोड़ कर उनको नमस्कार करके बड़े आदर से ग्रहण करो ॥

जब मुनिराज सभा में व्याख्यान कर रहे हों तब अपनी पंडिताई जताने को उनके व्याख्यान में दखल मत दो ॥

अगर सभा में कम वाकिफियत से मुनि से कोई बात गलत भी कही जावे तो तुम सभा के मध्य उनकी बात मत काटो फिर किसी मौके पर उनका एकान्त में इस तरह से कहो कि महाराज मैंने पहले यह बात फलाने शास्त्र में ऐसे देखी थी आपने इस प्रकार फरमाया मुझे इसमें भ्रमपैदा होगया है कृपा करके मेरी शंका निवारण करो।

मुनिराज की हिफाजत ।

जिस नगर में मुनिराज आवें वहां के जैनियों को उनके भोजन का बड़ा खयाल रखना चाहिये सिवाय जैनी के आटा वा घी वा पानी दूध वगैरः वस्तु किसी गैर के घर की नहीं होवे ताकि कोई जैनमत का द्वेषी जैनमुनि को जहर न देसके बाज़ बाज़ ढूंढिये भट्टारक भी जैनमुनि के दुश्मन होते हैं जैनमुनियों का बहुत खयाल रखना चाहिये ॥

रात को दिन को उनकी बड़ी हिफाजत रखनी चाहिये ताकि कोई हमारे दुश्मन उनको मरवा न देवें कुछ अरसे पहले आगरे नगर में मुनि आए थे एक भट्टारक

बहुत से आदमी लेकर आधी रात को उनको मरवा देने को गया था परन्तु जैनियों को खबर होगई थी इकट्ठे होकर मुनिराज को बचालिया था ॥

जो जैनी मुनिराज के सेवक हैं उन्हें इसबात का ध्यान रखना चाहिये कि वह जैनी या कलियुगी पंडित जो इस समय के मुनियों के बरखिलाफ हैं या कोई जैनमत का द्वेषी जैनी बनकर आहार बनाकर कुछ विष वगैरा मुनि को न दे देवे जिस नगर में मुनिराज ठहरें यह उस नगर के जैनियों की जिम्मेवारी है। कोई जादू टूने यंत्र मंत्र तंत्र वाला मुनिराज के स्थान में न घुसने पावे ॥

कोई अन्यमति या जैनी भी मुनिराज की सभा में या एकांत में भी आनकर मुनिराज से वाद विवाद लड़ाई झगड़ा न कर सके ॥

मुनिराज का इलाज।

जैनियों को मुनिराज की तबियत का खयाल रखना चाहिये अगर उनको कोई बीमारी हो तो हुशयार वैद्य से पूछकर आहारके पीछे उन्हें पानी पी, लेने के अखीर में दवा पिलादेनी चाहिये परन्तु उन्हें सहज से सुनादेना चाहिये कि इस में फलानी दवाई है फलाने रोग दूर करने को बनाई है, सो अगर वह लेना चाहेंगे तो हाथ आगे कर देवेंगे अगर नहीं लेवेंगे तो नहीं करेंगे ॥

अगर वह बीमार होजावें या मंजिल चल कर आए हों तो उन की टांगे दबानी चाहिये और हर तरह से उन की वैय्यावृत्य करनी चाहिये उनका बदन साफ रखना चाहिये ॥

अगर मुनिराज की आंखे दूखें या फोड़ा फुनसी जखम होजावे तो हम उनके मल्हम फोया वगैरा दवा लगा सकते हैं और अगर चलने से बहुत अशक्त होजावें तो वह जहां हों हम वहां ही उनके पास ही के स्थान के नजीक ही अपनी रसोई बना सकते हैं ताकि वह आहार को आसकें देखो श्रेणिक चरित्र सेठ बेहोश मुनि को अपने मकान पर उठा लाया था और जब तक वह अच्छे हुए उन्हें मुद्दत तक अपने मकान पर ही रक्खा दशमूल का तेल लगा लगा कर अच्छा किया था ॥

परदेशी जैनियों के लिये स्थान।

जिस नगर में मुनि आवें वहां के जैनियों को यह इंतजाम फौरन और लाजमी करना चाहिये कि जो परदेशी जैनीमुनी के दर्शनों को आवें उनके ठहरने का उमदा स्थान हो जिस में रसोई की जगह टट्टी की जगह का सब आराम हो पानी भरने को

माली टट्टी साफ करनेको चूहड़ा लगादेना चाहिये और रसोई के वास्ते जो बरतन मांगे देवें और आप हुए गरीब जैनियों का कपड़े रोटी का भी खियाल रक्खो ताकि उनको तकलीफ न होने से उनके भाव धर्म में स्थिर रहें ॥

जैनमुनि कैसे होने चाहियें।

हमने एक नीति की पुस्तक में यह लेख देखा है कि इस पंचम काल म ऐसे मनुष्य होवेंगे जो उनकी आंख में शहतीर होवेगा उस का तो जरा भी विचार नहीं करेंगे परंतु जो दूसरे की आंख में जरासा भी तिनका होवेगा उसे अंगुश्तनुमा करेंगे अर्थात् अपने हजारों ऐबों की तरफ तो बिलकुल खियाल नहीं करेंगे पराया जरासा भी छिद्र हेरते फिरेंगे सोई हाल इस जमाने के अनेक जैनियों का है कि वह यह नहीं विचारते कि पहले जमाने में जो जैनी होते थे जितने धर्मात्मा वह होते थे हम उसकी निसबत कितने धर्म पालन करते हैं हमारे और उनके आचरण में कितना फरक है इस तरफ तो जरा भी ध्यान नहीं देते सिरफ मुनियों की क्रियाओं में हुज्जत निकालते रहते हैं कि इस समय जो मुनि हो उसे बनों में बसना चाहिये सरदी में दरया के कनारे गरमी में पहाड़ की चोटी पर चतुर मास में वृक्ष के नीचे तप कर बाईस परीषह सहनी चाहियें देशकाल शरीर की ताकत की तरफ बिलकुल ध्यान नहीं देते सो ऐसा खियाल रखने वाले जैनी भाई सखत गलती पर हैं बड़े बड़े आचार्य्यों ने अनेक महान ग्रंथों में जो कुछ मुनि तथा श्रावक को करना लिखा है कहीं शुरू में कहीं आखिर में यह लिख दिया है कि जो कुछ करना हो देश और काल का प्रभाव देख कर करो अगर परमागम की यह आज्ञा न होती तो महान दुर्भिक्ष और दुष्ट राजा के समय मुनि दूसरे देश को विहार न किया करते देखो पिछले जमाने में भी सारे ही मुनि २२ परीषह नहीं सहते थे जो महान बल पराक्रमके धारी होते थे वही २२परीषह सहते थे बाकी अनेक सुगम क्रिया का पालन भी करते थे जैसा समय होता था वैसा ही कठिन या सुगम व्रत धारन करते थे ऋषभ देव ने छै मास का पारणा किया था महावीर स्वामी ने सिरफ बेलाही किया था सो जैसा देश जैसा काल होता है उसी के अनुसार धर्म्म पलता है पस जो कुछ करना हो देशकाल का प्रभाव और अपने शरीर की ताकत और भावों की दृढ़ता के अनुसार करना चाहिये इस वक्त देशकाल और शरीरों वा भावों की ताकत ऐसी है इस जमाने के मुनि बाईस परीषह सहने की ताकत नहीं रखते इस जमाने में सुगम क्रिया का धर्म ही मुनि और श्रावक पाल सकते हैं पंचम काल के अंत तक जो मुनियों का होना लिखा है वह सब सुगम (आसान)

क्रिया के आचरण करने वाले ही होवेंगे देखो आगम में २८ मूलगुण और ८४ लाख उत्तर गुण मुनि के होने लिखे हैं उत्तर गुण के मायने अख्त्यारी हैं जितने हो सके पालें जितने नहीं पल सकें नहीं पालें परंतु मूलगुण के मायने यह हैं कि इन का पालना उनके वास्ते जरूरी हैं उनके पालन विना उनका मुनि पना दूषित है देखो अवधि धारी मुनि ने कंस की राणी को कहा कि जिस देवकी के तू मुझे वस्त्र दिखाती है इस के गर्भ से ऐसा बालक पैदा होगा जो तेरे पति और पिता दोनों को मारेगा और मुनि का सबसे पहला धर्म १३ प्रकार का चारित्र पालना लिखा है पांच महाव्रत पांच समिति और तीन गुप्ति सो इतने बड़े रिद्धि धारी मुनि से वचन गुप्ति नहीं पली श्रेणिक चरित्र आदि ग्रंथों में ऐसी अनेक कथा हैं पस इस जमाने के जो पक्षपाती जैनी या कलियुगी अभिमानी पंडित मुनियों को यह कहते रहते हैं कि यह २२ परीषह क्यों नहीं सहते वन पहाड़ोंमें रहकर कठिन तपस्या क्यों नहीं करते उन को ऐसा कहना छोड़देना चाहिये और जिन को हमारे इतना समझाने पर भी जरा असर न होवे उन्हें चाहिये कि लकड़ी के मुनिराज बनवा लेवें सरदी गरमी में उन्हें जहां चाहें रखें और शास्त्र में जो यह लेख है कि पंचम काल के अंत तक मुनि होवेंगे उस पर कलम फेर देवें और जिन भाइयों को हमारा कहना ठीक मालूम होवे वह इस जमाने के सुगम क्रिया वाले मुनियों की उतनी ही विनय सत्कार करें जितनी पहले जमाने के मुनियों की किया करते थे॥

रोहतक में जैन मुनियों को आहार।

जब श्री गुरु मुनि महाराज विहार करते २ हुए रोहतक नगर में आये तब मैं ज्ञान चन्द्र जैनी लाहौर नगर से मुनि महाराज के दर्शन को रवाना हुवा तो दिल में यह विचार हुवा कि किसी तरह मुनि महाराज का हमारे यहां भी आहार होवे तो बड़ा ही आनंद हो सो जिस जगह रोहतक में शहर से बाहिर बगीचो में मुनि महाराज ठहरे हुए थे वहां अनेक जैनी रसोई बनाते थे सो जिसका शुभ कर्म का उदय होता था उस के यहां मुन महाराज का आहार हो जाता था सो हमने भी वहां जाकर चार दिन रसोई बनाई जो हमारी स्त्री ने खूब निरख संवार कर बड़े ही भाव से बनाई सो दो दिन हमारे यहां भी श्री गुरु पधारे और बड़े ही आनंद से दोनों दिन आहार हुवा उस खुशी में हमने निम्न लिखित पद और लावनी बनाई थी जो जैनी भाइयों ने सभा में मुनि महाराजके सामने खड़े होकर गाई थी॥

पद

श्री मुनिवर को देख भविजन आनंद मो मन भाया है।
बंद कमल ज्यों देख रवि को कली कली विगसाया है॥ टेक॥
सारी उमर में गुरु जि दिगम्बर आज नजर मुझे आया है।
धन्य घड़ी धन दिवस आज यह दर्शन मुनि वर पाया है॥श्रीमुनि०॥१
मिथ्यातम के दूर करन को निशिपति यह प्रगटाया है।
वचन किरण की करके चांदनी, शिव मारग दरसाया है॥श्रीमुनि०२।
भव्य जीव जे कोमल पौदे, जिनका दिल कुमलाया है।
जिन वाणी जल की वर्षा कर, उन को सबज कराया है॥ श्री मुनि०३
दे उपदेश बहुत जन तारे, तारन तरन कहाया है।
ज्ञानचन्द्र भी इस मतलब को, गुरु चरणन ढिगआया है॥श्रीमुनि०४

पद

श्री मुनिवर का दर्शन करके करलो जन्म सुधारा हो।
तन मन अथिर जगत में भाइयो इसका नहीं पतयारा हो॥टेक॥
भूधर और बनारसि द्यानत पंडित भये अपारा हो।
मुनि दर्शन बिन गए तडफते मुनिवर नहिं निहारा हो॥
धन्य २ है यह अवसर जो मुनिवर भय इस वारा हो।
हाथ कमंडल कर में पीछी रूप दिगम्बर धारा हो॥ श्रा० १॥
धन्य कमाई मात पिता उन धन उन नर अवतारा हो।
दर्श कियो जिन आ मुनिवर का मानुष जन्म सुधारा हो॥
इस नगरी में जेते जैनी तरूण बाल वृध सारा हो॥
नित प्रति सतते धर्म मनी से साथ कुटंबले सारा हो॥ श्री० २॥

सुन कर प्रातः शास्त्र अर्थ फिर देखें विधि आहार हो।
कर आहार जब स्वामी चालें जय जय ध्वनी उचारा हो॥
शास्त्र सभा दो वखत लगाकर धर्म सुधारस प्यारा हो।
पीवत नाहीं जो अभाग्य अब फिर पीछे पछतारा हो॥ श्री०३॥
चिंतामणि ज्यों रत्न देत है जो मांगत जग सारा हो।
मुनि दर्शन से तैसे मिलत है सुख स्वर्गादि अपारा हो॥
नाव संग जो लोहा लगत है तिरत है जल संग सारा हो।
ज्ञानचंद को तैसे तारो तारन नाम तुम्हारा हो॥ श्री० ४॥

लावनी

अब मुनिवर का सुनो हाल तुम जो कुछ तुम्हें सुनाते हैं॥
गमन कियो पंजाब देश मुनि श्रावक धर्म फलाते हैं॥ टेक॥
तीस वर्ष की आयु इनकी रूप दिगम्बर भाते हैं।
पीछी और कमंडल राखें और कछु नहीं चाहते हैं॥
चार पैंड भूमि को निरख कर तब वह गमन कराते हैं।
सौम्य स्वभाव नासका दृष्टी धरम ध्यान मुनि ध्याते हैं॥अब०१॥
एक मास रह कर जी रिवाडी फिर दिल्ली में आते हैं।
दिल्ली में जयसिंह जो पुरा है उस में आ तिष्ठाते हैं॥
दिल्ली से श्री मुनिवर स्वामी रोहतक गमन कराते हैं।
रोहतक वासी सब ही जैनी मुनि वर भक्त कहलाते हैं॥ अब०२॥
देख मुनीश्वर नर नारी सब चरणन शीस नमाते हैं।
हरष भया मुनिवर आने का फूले नहीं समाते हैं॥
आहारादिक की सकल विधी वह भली भांति भुक्ताते हैं॥
कर आहार जब स्वामी चालें जय जय ध्वनी कराते हैं॥ अब०३

प्रात काल मुनिवर कि सभा में नर नारी सब आते हैं।
शास्त्र अर्थ मुनिवर से सुन कर जगत भ्रमण से डराते हैं॥
तरह तरह के नियम बहुत से मुनि सन्मुख ले जाते हैं।
मिथ्या मारग की जु कुरीति उनको तुरत छुड़ाते हैं॥ अब०४॥
गूगा पीर और बुड्ढा बावा, सती कि जात हटाते हैं।
माता सीतला और देवी का पूजन तुरत छुडाते हैं।
क्रिया कनागत और दशहरा, भद्रा बंद कराते हैं।
करवाचौथ होई होली, और सकट के लात लगाते हैं। अब०॥५॥
पढैं सभा में शास्त्र मुनी जब, अन्यमती जे आते हैं।
हिन्दू इसाई और मुसलमां यही वचन जी सुनाते हैं।
बहुत से साधू हमने देखे, मकर भरूप बनाते हैं।
सच्चे साधू जैन यती हैं, हम इनको सिर नाते हैं॥ अब०॥६॥
जैन धर्म्म की बहुतसी आखड़ी, बाज बाज लेजाते हैं।
अपने मत को छोड़के बहुते जैन धर्म्म को ध्याते हैं॥
देश देश के सुनकर जैनी, मुनि दर्शन को आते हैं।
खातिरदारी बहुत उन्हों की, नगर निवासि कराते हैं॥ अब०॥७॥
एकबार भोजन की बारयां श्रावक गृह मुनिजाते हैं।
मिले आहार जो साधुविधि से तब कुछ अशन कराते हैं।
अंतराय हो वापिस जावें भोजन कभी न खाते हैं।
भूख प्यास की सहे वेदना कई दिवस होजाते हैं। अब०॥८॥
रोग वेदना सहैं सर्व वह दवा नहीं मंगावाते हैं।
शीतकाल में वस्त्र न ओढें गर्मी में नहिं न्हाते हैं।
नंगे पैर चलत हैं स्वामी कंकर कांटे चुभाते हैं।
दुष्ट पुरुष जब पीडें उनको मौन धरे तिष्ठाते हैं। अब०॥९॥

नग्न बदन सब सहैं परीषह जरा नहीं घबराते हैं ।
धन्य धन्य यह मुनिवरजी जो इस विधिकर्म खपाते हैं ।
ज्ञानचंद मुनिवर स्वामी को आठों अंग नमाते हैं ॥
और कछु नहीं मांगत मुनि से केवल कर्म भुलाते हैं ॥
अब मुनिवरका सुनो हाल तुम जो कुछ तुम्हें सुनाते हैं ।
गमन कियो पंजाब देश मुनि श्रावक धर्म फलाते हैं ॥ १० ॥

मुनि का रोहतक से गमन ।

अब मुनि महाराज रोहतक से जाने लगे तब उनकी जुदाई का हमारे हृदय में बड़ा शोक हुवा उस समय हमने यह पद बनाया था ॥

पद

करलो दर्शन सब भाई अब जावत हैं मुनिराई ॥ टेक ॥
इस भव में फिर मिलने दुर्लभ यह निश्चय मनलाई ।
कठिन क्रिया मुनिवर की जानों पलत हरेक से नाई ॥ करलो० ॥ १ ॥
चिंतामणि तुम्हें रत्न मिलो थो मनवांछित सुखदाई ।
मुनि विहार में देर जरा है फिर गुरु दीखत नाई ॥ करलो० ॥ २ ॥
हिरदे में जब यह विचार हो गुरु हमरो चलो जाई ।
कांपत तन और टपकत आंसु सही न जात जुदाई ॥ करलो० ॥ ३ ॥
जल बिन मीन और पति बिन नारी ज्यों वह शोक कराई ।
त्यों हम तड़फत निशिदिन मुनि बिन फूलकी तरह कुमलाई ॥ करलो० ४
जनी साधू बड़े कृपालू सागर दया कहाई ।
हमें छोड़ कर स्वामी चाले जरा न मोह कराई ॥ करलो० ॥ ५ ॥
जड़े बेल जो पेड सहारे वह उसे नाहि गिराई ।
हमसे किसविध नेह तजो मुनि जरा समझ नहिं आई ॥ करलो० ॥ ६ ॥

वश हमरा कछु चलता नहीं मन में रुदन कराई।
हिम्मत करके मुनि ढिग आयो अरज उन्हों को सुनाई॥ करलो०७।
तुम बिन व्याकुल हरदम नैना निरखत तृप्ति न पाई।
भव भव में हमें दरश दीजियो इसी जी स्वरूप के माई। करलो० ॥८॥
हाथ कमंडलु कर में पीछी दोनों भुजा लटकाई।
निरख निरख पग धरत जिमीपर जीव जंतु को बचाई॥ करलो० ।९।
हाथ जोड़ सिर नालो अब तुम बोलो नमोस्तु भाई।
ज्ञानचंद अब नमत मुनी को आठों अंग झुकाई॥ करलो० ।१०।

मुनि महाराज का लौंच।

जब मुनि महाराज ने लौंच किया तब हमने यह पद बनाया था॥

पद

देखें सब जैनी भाई हेजी लौंच करत मुनिराई॥ टेक॥
श्रावण शुक्ल पंचमी दिन मुनि तीन बजे का ठहराई।
पांच हजार जैनी सब देखें नगर नगर के आई॥ देखें सब०॥ १॥
पाडत बाल श्री मुनि टक टक जरा नहीं घबराई।
इस विध सर्व केश मुनि पाडे वज्र हिरदेजी कराई॥ देखेंसब।०२
दाढा मूंछ अर सीस मुनि से बहत खून अधिकाई।
ताको देखकर सब नर नारी नैनों से नीर गिराई॥ देखें सब०॥३॥
उसी समय श्री मुनिवर की वहां फौटो थी उतराई।
खून टपकता देख मुनिका ज्ञान ने आंसु बहाई।
देखें सब जैनी भाई हेजी लौंच करत मुनिराई॥ ७॥

पद

धन धन मुनि निज आतम वासी ॥ टेक ॥
माता पिता दारा सुत छोडे और छोडे सब संग साथी।
महल मकान बाग रथ छोडे और छोडे धनकी रासी ॥ धन० १॥
खान पान की लजत छोडी वस्त्राभरण के भय त्यागी।
आतम रसके भये जी रसैया सब छेदी आसा फांसी ॥ धन० २॥
पांच महाव्रत पालें मुनिवर ठाईस गुण के अभ्यासी।
ज्ञानचंद मुनिके दर्शन से कर्म कलंक विनस जासी।

मुनिस्तुति (घनाक्षरी छन्द)

शीत ऋतु जोरैं तहां, सबही सकोरैं अङ्ग तनको न मोरैं नाद-धोरैं धीर जे खरे। जेठ को झकोरैं जहां, अण्डा चील छोरैं पशु पक्षी छांह लोरैं गिर, कोरैं तप ये धरे। घोर घन घोरैं घटा, चहों ओर डोरें ज्यौं ज्यौं, चलतैं हीलो त्यौं त्यौं, फोरैं बल ये अरे। देह नेह तोरैं परमारथ से प्रीतजोरैं, ऐसे गुरु ओर हम, हाथ अन्जलि करें ॥

विनती

ते गुरु मेरे उर बसो जे भवजलधि जिहाज।
आप तिरें पर तारही ऐसे श्रीऋषिराज। ते गुरु मेरे उरबसो॥टेक॥
मोह महारिपु जीत कै, छाडो सब घरबार।
होय दिगम्बर बनबसे आतम शुद्ध विचार॥ ते गुरु० १ ॥
रोग उरग विल वपु गिणे भोग भुजंग समान।
कदली तरु संसार है, सब छोडे इमजान ॥ ते गुरु० २ ॥

रत्नत्रय निधि उर धरें और निर्ग्रन्थ त्रिकाल।
मारे काम पिशाच को, स्वामी परमदयाल॥ ते गुरु० ३॥
पंच महाव्रत आदरें पांचों समति समेत।
तीन गुप्ति गोपें सदा अजर अमर पद हेत॥ ते० ४॥
धर्म धरें दश लाक्षणी, भावना भावें सार।
सहें परीषह बीस द्वे, चारित रत्न भण्डार॥ ते० ५॥
जेठ तपे रवि तेजसों सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तपतपें, दाझे नगन शरीर॥ ते० ६॥
पावस रैंण डरावणी बरसे जल धर धार।
तरुतल निवसें साहसी बाजें झंझा ब्यार॥ ते० ७॥
शीत पड़े कपि मद गले, दाहे सब बनराय।
ताल तरंगिणी तट विषे ठाढे ध्यान लगाय॥ ते० ८॥
यह विधि दुर्द्धर तपतपें, तीनों काल मझार।
लागे सहज स्वरूप में तनसे ममत निवार॥ ते० ९॥
पूर्व भोगन चिन्तवें, आगे बांछे नाहिं।
चहुंगति के दुखसों डरें, सुरति लगी शिवमाहिं॥ ते० १०॥
रंग महल म पोढ़ते कोमल सेज बिछाय।
ते कंकराला भूमि में, सोवें सम्बर काय॥ ते० ११॥
गजचढ़ चलते गर्व से, सेना सज चतुरंग।
निरख निरख पग वे धरें, पाले करुणा अंग॥ ते०१२॥
वे गुरु चरण जहां धरें, जगमे तीरथ जेय।
सो रज मम मस्तक चढ़ो भूधर मांगे येय॥ ते० १३॥

विनती

बन्दो दिगम्बर गुरु चरण जग तरण तारण जान।
जो भर्म भारी रोग को हैं राजवैद्य महान॥
जिन के अनुग्रह बिन कभी नहीं कटे कर्म जंजीर।
ते साधु मेरे उर बसो मेरी हरो पातक पीर॥ १॥
यह तनु अपावन अशुचि है संसार सकल असार।
ये भोग विष पकवान से इस भांति सोच विचार॥
तप विरच श्री मुनि बन बसे सब त्याग परिग्रह भीर।
ते साधु मेरे उर बसो मेरी हरो पातक पीर॥ २॥
जे काच कंचन सम गिनें अरि मित्र एक स्वरूप।
निंदा बड़ाई सारिखी बन खंड शहर अनूप॥
सुख दुःख जीवन मरण में ना खुशी नहिं दिलगीर।
ते साधु मेरे उर बसो मेरी हरो पातक पीर॥ ३॥
ते बीड पर्वत बन बसें गिरि गुफा महल मनोग।
शिल सेज समता सहचरी शशि किरण दीपक जोग॥
मृग मित्र भोजन तप मई विज्ञान निर्मल नीर।
ते साधु मेरे उर बसो मेरी हरो पातक पीर॥ ४॥
सूखे सरोवर जल भरे सूखे तरंगिनी तोय।
बाटे बटोही ना चलें जब घाम गर्मी होय॥
तिस काल मुनिवर तप तपें गिर शिखर ठाढे धीर।
ते साधु मेरे उर बसो मेरी हरो पातक पीर॥ ५॥
घन घोर गरजें घन घटा जल परें पावस काल।
चहुं ओर चमकें बीजली अति चले शीत ब्याल॥

तरु हेठ तिष्ठें तब यती एकान्त अचल शरीर।
ते साधु मेरे उर बसो मेरी हरो पातक पीर॥ ६॥
जब शीत काल तुषार सों दाहै सकल बन राय।
जब जमे पानी पोखरां थर हरें सब की काय॥
तब नग्न निवसें चौहटे कै तीरनी के तीर।
ते साधु मेरे उर बसो मेरी हरो पातक पीर॥ ७॥
करजोर भूधर बीनवें कब मिलें वे मुनिराज।
यह आस मेरी कब फले अरु सरे सगरे काज॥
संसार विषम विदेश में जे बिना कारण बीर।
ते साधु मेरे उर बसो मेरी हरो पातक पीर॥ ८॥

गज़ल।

देखते ही चरण मुनिवर हाल और हि होगया।
अये गुरू खटका मेरे दिलका अलहदा होगया॥ टेक॥
दर्द और गम की कहानी है मेरी बहु तक बड़ी।
चार गति के रंज सहते कायरे दिल होगया॥ देखते ही० १॥
कहने की ताकत नहीं दुःख दर्द जो मैंने सहे।
हे दया निधि जानते हो सो भरोसा होगया॥
मूर्ख ज्ञानी हो गए और पातकी धर्मी भए।
हुई कृपा जिन पै तुम्हारी सो उभारा हो गया॥ देखते ही० २॥
क्या करूं मुख एक से तारीफ तुमरी ए प्रभु।
थे हमारे से अधम तिन को सहारा हो गया॥
सब ही विधि है हीन मथुरा चाहिता है हस्त को।
लख अपार दियालु गुरू तातें बडा दिल हो गया॥ देखते ही०३॥

मुनिराज का दर्शन करना।

जब मुनिराज के दर्शन करने को जाओ तो उन के सन्मुख आधे फूले कमल की डोडी के समान दोनों हाथ मिला कर (दोनों हाथ इस प्रकार मिलावो जो बीच में से जरा पोले रहें—) दोनों गोढे जमीन पर टेक कर दोनों हाथ जुडे हुए जमीन पर रख कर उनके ऊपर मस्तक रख कर अष्टाङ्ग नमस्कार करो फिर खडे हो कर उसही तरह दोनों हाथ जुडे हुये मस्तक पर रख कर मुनिराज को नमोस्तु कहो जब उसके उत्तर में मुनिराज तुम को धर्म वृद्धि या पापक्षयोस्तु कहें उस वचन को बडे विनय से ग्रहण करो जहां बैठना मुनासिब समझो वहां बैठ जावो अगर मुनिराज के सामने राजा तथा राणी आदि महान् पुरुष या पुण्याधिकारी सेठ सेठानी आदि बैठे हों तो उनके आगे मत बैठो बडे आदमियों के आगे मूर्ख गांव के गवादि बैठा करते हैं इस लिये तुम अपने रुतबे के तथा अपनी हैसियत के अनुसार योग्य स्थान पर बैठो जब कोई मुनिराज से बात करता हो उसके बीच में मत बोलो अगर कोई विषय में मुनिराज से कुछ पूछना हो तो जब तुम को अवसर मिलै तब पूछो॥

इति प्रथम अध्याय सम्पूर्णः।

जैनबालगुटका दूसराभाग।

दूसरा अध्याय॥

इस दूसरे अध्याय में जैन मन्त्र और अन्यमत के मन्त्र और उन के साधन (सिद्ध) करने की विधि लिखी हैं॥

अथ माला फेरने की विधि।

अब हम माला फेरने की विधि समझाते हैं, कि जब तुम माला फेरो तो ऐसे स्थान में बैठो जहां कोलाहल(शोरगुल)न हो क्योंकि जहां कोलाहल होता है वहां परिणाम स्थिर होना बड़ा कठिन होजाता है इसलिये जहां तक हो माला एकांत स्थान में फेरो और माला फेरती दफे न हिलो न बोलो न हाथ या आंख वगैरा से किसी को सैन वगैरा करो। और जौनसा मन्त्र जप कर माला फेरनी हो हर एक दाने पर एक एक मंत्र पढ़ो, मसलन तुम णमोकार मंत्र का जप करना चाहते हो तो हरएक माला के दाने पर सम्पूर्ण णमोकार मंत्र पढ़ो, अर्थात् हर एक दाने पर णमोकार मंत्र के पांचों चरण पढ़ो इसी प्रकार जब पंच परमेष्ठी के नाम की माला फेरो तो हर एक माला के दाने पर पांचों परमेष्ठी का नाम जपो इस ही तरह जब तुम (अ सि आ उ सा) यह मंत्र जपो यह भी पांच परमेष्ठी का नाम है अगर सिरफ ॐ मंत्र का जप करना चाहते हो तो हर एक माला के दाने पर ॐ जपो ॐ बीजाक्षर है यह भी पंच परमेष्ठी का नाम है अगर ह्रीं मंत्र का जाप करना चाहते हो तो हर एक माला के दाने पर ह्रीं जपो यह भी बीजाक्षर है इस में २४ तीर्थंकरों के नाम गर्भित हैं। जब माला जपो तो पहले वह तीन दाने जपो जो माला के ऊपर होते हैं फिर १०८ अंदर के जपो फिर माला के अन्त में भी उन तीनों दानों को दुबारा जपो। यहां इतनी बात और समझनी कि अशुद्ध मंत्र पढ़ने से कार्य्य की सिद्धि नही होती और माला तो जपते हो परंतु मन माला में नहीं है तो ऐसी माला बहुत सी फेरनी भी कार्य्य कारी नहीं, इसलिये जहां तक हो जहां दूसरों का कोलाहल (शोरगुल) न हो ऐसे एकांत स्थान में बैठ कर माला फेरो और मंत्र शुद्ध पढ़ो, अगर मन वचन और काय को लगा कर शुद्ध मंत्र पढ़ कर एक माला भी फेरीजावे तो अनेक पापों का नाश होकर अनेक प्रकार की सिद्धियें प्राप्त होती हैं, और जब कोई माला जपे पासवालों को भी चुप रहना चाहिये ताकि माला फेरनेवालों के भावों में विघ्न न पड़े इस समय (जमाने) में प्रातःकाल (लोगों के जागने के वकत से पहले) माला जपने का उत्तम अवसर है॥

अथ माला में १०८ दाने होने का कारण।

अब हम अपने जैनी भाइयों को यह भी समझाय देते हैं कि माला में १०८ दाने क्यों होते हैं और तीन दाने ऊपर क्यों होते हैं। इस का यह मतलब है कि यह जीव जो पाप करता है या तो मन करके या वचन करके या काय करके करता है, सो इन तीनों प्रकारके पापों का नाश करने को वह माला के ऊपर के तीन दाने जपते हैं ताकि परमात्मा के नाम तथा मंत्र से उन तीनों प्रकार के पापों का नाश होजावे। माला में जो १०८ दाने होते हैं, इनका यह मतलब है कि मन, वचन, काय, कर किये जो तीन प्रकार के पाप हैं उनके अंतर्भेद १०८ हैं फिर उन १०८ प्रकार के अंतर्भेद वाले पापों का नाश करने को वह १०८ दाने जपते हैं, ताकि परमात्मा का नाम तथा मंत्र जपने से उन १०८ प्रकार के पापों का नाश होजावे वह १०८ प्रकार के अंतर्भेद इस प्रकार हैं। यह जीव तीन प्रकार के पाप करते रहते हैं अव्वल तो यह कि किसी पाप कार्य्य के करने का इरादा करना जैसे किसी को दुःख देने का या मारने का मनमें विचार करना, दूसरा यह कि किसी पाप कार्य्य करने का कारण बनाना जैसे किसी के मारने को तलवार बनाना या दुःख देने का कोई कारण बना देना, तीसरे यह कि कोई पाप कार्य्य करना जैसे किसी के प्राणघात करदेना, या दुःख देना, सो यह तीन प्रकार के पाप मन करके करने, वचन करके करने, काय करके करने, सो उन तीन को इन तीन से गुणा (जरब दिया) तो ९ हुए, सो यह ९ प्रकार के पाप यह जीव करते रहते हैं, सो यह ९ प्रकार के पाप यातो आप खुद करते रहते हैं या यह ९ प्रकार के पाप किसी दूसरे से कह कर करवाते रहते हैं या यह ९ प्रकार के पाप कोई और करे उसमें खुश होते रहते हैं, इस प्रकार २७ प्रकारके पाप यह जीव करते रहते हैं, सो यह २७ प्रकार का पाप यह जीव क्रोधके वश होकर करते रहते हैं २७ प्रकार का पाप मान (गरूर) के वश हो कर करते रहते हैं, २७ प्रकार का पाप माया (छल) के वश होकर करते रहते हैं, २७ प्रकार का पाप लोभ के वश होकर करते रहते हैं ॥

इस प्रकार यह जीव १०८ प्रकार के पाप करते रहते हैं सो उन १०८ प्रकार के पापों का नाश करने को १०८ वार परमात्मा का नाम तथा मंत्र जपते हैं इस लिये माला में १०८ दान परो कर उन हर एक दानों पर एक १ वार मंत्र जपते हैं ताकि माला जपने से सर्व प्रकार के पापों का नाश हो जावे। मंत्रों में बड़ा असर होता है जैसे मंत्र पढने से सांप या बिच्छु वगैरा का जहर उतर जाता है इसी प्रकार यह मंत्र जिन में परमात्मा का नाम गर्भित है इन का उच्चारण करने से सर्व पापों का नाश हो जाता है इस लिये माला में १०८ दाने अंदर और तीन दाने ऊपर होते हैं ॥

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

अथ शुद्ध णमोकार मन्त्र

णमो अरहंताणं.

णमो सिद्धाणं.

णमो आइरियाणं.

णमो उवज्झायाणं.

णमो लोए सव्वसाहूणं.

इस णमोकार मन्त्र के पहले पद के ७ दूसरे पद के ५ तीसरे पद के ७ चौथे पद के ७ पांचवें पद के ९ एवं समस्त णमोकार मन्त्र के ३५ अक्षर हैं॥

अगर किसी भाई को इस णमोकार मंत्र का अर्थ देखना हो, इस णमोकार मंत्र का अक्षर अक्षर और मात्रा मात्रा का खुलासे वार अर्थ हमने एक अलग पुस्तक में ४० पृष्ठों पर छापा है उस पुस्तक का नाम **णमोकार मंत्र का अर्थ** है जिसे णमोकार मंत्र का खुलासे वार अर्थ देखना हो हमारे पुस्तकालय लाहौर से मंगा लेवें) में मिलती है॥

पता☞ हकीम ज्ञान चंद्र जैनी अनारकली महल्ला नीला गुंमज लाहौर।

नोट—णमोकार मन्त्र के संशोधन करने में हमने निम्न लिखित प्राकृत व्याकरण ग्रन्थों की सहायता ली है॥

(क) प्राकृत व्याकरणं इंगलैण्डीय भाषानुवाद सहितम् श्री हृषीकेश भट्टाचार्येण संकलितम्। कलकत्ता मुद्रितम् १८८३॥

(ख) रैराफहोर्नल वेच् पेच् प्राकृत व्याकरणम् अंग्रेजी भाषा सहितम् कलकत्ता मुद्रितम १८८०॥

(ग) वररुचिकृतं प्राकृत व्याकरणम् लिखितम् पञ्जाब पबलिक् लिब्रेरिस्थम्।

(घ) हेम चन्द्र सरस्वती कृतम् प्राकृत बाल भाषा (मागधी व्याकरणम) बम्बई मुद्रितम्।

नवकार मंत्र के ४६ स्वरूप।

यह णमोकार मंत्र हमारे जैनियों का महान् मंत्र स्वर्ग मोक्षका दाता है इस मंत्र से अनेक जीवोंका कल्याण हुवा है इसके स्मरण मात्रसे हर प्रकारके विघ्न विलयजाय हैं॥

जिन जैनियों ने पंडित भूधरदासजी रचित नवकारमाहात्म्य पढ़ा होगा जो णमोकार मंत्र का अर्थ इस नाम की पुस्तक में छपा है वह जानते हैं कि इस मंत्र से कितने जीवों का उद्धार हुवा है ग्रन्थों में इस प्रकार की अनेक कथा हैं अनेक का उद्धार इस के स्मरण मात्र से हुवा है। परन्तु हमारे भोले भाई यह समझते हैं वह नवकार मंत्र यही ३५ अक्षर हैं सो ऐसा नहीं। इस नवकार मंत्र में लौकिक कार्य की सिद्धि के वास्ते तरह तरह के बीजा क्षर कहीं पहले कहीं पीछे कहीं बीच में जोड़ने से कहीं इस के वरणों को आगे पीछे करने से इस के ४६ स्वरुप (मंत्र) बनते हैं उन मन्त्रों से कार्य सिद्धि भी अलग अलग हैं।

जिस कार्य की सिद्धि जिस मंत्र के पढने से होती है वही मंत्र उस कार्य की सिद्धि के वास्ते पढ़ा जाता है यह ४६ मंत्र महान् आचार्य जानते थे सिवाय मुनियों के और किसी को नहीं बतलाते थे कभी किसी श्रावक को दुःखी देखा दयाभाव से उस का दुःख दूर करने को उसके मतलब का मंत्र उसके कार्य की सिद्धिके अर्थ उसे बतला देते थे सो इन में ९ मंत्र ऐसे महा शक्तिवान् थे कि उन मंत्रों से अनेक नामुमकिन बातें हो सकती थीं सो कलियुग के जीवोंमें समता न देख कर आचार्यों ने उन महाशक्तिवान् ९ मंत्रों का तो लोपही कर दिया ३७ बाकी थे सो मुनि न रहने से वह मंत्र भट्टारकों के हाथ आए सो जो भट्टारकों की सेवा करते हैं उन्हें वह बताते हैं हर एक को नहीं। सो उन की सेवा करने से जितने मंत्र हम को प्राप्त हुए हैं यद्यपि ऐसे महान् मंत्र किसी को बताने योग्य नहीं थे तथापि यह सोच कर कि अब हम बूढे होजाने से काल की गोद में बैठे हैं खबर नहीं पीले पत्ते की तरह किस वक्त उड जावें अगर यह मंत्र हम अपने जैनी भाइयों को बता देवें तो अनेक जैनियों का बड़ा उपकार होगा सो इस पुस्तक जैन बाल गुटके दूसरे भागमें यह मंत्र लिखते हैं सो जब कभी अपने पर कोई संकट आजावे या धन, दौलत, औलाद की प्राप्ति के वास्ते, या किसी मुकदमे में या वाद में जीत हासिल करने को या किसी रोग की शान्ति के वास्ते उन में से कोई मंत्र जपना हो माला के हर एक दाने पर पूरा मंत्र जपो॥

मन्त्र साधन की विधि।

१—जो पुरुष मन्त्र सिद्ध करने के लिये जिस किसी स्थान में जावे प्रथम उस क्षेत्र के रक्षकदेव से प्रार्थना करे कि मैं इस स्थानमें इतने काल तक ठहरूंगा तब तक के लिये आज्ञा प्रदान करो और किसी प्रकार का उपसर्ग होवे तो निवारियो—क्योंकि हमारे जैन मुनि भी जब कभी कहीं किसी स्थान में जाकर ठहरते हैं उस के रक्षक देव को कहते हैं कि इतने दिन तक तेरे स्थान में ठहरेंगे तूं क्षमाभाव रखियो-इस वास्ते गृहस्थियों को अवश्य ही उपरोक्तअनुसार रक्षक से आज्ञा लेलेनी चाहिये॥

२—जब मन्त्र साधन करने के वास्ते जावो जहां तक हो ऐसे स्थान में मन्त्र सिद्ध करो जहां मनुष्यों का गमनागमन न हो जैसे अपने जैन तीर्थ मांगीतुङ्गी जी, सिद्धवरकूट रेवानदी के तट पर, या सोनागिरजी या और जो अपने जैन तीर्थ एकान्त स्थान में हैं या बगीचों के मकानों में पहाड़ों में तथा नदी के किनारे पर या निर्जन वन में ऐसे स्थानों में मन्त्र सिद्ध करने को जाना चाहिये जब उस स्थान में प्रवेश करो वहां ठहरो तो मन वचन काय से जो उस स्थान का रक्षक देव या यक्ष आदि है उस का योग्य विनय करके मुख से यह उच्चारण करो कि हे इस स्थान के रक्षक मैं अपने कार्य की सिद्धि के वास्ते तेरे स्थान में आया हूं तेरी रक्षा का आश्रय लिया है इतने दिनों तक मैं तेरे स्थान में रहूंगा इतने दिनों तक तेरे स्थान में रहने के लिये आज्ञा प्रदान कीजिये अगर मेरे ऊपर किसी प्रकार का संकट उपद्रव तथा भय आवे तो उसे निवारण करिये॥

३—जब मन्त्र साधन करने जाओ तो एक नौकर साथ लेजावो जो रसोई की वस्तु लाकर रसोई बनाकर तुमको भोजन कराद्रिया करे तुम्हारा धोवती डुपट्टा धोद्रिया करे जब तुम मन्त्र साधन करने बैठो तब तुम्हारे सामान की चोकसी रक्खे॥

४—जो मंत्र साधन करना हो पहले विधि पूर्वक जितना जितना हररोज जप सके उतना उतना हररोज जप कर सवा लाख जाप पूरा कर मंत्र साधन करे फिर जहां काम पड़े उस का जाप जितना कर सके १०८ वार या २१ वार या जैसा मंत्र में लिखा हो उतनी वार जपने से कार्य सिद्धहोवे मंत्र शुद्ध अवस्था में जपे शुद्ध भोजन खावे और मन्त्र में जिस शब्द के आगे दो २ का अंक हो उस शब्द को दो वार उच्चारण करे॥

६—जब मंत्र जपने बैठे पहले रक्षा मंत्र जप कर अपनी रक्षा कर लिया करे ताकि कोई उपद्रव अपने जाप्य में विघ्न न डाल सके अगर रक्षा मंत्र जप कर मंत्र जपने बैठे तो सांप बिच्छू भेड़िया रींछ शेर वगैरा उस के बदन को न छू सकें दूर ही रुकें मंत्र पूर्ण होने पर जो देव देवी सांप शेर वगैरा बन कर उसे डराने आवें तो जो रक्षा मंत्र जप

कर जाप्य करने बैठे उस के अंग को वह न छू सकें सामने से ही डरासकें जब मंत्र पूर्ण होने को आवे जब देव देवी विक्रिया से सांप वगैरा हो डराने आवें तो डरे नहीं चाहे प्राण जावें डरे नहीं तो मंत्र सिद्ध होय मनोकामना पूर्ण होय यदि बिना रक्षा मंत्र जपने के मंत्र साधन करने बैठे या तो विक्रिया से डर कर जाप छोड़ बैठे, या पागल हो जावे इस वास्ते पहिले रक्षा मंत्र जप कर पश्चात् दूसरा मन्त्र जपना चाहिये॥

७—मंत्र जहां तक हो मौसम गरमी में सिद्ध करे ताकि धोती डुपट्टा में सरदी न लगे मंत्र सिद्ध करने में धोती डुपट्टा दो ही कपडे राखे वोह कपडे शुद्ध हों उन को पहने हुए पाखाने नहीं जावे पिशाब करने नहीं जावे खाना नहीं खावे सोवे नहीं जब जाप्य कर चुके उन्हें अलग उतार कर रख देवे दूसरे वस्त्र पहन लिया करे यह वस्त्र नित्य प्रति स्नानकर बदन पूंछ कर पहना करे यह वस्त्र सूत के पवित्र वस्तु के हों ऊन रेशम वगैरा अपवित्र वस्तुके न हों। इतने स्त्री सेवन नहीं करे गृह कार्य छोड एकांत में मंत्र जप मंत्र की सिद्धि करे॥

८—मंत्र में जिस रंग की माला लिखी हो उसी रंग का आसन यानि विस्तरा आदि धोती डुपट्टा भी उसी रंग का होवे तौ और भी श्रेष्ठ है यदि माला उस रंग की न होवे तौ सूत की माला या जियेपोते की माला उस रंग की रंग लेवे। जब मंत्र जपने बैठो तो इतनी बातों का ध्यान रखो।

९—पहले सब काम ठीक कर के मंत्र जपे।

१०—आसन सब से अच्छा डाभ का लिखा है या सुफेद या पीला या काल जैसा जिस मंत्र में चाहिये वैसा बिछावे।

११—ओढने को धोती डुपट्टा सुफैद उमदा हो या जिस रंग का जिस मंत्र में चाहिये वैसा हो॥

१२—शरीर को शुद्ध कर के परिणाम ठीक करके धीरे २ तसल्ली के साथ जाप्य करे अक्षर शुद्ध पढे।

१३—आसन पद्मासन बैठ के जपे जिस प्रकार हमारी बैठी हुई प्रतिमाओं का होता है वा बायां हाथ गोद में रख कर दाहने हाथ से जपे जो मंत्र बायें हाथ से जपना लिखा हो वहां दाहना हाथ गोदमें रख कर बांयें हाथ से जपे।

१४—जहां स्वाहा लिखा हो वहां धूप के साथ जपे यानि धूप आगे रखी रहे॥

१५—जहां दीपक लिखा हो वहां घी का दीपक आगे बलता रहे॥

११—जिस जिस अंगुली से जाप्य करना लिखा हो उस उस अंगुली और अंगूठे से जपे अंगुलियों के नाम आगे लिखे हैं॥

अंगुलियों के नाम।

अंगूठे को अंगुष्ठ कहते हैं॥

अंगूठे के साथ की अंगुली को तर्जनी कहते हैं।

तीसरी बीच की अंगुली को मध्यमा कहते हैं।

चौथी याने मध्यमा के पास अंगूठे से चौथी अंगुली को अनामिका कहते हैं।

पांचवीं सब से छोटी अखीर की अङ्गुली (फुल्लो) को कनिष्ठा कहते हैं॥

अङ्गुष्ठेन तु मोक्षार्थं धर्मार्थं तर्जनी भवेत्।
मध्यमा शान्तिकं ज्ञेयं सिद्धि लाभाय नामिका॥

अर्थ—जाप्य विधि में मोक्ष के वास्ते तथा धर्म कार्य के वास्ते अंगुष्ठ के साथ तर्जनी शान्ति के लिये मध्यमा सिद्धि के लाभ के वास्ते अनामिका श्रेष्ठ है॥

कनिष्ठा सर्वसिद्ध्यर्थं एते ते जाप्य लक्षणम्।
असंख्यातं च यज्जप्तं तत्सर्वं निःफलं भवेत्।

कनिष्टा सर्व सिद्धि के वास्ते श्रेष्ठ है ये जाप्य के लक्षण जानने वे मर्याद किया हुआ जाप्य सब निष्फल होता है अर्थात् किसी मन्त्र में २१ बार जाप्य करना है वहां २१ से कम या जियादा करे तो निष्फल होता है मन्त्र सिद्धि नहीं होती।

अङ्गुल्यग्रेण यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलङ्घने।
व्यग्रचित्तेन यज्जप्तं तत्सर्वं निःफलं भवेत्।

अंगुली के अगाडी के भाग से अर्थात् अंगुली के नाखून से अगले भाग (सिरे) से जपा हुआ तथा माला के ऊपर जो तीन दानें मेरु के होते हैं उन को उल्लङ्घ कर अर्थात् और फालतू बे प्रयोजन जाप्य किया हुआ, तथा व्याकुल चित्त से जाप्य किया हुआ वह सर्व निष्फल होते हैं॥

माला सुपञ्च वर्णानां सुमानां सर्व कार्यदा।
स्तम्भने दुष्ट सन्त्रासे, जपेत् प्रस्तर कर्कशान॥

अर्थः—सर्व कार्यों में पांचों वर्णों के फूलों की माला श्रेष्ठ है परन्तु दुष्टों के डरावने में स्तम्भन (रोकने) में तथा कीलने में कठोर सख्त वस्तु के मणियों की माला से जाप्य करे॥

धर्मार्थी काममोक्षार्थी जपेद्वै पुत्रजीवकाम् (स्रजम्)
शान्तये पुत्रलाभाय जपेदुत्तममालिकाम् ॥

मन्त्र साधन करने वाला धर्म के लिये तथा काम और मोक्ष के लिये पोताजीवा की माला से जाप्य करे शान्ति के लिये और पुत्र प्राप्ति के वास्ते मोती आदि की उत्तम माला से जाप्य करे शान्ति से मतलब यह है जैसे रोग की शान्ति करना या देवी वगैरा का किसी को उपद्रव हो उसको शांति करना॥

शान्ति-अर्द्धरात्रि वारुणीदिक् ज्ञानमुद्रा पङ्कजासन।
मौक्तिकमालिका स्वधे स्वते पू० चं० क्रां ॥

अर्थ—शान्ति के प्रयोग में मन्त्र जपने वाला आधी रातके वक्त पश्चिम दिशा की तरफ मुख करके ज्ञान मुद्रा सहित कमलासन युक्त मोतियों की माला से स्वधे स्वते प० चं० क्रां० का उच्चारण करता हुआ जाप्प करे ?

स्तम्भन-पूर्वाह्न वज्रासन पूर्वदिक् शम्भुमुद्रा स्वर्ण मणि मालिका पीताम्बर वर्ण ठः ठः।

अर्थ—स्तम्भन (रोकना तथा कीलना) इस के प्रयोग मे पूर्वाह्न (दुपहर से पहले) कालमें वज्रासन युक्तपूर्व दिशा की तरफ मुख करके स्वर्ण के मणियों की माला से पीले रङ्ग के वस्त्र पहने हुआ ठः ठः उच्चारण करता हुआ जाप्प करे ॥

शत्रूच्चाटने च रुद्राक्षा विद्वेषे रिष्ट जंजजा।
स्फाटिकी सूत्रजा माला मोक्षार्थीनां तु निर्मला ॥

अर्थ—दुश्मन के उच्चारण (उखाड़ने) में रुद्राक्ष की माला वैर में ... ... मोक्षाभिलाषियों को स्फाटिक मणि की तथा सूत की माला श्रेष्ठ है॥

उच्चाटन वायव्यदिक् अपराह्णकाल कुक्कुटासन प्रवाल मालिका धूम्र व फटित् तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन।

अर्थः—उच्चाटन (उखाड़ना) इसके प्रयोग में, वायव्य कोण (पश्चिम और उत्तर के बीच में) की तरफ मुख करके अपराह्न (दुपहर के पीछे के) काल में कुक्कटासन युक्त मूंगे की माला से आगे धूप रख कर व फडित् ... ... अंगूठा और तर्जनी से जाप्य करे॥

वशी करणे पूर्वाह्न स्वस्तिकासन उत्तरदिक् कमलमुद्रा।
विद्रुममालिका जपाकुसुमवर्ण वषट्।

अर्थ—वशी करण (वशकरना) (अपने आधीन करना) इसके प्रयोग में पूर्वाह्न (दुपहर से पहले) काल में स्वस्तिकासन युक्त उत्तर दिशा की तरफ मुख करके कमल मुद्रा सहित मूंगे की माला से जपा कुसुमवर्ण ... ... वषट् उच्चारण करता हुआ जाप्य करे॥

आसन डाभ रक्तवर्ण यन्त्रोद्धार रक्तपुष्पवामहस्तेन।

अर्थः—डाभ के आसन पर बैठकर लाल कपड़े सहित यन्त्रोद्धार ... ... लालफल रखता हुआ बायें हाथ से जाप्य करे॥

आकृष्टि-पूर्वाह्न दण्डासन अङ्कुशमुद्रा दक्षिणदिक्।
प्रवाल माला उदयार्कवर्ण वौषट् स्फुट अङ्गुष्ठ मध्यमाभ्यांतु।

अर्थः—आकृष्टि (बुलाना) इसके प्रयोग में पूर्वाह्न (दुपहर से पहले) काल में दण्डासन युक्त अंकुशमुद्रा सहित दक्षिण दिशा की तरफ मुख करके मूंगे की माला से (उदयार्क वर्ण, ... वौषट् का उच्चारण करता हुआ अंगूठे और बीचकी अंगुली से जाप्य करे॥

निषिद्ध सन्ध्यासमय भद्रपीठासन ईशानदिक् वज्रमुद्रा जीवापोतामालिका धूम्र व हुम कनिष्ठाङ्गुष्ठयोगेन॥

अर्थः—निषिद्ध-सन्ध्या समय में भद्रपीठासन युक्त ईशान (उत्तर और पूर्वदिशा के बीच) की तरफ मुख करके वज्रमुद्रायुक्त जीवापोता माला से धूपखेता हुआ या होम करता हुआ अंगूठे और कनिष्ठा से जाप्य करे॥

अथ जैन के परम पवित्र २६ गुप्त जैन मंत्र।

जो बगैर रक्षा मंत्र जपने के मंत्र साधन करते हैं वह अकसर व्यंतरों से डराये जा कर अध बीच में मंत्र साधन छोड़ देने से पागल (सौदाई) हो जाते हैं इस लिये जब कोई

मंत्र सिद्धिकरने बैठे तो मंत्र जपना शुरू करने से पहले इन में से कोई रक्षा मंत्र जरूर जप लेना चाहिये इससे मंत्र साधन करने में कोई उपद्रव नहीं हो सकेगा और कोई व्यंतर वगैरा पर्याय बदल कर ध्यानमें विघ्न नहीं डाल सकेगा कुंडली के अंदर हरगिज़ नहीं आसकेगा ॥

(१) अथ रक्षा मंत्र

णमो अरहंताणं शिखायां ।

यह पढ़ कर चोटे के ऊपर सारे को दाहना हाथ फेरो ।

णमो सिद्धाणं मुखावर्णे ।

यह पढ़ कर सारे मुख पर हाथ फेरो ।

णमो आइरियाणं अंगरक्षा ।

यह पढ कर अपने सारे अंग पर हाथ फेरो ।

णमो उवज्झयाणं आयुधं ।

यह पढ कर सामने हाथ से जैसे कोई किसी को तलवार दिखावे ऐसे दिखाओ ।

णमो लोएसव्वसाहूणं मौर्व्वी ।

यह पढ कर जैसे कोई किसी को धनुष साध कर यानी तीर कमान तान कर दिखावे ऐसे दोनों हाथों से दिखाओ ।

एसो पंच णमोयारो पदतलेवज्रशिला ।

यह पढ़ कर अपने नीचे जमीन पर हाथ लगाकर और जरा हिलकर जो आसन बिछा हुआ है उस के इधर उधर यह खयाल करो कि मैं वज्र शिला पर बैठा हूं नीचेसे बाधा नहीं होसकती ।

सव्व पाव पणासणो वज्रमय प्राकाराश्चतुर्दिक्षु ।

यह पढ कर अपने चारों तरफ अंगुली से कुंडल सा खैंचो यह खयाल करके कि यह मेरे चारों तरफ वज्रमय कोट है ।

मंगलाणंचसव्वेसिं शिखादिसर्वतः प्रखातिका।

यह पढ कर यह खयाल करो कोट से परे खाई है।

पढमंहवइमंगलं प्राकारोपरिवज्रमयटंकणिकं॥

इति महा रक्षा॥ सर्वोपद्रव विद्राविणि॥

यह पढ कर वोह जो चारों तरफ कुण्डली खैंच कर वज्रमय कोट रचा है उस के ऊपर चारों तरफ चुटकी वजाओ इस का मतलब जो उपद्रव करने वाले हैं वह सब चले जावो मैं वज्रमई कोट के अंदरवज्र शिला पर बैठा हूं।

इस रक्षा मंत्र के जपने से जाप्य करते हुये के ध्यान में सांप शेर व्यंतर देव देवी कोई भी विघ्न नहीं डाल सके जो मंत्र सिद्ध होने के समय देव देवी डरावे का रूप धार कर आवेगा तो भी उस वज्रमई कोट के अंदर नहीं आसकेगा अगर शेर वगैरा पास को गुजरेगा तो भी आप तो उसे देख सकेगा शेर वगैरा उस मायामई वज्र कोट की ओट होने से अपने ताईं (जपने वाले को) नहीं देख सकेगा जपने वाले को अगर कोई तलवार तीर वगैरा से घात करने आवे तो उस स्थान का रक्षक उस को वहां ही कील देवेगा वोह इस रक्षा मंत्र के जपने वाले का घात नहीं कर सकेगा अनेक मुनि श्रावकों के घातक इस रक्षा मंत्र के स्मरण से कीले गए हैं और उन की रक्षा हुई।

नोट—जो बगैर रक्षा मंत्र जपने के मंत्र सिद्ध करने बैठते हैं या तो वह व्यन्तरों आदिक की विक्रिया से डर कर मंत्र जपना छोड़ देते हैं या पागल होजाते हैं इसलिये मंत्र साधन करने से पहले रक्षा मंत्र जप लेना चाहिये इस मंत्र में हाथ फेरने की क्रिया सिरफ गृहस्थ के वास्ते हैं मुनि के मन से ही संकल्प होता है।

(२) दूसरा रक्षा मंत्र।

ओंणमोअरहंताणं ह्रां हृदयं रक्षरक्षहुंफट् स्वाहा।

ओं णमो सिद्धाणं ह्रीं सिरो रक्षरक्ष हुंफट्स्वाहा।

ॐ णमो आइरियाणं ह्रौं शिखां रक्षरक्ष हुं फट् स्वाहा।

ओंणमो उवज्झायाणं ह्रैं एहि एहि भगवति वज्र कवच वज्रिणि रक्षरक्षहुंफट् स्वाहा।

ओंणमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः क्षिप्रंसाधयसाधय वज्रहस्तेशू लिनि दुष्टान् रक्षरक्ष हुंफट् स्वाहा ॥

जब कभी अचानक कहीं अपने ऊपर उपद्रव आजाए खाते पीते सफर में जाते सोते बैठते तो फौरन इस मंत्र का स्मरण करे यह मंत्र बार बार पढ़ना शुरू करे सब उपद्रव विलय जाय उपसर्ग दूर होय खतरे से जान माल बचे।

(३) रक्षा मंत्र।

ॐणमो अरहंताणं।

ॐणमोसिद्धाणं।

ॐणमोआइरियाणं।

ॐणमोउवज्झायाणं।

ॐणमोलोएसव्वसाहूणं।

एसो पंच णमो यारो।

सव्व पाव पणासणो।

मंगलाणं च सव्वेसिं।

पढमंहवइमंगलं।

ॐ ह्रीं हुँ फट् स्वाहा।

ये भी रक्षा मंत्र है।

(४) रक्षा मंत्र।

ॐणमोअरहंताणं।

यह पद नाभी में धरिये।

ॐणमोसिद्धाणं।

यह पद हृदय विषे धरिये

ॐ णमो आरियाणं ।

यह पद कंठ विषे धरिये ।

ॐ णमोउवज्झायाणं ।

यह पद मुख के विषे धरिये ।

ॐ णमोलोएसव्वसाहूणं ।

यह पद मस्तक विषे धरिये ।

सर्वांगेअस्म्हं रक्षरक्ष हिल हिल मातंगिनि स्वाहा ।

यह भी रक्षा मंत्र है जो अंग जिस के सन्मुख लिखा है वह मंत्र का चरण पढ़ उस अंग का मन में चितवन करता जावे गोया वह चरण उस अंग में रखा ऐसा समझे इस प्रकार यह मंत्र १०८ वार पढ़े रक्षा होय ॥

(५)रोगनिवारणमन्त्र ।

ॐ णमो अरहंताणं ।

णमो सिद्धाणं ।

णमोआइरियाणं ।

णमोउवज्झायाणं ।

णमोलोएसव्वसाहूणं ।

ॐ णमो भगवतिसुअदे ।

वयाणवार संगएव ।

यणजणणीये ।

सरस्सईएसव्व ।

वाईणिसवणवणे ।

ॐ अवतर अवतर ।

देवीममसरीरंपविसपुछं ।

तस्स पविससत्व जण मयहरीये ।

अरहंतसिरिसिरिए स्वाहा ।

यह मन्त्र १०८ वार लिख रोगी के हाथ में राखे सर्व रोग जाय ।

(६) मस्तक दरद दूर करण मंत्र।

ॐणमोअरहंताणं।

ॐणमोसिद्धाणं।

ॐणमोआइरियाणं।

ॐणमो उवज्झायाणं।

ॐणमोलोएसव्वसाहूणं।

ॐणमोणाणाय।

ॐ णमोदंसणाय।

ॐणमो चरित्ताय।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवश्यंकरीह्रींस्वाहा।

एक कटोरी में जल लेकर यह मन्त्र उस जल पर पढ़ कर उस जल को जिस के मस्तक में दरद हो आंधी सीसी हो उसे पिलावे तो उस के मस्तक के सर्व रोग जांय॥

(७) ताप निवारण मंत्र।

णमोलोएसव्वसाहूणं।

ॐणमोउवज्झायाणं।

ॐणमोआइरियाणं।

ॐणमोसिद्धाणं।

ॐणमोअरहंताणं।

जब यह मंत्र पढे पांचवें चरण के, अंत में ऐं ह्रीं पढता जावे एक सुफैद शुद्ध चद्दर लेकर उसके एक कूने पर यह मंत्र पढ़ता जावे गांठ देने की तरह कूने को मोडता जावे १०८ वार उस कूने पर मंत्र पढ उस में गांठ देवे वह चद्दर रोगी को उढादे गांठ सिर की तरफ रहे रोगी का बुखार उतरे जिस को दूसरे दिन का बुखार आता हो चौथे दिन आता हो हररोज आता हो इस से हर प्रकार का बुखार जाता है जब तक बुखार न हटे रोगी यह चद्दर ओढे रहे।

(८) बंदीखाना निवारण मंत्र।

ॐणमोअरहंताणं ज्म्ल्व्र्यु नमः।

इस में जमलरव्रयुं अक्षर हैं।

ॐणमोसिद्धाणं झ्म्ल्व्र्यु नमः।

इस में झमलरव्रयुं अक्षर हैं।

ॐणमोआइरियाणं स्म्ल्व्र्यु नमः।

इस में समलरव्रयुं अक्षर हैं।

ॐणमोउवज्झायाणं ग्म्ल्व्र्यु नमः।

इस में गमलरव्रयुं अक्षर हैं।

ॐणमो लोएसव्वसाहूणं क्ष्म्ल्व्र्यु नमः।

इस में क्षमलरव्रयुं अक्षर हैं।

अकमुकस्यबंदि मोक्षं कुरुकुरु स्वाहा।

यह प्रयोग है जिस किसी का कोई कुटुम्बी या रिश्तेदार या मित्र हवालात में हो जावे या बन्दीखाने में कद हो जावे उस के वास्ते उस का कुटुंबी या मित्र यह प्रयोग करे एक पाठा (कागज) पर श्री पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा मांड (लिख) पांच सौ फूल लेकर यह मंत्र पढ़ता जावे और १ फूल उसके उपर चढाता जावे और उस पर जहां फूल चढ़ाया उस पाठे परही अंगुली ठोकता,जावे ऐसे ५०० वार मंत्र पढे, असुक की जगह मंत्रमें उसका नाम लिया करे जो बंदीखाने में हुआ है इधर तो यह कार्रवाई करे उधर उस का अपील वगैरा जो कार्रवाईराजा की हो सो करे बंदीखाने में से कैद से फौरन छूटे यह मंत्र उस पाठे पर चित्राम की प्रतिमा के सन्मुख खड़ा होकर पढे खड़ा ही फूल चढ़ावे सब काम खडा ही होकर करे। इस से बंदी मोक्ष होय स्वप्न में शुभाशुभ कहै॥

नोट—यह क्रिया गृहस्थके वास्ते है मुनिके वास्ते इसके स्मरण मात्रसे हीबंदीखाना दूर हो अपने आप ही बंदीखाने के ताले गिर किवाड़ खुल जावें जंजीर टूट पड़ें॥

(९)बंदीखाना निवारण मंत्र।

णंहूसाव्वसएलोमोण।

णंयाज्झावउमोण।

णंयरिइआमोण।

णंझासिमोण।

णंताहंरअमोणं।

यह मंत्र नवकार मंत्र के ३५ अक्षर उलटे लिखने से बना है जब वकत मिले और जितनी देर तक यह मंत्र जप सके नित्य जपे सात दिन तथा ११ दिन तथा २१ दिन तक जपे अगर होसके इस का सवा लक्ष जाप करे इस से कम जितने हो सके उतने करे जो कैद होगया हो हवालात में होगया हो कहीं बंदी में पड़ गया हो तो इस मंत्र के स्मरण से तुरत बंदी खलास होवे यानि छूटे जो कैद हवालात में हो वह तो यह मंत्र जपे उस के मुरब्वी प्यारे अदालत में मुकद्मा अपील वगैरा करें तुरत छूटे।

(१०) मछली बचावन।

बंदीखाना निवारण मंत्र।

ॐणमो अरहंताणं।

ॐणमोलोएसव्वसाहूणं।

कुलुकुलुचुलुचुलुमुलुमुलु स्वाहा।

यह मंत्र दो कार्य्य की सिद्धि में पढ़ा जाता है।

१—यह मंत्र पढ़ कर कंकरी के ऊपर मूहसे फूक देता जावे ऐसे २१ वार पढ़ फिर वह कंकरी किसी हिकमत से जाल पर मारे जो मच्छी पकड़ रहा हो इसके जाल में कोई मच्छी भी न फंसे सब बचें।

२—यह मंत्र जितनी देर जप सके प्रति दिन जपे सवालक्ष मंत्र पूरा होने पर बलके उस से पहिले ही बंदीखाने से छूटे अगर मुमकिन होसके मंत्र जपती दफे धूप जला कर आगे रख सके तो रखे मंत्र का फल तुरत हो तुरत बंदीखाने से छूटे।

(११) अग्नि निवारण मंत्र।

ॐणमो ॐ अर्हं असिआउसा।

णमो अरहंताणं नमः।

१ एक गडवे (लोटा) में पवित्र शुद्ध जल लेकर उसमें से हाथ की चुलू में जल लेकर यह मंत्र २१ वार पढ़ कर जहां अग्नि लग गई हो उस पर उस जल का छींटा दे पहले जो चुलू में जल है जिस पर २१ वार मंत्र पढ़ा उसकी लकीर खैंचे उस लकीर से आगे अग्नि नहीं बढ़े और अग्नि शांत होय।

२ यह मंत्र १०८ वार अपने मन में जपे एक उपवास का फल होय।

(१२) चोर वैरी निवारण मंत्र।

ॐ ह्रीं णमोअरहंताणं।
ॐ ह्रींणमोसिद्धाणं।
ॐ ह्रींणमोआइरियाणं।
ॐ ह्रींणमोउवज्झायाणं।
ॐ ह्रींणमोलोएसव्वसाहूणं।

यह मंत्र पढ़ गुण चारों दिशा विषे फूंक दीजे तुरत चोर वैरी नाशै अर्थात जिस दिशा में चोर वैरी हों उस दिशामें फूंक दीजे यानि यह मंत्र पढता जावे और उस तरफ फूंक देता जावें तो तुरत चोर वैरी भागे॥

नोट—पहले यह मंत्र सवालक्ष जप कर सिद्ध करे फिर जरूरत पर थोडा स्मरण करने से कार्य सिद्ध होगा मगर पहले थोडा भी नियम से जप कर जरूर सिद्ध करले जो जरूरत पर फौरन काम दे॥

(१३) चोरनाशन मंत्र।

ॐणमोअरहंताणं।
धणूंमहाधणूं स्वाहा।

यह मंत्र पहले सवा लक्ष जप सिद्ध करे फिर वक्त पर मंत्र के हरफों को पढता जावे उन हरफों को अपने ललाट में बतौर लिखने के हरफ बहरफ खयाल करता जावे और मंत्र जपता जावे तो तुरत चोर भाग जावे अथवा मंत्र को बायें हाथ में लिख कर मुट्ठी बंद कर ऐसा खयाल करे जो मेरे बायें हाथ में धनुष है और मंत्र जपता जावे तो चोर तुरत भाग जाव॥

(१४) दुश्मन तथा भूत निवारण मंत्र

ॐ ह्रींअसिआउसा।
सर्व दुष्टान् स्तंभय स्तंभय।
मोहय मोहय अंधय अंधय।
मूकवत्कारय कुरु कुरु।
ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः ठः।

इस मंत्र की दो क्रिया हैं।

१ यदि किसी के ऊपर गनीम चढकर आजावे दुश्मन हमला करने आजावे तो जब उस से मुकाबले को जावे यह मंत्र १०८ वार मुट्ठी बांधकर जप कर जावे दुश्मन भागे।

२ यदि किसी बालक या स्त्री को कोई भूत पिशाच चुडैल डायन सतावे तो यह मंत्र १०८ वार मुट्ठी बांधे पढ कर उसे झाड़े सुबेह शाम दोनों वक्त झाड़ा करे तो भूतादिक जावें बालक, स्त्री अच्छे होवें।

नोट—इस मंत्र के नीचे के चरण में ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः ठः में दुष्टान् की जगह दुश्मन का नाम जानता हो तो ले या भूतादिक कहे।

(१५) वाद जीतन मंत्र।

ॐ ह्रंसः ॐ अर्हं ऐं।
श्रीं असि आउसा नमः।

पहिले यह मन्त्र १ लक्ष या सवा लक्ष जप सिद्ध कर लेवे फिर जहां वाद विवाद में जाना हो वहां यह मंत्र २१ वार पढ कर जावे तो वाद विवाद में आप जीते जय पावे।

(१६) विद्या प्राप्ति वाद जीतन मंत्र।

ॐ ह्रीं असिआउसा
नमो ह्वंवादिनि सत्यवादिनि
वाग्वादिनि वद वद ममवक्त्रेव्यक्त

वाचयासत्यंब्रूहिब्रूहिसत्यंवदसत्यं वद।
अस्खलित प्रचारसदैवमनुजा।
सुरसदसिह्रीं असहँ।
असिआउसा नमः।

यह मंत्र एक लक्ष बार जपिये तो सर्व विद्या आवं और जहां बाद विवाद करना पड़ जाय वहां वाद के झगडे में बोल ऊपर होय जीत पावे।

(१७) परदेशलाभ मंत्र।

ॐणमोअरहंताणं।
ॐणमोचंगवईए।
चंदायईएसतट्ठाए।
गिरे मोर मोर हुल हुलु चुलु चुलु
मयूरवाहिनि।

जब किसी परदेश में रोजगार के वास्ते धन प्राप्ति के वास्ते जावे तो पहल श्रीपार्श्वनाथ की प्रतिमाके सन्मुख यह मंत्र दश हजार जपे फिर श्रेष्ठ मुहूर्त में गमन करे जिस दिन जिस समय गमन करने लगे यह मंत्र १०८ बार जप गमन करे जब उस नगर में पहुंचे, यह मंत्र १०८ बार जपे, जिस नगर में रोजगार को जावे, रोजगार लगे परम लाभ हो महान धन मिले॥

नोट—जिस नगर में रोजगार को जावे उसमें मंगल क दिन प्रवेश नहीं करे यानि पहिले पहल उस नगर में मंगल के दिन न जावे मंगल के दिन प्रवेश करे तो महा हानि हो घर की पूंजी खोकर करजदार हो दिवाला निकाले काम भंग होवे॥

(१८) शुभाशुभ कहन मंत्र।

ॐ ह्रीँ अर्हं क्ष्वीँ स्वाहा।

किसी मुकदमे में या फिकर में या अंदेश में या बिमारी में रात को सारे मस्तक पर चंदन लगा कर चंदन सूकजाने के बाद १०८ बार यह मंत्र पढकर सोजावे जैसा कुछ होन हार हो स्वप्न में मालूम हो॥

(१९) मनचिंता कार्य्य सिद्धि मंत्र।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा स्वाहा।

इस मन्त्र से मन चिन्ता कार्य सिद्ध होय अर्थात् जब यह मंत्र जपे आगे धूप जलाकर रख लिया करे जिस कार्य की सिद्धि के वास्ते जपे मन में उसे राखे कि फलाने कार्य की सिद्धि के वास्ते यह जपता हूं यदि कोई इस मंत्र का सवा लाख जाप करे तो मन चिंते कार्य होय सर्व कार्य्य की सिद्धि होय।

(२०) द्रव्य प्राप्ति मंत्र।

अरहंत सिद्ध आइरिय उवज्झाय सव्व साहूणं।

इस मंत्र का विधि पूर्वक सवा लाख जाप करे तो द्रव्य प्राप्ति होय।

(२१) लक्ष्मी प्राप्ति यश करण रोग निवारण मंत्र।

ॐणमोअरहंताणं।
ॐणमोसिद्धाणं।
ॐणमोआइरियाणं।
ॐणमोउवज्झायाणं।
ॐणमोलोएसव्वसाहूणं।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः स्वाहा।

इस मंत्र के जप करने से लक्ष्मी बधे लोकमें यश होय सर्व प्रकार का रोग जाय।

नोट—सवा लक्ष जप विधि पूर्वक जपने से कार्य पूर्ण सिद्ध होता है फिर जिस मर्यादा से जपेगा उतनी मदद देगा॥

(२२) सब सिद्धि मंत्र।

ॐअसिआउसा नमः।

इस महा मंत्र का सवालक्ष जप करने से सर्व सिद्धि होय।

(२३) मंत्र द्रव्यलाभ सर्व सिद्धिदायक।

ॐ अरहंताणं।
सिद्धाणं।
आइरियाणं।
उवज्झायाणं।
साहूणं।
ममरिद्धिवृद्धिसमाहितं कुरुकुरु स्वाहा॥

यह मंत्र स्नान कर पवित्र होकर प्रभात मध्यान्ह अपराह्न (शाम) तीनों वक्त जपे द्रव्य लाभ होय सर्व सिद्धि होय।

नोट—२१ रोज तक तीनों सामायिक के वक्त निर्भय होकर दो दो घड़ी जाप्य करे।

(२४) पुत्र संपदाप्राप्ति मन्त्र।

ॐ ह्रीं श्रीं ह्लीं क्लीं असि आ उ सा
चुलु चुलु हुलु हुलु भुलु भुलु।
इच्छियंमे कुरु कुरु स्वाहा।
त्रिभुवन स्वामिनि विद्या।

जब यह मंत्र जपने बैठे आगे धूप जलाकर रख लेवे और ये मंत्र चौबीस हजार फूलों पर जपना एक फूल पर एक मंत्र जपता जावे इस तरह पूरा जपे घर में पुत्र की प्राप्ति होवे वंश चले॥

नोट—धन दौलत स्त्री पुत्र मकान सर्व सम्पदाकी प्राप्ति इसमन्त्रके जापसे होवे।

(२५) राजा तथा हाकिमवशीकरण मंत्र।

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं।
ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं।
ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं ।
अमुकं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

जब किसी राजा या हाकिम या बडे आदमी को अपने वश में करना हो अर्थात् यह चाहे कि फलाना मेरे पर किसी तरह मेहरवान होवे तो शिर पर पगडी वा डुपट्टा जो बांधता हो यह मंत्र २१ बार पढ उसके पल्ले में गांठ देवे जब मंत्र पढना शुरू करे तब पल्ला हाथ में लेवे २१ बार यह मंत्र पढ गांठ देवे सिर पर वह वस्त्र बांध कर उस के पास जावे तो वोह मेहरवानीकरे मित्र होवे जब मंत्र पढे अमुक की जगह उस का नाम लेवे । सर्ववश्यं । राजा प्रजा सर्व वश्यं ॥

(२६) वशी करण मंत्र ।

ॐ णमो अरहंताणं अरे अरणि मोहणि ।
अमुकं मोहय मोहय स्वाहा ।

इस मन्त्र से चावल तथा फूलपर मन्त्र पढ कर जिस के सिर पर रक्खे वहवश होवे।

जैन यन्त्र रोग निवारण ।

८	११	१४	१
१३	२	७	१२
३	१६	९	६
१०	५	४	१

यह यंत्र अपने जैन मत का है । इस को कागज पर लिखकर जो आदमी बिमार हों उसे यह दोनों वक्त पानी में घोल कर पिलाया करें और जो रोग निवारण जैन मंत्र जैन मंत्रों में लिखा है वह पढ कर चद्दर में गाठ दे वह चद्दर मरीज को उढावे तो सर्व रोग जावे । अगर पशु बिमार हो तो उसे पिलावे वह भी अच्छा होजावे ॥

अन्यमत के मंत्र।

जैनी भाइयों को विदित हो कि जितनी जल्दी अन्य मत के मन्त्र सिद्ध होते हैं उतनी जल्दी जैन मत के नहीं होते इसका कारण यह है कि जैन मत के मन्त्र सिर्फ उसही को सिद्ध होते हैं जिसका खान पान जिनागम की क्रिया के अनुसार शुद्ध हो शीलवान हो और मन्दकषायी (छल छिद्रादिक रहित) हो और अन्य मत के जो मन्त्र हैं यह हर एक को सिद्ध हो जाते हैं चाहे कैसाही व्यभिचारी (कुशीला) हो और खान पान की क्रिया कितनी ही भ्रष्ट हो जाति का कितना ही छोटा हो अर्थात् अन्यमत के मन्त्र धीवर भील चमार कठीक मेहतर आदि को भी सिद्ध हो जाते हैं चूंकि इस पञ्चम काल में अन्य मत के मन्त्र जल्दी सिद्ध होते हैं इस वास्ते जैनी भाइयों के उपकारार्थ कुछ अन्य मत के मन्त्र भी लिखते हैं यह मन्त्र भी हमने बड़ी कठिनता से बहुत कुछ धन बरबाद करके हासिल किये थे हम बहुत वृद्ध होगये हैं अगर यह मन्त्र जैनी भाइयों को नहीं बतलावें तो हमारे पीछे रद्दी में फैंके जावेंगे यह विचार, इस जैन बालगुटके दूसरे भाग में कुछ अन्य मत के मन्त्र भी प्रकाशित करते हैं।

अन्य मत के मंत्र साधन की विधि।

जो अन्य मत के मन्त्र हमने इस पुस्तक में लिखे हैं उनमें से जो मन्त्र सिद्ध करना हो इस विधि से करे सिंदूर पांचपान का बीड़ा २१ लौंग चराग (दीप) नवेद्य (पेड़ा) खुशबू (इतर फुलेल वगैरा) खुशबूदार फूल लोबान गूगल घी की धूप मिट्टी की कच्ची सैनक आगे रख कर पूजन करे फिर १०८ वार मंत्र जपे इसी तरह २१ दिन तक हररोज मंत्र जपे मंत्र जपने के बाद मंत्र की सामग्री प्रतिदिन एक मिट्टी की सैनक में दरया में पधरा दिया करे जहां दरया न हो तालाव में पधरावे प्रतिदिन पूजन इस मिट्टी की सैनकमें ही करा करे मिट्टी को सैनक कच्ची हो आवे में पकी हुई नहीं होवे सैनक नहीं मिले तो मिट्टी का पियाला लेवे जब मंत्र साधन करे प्रतिदिन स्नान करके मंत्र जपने बैठा करे इतने स्त्री सेवन नहीं करे, दीप की जगह चराग जलाया करे नैवेद्य की जगह पेड़ा हो धूप की जगह गूगल, लोबान, घी, की धूप हो मंत्र सिद्धि दरया के किनारे या तालाव के किनारे या निर्जन वन या पहाड़ों में या एकांत स्थान में करे इस विधि से २१ दिन में मंत्र साधन करे फिर हर होली दिवाली तथा ग्रहण के दिन सामग्री ले इसी विधि से १०८ वार मंत्र जपा करे, जिन मंत्रों में मंत्र साधन विधि नहीं लिखी सबके साधन की यही विधि जाननी और पूजन की सामग्री सब मंत्रों में यही जाननी फिर जहां जरूरत पड़े २१ वार मंत्र जप कर झाड़ दिया करे कार्य्य सिद्धि होय, अगर कोई बगैर मंत्र सिद्ध करे, मंत्र पढ कर झाड़ेगा उससे फायदा नहीं होगा।

(१) अपनी देह की रक्षा को मन्त्र ।

ॐ नमो लोह का लोढा जहां डाकी कुंडी हमारा पिण्ड पैठा ईश्वर कुंजी ब्रह्मा ताला हमारा पिण्डका श्रीहनवंत रखवाला ॥

इस मंत्र को पढ़ कर निर्जन वन पहाड़ की गुफा जंगल तथा भय के स्थान में कहीं रहो कुछ चिंता उसकी देह में नहीं उपजे ।

नोट—जब कोई मंत्र सिद्धि करे मंत्र सिद्धि करने से पहले यह रक्षा मंत्र जरूर पढ़ लेना चाहिये ।

(२) स्त्रीके गर्भ की रक्षा को मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को अकाश बोयो कपास गौरा काते छः मास ब्रह्मा चाढै पोता वा ईश्वर बीनो बंध मास एक बांधू दोई बांधू मास चार बांधू मास पांच बांधू मास छः बांधू मास सात बांधू मास आठ बांधू मास नव बांधू मास फलानी के पेड़ में बूंद भीजे न चीर रक्षा करे हनुमंता वीर । मेरा बांधा बंध छूटै तो ईश्वर महादेव गुरु गोरखनाथ जती हनुमंत वीर लाजे शब्द शांचा पिंडकाचा मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरो बाचाः ॥

पहले मंत्र सिद्धि करे फिर वक्त जरूरत गर्भ वंती स्त्री को डोरा (गंडा) बना देवे कमारी कन्या का काता सूत रविवार के दिन सात गांठ देय एक एक गांठ पर तीन तीन वार मंत्र पढ़ैं २१ वार मंत्र पढ़ लोबान गूगल घीः की धूपदे फिर वह गंडा स्त्री की कटी में बांधे नौ महीने पीछे खोले जब गंडा कमर से खोलै हनुमान का रोट पकावे गर्भ नहीं गिरे ॥

(३) स्त्री के गर्भ की रक्षा को मंत्र

ॐ नमो पवन पूतकाया का रात्र कीला गर्भ न छोड़ा ठांव जल कीलूं जलवाई कीलूं कील भगके द्वार मेरी कीला वा झाड़ा झड़े

इस गर्भ की रक्षा हनूमान करे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो उवाचा सत्यनाम आदेश गुरुका।

कुवारी कन्या का काता सूत सात गांठ देकर लोवान गूगल घी की धूप दे एक एक गांठ पर तीन तीन वार मंत्र पढ़ २१ वार मंत्र पढ़ लोवान गूगल, घी, की धूपदे वह गंडा (सूत का डोरा स्त्री की कटी में) बांधे नौ महीने पीछे खोले गर्भ नहीं गिरे हनुमान का रोट पकावे पहले मंत्र सिद्धि कर लेवे।

(४) नेत्रों की पीड़ा दूर करने का मंत्र।

सातों रीदा सातों भाई सातों मिलके आंख बराई दुहाई सातों देवकी इन आंखन पीड़ा करै तो धोबी की नाद चमार के चूल्हेपड़े मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरो वाचा सत्यनाम आदेश गुरुका।

पहले मंत्र सिद्ध कर लेवे फिर जब किसी की आंख पीड़ करे २१ बार मंत्र पढ़ नींम की टहनी से झाड़े मंत्र पढ़ता जावे झाड़ता जावे तीन दिन तथा सात दिन सुबह के वक्त झाड़े आंख की पीड़ जाय।

(५) नेत्रों की पीड़ा दूर करने का मंत्र।

ओंणमो श्रीराम की धनी लक्ष्मन के बान आंख दरद करें तो लक्ष्मण कुंवार की आन मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा सत्यनाम आदेश गुरू का।

पहले मंत्र सिद्ध कर लेवे फिर जब आंख पीड़ा करे नीम की टहनी से २१ बार मंत्र पढ झाड़े मंत्र पढता जावे आंख पर झाडता जावे तीन दिन या ७ दिन सुबहके वक्त झाडे आराम हो।

(६) डाढ का दरद दूर करने का मंत्र।

ओं नमो आदेश गुरू की वन में व्याई अंजनी जिन जाया

हनुमंत कीडा मकडी माकुडा यह तीनों भसमंत गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्यनाम आदेश गुरू को।

पहले मंत्र सिद्धि कर लेवे फिर जब किसी की डाढ में पीड होवे उसे कहे जिस डाढ में पीड़ा है उसे अंगुली से पकड ले और बोल कितने वर्ष को झाडूं वह कहे ११ वर्ष को या २१ वर्ष को या उमर भर को उतने वर्ष के वास्ते नोम की डाली से २१ वार मंत्र पढ कर झाड़े मंत्र पढता जावे नीमकी डाली से झाडता जावे तीन दिन तक सुबह के वक्त झाड़े आराम होय।

(७) ताप तिल्ली दूर करने का मंत्र।

ओं णमो हुतास पर्वत जहां सुरहगाइ सुरहगाय का पेट में वच्छा वच्छा के पेट में तिल्ली दवा दवा तिल्ली कटे सरकंडा वढे फौंपी कटे हरो फुरो।

आठ अंका करके छुरी के फलपा सों झाड दीजे सरकंडा वढे छुरी को लोह कटै अर्थात् पहले इस मंत्र को सिद्धि कर लेवे फिर एक सरकंडा आगे रख लेवें लोहे की छुरी से २१ वार मंत्र पढ कर सरकंडे पर झाडे छुरी का सिर तिल्ली पर ऐसे फेरे जैसे की रस्सी कैंचे मानो तिल्ली को काटे है हर वार हर मंत्र की साथ सरकंडे पर ऐसे झाडे सरकंडा कुवे में डालदेवे इसी तरह आठ दिन तक हररोज सुबह हीझाडे सरकंडा वढे तिल्ली कटे आराम होय।

(८) पीलिया इरकान दूर करने का मंत्र।

ओं नमो आदेश गुरू को रामचंद्र शरसाधा लक्ष्मन साधा वान काला पीला राता पीला थोथा पीला पीला पीला चारों उड़जो रामचंद्रजी थांके नाम मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा

पहले मंत्र सिद्धि कर लेवे फिर जब किसी को पीलिया हो जावे बिमारी से आंख पीली हो जावें सात सूई से पीतल की कटोरी में पानी भर के २१ वार मंत्र पढ कर झाड दीजे पीलिया जाय।

(९) जानवां डमरूपसली वाय का मंत्र।

सत्यनाम आदेश गुरू को उखंखरी खंखरा कहांगया सवालाख पर्वतों गया सवा लाख पर्वतों जाय कहा करेगा सभाभार कोयला कर कहा करेगा हनुमत वीर नवचंद्र हास खडग धर कहा करेगा जानवां डौरू पांसली वाय कोट कूटखाटी सामुद्र नाघेगा जगत गरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

पहले मंत्र सिखकर लेवे फिर तिल्ली का तेल, सिंदूर, तीर से झाडेजान वा नाहरवे को कहते हैं डमरू जो फोडा गोडे की चपनी में निकलता है जो टांग काटे बदून आच्छा नहीं होता उसे कहते हैं पंसली जो बालकों के डंभासांस उठता है जिसे पंसली चले कहते हैं जिस बिमारी में १०० में से ९५ बालक मरते हैं उसे कहते हैं वाय वायगोला को कहते हैं इतनी बिमारियां इस मंत्र के झाडने से जाती हैं।

(१०) दश रोग का झाडा।

पर्वत ऊपर पर्वत और पर्वत ऊपर फटिक शिला फटिक शिला पै अंजनी जिनजाया हनुमंत ने हला टेहला कांछ की कछराली पाछे पीछे की अदीठ कानकी कनफेड़ रान की वद कंठ की कंठवेल घुटनें का डहरु डाठ की डढसूल पेट की तापतिल्ली फीया इतनों को दूर करे भस्मंत नातर तुझे माता अंजनी का दूध पिया हुवा हराम मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचः सत्यनाम आदेश गुरू को ॥

मंत्र सिद्ध करने की विधि।

सात शनिश्चर हनुमान का पूजन सिंदूर पान का बीडा २१लौंग धूप दीप नैवेद्या दिक से करे एक सौ आठ प्रतिदिन जापकरे इतने स्त्री सेवन नहीं करे मंत्र सिद्ध होय फिर होली दिवाली ग्रहण में १०८ जाप उसी तरह करे अदीठ कनफेड़ वद कंठमाला डाढ शूल राख से झाड़े डहरु को आकसे ताप तिल्ली छुरी से झाड़े हनुमान का प्रसाद

बढवा दिया करे आठ दिन तक रोज सुबह ही झाड़े २१ बार मंत्र पढ़ कर झाड़ा करे अदीठ जो कमर पर निकलता है जो जान ले कर जाता है उसे कहते हैं डहरू जो गोडे में फोड़ा निकलता है उसे कहते हैं ॥

(११) बवासीर का मंत्र।

उमती उमती चल चल स्वाहा।

पहले मंत्र सिद्ध कर लेवे फिर लाल सूत्रमें तीन गांठ देकर २१ वार मंत्र पढ कर पांव के अंगूठे में बांधे बवासीर जाय।

(१२) विसाली मंत्र।

ॐ ह्रों ह्रीं लुट की नपाति नपाति स्वाहा।

पहले मंत्र सिद्ध कर लेवे फिर २१ वार मंत्र पढ कर नीम की डाली से झाडे सुबह के वक्त तीन दिन तक या आठ दिन तक झाडे विसाली जो नाक में बिमारी हो जाती है नाक और ऊपरला होंट फूल जाता है वह मिट जायगी।

(१३) कोडीनगरा का मंत्र।

ॐ नमो आदेश गुरू को जादिन घरतें चाली रानीसहस कोटी लख च्यारि कोट कालिका वली सब एक उन्हार मंहिर मांहिघर करै प्रजाने बहुत सतावै दुहाई जती हनुमंत की हमारी गैल में आवे तो लंका से कोट समुद्र सी खाई जैकीडी नगरो रहै तो जती हनु मंतबीर की दुहाई शब्द सांचा पिंडकाचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

पहले मंत्र सिद्धि कर लेवे फिर जब किसी नगर में टीडीदल आवे तिल कालों पर ७ तथा १४ वार यह मंत्र पढ टीडीदल की तरफ फैंके टीडीदल जाय उस नगर में फिर टीडीदल नहीं आवे।

(१४) सभा मोहनी मंत्र।

कालू मुख सों करूं सलाम मेरी आंखों में सुरमा वसे जो देखे सो पाउं पडे दुहाई गौ सुल आजम दस्तगीर की।

मंत्र सिद्धि करने की विधि।

सवालाख गेहूं पै १२५००० मंत्र पढ पढ के वाको आटा करावे घी खांड मिलाय उसका हलवा बनावे फिर गौ सुल आजम दस्तगीर की उसमें से नियाज़ दिलावे फिर उस हलवे में से जो बचे आप खावे मंत्र सिद्धि होय फिर जब किसी सभा में जाय सुरमा पर सात बार यह मंत्र पढ.आंख में लगाया जाय तब सभा वश्य होय।

(१५) सभा मोहनी संदूर।

हतेली तो हनुमंत वसै भैरूं वसै कपाल वाहर सिंध का मोहनी मोहे सब संसार। मोहन रे मोहनता वीर सब वारन में तेरा सीर सब की दृष्टि वांधदे मोहि तेल संदूर चढाउं तोहे तेल संदूर कहां से आया कैलाश पर्वत से आया कौन लाया अंजनी का हनुमंत गौरी का गणेश काला गोरा तोतला तीनों वसें कपाल विंदा तेल सिंदूर का दुश्मन गया पताल दुहाई कामियां सिंदूर की हमें देख शीतल हो जाय हमारी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्यनाम आदेश गुरु का।

मंत्र सिद्ध करने की विधि।

सात शनिवार सात रविवार १४ दिन तक तेल का दीपक वाल कर लौबान गूगल घी की धूप खेवे, मिठाई भोग धरे फूल पान का बोड़ा सिंदूर २१ लौंग करके पूजन करे १०८ बार मंत्र जप करे मंत्र सिद्धि होय फिर जहां जाय सिंदूर पर सात बार मंत्र पढ माथे पै लगा जाय राजा गुस्से होजाय दंड देने को बुलावे देखते ही शीतल होजाय जिस सभा में जाय वहां के सब मनुष्य बड़ा आदरभाव करें और अंत में सन्मान करे।

(१६) चोरी काढने का मंत्र।

उह मुह जल जलाल पक चोरी घर पछाड भेज कुंदा स्याव मदाया कहार या कही।

मंत्र सिद्ध करने की विधि ।

शनिश्चर से २१ दिन तक प्रति दिन एक हजार जाप करे तेल का दीपक बाले लोवान गूगल घी की धूप खेवे पता से मिठाई भोग धरे फूल सिंदूर पान बीड़ा २१ लौंग से पूजन करे मंत्रसिद्धि होय फिर जब किसी की चोरी निकासे तो बृहस्पति वार को दरयाव के किनारे बैठ के पूर्व विधि पूजन कर १०८ वार मंत्र जपे सात दिन तक करे चोर जानो जाय जहां माल धरो होय सो जानो जाय ।

(१७) चोरी काढने का मंत्र ।

ॐ १७०० सतरह सौ पीर चौसठ सौ योगिनी बावनसे वीर बहत्तरसे भैरू तेरासेतंत्र चौदहसे मंत्र अठारह सौ प ंत सतरह सौं पहाड नौ सौ नदी निन्यानवें सौ नाला हनूमंत जती गोरष वाला कांसी की कटोरीं अंगुल चार चौडी। कहो वीर कहां से चलाई गिरनार पर्वत से चलाई गिरनार पर्वत से चलाई य अठारा भार वनास्पती चलै लौना चमारी की वाचा फुरो कहां कहां फुरो चोर के जाय चंडाल के जाय कहा कहा लावे चोर को लावै चाकर को लावेगडा धन जाय वतावै चाल चले रे हनुमंता वीर जहां हो चले जहां है रहै न चले तो गंगा जमुना उलटी वहै शब्द शांचा पिंड काचा मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्यनाम आदेश गुरू का

विधि ।

पहले मंत्र सिद्धि कर लेवे फिर दिवाली की रात को कांसी की कटोरी अंगुल चार चौडी पैसा ३ भर की घडावे जब चोरी निकाले उस कटोरी को पूजा करके जिस मकान में चोरी हुई हो कटोरी चौक में धरिये मंत्र पढता जावे उरद कटोरी में मारता जावे उडद के देते कटोरी चले, चोरी का माल जहां होय तहां जाय, मंत्र सिद्धि करवे की विधि इससे पहले मंत्र में लिखी है ।

(१८) चोर को पहचानने का मंत्र ।

ॐ नमो नाहर सिंह चीरज जंतू चाल पौन चाले पानी चाले

चोर का चित्त चालै चोर सुख लोही चालै काया थंभे माया परा करे वीर या नाथ की पूजा पाई टलः गोरखनाथ का काज्ञा मेटै नौ नाथ ८४ सिद्ध की आज्ञा।

विधि।

पहले मंत्रसिद्धि कर लेवे फिर जब चोरी निकासे १०८ वार मंत्र पढ पढ चावल कटोरी के मारे कटोरी चाले निराधार चोर के माथे जाय वसे चोरी निकसे सही, मंत्र सिद्धि करने की विधि कटोरी बनाने की विधि पहले मंत्र में लिखी है।

(१९) चोरी काढबा की विधि।

सुफेद मुरगा जिस के सिरपर टौरा होय ल्यावे सूरत सखरा लिख उस मुरगे के गले में बांध के टोकरा के नीचे ल्यावे टोकरा पै सब लोग हाथ लगावें चोरका हाथ लगावै चोरका हाथ लगाते ही मुर्गा बोलेगा।

(२०) वैरी के जेर करबा को मंत्र।

ॐ नमो थावली थावली उसका चश्मा कुलफ उसका वाजू कुलफ दुश्मन को जेर हम को शेर।

फूल पानका वीड़ा सिंदूर चराग पेड़ा २१ लौंग लोबान गूगल घी की धूप लेकर २१ दिन हनूमान की पूजा करे मंगल से प्रति दिन १०८ वार जाप करे फिर मंगल की मंगल १०८ जाप करे व्रत राखै जहां वैरी बैठा होय रेत की चुटकी पै ३ या ७ वार मंत्र पढ के वैरी की तरफ फैंके वैरी जेर होय।

(२१) वैरी नामरद होय।

ॐ नमो आदेश गुरुको वांधूं अंबर वांधू तारा वांधूं रक्त वितु की धार ऊपर वांधे कामसेन तले वांधे हनुमंत पांचूं पंडूसा खदें फलाने की काया वंध हनुमंत गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्यनाम आदेश गुरु का।

सात शनैश्चर या २१ दिन हनुमान की पूजा करे प्रति दिन १०८ बार मंत्र जपै फिर नीलो तागा शनीवार को मंगाके सात गांठ दे सात बार मन्त्र पढ़े जाकी खाट का पाया नी गाड़े सो ना मरद होय।

(२२) उच्चाटन(उखाड़नेका) मंत्र।

ॐ दमो मसान वारीय उच्चाटयः उच्चाटयः कुरु कुरु स्वाहा।

ग्रहण में मसानका हाड और कोयला लाके २१ दिन पूजन कर मंत्र पढ़ सिद्ध करै फिर जिसके घर में वोह हाड गाडे उस का उच्चाटन होय अथवा शनिश्चरइतवार को दो पहरे के समय मसान में जाकर हाड लावे मंत्र सिद्ध करे फिर जिसके घर में यह हाड गोडे उसका उच्चाटन होय।

(२३) उच्चाटन।

ॐ ह्रीं भातेश्वरी गंडाली ,अमुकस्य या असुकी दः दः पक पच मथ मथ उच्चाटयः उच्चाटय हुंफट स्वाहा॥

पहले २१दिन में पूजन कर १०८ वार मंत्र प्रतिदिन जप मंत्र सिद्ध करे फिर तिल को खल पर १०८ वार मंत्र जप होम करे उच्चाटन होय मंत्र में अमुक की जगह जिसका उच्चाटन करना हो उसका नाम लेवे॥

(२४) प्रेत वश करने का मंत्र।

ॐ श्रीं धं वं भुं भूतेश्वरी मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

मूल नक्षत्र में बंबूल के नीचे जाके दिन दिन या मंत्र को जपै प्रति दिन १०८ प्रेत प्रगट होय मांग मांग कहे तब वचन लेके जो मन में विचारी हो तैसे करे।

(२५) डांकनी साकिनी का मंत्र।

ॐ नमो हनुमानजी आया कांई कांई लाया डांकनी साकिनी आनि आनि कुरु कुरु स्वाहा॥ विधि

पहले यह मंत्र पूजन कर २१ दिन में सिद्धि कर लेवे फिर जरूरत के वक्त बकरी बाकी का पीसा ,सतनजा ,शनिवार रोगी की मां उसका पुतका बनावे पूआ पुतका

अपनी लांवन के कपड़े का बनावे और सवा पाव तिल्लों के तेल में तर करे फिर पुतला को तकला में पिरोले रोगी को सात बार उतारके वाको शिर की ओर से वाती की नांई जलावे तीन तीन उड़द मंत्र के जपते पुतला पै मारता जाय सवा पाव उड़द मंगाराखे फिर सतनजा के पुतला को डाकन समझ कर १ थालमें खड़ा करे वा थाल में पानी भरदे जिससे डाकनी भाग जाय फिरथाल के पुतला पै जलते हुए पुतला का तेल टपकता रहे और तेल उस पुतलापै जलदी जलदी टपकता रहे जिससे जलदी जलदी तेलकी बूंद डाकनी पर पड़ें और डाकनी पर पड़ने से डाकनी जले ज्यों ही डाकनी के अंगमें आग लगेगी तुरत डाकनी हाजिर होयगी।

(२६) आसेव उतारने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरुको हनुमंत बीर वजरंगी वज्र धार डांकनी शाकिनी भूत प्रेत जिंद खईश को ठोक ठोक मार मार नहीं मारे तो निरंजन निराकार की दुहाई मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरोमंत्र ईश्वरो वाचा॥

विधि

प्रथम पूर्व रीति से सिद्ध करे शनिवारसे २१ दिन तक पाछे जब किसी को आसेव का खलल होवे तो एक कांकरी चौराहे की अथवा उड़द लावे उस पर २१ बार मंत्र पढ़ कर मारे मंत्र पढ़ता जावे उड़द मारता जावे आसेव उतर जाय सही।

(२७) आसेब उतारने का मंत्र।

बिस्मिल्ला रहमान रहीमाई या शिलावा चला नौलाख चलावेराती जी का असवार चला कौन कौन चला हाजी चला गाजी चला ढोल धांजवा चला भेर वाजंती चली तखत लाइया सिलार का चला तखत मूसा सा पैगम्बर का चला सात परी कहां को चली आसमान को चली वरा खुदाई के काम को चली कौन कौनसी परी चली स्याह परी चली सुफेद परी चली महा परी चली नूरपरी चली महापरी चली जां परी चली गोलपरी चली कौन कौन को लेकर चली एक लाख अस्सी हजार लाव लश्कर लेकर चली चौंसठ गढांन सो लेकर चली कालिका किलकलाती

चली झूम नगर सो झूमका देवी चली हरीडवी जंगाली डवी डवी करे चोट लो दादा आदम के घाले घाव हकसिलार हक सिलार इला इलाह इललिल्लाह महम्मद रसूलल्लाह ।

मंत्र दिन २१ में सिद्ध करे फिर जरूरत के वक्त २१ वार मंत्र पढ़ उड़द मारे मंत्र पढ़ता जावे उड़द मारता जावे आसेब उतरे सही ॥

(२८) आसेब उतारने का मंत्र ।

ऊँ नमो नाहर सिंह नाहरी का जाया याद किया सूं जल्दी आया पांचपान का बीड़ा मद्यकी धार चाल चाल नाहर सिंह वीर कहां लगाई एतीवार देसूं केसर कूकड़ो देसू मद्य की धार आरो घासआयो नहीं कहां लागई एती वार देखूं नाहर सिंह वीर तेरा किया फलाने का घट पिंड वांध वोले ताकी जीभ वांध झांकलाके नैन वांध हीयाचूका वुगड़ो बुगडो वांध वोटी वोटी वांध धकड़ को आछाड़ वांध मेरा पगतले लापकड चढ़ता देसू केसर कूकड़ो उतार ता देसू मद्यकी धार इतना दूं जब उतर जोखल जो घेर मधार हमारा उतारा उतर जो और का उतारा उतरे तो नाहर सिंह तू सही चंडाल शब्द शांचा पिंडकाचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ॥

विधि ।

चना बराबर मुरगा की कसर गूगल में मिलाय गोली करे दारू को मिला के पूजन के समय आगपर धरदिया करे पांच पानका बीड़ा फूल सिंदूर २१ लौंग सुपारी जायफल समेत बनाके भोग धरे दिन २१ प्रति दिन १०८ जाप्य करे मंत्र सिद्ध होय फिर जरूरत के वक्त २१ वार मंत्र पढ़ उड़द मारे आसेव उतरे सही।

(२९) कियाकराया उतारबा को मंत्र ।

ऊँ नमो आदेश गुरु कोउ अपर केश निकट मेष षभं प्रति प्रहलाद राखे पाताल राखै पांवदेवी जंघा राख कालका मस्तक महा देवी राखै यह पिंड प्राण को छेरे छेदे तो देव दाना भूत प्रेत डंकनी

शंखनी गडते पती जरी एक पहरचौ द्व पहरचौ सांझ को सवेरा को कियाको कराया को उलटि वाहि पिंडपरिपड़ि इस पिंडकी रक्षा श्री नरसिंह जी करे शब्द शांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

पहले यह मंत्र २१ दिन में पूजन कर १०८ वार मंत्र प्रतिदिन जप सिद्ध करे फिर वक्त जरूरत २१ वार मंत्र पढ़ उड़द मारे मंत्र पढ़ता जावे उड़द मारता जावे सर्व प्रकार के मंत्रों का असर जाता रहे रोगी आच्छा होय।

(३०) वशीकरण मंत्र।

अगर किसी का राजा, हाकिम, अफसर, तथा मालिक उससे नाराज होजावे या कोई यह चाहे कि मेरा राजा, हाकिम, अफसर, तथा मालिक मेरे पर कृपालु हो जावे या कोई पुरुष अपना दूसरा व्याह करके पहली स्त्री को तजदेवे उसको खान पान के वास्ते भी नहीं देवे या कोई स्त्री व्यभिचारिणी स्त्रियों की कुसंगतिसे उनके बहकाये में आकर पर पुरुष में रत हो जावे अपने पति से नफरत करने लगे घर में हर वक्त क्लेश रक्खे तो वशीकरण मन्त्रोंसे उपरोक्त सब जन अपना दुःख दूर करसक्ते हैं और सुख की प्राप्ति कर सक्ते हैं इस अभिप्राय से आगे हम चंद वशी करण मन्त्र लिखते हैं।

(३१) परीके वशकरने का मंत्र।

ओं ह्रीं कनकपरी स्वाहा॥ विधि।

पीपल के पेड़के नीचे शनिवार से ८ दिन लों जाप करे प्रतिदिन एक हजार और प्रतिदिन १०८ आहुती शराब से देवे, आठवें दिन परी हाजिर होय, जाप के दिनो में ब्रह्म चर्य्य से रहे भोजन दूध का एक वार करे॥

(३२) वशीकरण अमल सुरमा का मंत्र।

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम जलदेवि जल डरेपलदेख थल डरे सिंहासन बैठ राजा डरे शीतल पाटी बैठीरानी डरे जो न माने इस सुरमें की आन उसपर पड़े द्वाजदश इमाम के वाण॥

विधि।

दिन २१ दिन प्रति १०८ जाप करे चिरागी (पूजन की सामग्री) लोबान गूगल घी की धूप मिठाई पेड़ा इतर फूल सिंदूर पांच पान का बीड़ा (२१ लौंग चराग आगे धरे

मंत्र सिद्ध होय फिर वक्त जरूरत सुरमें पर २१ वार मंत्र पढ़ आंखमें डाल जिसके सन्मुख जावे वश होय कृपा करे ओहदा वढ़ावे इनाम वखशे हुकम के तावे रहे मनशा पूर्ण करे।

(३३) काजल वशी करण मंत्र।

पद्मनी अंजन मेरा नाम इस नगरी में पैसके मोहुं सगरागांव न्याव करता राजा मोहूं फरस बैठा पंच मोहूं पनघट की पनिहार मोहूं इस नगरी में पैस छतीस पवन मोहूं जे कोई मार मार करता आवे ताहि नाहर सिंह वीर वावा पग के अंगूठा तले घेर घेर लावे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्यनाम आदेश गुरुका॥

विधि।

सात शनि रविवार नाहरसिंहकी पूजा करे दीपक चंदन कुंकुम अगस्त के पुष्प गूगल नैवेद्य पान सुपारी से प्रति दिन १०८ वार मंत्र जपे पानलौंग सुपारी सीरनी घी में मिलाके होम करे पृथ्वी पर सोवे एक वार खाय स्त्री सेवन नहीं करे मंत्र सिद्ध हो जाय जब उंगाकी जड़ नाहन वनकी रूई की वत्ती वनाके काजल पर सातवार मंत्र पढ़ के आंखमें लगावे जो देखे सो वश होय॥

(३४) वशी करण अमल लौंग मंत्र।

सत्यनाम आदेश गुरुका लौंगा लौंगा मेरा भाई इनही लौंगा ने शक्ति चलाई पहली लौंग राती माती दूजी लौंग जोवन माती तीजी लौंग अंगमरोड़ चौथी लौंग जो तेरी खाय फलाने के पास से फलाने कने आजाय मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि।

या मंत्र को पूर्ण विधि से सिद्ध करके एक एक लौंग पै सात सात मंत्र पढ़ के जिसे खवावे वश होय।

(३५) वशीकरण अमल पान मंत्र।

ॐ कामरू देश कामाख्या देवी तहां बैठे इसमाइल जोगा दिये

चार पान एक ही पान जोराची माटी दूजे पान जो विरह सजोती तीजे पान जो अंग मरोड़े। चौथे पान जो दुहु कर जोरे। चारों पान जो मेरे खाथ। मेरे पास से कहीं न जाय। ठाडे सख न बैठे सुख फिर। फिर देखे मेरा मुख । कामरू कमख्या की आज्ञा फुरो इन वचनों की सिद्धि बडे ओं ठः ठः ठःठः ठः ठः ठः॥

विधि।

रविवार को एक एक पान पर तीन तीन वार पढे पाछे चारपान बीरा में घाल खवावे वश्य होय प्रथम २१ दिन में मंत्र सिद्ध कर लेना चाहिये।

(२६) वशीकरण अमलसुपारी मंत्र।

खरी सुपारी दामन मारी राजा परजा खरी पियारी मंत्र पढे लगाउं तोहि हिया कलेजा लावे तोड जीवत चाहे पगथली मूवा सेवे मसान या शब्द की मारी न लावे तो जती हनुमंत की आन शब्दशांचा पिंडकाचा मेरी भक्तिगुरूकीशक्तिफुरो मंत्रईश्वरोवाचा॥

विधि।

पहले २१ दिन में मंत्र सिद्ध करे फिर सूर्य ग्रहण में सात सुपारी पर २१ वार मंत्र पढ़े फिर जिस को सुपारी खिलावे वह वश होय॥

(२७) वशीकरण अमल फूल मंत्र।

कामरू देव कमख्या देवी तहां वसे इसमाईल जोगी इसमाईल जोगी ने लाई वाडी फूल लौनाचमारी फूल राता फूलमाताफूल हांसा फूलवीसा तहा वसे चम्पे का पेड चम्पे के पड में रहे काल भैरू भूत पलीत मरे मसान ये आवे किस के काम ये आवे टोना टामन के काम भेजूं काल भैरूं को लावे मुसकें बांध बैठी होतो वेगीलाऊं सोती होतो उठालाऊं वह सो वे राजा के महलों जाके महलों पर मुझसुगेनी फलानी राणी फूल दूं उसी के हाथ वह उठलागे मेरे

साथ हम को छोड़ पर घर जाय छाती वहीं मर जाय मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा थूके उमाह सूके लोना चमारी भरे जोगी के कुंड में परै वाचा छोड कुवाचा जाय तो नार खकड में पडे जाय। विधि।

नौ नौरतों में यह मंत्र एक स्थान में जपे गूगल की धूनी दे दिन प्रति १०८ जाप्य नौ नौरतों दशवां दशहरा और चौदश अमावस दिवाली को जपे सिद्धि होय फिर रवि वार को चम्पा के फूल पर २१ वार मंत्र पढे जिस को सूंघावे वह वश्य होय।

(३८) वशीकरण की भुरकी मंत्र।

मोहनी मोहनी कहांचली वरा खुदाई कामचली और देखे जले वलें मेरे देखे पैरों पडे छूमत का वावा गुरू का सवक सब सांचा सत्यनाम आदेश गुरू का। विधि।

रविवार को सवेरे गुड का शर्वत पीवे दिन भर भूखा रहे रात्री को इलायची सुपारी लौंग एक बीडापान एक पेडा घी का दीपक लाके चौंक देके जोत करे दीपक के आगे गूगल खेवे बीडा पेडा भोग धरे इलायची लौंग सुपारी पर एक हजार एक सौ आठ मंत्र पढे पूजा करके भोग का पेडा बीडा आप खावें फिर रोटी खाय लौंग सुपारी इलायची को पीस कर पास राखे जिस को वश करना हो उस के वायां पांव के नीचे से रेत माटी उठा के वा चूरण में मिला के उस के लगावे (ऊपर डाले) वश होय।

(३९) वशीकरण मंत्र।

विसमिल्ला अर्रहमानिर्रहीम इला इला एला एने सयलं लिल्ला हे आनि मिले सपामुहमद रसूलल्लाह पना हमारा कहना करै लाइलाह इलिल्लाह मोहम्मद रसूलिल्लाहा। विधि।

प्रति दिन २१वार जाप २४ दिन तक करे शकरलोवान फूलखुशबोई सिंदूर पान बीडा लौंग आदि की चरागी धरे मंत्र सिद्ध होय।

(४०) बिच्छू का जहर दूर करने का मंत्र।

अगर किसी के बिच्छू काट जावे तो फौरन जिस जगह काटा होवे उसके ऊपर

राख रख कर जखम को अंगुली से दबावे फिर लोहे की कुछ वस्तु हाथ में लेकर जखम के ऊपर फेरता जावे और २१ बार यह मन्त्र पढे।

मन्त्र ओंआदित्यरथवेगेन विष्णोर्वाहुबलेन च। सुपर्णपक्षपातेन भूम्यांगच्छ महाविष॥ १॥

ओंपक्ष जोगपदत्तश्री शिवोत्तमप्रभुपदाज्ञा। भूम्यां गच्छंमहाविष॥२॥

यह मंत्र २१ बार पढ़े डंक के ऊपर से राख दूर कर यह दवा लगा देवे॥

जमालगोटे को पाणी में घिसकर बिच्छू के डंक ऊपर लगावे अथवा नौशादर हरताल पाणी में घिसकर डंक के ऊपर लगावे तो बिच्छू का विष दूर होवे॥

(४१) मसान दूर करने का मंत्र।

ऊन	२५	२५	वरी
वरी	२५	वरी	२५२
२५२	२५२	२५२	२५२
वरी	वरी	वरी	वरी

जिसको मसान की बिमारी होवे उसके गले में यह यन्त्र लिखकर बांध देवे फिर मसान का असर न रहेगा॥

(४२) अथ रंडियों के पास महा मंत्र।

हम ने इस पुस्तक में अनेक जैन मंत्र और अन्यमत के मंत्र लिखे हैं मंत्रों के उतारने चढाने की सब विधि लिख दी है परंतु रंडियों के पास एक ऐसा महामंत्र है कि जिसे कोई उतार ही नहीं सकता, जिस पर वोह यह महामंत्र चला या है. आजतक उससे कोई भी नहीं बचा, बड़े बड़े आलिम बड़े बड़े फाजिल बड़े बड़े दाना बड़े बड़े पूरे फकीर बड़े बड़े जहांदीदा हकीम राजा महराजा नवाब बादशाह शाहनशाह एक दफे जो उन के मंत्रों के दावा के फंदे में फंस गया पस उनके वश में होजाते हैं जो कुछ धन दौलत एकसे लेकर अरबों तक उसके पास हो सब रंडी के हवाले कर देता है॥

१—बहुतेरों की तो यह हालत होती ह कि जब उनके पास धन नहीं रहता अपनी स्त्री का जेवर, कपडा, घर का असबाब घर के वर्तन बेच कर उनके हवाले कर देते हैं आखिर को फाके मस्त हो कर उन रंडियों का थूकने का उगालदान, साफ

करते हैं, उनके जूठे वर्त्तन मांजते हैं, उनके हुक्के की चिलमें भरते हैं, उनकी जूतियां साफ करते हैं, उनसे भडवे के चोदे कहला कहला कर इनाम में सिर की नंगी टटरी पर जूतियां खा खा कर उन रंडियों को जूठले पेटभर अपनी आयु बरबाद करते हैं। यहां हमारे पाठकजन हैरान हुए होंगे कि रंडियों के पास ऐसा क्या महा मंत्र है कि जिस में इतना असर है कि सांप के काटे का जहर तो उतर सकता है परंतु रंडियों का महामंत्र उतर ही नहीं सकता, सो हम अपने पाठकों को बताते हैं ताकि उससे बचने को होशयार रहैं वोह महामंत्र यहहै रंडियां लोगोंको अपने फंदे में फंसाने को इस प्रकार करती हैं कि बाजार से बहुत बारीक मल मल छेद दार जिस में साफ नजर आवे मंगा कर उस के जरा जरा से टुकडे काट कर पांच पांच छै छै लौंग हर एक टुकडे के अंदर बंद कर सूई से सींव कर झाडी के बेर बराबर उन की गोलियां बना लेती हैं जब रंडी को कपडे (हैज) होते हैं उसी दिन जितनी लौंगों की गोली वोह अपने पिशाब करने के दरवाजे में रख सके रख लेती हैं, जब टट्टी पिशाब की हाजित हो उन को निकाल कर हाजित से फारिग हो फिर उसी वक्त उन को वहां ही रख लेती है, तीन दिन या पांच दिन जब तक उसे कपडे आवें तब तक वहां रखती हैं फिर ऋतु स्नान के समय को निकाल कर हिफाजत की पोशीदा जगह में साये में सूकनी रख देती हैं अगले दिन उन का कपड़ा सूक जाने पर लौंग निकाल कर किसी पियाले में पोशीदा जगह में सायेमें सूकनी रख देती हैं सूक जाने पर शीशी या डिबिया में बंद कर पानदान में या संदूक में रख छोड़ती हैं पान में जिसे दो तीन बार एक एक लौंग खिलाई वही ताबे दार हुवा रंडी को देखे तो जीवे जराबी उसे नहीं देखे तो पागलसा हुवा फिरै, जो रंडी करे सोई करे इसी तरह छालियों के टुकडे भी बनते हैं इलायची भी बनती हैं पर लौंगों में बड़ा असर होता है पस जब रंडी पान लगाकर देवे उसमें वोह लौंग लगा देती है या छालीया इलायची जो रंडी देवे कभी भी नहीं खानी उसके नौकर सिखाये समझाये हुए होते हैं बाजारसे पान भी मंगाकर देवे लौंग उस पानमें या छालिया इलायची वही होंगी पस, चाहे वोह अपने पानदानमें से पान लगाकर देवे या बाजार से मंगाकर देवे कभी नहीं खाओ, रंडियों के इस महामंत्र का हमने पोल इस वास्ते खोला है कि पाठक उससे बचें और अपनी स्त्री को घरमें बसावें रंडियों के गुलाम बनाकर अपना धन और तन उनको नहीं देवे अपना धर्म भ्रष्ट नहीं करें दूसरे जिन स्त्रियों के भरतार रूस जाते हैं, उन को घर में नहीं बसाते पर स्त्री में रत हो कर अपनी स्त्री के महलमें नहीं पधारते वह स्त्री भी इस रीति से अपने पती को अपने वश में कर अपना संकट दूर कर सकती हैं॥

इति दूसरा अध्याय समाप्त।

जैनबालगुटका दूसराभाग।

तीसरा अध्याय।

इस तीसरे अध्याय में श्री जिन मंदिर में जाकर जिन प्रतिमा के दर्शन करने, शास्त्र सुनने स्वाध्याय करने और सामायिक करने की विधि का वर्णन है और यदि कोई नियम आखड़ी करनी हो उसके धारण करने की विधि भी लिखी है, जो धर्मात्मा जैनी भाई नये जिनमंदिर बनवाते हैं, नई जैन प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाते हैं, सो जैन मंदिरों में क्या क्या बातें होनी जरूरी हैं और नई जैन प्रतिमा योग्य होनी चाहिये कुछ इस का भी वर्णन लिखा है ॥

मंदिर क्यों बनाइये हैं।

मंदिर सिरफ दर्शन, पूजन करने तथा शास्त्र उपदेश सुनने तथा भगवान के प्रतिबिम्ब के सन्मुख नृत्य गानादि करने स्तोत्र विनति पढने को बनाइये हैं, जो मंदिर बनाने का निषेध करते हैं वह गलती पर हैं और जो मंदिरों में सभा पंचायत खान पीन ब्याह शादी सोना रोना करते हैं, वह भी गलती पर हैं मंदिर सिरफ धर्मस्थान है, धर्म साधन की जगह है, लौकिक पाप कार्य्य पाप क्रिया मंदिर में नहीं करनी ॥

जैन मंदिर कैसा बने।

सर्व में उत्तम और महान् पुण्यका काम जिन मंदिर बनवाना और जिनबिम्ब की प्रतिष्ठा करवाने का है, सो इस समय मंदिर रचने वाले कारीगर अन्यमती हैं, वह यह नहीं समझते कि मंदिरजी में जैनियों को किन किन बातों की आवश्यकता होती है कितने कितने कमरे किस अंदाजे पर बनाने चाहियें इसलिये मंदिर बनवाने वाले सज्जनों को नकशे में पहले ही इतनी बातों की तजवीज करवा देनी चाहिये।

१—पुरुषों के दर्शन करने का स्थान स्त्रियों से अलग हो।

२—स्त्रियों के दर्शन करने का स्थान पुरुषों से अलग हो, जहां वह पड़दे में दर्शन कर सकें दर्शन करती हुई का मुख उनके सुसर वगैरा बजुरग न देख सकें।

३—सामग्री धोने का स्थान ऐसी जगह बने जो पानी गिरते ही खली के रास्ते फौरन मंदिर से बाहिर जापड़ें ताकि पानी को मंदिर में दूर तक जाना न पड़े जिससे मंदिर का मकान खराब नहीं हो सके।

४—यदि वर्षा वर्ष रही हो तो मंदिर की दहलीज में जाकर फिर साये में को ही प्रतिबिम्ब तक पहुंच सकें फिर बारिश में को न जाना पड़े।

५—स्त्रियों के शास्त्र सुनने का कमरा पुरुषों के शास्त्र वांचने के कमरे के पास इस तरकीब से बने कि वह चिक के अंदर बैठ कर पड़दे में शास्त्र सुन सकें और सब शास्त्र सभा में पुरुष बैठे हों तो उनके आने जाने का मार्ग ऐसा हो कि पुरुषों में को उनको जाना आना न पड़े अलग मार्ग हो।

६—सामग्री रखने का कमरा।

७—शास्त्र जी का भंडार किसी उच्च स्थान पर ऐसी जगह हो जहां चतुर्मास में जमीन की नमी शास्त्रों को नुकसान न पहुंचा सके।

८—पूजा करने वाले के वास्ते स्नान करने का कमरा ऐसा हो जहां पोह माह की शरद ऋतु में स्नान करती दफे उसकी छाती को खुली हवा न लगसके ताकि पुजारी नमोनिया वगैरा से महफूज रहे।

९—पूजा करने का कमरा ऐसा हो जहां वर्षा ऋतु में पूजा करते हुये बारिश की पिछवाड़ पूजा में विघ्न नहीं डाल सके सरद ऋतु में पूजारी को सरद हवा की बहुत सरदी नहीं पहुंच सके, सामग्री पर खूब चांदना हो पूजा करने वाला झड़ बादल में भी पुस्तक खूब चांदने में पड़ सके।

१०—मंदिरजी की दरी चंदवा वगैरा रखने को भंडार।

११—एक गुप्तस्थान जहां राज में हलचल के वकत प्रतिमा लको सकें।

१२—महफूज स्थान जहां मंदिर के चंवर छत्र वगैरा कीमती वस्तु हिफाजत से रह सकें बाहर की दिवार में चोर नकब (पाड़) (पेंडा) देकर उस कमरे में से धन न लेजा सकें।

१३—गंधोदक और चढ़ा हुवा जल चंदन डालने का स्थान जहां वह जल्दी सूक जावे और उस पर किसी का पैर न आसके।

१४—मंदिरजी में भगवान् के सन्मुख नृत्य गान करने को काफी स्थान।

१५—दर्शकों के जूते निकालने को सायेदार महफूज स्थान।

१६—स्त्रियों की साथ उनके छोटे बच्चे भी होते हैं यदि शास्त्र सुनने को ठहरें उनके बच्चों में से किसी को पिशाव टट्टी की हाजत हो जावे तो उनके वास्ते ऐसी जगह हो जहां वह कर सकें सरकारी कमेटी के आदमी उसमें रोक टोक न कर सकें। यह जगह मंदिर से ताल्लुक रखती हो वकत वेवकत स्त्री भी उस में पड़दे में लंघी पिशाव कर सकें बिमार कमजोर के शरीर की बाधा उसके अखत्यार में नहीं होती यथा रात्रि को मंदिर में जागरण करने वाले या अनंतचौदस को जब हजारों रुपयों का मंदिर में असबाब सजाया जाता है, रात को जैनियों को हिफाजत के वास्ते श्रीमंदिर जी में सोना पड़ता है, जिनके वास्ते ऐसा स्थान भी होना चाहिये, इस तरह की और भी जो आवश्यक्ता हो उसका बंदोबस्त चिनने से पहले ही शिल्पी (मिसतरी) को समझा देना चाहिये हमारी रायमें यह सारे इंतजाम दूमंजले मंदिर में अच्छी तरह हो सकते हैं, और मंदिर में पूजन करने के स्थान से फासले पर शास्त्र सभा का कमरा हो जहां पूजन की आवाज नहीं आसके और मंदिर में सामायिक करने के एकांत स्थान ऐसे हों जहां बैठ कर धर्मात्मा जैनी सामायिक करें उनके कान में पूजन की तथा शास्त्र सभा के व्याख्यान की आवाज नहीं आसके चौथे काल के जिन मंदिरों में यह सब बातें पाई जाती थी अब मंदिर चिनने वाले कारीगर अन्यमती मिथ्यादृष्टि होने से मंदिरों में इन बातों का होना कठिन होगया है, सो उम्मेद है कि मंदिर बनवाने वाले हमारे धर्मात्मा भाई मंदिर बनवाने के समय इन बातों का ध्यान जरूर रखा करेंगे॥

मंदिर बनाने का स्थान।

चौथे काल में मंदिर बनाने की सबसे श्रेष्ठ जगह बगीचा था क्योंकि इस में धार्मिक गुणों के सिवाय अनेक गुण लौकिक फायदे के भी थे॥

१—दुनिया में इन्सानको धन पुत्रादिक से भी प्यारी अपनी जिंदगी है सो शरीर को तंदुरुस्त रखने तथा ताकतवर बनाने तथा जियादा मुद्दत तक जिंदा रखने के जितने कारण हैं उन सब में सब से बढ कर अव्वल दरजे का कारण सुबह ही उठकर जंगल की ताजी हवा का खाना है दरखत सांझ के वक्त खराब हवा उगलते हैं और सुभे को उमदा ताजी साफ तंदुरुस्ती नमा हवा निकासते हैं इस लिये सब से उमदा ताज़ी हवा सुबह के वकत की होती है सो जो

दर्शक भगवान् के दर्शनों का अभिलाषी जिनेन्द्र देव के प्रति बिम्ब के दर्शन करने के लिये बगीचे के जिन मंदिर में सुबह ही उठकर जाते थे तंदुरुस्ती देने वाली आयु बढ़ाने वाली जंगलकी सुबह के वकत की ताजी हवा में गमन करते थे जिससे शरीर जियादा ताकत वाला व तंदुरुस्त बनता था आयुकी वृद्धि होती थी॥

२—चूतड़ों जंगासों में दाद पैदा करने वाली और बिमारी के कारण बनाने वाली शरीर को पेला कमजोर करने वाली बदबू बंद मकान की हवा आदि जितनी खराब हवा हैं उन सब में सब से खराब टट्टी फिरने के समय जो बिष्टे में से हवाड़ निकलती है सब में खराब नुकसान देने वाली संडास में टट्टी फिरना है संडास में टट्टी फिरने से चूतड़ों और जंगासों में दाद होजाते हैं इसका कारण उस में से नीचे से हवा आती रहती है उससे बिष्टे की भांप उडकर चूतड़ों और जंगासों के लगने से दाद हो जाते हैं पाखाने में टट्टी जाने से पाखाने की बदबू और पाखाने में पडा जो पहला दूसरे मनुष्यों का मैल उस की हवा अपने पाखाने की भांप हवा में मिलने से सांस वाली हवा के जरिये अंदर जाने से तंदुरस्ती को सखत नुकसान पहुंचाती है यही सबब है कि शहरों के रहने वाले आदमी जरदरंग और कमजोर रहते हैं इन्सान को पाखाने जंगल में जाना चाहिये जंगल में जाकर टट्टी फिरने वाले मनुष्य बनिसबत संडास और पाखाने में टट्टी फिरने वालों के जियादा ताकतमंद और जियादा आयु भोगने वाले होते हैं इसकी बाबत हकीमों ने यह लिखा है कि इन्सान को टट्टी फिरती दफा मुंह उधर रखना चाहिये जिधर से हवा आरही हो ताकि बिष्टे की बदबू और उसकी भांप हवा में उडकर पीछे चलीजावे आदमी के सांस वाली हवा में न मिल सके और टट्टी जंगल में जाना चाहिये अगर किसी नगर के पास नदी, दरिया होतो उसके किनारे पर टट्टी जाकर उस में आबदस्त ले ताकि जहां शरीर साफ करने को काफी पानी मिले और पानी को देखने से नजर को तरी पहुंचे टट्टी फिरती दफे जो तबियत खराब हुई हो पनी को देखने से फिर प्रफुल्लित हो जावे सो जो दर्शक सुबह ही बाग में दर्शन करने जावेगा वह जंगल में टट्टी जाने से अपनी तंदुरुस्ती और आयु की तरक्की करेगा॥

३—बाग में मंदिर होने से वहां से ताजे फूल लेकर भगवान पर चढावेगा॥

४—यदि सामायिक आत्मध्यान करना हो तो बाग में शोर शराबा न होने से एकांत स्थान में जाप्य सामायिक कर सकेंगे॥

५—बैठे बैठे काम करनेसे जो बिमारियां पैदा होतीहैं बागमें जानेसे चहल कदमी होजानेके कारण शरीरको बड़ा फायदा पहुंचेगा और हाजमा ठीक बना रहेगा इसप्रकार

बाग में मंदिर बनवाने से बागके मंदिर में दर्शन करने जाने से अनेक लौकिक लाभ भी थे, परंतु इस समय जनमत के द्वेषी बहुत हैं बाग में प्रतिमा और असबाब का खतरा है इसलिये इस जमानेमें शहर ही में मंदिर बनवाने चाहियें परंतु ऐसे स्थान में बनवावें जहां उसके अहाते में गृहस्थ सेवन न हो अपने रहने के मकान के अहाते से अलग बनवावें जो साहबान बगैर सोचे समझे ना वाकफियत से खास अपने रहने के मकान के अहाते में बनाते हैं वह उसी के पासवाले मकान में गृहस्थ सेवन करने से महान पाप का बंध करते हैं अपने मकानों में मंदिर बनाने वालों में हमने किसी को भी ऐसा नहीं पाया जिसके कुटंब के चारके चालीस होगये हों बल्के ऐसा देखा है चालीस के चार रह गये अनेक के खानदान में एकही रहगया अनेक का वंश भी नहीं रहा पस जहांतक हो अपने रहने वाले मकान के अहाते में मंदिर नहीं बनवाना चाहिये अलग दूसरे अहाते में बनवावे जो अपने अहाते में बनाते हैं वह उसी अहाते में स्त्री के साथ संगम करने तथा बेअदबी से बैठे पडे रहने वगैरा की कुक्रिया से अपने को और अपने खानदान को नष्ट करते हैं खास नास का कारण यह है कि जो व्यंतर देवादिक मंदिर में आते हैं या उस मकान का रक्षक होता है वह देवस्थानके पास गृहस्थाश्रम की कुक्रिया न देख सकने के कारण उनका नाश करदेते हैं इस लिये अपने रहने के मकान से फासले पर अलग जगह मंदिर बनवाने चाहिये ॥

अथ दर्शन करने को स्त्रियों के लिये अलग जगह।

जैन मंदिरों में जिस जगह मरद खड़े हो कर प्रतिबिम्ब का दर्शन करते हैं, इनमें रल कर खडी होकर दर्शन करते हुए स्त्रियें सुकचाती हैं, छोटी बहुवों को गैरों से पडदा करना पड़ता है, इससे उनके दर्शन करने में जरा हानि पड़ती है, इस लिये जहां तक मुमकिन हो वेदी के कमरे में यह जरूर तजवीज कर देनी चाहिये, कि प्रतिबिम्ब का दर्शन स्त्री अलग कमरे में को करसकें। और जिस कमरे में बैठ कर मरद शास्त्र सुनें उसके पास ही स्त्रियों के वास्ते शास्त्र सुनने को अलग कमरा होवे॥

जूतियों के फिकर से दर्शन, और सामायक में विघ्न।

जिन नगरों में मंदिरों में दर्शकों के जूते निकालने को हिफाजत का स्थान नहीं बनाया गया उन मंदिरों में जो गरीब भाई दर्शन करने आते हैं, जूते ऐसी जगह में निकालने से जहां खोए जाने का अंदेशा है उनके मन में सामायिक करने के समय जूतों का फिकर रहता है अर्थात् जो मन सामायिक में लगाना चाहिये था वह जूतों के फिकर में लगा रहता है जिस से सामायिक में विघ्न पड़ता है। और दर्शक जलदी से

बाहिर आता है ताकि जूते को कोई न उठा कर न लेजावे। इस लिये मंदिर के मुतज़िमों को चाहिये कि दर्शकों के जूते निकालने को सायेदार हिफाजत का स्थान मुकर्रिर करें, ताकि दर्शकों के रास्ते चलते हुए सूने स्थान में जूता पड़ा रहने से कोई उठा कर न ले जावे और जेष्ठ आसाढ़ की धूप से सूख कर या वर्षाकाल में बारिश से भीगकर जूता खराब न हो जावे और दर्शक जाप्य सामायिक, स्वाध्याय दर्शन, पूजन आदि करने को भी जिन मंदिर में जितनी देर चाहे ठहर सके॥

अथ मंदिर का रुपैया।

इस समय जिन महाशयों में मंदिर का रुपैया जमा किया जाता है, उन में से बहुतों के ऐसे खियाल होगये हैं कि जब पिता के धन के हम हकदार हैं अर्थात् अपने पिता का धन खाने में कोई पाप नहीं तो फिर जो हमारा और हमारे माता पिता सब का मालिक (ईश्वर) तीन लोक का नाथ है उस का धन खाने में फिर कैसे पाप हो सकता है अर्थात् हरगिज नहीं इसी खियाल से इस जमाने के अनेक जैनी मंदिरों और तीर्थों का रुपैया दवा दब हजम कर रहे हैं, भोजन खाकर तो डकार भी लेलेते हैं परन्तु मन्दिर का रुपया खाकर तो डकार भी नहीं लेते॥

इस लिये हर नगर के जैन पंचों को मंदिर के रुपैये के बचाव का कुछ, पुख्ता तरीका ज़रूर करना चाहिये, हमारी समझ के अनुसार कुछ हम भी बतलाते हैं॥

१—मंदिर का रुपैया १ जैनी में हरगिज जमा न किया जावे, रुपैये की रकम के अंदाजे पर बही में जमा रहे।

२—दो चार सालके बाद कुल जैनियों की राय से दूसरों में बदल देना चाहिये।

३—जिस में मंदिर का रुपैया जमा हो वह मंदिर को उस रुपैये का सूद (ब्याज) जरूर देवे, मंदिर के रुपैये का मुफत में सूद खाने वालों मुफत खोरों में मंदिर का रुपैया बे सूदी जमा न किया जावे।

४—जिस में मंदिर का रुपैया जमा किया जावे वह शख्श ऐसा धर्मात्मा हो कि जो कभी किसी का धन लेकर मुकरा न हो।

जुवारी, सट्टेबाज, बधनी का सौदे करने वाले, रण्डी बाज, झूठी नालिशें करने वाले, घाट तोलने वाले, अमानत में खयानत करने वाले, फजूल खरच, ब्याह शादियों में बहुत धन लगाने वाले ऐसों का धनवान पना जवाल सहित होता है, मुद्दत तक ठहरना कठिन होता है, इस लिये ऐसों में मंदिर का रुपैया जमा करना गलती है।

५—मंदिर का रुपैया साह बेजायदाद धनवानों में जमा करना चाहिये बे जायदाद का धनवानपना ऐसा है जैसी ओस की बूंद।

६—हर नगर में एक साल में एक दिन मंदिर के रुपैये का हिसाब और मंदिर के असबाब की पडताल जरूर करनी चाहिये वोह दिन महापर्व का न हो क्योंकि महापर्व के दिन लोग पूजादि में लगे रहते हैं ऐसे दिन मंदिर का हिसाब किताब ठीकतौर पर करना कठिन होता है।

७—हर जैन मन्दिर में एक लोहे की भारी वजनदार अलमारी तिजोरी रखी रहे। मंदिर का कीमती चांदी सोने का असबाब और खेरीज का रुपैया उस में पड़ा रहा करे उस अलमारी के कई ताले लगें जिनकी ताली अलग अलग पंचों के पास रहें, एक अदमी उसकी ताली न रख सके।

जैनतीर्थों का रुपैया।

जैन तीर्थों पर जो बड़ी बड़ी बहियां धरे बैठे रहते हैं लोगों का रुपैया लेलेकर उनको छापे की रसीदें देते हैं। इनमें जो रुपैया जमा किया जाता है या तो वह उस को सारे को या उसमें से कुछ को गोलमाल कर जाते हैं या जिन में वह जमा होता है वह उस का लुकमा (ग्रास) कर जाते हैं क्योंकि हजारों वर्ष से लाखों करोड़ों रुपैया सम्मेद शिखर आदि तीर्थोंका जिन में जमा किया गया वह सर्व उसको बहनी सी बाढ गए अब हर तीर्थ पर ठैं ठैं गोपाल नजर आती है (खजाना खाली है) पस हर एक जैन तीर्थ पर एक बहुत बड़ी, बहुत वजनी लोहे की अलमारी रक्खी रहे उसमें ऊपर रुपैया डाल ने का जरासा छेक हो जो यात्री तीर्थ पर कुछ देना चाहे उसमें डाल दे उसके कई बड़े बड़े मजबूत ताले अलग अलग नगरों के पंचों के लगे रहें दो चार साल के बाद उस रुपैये की अठमासी (गिनी) (पौंड) बदलकर उसी अलमारी में रखी जावें उस अलमारी का पहरा तीर्थ क्षेत्र के मुलाजिम देवें यह रुपैया जब पंच चाहें उस तीर्थ के मंदिर की मरम्मत मार्ग पौड़ी ठीक कराने में या जैसा मुनासिब हो खरच करें किसी तीर्थ का रुपैया भी किसी धनवान में जमा न किया जावे, इस रुपैये को यह कह कर कि यह इस तीर्थ का रुपैया फलाने धनवान में जमा रहेगा, उसमें जमा करना, हम तो अपनी खराब वृद्ध अवस्था की बे अकल समझ में इसका यह मतलब समझते हैं कि इस रुपैये का लुकमा (ग्रास) फलाना धनवान करेगा अर्थात् इस रुपैये को हजम करने का फलाने धनवान का हक है॥

पस तीर्थों के रुपैये की बाबत हमारी यह राय है कि जब तक तीर्थों के इंतजाम

तीर्थों पर लोहे की अलमारियां न रखें तब तक कोई यात्री भी बहियां वालों में रुपैया जमा न करें ॥

मायाचारी पंडितकी मारफत प्रतिमा खरीदना।

इस समय बाज बाज लोभी जैन पंडितों ने बड़ा अनर्थ कररखा है जब जैनी भाई नया जैन मंदिर बनवा कर जैन बिम्बों की प्रतिष्ठा कराते हैं तो वहां कितने ही नगरों के शिल्पकार प्रतिमा बेचने लाते हैं सो जिस शिल्पकार की प्रतिमा सर्व बेचने वालों में उमदा होती है उसके दिलमें यह खियाल होता है कि मेरी प्रतिमा सब में उमदा हैं मेरी ही बहुती बिकेंगी और जो बेचने वाला यह देखता है कि मेरी **प्रतिमाकेदाम कीमत में** औरों से कम हैं वह उनके बेचने की फिकर कर उसप्रतिष्ठा का मुन्तजिम जो पण्डित उस से आकर मिलता है सो पंडित जो आगे ही इस फिकर में थे कि किसी तरह इतनी प्रतिमा खरीदने में कुछ हमारी भी जेब पुर हो पस शिल्पकार का पंडित जी के पास आना था कि पंडित जी के तो भाग जाग उठे पौबारा ही पड़गये आपस में यह फैसला होगया कि जितने दाम असली कीमत से अधिक पंडित जी उस शिल्पकार को दिलवावें वह आधम आध उस फायदे में आधा हिस्सा पंडितजी का आधा शिल्पकार का बस बात ठहरनी थी कि पंडितजी ने यह हुकम जारी कर दिया कि हमने सब शिल्पकारों को प्रतिमाओं की परीक्षा की सर्व में उत्तम फलाने शिल्पकार की प्रतिमा हैं जैनी विचारे भोले वह क्या जाने प्रतिमा योग्य अयोग्य कैसी होती है पस वह पंडित जीके फंदे में आकर पंडित जी की मारफत जिस शिल्पकार से वह चाहें उससे लगे खरीद ने पंडितजी ने भी खूब बढ़ बढ़ करहाथ गरम करने शुरु कर दिये यहां तक कि जो प्रतिमा पांच पांच रुपये की थी वह पच्चीस पच्चीस में बिकवाई नतीजा यह हुवा कि जिनकी उत्तम प्रतिमा थी एक भी न बिकी उनको सारी वापिस लेजानी पड़ी और जिस की प्रतिमा शास्त्र विरुद्ध थी उसकी बिक बिक कर पंडित जी और वह दोनों मालामाल हो गये यह कुरीति दूर करने को हम अपने जैनी भाइयों को समझाते हैं कि हे भाइयो इन लोभी पंडितोंके फंदे में आकर तुम अयोग्य प्रतिमा मत खरीदो और मुफत मे अपना धन बरबाद मत करो जितने धन से तुम इन मायाचारी पंडितों के फंदे में आन कर दो अयोग्य प्रतिमा खरीदते हो उतने धनसे तुम आप परीक्षा कर उनसे तिगनी चौगनी योग्य प्रतिमा खरीद सकते हो योग्य प्रतिमा की परीक्षा हम बताते है।

नई योग्य जैन प्रतिमा की परीक्षा।

जब नई प्रतिमा खरीदो तो उसके सारे अंग उपांग खूब ध्यानसे देखो कि किसी जगह से अरासा भी किरा हुवा तो नहीं कहीं बाल तो नहीं आया अर्थात् बारीक दरज तो नहीं है कहीं मरम्मत तो नहीं है बाज वकत कारीगर से खोदती दफे पत्थर का रेजा फालतू उखड पड़ता है तो उसको बेमालूम करने के लिये उसमें ऐसी मरम्मत कर देते हैं जो मालूम न देवे मरम्मत वाली दरज वाली उपांग हीन है ऐसी मत खरीदो फिर उसके चेहरे को खूब गौर से देखो कान बहुत बड़े या छोटे तो नहीं गरदन बहुत लंबी या छोटी तो नहीं नाक आगे को बेजा लंबो या बहुत मोटी या नीचे को दबी हुई या छोटी गल्ले भीतर को बड़े हुये या बहुत बेजा मोटे ठोडी बजा आगे को निकली हुई या भीतर को बडी हुई बहुत छोटी तो नहीं पेट बहुत बेजा बड़ा टांगा छोटी या बेजा बड़ी तो नहीं पीठ बांहा पैरों की अंगुली सब गौर से देखो कद ऐसा होना चाहिये जैसा सांचे में ढला हुवा हो या फोटो होता है कोई अंग भी गैर मुनासिब न हो चेहरा न बहुत गोल हो न बहुत लंबा यह सब बातां देखने की हैं। तुमने बहुत आदमी देखे होंगे कि किसी की ठोडी बिलकुल भीतर को बडी हुई किसी का मुंह बिंगा किसी की ठोडी बेजा आगे को निकली हुई किसी का मुंह मूंडा बंदर कैसा बिलकुल गोल किसी का पेट परमहंस की तरह फूला हुवा किसी की लातें छोटी होनेसे बावना कोई छांगा किसी की अंगुली मुडी हुई किसी की नाक चिपटी इस प्रकार इन्सानों के शरीर में अनेक दोष होते हैं परंतु जो पुरुष महान् पुण्यवान तद्भव मोक्ष गामी होते हैं उनके शरीर में इनमें से एक नुकस भी नहीं होता शरीर अंगोपांग ठीक होताहै सो जैसा उनका बेदोष शरीर होताहै उसी प्रकार बेदोष उनकी प्रतिमा होनी चाहियें दरअसल में श्रेष्ठ प्रतिमा जैनबद्री की तरफ बनती हैं जयपुर जोधपुर आदि के कारीगरों को वैसी प्रतिमा बनानी नहीं आती पत्थर के कारीगर तो कुछ ठीक बनाते भी हैं परंतु सांचे में भरने वाले ठीक बनाने वाले बहुत कम हैं मुंह बहुत छोटा गोल बना देते हैं धातू की प्रतिमा के कान भी गरदन के जोड देते हैं पत्थर की के तो मजबूती के वास्ते जुडे रहने देते हैं धातु की के हरगिज जुडे नहीं होने चाहियें जब हम सम्मेद शिखर गये वहां रियासत मैसूर के भट्टारक जी आए हुए थे जिनके पास करनाटकी बड़े बारीक सुन्दर अक्षरों में ताडपत्रों पर ग्रंथ लिखे हुये थे मेरी उनकी वार्तालाप प्रतिमा के विषय में हुई थी उन्होंने फरमाया था कि इस देशके कारीगर प्रतिमा का स्वरूप जैसा चाहिये वैसा ठीक नहीं बनाते हमारे देस की जो बनी हुई होती हैं उन में और इन में बहुत फरक है सो [illegible] भाइयों को प्रतिमा उस देश से मंगानी चाहियें जो वहां से नहीं मंगासकते इस

देश में जिस कारीगर की मशहूर हो उमदा हो उससे लेनी चाहियें भरत की ऐसा मत करो कि जिससे चाहो भरवालो मामूली आदमियों की भरी हुई ठीक नहीं होती बहुत ही बढ़िया सांचा बनानेमें कारीगर जो हो उससे भरवानी चाहियें पहले सांचे की परीक्षा गौरसे करलेनी चाहिये पीछे से भरवानी चाहियें यह नहीं करना चाहिये कि चिट्ठी लिखदी और भरवाकर मंगाली यह धर्म कार्य है जरा देही को भी काम में लाओ वहां जाकर आप देख भाल कर भरवावो इस प्रकार प्रतिमा आप देख भाल कर खरीदो बनवाओ भरवाओ कलयुगी लोभी मायाचारी पंडितों के फंदे में मत आओ इस समय सुनपत जिला दिल्ली में पंडित उमरावसिंह बडे विद्वान बडे धनवान हैं उन्होंने फिरोजपुर में प्रतिष्ठा कराई थी चूंके वह धनवान हैं उनके मायाचार या ऐसे धन की इच्छा नहीं है नतीजा यह हुवा जो प्रतिमा और प्रतिष्ठाओं में मायाचारी लोभी पंडितों की मारफत पचास पचास में लोग खरीदा करते थे वह उस प्रतिष्ठा में दस दस रुपये में बिकी भरत की बडी उमदा पांचपांच रुपये में लोगों ने खरीद कर प्रतिष्ठा कराई है जो भाई नई प्रतिमा खरीदनी चाहें जहां प्रतिष्ठा हो रथयात्रा की मिति से दो चार दिन पहले वहां जाकर प्रतिमा खरीद कर प्रतिष्ठामें श्यामिल करदेनी चाहिये प्रतिष्ठा कराने वाले भाईयों को चाहिये धनवान पंडितों या निर्लोभी भट्टारकों से प्रतिष्ठा कराया करें इससमय सुनपत जिलादिल्ली से पंडित उमरावसिंहजी रईस खुरजा जिला बुलंद शहर से रानी वाले पंडित मेवाराम जी साहब रईस बाबादूलीचंद जी त्यागी या और भट्टारक जो अच्छे धनवान् या त्यागी हों उन से प्रतिष्ठा कराओ और प्रतिमा अगर हो सके तो जैनबद्री देश मैसूर राज्य से मंगाओ इस देश से लेनी हो तो आला दरजे के कारीगरों से शास्त्रोक नाप से हीनाधिक न हो नासाग्र दृष्टि शान्त मुद्रा ऐसी प्रतिमा खरीदो क्योंकि दोष युक्त प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराने से पुण्य की एवज पाप का बन्ध अधिक होता है यहां तक होता है कि बाज बाज दोषों सहित प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा कराने से वंशतक का भी नाश होजाता है इस लिये दूषण रहित शास्त्रोक योग्य प्रतिमा खरीदो॥

दिगाम्बर प्रतिमा नग्न क्यों होती हैं।

यह दिगाम्बर ऋषी(मुनि) अवतारों का साक्षात फोटो नकशा (तसवीर) है चूंकि वह सब नग्न होते थे इस वास्ते यह उन की प्रतिमा भी नग्न होती है॥

जैन मुनि नग्न क्यों होते हैं उनके कपड़ा क्यों नहीं।

नोट—इस का वर्णन प्रथम अध्याय में हो चुका है वहां देखो॥

जिन प्रतिमा किस को कहते हैं।

प्रतिमा कायम मुकाम को कहते हैं यानि पहले की जगह वैसा ही दूसरा सो जिन प्रतिमा से यह मुराद है कि जिस प्रकार जिन कहिये केवली भगवान थे उसी स्वरूप को धारे हुये एक उन का कायमुकाम है ॥

प्रतिमा को मानने से क्या फायदा ॥

प्रतिमा से दो काम लिये जाते हैं १ तो बतौर नकशे के उसको देख कर जिसका वह नकशा है, उस असली (केवली भगवान) का ध्यान करना दूसरे जिस प्रकार हम केवली भगवान के सन्मुख खडे होकर उनका पूजन करें, उनका गुणानुवाद गावें उसी प्रकार उनके कायम मुकाम उनकी प्रतिमा के सामने करें ॥

जैन प्रतिमा की क्या पहचान है ॥

जो प्रतिमा खडे योग दोनों बांह लटकाये हुये हो या पलोथी मार कर पलोथी के ऊपर दोनों हाथ एक हाथ के ऊपर दूसरा हाथ रखे हुवे हो वह जिन प्रतिमा जानों यद्यपि बुद्धधर्म की भी पलोथी मारे हुये ही होतीं हैं, परन्तु उनका हाथ एक दूसरे के ऊपर रखे हुये नहीं होता ॥

श्वेताम्बर प्रतिमा की क्या पहचान ॥

श्वेताम्बर प्रतिमा लंगोट संयुत और जेवर वगैरा से सजी हुई होती है और उसकी आंखों की पुतली काली या जडी हुई होती है ॥

दिगाम्बर प्रतिमा की क्या पहचान ॥

दिगम्बर प्रतिमा बिलकुल नग्न होती है, उस के वस्त्र लंगोट वगैरा कुछ भी नहीं होता ॥

दिगम्बर प्रतिमा के प्रकार की होती हैं ॥

दिगाम्बर प्रतिमा चार प्रकार की होती हैं ॥

दिगम्बर प्रतिमा चार प्रकार की होती हैं ॥

१ तीर्थंकर की, २ सामान्य केवली की, ३ सिद्धों की, ४ मुनिकी ॥

अरहंत दो प्रकार के होते हैं ?

१—एक तीर्थंकर दूसरे सामान्य केवली जो चौबीस तीर्थंकरों के २४ चिन्ह जैनबाल गुटके के प्रथम भाग में छपे हुये हैं जिन प्रतिमाओं के उन चौबीस चिन्हों में से

कोई भी चिन्ह हों वह तो तीर्थंकर की प्रतिमा जानो और चिन्ह मुख की तरफ पलोथी से नीचे पटडी पर होता है।

२—और जिस प्रतिमा के उन २४ चिन्हों में से कोई भी चिन्ह न हो वह सामान्य केवली की प्रतिमा जानो।

३—सिद्धों की प्रतिमा की क्या पहचान किसी धातु या पत्थर में खड़े योग या बैठे योग्य चर्म शरीरी किञ्चित् ऊन मनुष्याकार रूप छेक या दरवाजा जो बना हो वह सिद्धों की प्रतिमा जानो।

४—मुनि की प्रतिमा की क्या पहचान जिस प्रतिमा के हाथ में कमंडलु पीछी हो और बेल वगैरह भी लिपटी हुई हो वह मुनि की प्रतिमा जानो मुनि की प्रतिमा प्रायः खड़े योग की ही होती है।

नोट—यह चारों प्रकार की दिगम्बर जैन प्रतिमा खड़े योग और बैठे योग दोनों प्रकार की होती हैं।

अथ मंदिर जी को गमन।

जब श्री जिन मंदिर में दर्शन करने को जाओ तो जैसे कोई पुरुष मुद्दत से बिछुरे हुए अपने परम मित्र या कुटंबी स्त्री पुत्रादिक को मिलने जावे उस समय उसके मन में उनके देखने का अति उत्साह होता है इसी तरह तुम अपने परिणाम भगवान के चरणारविंदों में नमस्कार करने को उत्साहित रखते हुए जाओ और रास्ते में जहां तक हो सके पाप कार्य्य से बचो, और कीड़ी आदि जीवों की रक्षा निमित्त तथा मैल वगैरा में जूता या चरण न भरे इसलिये मार्ग देखते हुए धीरे२ जाओ और जो स्त्री दर्शन कर मार्ग में आती या जाती मिलें उनकी सन्मुखता से बच कर अपनी गरदन नीची कर जरा इधर या उधर को जाओ और श्री जिन मंदिर में भी इस बात का ख्याल रक्खो कि यदि मंदिरजी में स्त्री पुरुषों के वास्ते दर्शन करने को अलग अलग कमरे नहीं हैं एक ही कमरे में सब स्त्री पुरुष दर्शन करते हैं तो अगर कोई बहु बेटी अपने से पड़दा करने वाली दर्शन कर रही हो तो उससे जरा फासले पर होकर दर्शन करो या जरा ठहर जाओ जब वह दर्शन करके अलग हो जावे तब दर्शन करो, क्योंकि भले घरों की स्त्री अपने सशुर आदि या दूसरे बड़े बुजुरगों को देख कर सुकचाती हैं या तो वहां से हटजाती हैं या पड़दा करलेती हैं इससे उनके दर्शन करने में विघ्न पड़ता है और जो स्त्री मंदिर में हों जो अवस्था में अपने से बड़ी हों उनको अपनी माता समान, बराबर

अवस्था वाली को अपनी बहन समान। अपने से छोटी अवस्था वाली को अपनी पुत्री समान समझो धर्मात्मा धनवान् बड़े श्रेष्ठ पुरुषों की यही रीति है।

अथ मंदिर में दर्शन करने सुबह ही क्यों जाते हैं।

हर प्रकार का खाना पीना करने से पहले ही मंदिर में सुबह ही आने का सबब यह है कि अगर सुबह ही उठ कर किसी कम्बखत (मनहूस) का मुख नजर पड़े तो उस दिन कुछ नुकसान हो या अमंगल हो, और जो सुबह ही उठकर किसी पुण्यात्मा, धर्मात्मा भाग्यवान् का दर्शन होवे तो उस दिन धन की प्राप्ति होवे घर में कोई मंगलीक कार्य्य होवे इसीवास्ते सब से पहले सुबह ही भगवान् के प्रतिबिम्ब तथा अपने गुरू जैन मुनियों का दर्शन करिए है, क्योंकि इनसे बढ कर जगत में और मंगलीक वस्तु नहीं है इनके दर्शनों से अनेक प्रकार के विघ्नों का नाश हो कर शुभ की प्राप्ति और घर में मंगल होता है।

प्रतिमा के दर्शन करने का खास मतलब।

प्रतिमा के दर्शन करने का खास मतलब यह है कि इस जगत् में हमारा मुख्य कार्य्य अपने आत्मा का उद्धार करना है सो आत्मा का उद्धार सिरफ मनुष्य योनि में ही हो सकता है आत्मा के उद्धार के वास्ते बड़े बड़े देव इंद्रादिक भी मनुष्य योनि को चाहते हैं सो आत्मा का उद्धार सर्व परिग्रह का त्याग कर मुनि अवस्था धार योगासन से होता है सो अर्हंत की प्रतिमा में यह सर्व गुण पाईये हैं अन्यथा नहीं योग के आसन दो ही हैं पद्मासन और खड्गासन सो दोनों प्रतिमा में मोजूद हैं इसी वास्ते सुबह ही उठ कर प्रति दिन अर्हंत प्रतिमा का दर्शन करिये है कि अगर हररोज उस तरफ ध्यान देते रहे तो कभी तो मन में यह विचार आवेगा कि मेरा कल्याण इस योग अवस्था विना नहीं हो सकता मैं इससे बेखबर इस दुनिया में ८४ लाख योनि में दुःख भरता हूं वा जामन मरण करता हूं वा भ्रमण कर रहा हूं सो यह मेरी बड़ी भूल है अब मुझे गृहस्थ के मोह जाल रूपी बंधन से निकस कर दिगम्बरी दीक्षा धार यह योग आसन धार तप कर अपना कल्याण करना चाहिये धन्य हैं वह श्री गुरु जिन्हों ने यह योग आसन धार तप कर अपना कल्याण किया है उन को मेरा मन वचन काय कर बारंबार नमस्कार हो और धन्य है इस आसन को जिसके दर्शन से मुझे अपना कल्याण करने की सूझी है यदि अब विलंब करूंगा तो फिर यह हाथ से गया मनुष्य पर्याय रूपी चिंतामणि रत्न फिर मिलना अति कठिन है इससे अब शीघ्र ही श्री गुरू दिगम्बर मुद्रा धारक के चरणों का आश्रय ले दिगम्बरी दीक्षा धार तप कर मोक्ष का साधन करूं॥

शुद्ध वस्त्र पहन कर मंदिर को जाना।

श्रीमंदिर जी में उमदा शुद्ध वस्त्र पहन कर जाना चाहिये देखो जब राजादिक के पास जाइये है तो सुन्दर वस्त्र पहन कर जाइये है सो तीनलोक के नाथके पास क्या मैले कुचैले वस्त्र पहन कर जाना उचित है ? हरगिज नहीं पस श्री मंदिर जी में उमदा वस्त्र प्राशुक वस्तुसे बने हुये पहन कर जाना चाहिये और शास्त्र स्वाध्याय पूजन तर्पण सामायिक करने वाले धनवान शक्तिवानों को तो श्री मंदिर जी में पहन कर जाने के लिये कपडे अलग ही बनाने चाहियें जब मंदिर में गये उनको पहन गये जब आये उनको उतार कर रखदिये क्योंकि हर वकत पहनने वाले वस्त्र अकसर अपवित्र होजाते हैं क्योंकि भोजन करने के वकत बाज वकत उनके झूठा भोजन लगजाता है बाज वकत छींक वगैरह आने से उनके नाक का मैल या बलगम या थूक का छींटा लग जाता है बाज वकत पिशाब करने के बाद मूत्र की बूंद लग जाती है या वह वस्त्र पहनेहुये टट्टी जाना होजाता है या उन वस्त्रों पर बालक मूत देता है या रेल में उसी दरजे में नीच जाती बैठ जाने से उन से छू जाते हैं। या रास्ते में तंग गली में मनुष्यों की भीड में जाते हुये नीचों से छू जाते हैं या पतनाली खसी में से गिरते हुये मैला पानी पिशाव टट्टी के पानी की छींट पडजाती है दरखत के नीचे बैठे हुये बाज वकत कागा बीट कर देता है बाज वक्त वही कपडे पहने हुये स्त्री से दुनियांदारी करनी पड जाती है, बाज वक्त वह कपडे पहने जूता छूया जाता है घोडी आदिक पर सवारी करने के समय चाम की काठी पर चढना होता है टम टम बग्गी में सवार होकर जाने के समय चमडे की रास हाथ में पकडने से वस्त्रों से चमडा छू जाता है इसी प्रकार हरवकत पहरे हुये कपडे अपवित्र होने का कारण होसकताहै पस जिनको अलग वस्त्र बनानेकी शक्ति है और कपडे पहन ने बदलने की तकलीफ गवारा कर सकते हैं तो उन को जरूर श्री मंदिर जी में जाने के वास्ते वस्त्र अलग रखने चाहियें क्योंकि जहां तक हो जिनेन्द्रदेव के दर्शन जाप्य सामायिक शुद्ध अवस्था में शुद्ध वस्त्र पहन कर करें॥

खाली हाथ दर्शनों को जाना योग्य नहीं।

देखो जब किसी राजा महाराजा हाकिम को मिलने जाते हैं तब कोई तो पुड़िया में इलायची ले जाते हैं कोई थाल में मेवा मिठाई कोई रुपया वा मोहर बावें हाथ पर दाहना हाथ रख उसके ऊपर उमदा रेशम आदि का सुन्दर रूमाल रख उसपर रुपया अशरफी आदि अपनी हैसियत के मुताबिक रखकर दिखाते हैं जिस को वह लेते नहीं केवल हाथ की अंगुलियां उस पर लगा देते हैं सो जब राजादिक की मुलाकात को खाली

हाथ जाना उचित नहीं उन की विनय सतकार इज्जत करने को अपनी शक्ति समान कुछ पेश करते हैं तो क्या तीन लोक के नाथ के जब दर्शन करने जावें वहां खाली हाथ जावें हरगिज नहीं चूंकि खाली हाथ जाने से उनकी अविनय असत्कार होता है इस लिये जहां तक बनसके जब जिन प्रतिमा के दर्शनों को जावो जो द्रव्य भगवानके चढ़ाने योग्य वकत पर अपने से बन आवे या परिणामों में चढाने की भक्ति हो चावल बादाम आदि शुद्ध द्रव्य जरूर लेते जावो ॥

नमस्कार कब करे।

हमारे बाज बाज भोले जैनी भाई जब जैन मंदिर में श्री जी के सन्मुख जाते हैं नमस्कार करने से पहले अरज करने लगते हैं अर्थात् देरतक प्रार्थना पाठ उच्चारण कर फिर नमस्कार करते हैं सो यह बडी भूल है देखो जब किसी छोटे से छोटे राजा के पास भी जाईये है पहले नमस्कार कर फिर अरज करना होता है मुनियों को पहले नमस्कार कर फिर प्रार्थना करनी होती है लोक व्यवहार में जब किसी से मिलिये हैं पहले जुहार राम राम बन्दगी करिये हैं, परंतु तीन लोक के नाथ को सब से पीछे करते हैं पहले बहुत देर तक पत्थर समान सीधे माथे खडे हो खूब दोहे छंद पढ़ फिर चलती बार नमस्कार करते हैं सो यह कितनी भूल है पस यह रिवाज छोड देना चाहिये जाते हीतीन बार जयवंत शब्द बोल कर फौरन नमस्कार कराना चाहिये ॥

अथ दर्शन करने की विधि।

मंदिर में प्रवेश करते ही मुखसे ॐ जय जय जय निःसहि निःसहि निःसहि इस प्रकार कर तीन बार कह कर फिर प्रतिमाके सन्मुख जाते ही दोनों हाथ जोड कर, मुख से ऐसे कह जयवंत हो जयवंत हो जयवंत हो श्री जी आप के चरणारविंद को मेरा मन वचन काय कर बारम्बार नमस्कार होउ पीछे णमोकारादि मंत्र पढ कर जो घर से अक्षतपुष्प, फल नैवेद्य आदि लाये हो उसके चढाने का पाठ पढ वह चढा कर दोनों घुटले जमीन पर टेक दोनों हाथ जुडे हुए जमीन पर रख उनके ऊपर अपना मस्तक रख अष्टांग नमस्कार करो जरा जरा मस्तक उठा उठा कर तीन बार वंदो फिर प्रतिमा के सन्मुख खडे होकर जो दर्शन पाठ पढने हों पढो या भक्तामर आदि जो स्तोत्र या विनती आदि पढना चाहते हो पढो पढ कर फिर उसी तरह जमीन पर मस्तक टेक कर नमस्कार करो और रही यह बात कि थोडी देर पढ़ना या जियादा देर तक पढ़ना यह अपनी इच्छा और जितना समय धर्म कार्य

में लगाना चाहो उसके अधीन है, कुछ यह नियम नहीं है कि इतना ही पढना चाहिये या फलाना पाठ पहले फलाना पीछे पढ़ना चाहिये जैसी इच्छा हो वैसा करो क्योंकि कर्म का बंध भावों के अनुसार होता है यह हमने केवल नावाकिफ स्त्री पुरुष बच्चों को दर्शन करने का कायदा बतलाने के वास्ते लिखा है, फिर आखिर में जिन वानी को नमस्कार का पाठ पढ कर जिन वाणी को नमस्कार करो फिर भगवान के गंधोदक लगावने का पाठ पढ कर अपने मस्तक पर गंधोदिक लगाओ, गले और आंखों के भी लगाओ मौसम गरमी में छाती के भी लगाओ, फिर सामयिक जाप्य स्वाध्याय पूजन शास्त्र श्रवण आदि जो कार्य्य करना चाहते हो सो करो नहीं करना है और जाना चाहते हो तो जाओ परंतु इस बात का ध्यान रखना कि जाती दफे प्रतिबिम्ब की तरफ तुम्हारी पीठ न हो ॥

नोट—अब दोनों हाथ जोड़ो दोनों हाथ मूंदे कमल समान बीचमें से पोले रहें ।

प्रतिमा के सन्मुख ऐसे पढ़ो ।

प्रतिमा के सन्मुख जाते ही नमस्कार करने के समय अक्षत चढाने से पहले णमोकारादि पाठ इस प्रकार पढो ॥

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं,
ऐसे पंच नमस्कारं सर्व पाप प्रणाशनं ॥

श्री अरहंत जी, सिद्ध जी, आचार्य्य जी, उपाध्याय जी सर्व साधु जी पंचपरमेष्ठी को मेरा बारम्बार नमस्कार हो ॥

श्रीआदि नाथ, अजितनाथ, संभवनाथ, अभिनंदन नाथ, सुमति नाथ, पद्मप्रभ, सुपार्श्वनाथ, चंद्रप्रभु, पुष्पदंत, शीतलनाथ, श्रेयांसनाथ, वासुपूज्य, विमलनाथ, अनन्तनाथ, धर्मनाथ, शांतिनाथ कुंथुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ, मुनिसुव्रतनाथ, नमिनाथ, नेमनाथ, पार्श्वनाथ, महावीरजी इन चौबीस तीर्थंकरों को मेरा बारम्बार नमस्कार हो ॥

सीमंधर, युगमंधर, बाहु, सुबाहु, संजातक, स्वयंप्रभ, ऋषभानन अनंतवीर्य, सूरप्रभ, विशालकीर्ति, वज्रधर, चंद्रानन, चंद्रबाहु, भुजङ्गम, ईश्वर, नेमप्रभ वीरसेन, महाभद्र, देवयश, अजितवीर्य, इनविदेह क्षेत्र संबंधी २०विद्यमान तीर्थंकरोंको मेरा बारम्बारनमस्कार हो॥

यह पद अक्षत वगैरा जो चढ़ाने को लेगए हो वह चढा कर अष्टांग नमस्कार करो (मस्तक झुकाकर जमीन पर मूंधे पड़ कर नमस्कार करो) ॥

फिर उठ कर यह पढ़ो।

हे प्रभु मेरा मन, वचन, कायकर वारंवार नमस्कार हो भव भव में आपका शरण मिले, धन्य है उन पंच परमेष्ठि को जिन का यह स्वरूप है हे जिनेंद्र देव कोई समय मेरे वास्ते भी ऐसा होउ जो मैं भी यही दिगम्बर रूप धारणकर तप कर योगारूढ हो अपने आत्मा का कल्याण करूं यह अवस्था मुझे भी दो ताकि इस देहादिक पुद्गल से भिन्न ज्ञान दर्शन मई अपने निज स्वभाव को प्राप्त होऊं हे जिनेन्द्रदेव इस रूप बिना कल्याण नहीं है धन्य है इस दिगम्बर रूप को आप यही रूप धारण कर इस परम पद को प्राप्त हुये हो धन्य है, आप को मेरा वारंवार नमस्कार होउ यह उच्चारण कर फिर जो दर्शन स्तोत्रादि पाठ पढना हो पढो फिर पढ कर दुबारा अष्टांग नमस्कार करो फिर चाहो जावो चाहो सामायिक करो चाहो शास्त्र सुनो चाहो स्वाध्याय करो फिर जाते हुए भी प्रतिमा को नमस्कार करके जाओ ॥

अथ सामायिक विधि।

सामायिक दो प्रकार की होती है एक निश्चय दूसरी व्यवहार, सो निश्चय सामायिक तो आत्मध्यान (आत्मा का चिंतवन) सिरफ मुनियों से ही बनआती है गृहस्थ के ऐसे उत्कृष्ट परिणाम बहुत कम होते हैं, गृहस्थियों के वास्ते व्यवहार सामायिक अर्थात् णमोकार मंत्र आदि मंत्रों का जाप्य जपना, जाप्य कर सामायिक पाठ, आलोचनापाठ, भगवान् की स्तुति के स्तोत्र पाठ विनती पाठ आदि पढना ही कार्य्यकारी है इस सामायिक से जिस प्रकार पारस के लगने से लोहा स्वर्ण हो जाता है, कच्चाआम पाल में देने से जरमिष्ट हो जाता है इसी प्रकार आत्मा की साथ पूर्व संचय किये (जमा) जो अशुभ (पाप) कर्म वर्गणा, वही वर्गणा पलट कर पुण्य रूप हो जाती है और यह व्यवहार सामायिक भी सम्यक्त होने का कारण है ॥

फरक इतना है जैसे कि कोई पुरुष तो विमान, रेल वगैरा में बैठकर जहां जाना हो जलदी से जा पहुंचता है कोई पैदल सहज सहज कुछ दिनों में पहुंचता है तैसे ही निश्चय सामायिक से जीव उसी भव तथा चंद भव धर मुक्ति हासिल करता है और व्यवहार सामायिक से कुछ काल शुभ गति में भ्रमण कर जब सम्यक्त की प्राप्ति का कारण मिले सम्यक्त हासिल कर ध्यान धर तप कर अपने निज स्वरूप के चिंतवन से कर्म वर्गणा दूर कर अनंत दर्शन अनंत ज्ञान अनंत सुख अनंत वीर्य हासिल कर मोक्ष पदवी पाता है सो जिन जीवों के संसार निकट आगया है अर्थात् इस संसार के जन्म मरणों के दुःखों से छूटने का समय आने वाला है उन्हीं का मन सामायिक में लगता है जो भव्य जीव नित्य प्रति सामायिक करते हैं इस से यह जानना चाहिये कि वह कुछ काल में इस संसार के जन्म मरण से जरूर छूट जावेंगे सामायिक इस जीव को महान कल्याण कारी है सो जो भव्यजीव दुःखों से बच सुखों को भोगना चाहते हैं अपने आत्मा के कल्याण के इच्छक हैं उन को जरूर सामायिक करनी चाहिये ॥

सामायिक करने का समय।

शास्त्रों में सामायिक करना तीन वक्त लिखा है सुबह दुपहर और श्याम गृहस्थ त्यागी श्रावक और मुनि तीनों वक्त सामायिक (आत्मचिंतवन) करते हैं बहुतेरे भव्य जीव गृहस्थ जिन के उत्कृष्ट परिणाम हैं और जिन के धर्म में लगन है वह भी तीन वक्त सामायिक करते हैं परंतु इस समय ऐसे जीव बहुत कम हैं आम मनुष्य जिन के भाव इस समय धर्म में बहुती देर स्थित रहने के नहीं हैं उन्हें चाहिये तीन वकत नहीं तो दो वकत या एक वकत जब करने का अवकाश मिले तब जरूर सामायिक करें कुछ यह नियम नहीं है कि करो तो तीन वकत नहीं तो नहीं सर्व में उमदा वकत सामायिक करने का लोगोंके जागने से पहले बहुत सुबह ही उठ कर करने का है क्योंकि उस वक्त लोगों का शोर गुल नहीं होता श्रेष्ठ सामायिक कोलाहल शून्य समय में ही होती है दूसरे उस वकत सुबह ही सोते उठ कर मगज तरोताजा होता है और दुनिया-दारी के काम करने को भी उस वक्त में बहुता लाचार नहीं होना पड़ता और सांझ की सामायिक चाहिये तो करनी सांझ को दोनों वक्त मिलने के मौके पर, परंतु अशुभ कर्म के उदय से गृहस्थियों को गृह कार्य्य में फंसे रहने से अगर कोई सांझ को नहीं कर सके तो लाचार जब रात्रि को गृह कार्य से फुरसत पा कर सोने को जावे तब भी सामायिक हो सकती है परंतु उस वक्त इन्सान दिन भर का थका हुवा होता है, थके हुए का मन ध्यान में बहुती देर लगना कठिन है इस लिये जहां तक हो सांझ को

सामायिक तो सांझ को ही करे, अगर अशुभ कर्म के बंधन से इन में से कोई भी वक्त मुयसिर न आवे तो जैसा मौका मिले उसी वक्त कर लेनी चाहिये और जितनी देर करने को अपने भावों में सामर्थ हो उतनी देर करे प्रति दिन एक घंटा एक घड़ी आधी घड़ी एक माला जितनी बन सके उससे ही बेड़े पार होजाते हैं ऐसी कथाओं के अनेक ग्रंथों में अनेक कथन हैं कि जिन्होंने केवल णमो अरहंताणम् ही जपा था सुधरते सुधरते वह भी तिरगये तो जो संपूर्ण शुद्ध णमोकार मंत्र की माला नित्य जपता है उस के पुण्य का कहां ठिकाना है णमोकार मंत्र इस जीव को मोक्ष स्थान में जाने के लिये पौड़ी है इस से अनंतानंत जीवों का कल्याण हुवा है और होवेगा ॥

सामायिक करने का स्थान।

निर्विघ्न सामायिक ध्यान एकांत स्थान में होती है सो सामायिक करने का सर्व में उत्तम स्थान वन है, यदि घरों में हुवा करती तो मुनियों को वन में जाकर बसने की कोई जरूरत न थी वन में वन की ताजी हवा सबजी का नजारा इस से भी ध्यान को बड़ी मदद मिलती है, क्योंकि ताजी हवा में दम लेने व सबज दरखतों के देखने से मगज को ताजगी पहुंचती है, और आत्मा का चिंतन मगज से ताल्लुक रखता है, दूसरा स्थान रात्री को ध्यान धरने के लिये मसान भूमी भी है, मसान भूमी में भी रात्री को शोरोगुल नहीं होता और वहां मुरदों को देखकर इस संसार की लजतों से जीव के परिणाम विमुख हो वैराग्य अवस्था में दृढ़ होते हैं, तीसरा स्थान दरिया का किनारा है, वहां पानी नजर आने से ध्यान में खूब दिल लगता है, चौथा स्थान बाग या जंगल है, पांचमां जिन मंदिर है, पर आज कल के अन्यमतियों कारीगरों के बनाये हुए और जैन धर्म के असूलों से नावाकिफ जैनियों के बनवाये हुवे मंदिरों में ध्यान करने का एकांत स्थान नहीं होता, छठा स्थान गृहस्थियों के लिये मकान की सब से ऊपर की छत है, वहां हवा आने को भी रोक नहीं होती और शोरोगुल भी कम सुनाई आता है, सातवां स्थान मकान में कमरा या कोठरी है, जब सामायिक करे कोठरी के किवाड़ भेड़कर सामायिकमें बैठे ताकि आवाज सुनाई न आनेसे ध्यानमें विघ्न न पड़े, ॥

निर्ग्रन्थ सामायिक।

जो गृहस्थी परिग्रह रहित अवस्था में सामायिक करनी चाहे वह कमरे या कोठरी के किवाड़ भेड़ कर अंदर की कुंडा लगा लेवे तमाम वस्त्र उतार कर नग्न हो पद्मासन बैठ या खड्गासन खड़ा हो दोनों बांह नीची कर अपने आत्मा का चिंतवन करे कि मैं जो हूं एक आत्मा हूं ज्ञान दर्शन मेरा स्वभाव है, यह शरीर मेरा नहीं है,

मैं इस से अलग हूं, एक दिन यह मुझसे अलग हो जावेगा ऐसे ऐसे अनंत शरीर धारण कर चुका हूं इस की ममता कर जो मैं अभक्ष खा और पाप कार्य में प्रवर्तने कर अशुभ कर्म का बंध करता हूं. सो सखत गलती कर रहा हूं, मुझे खान पान वरताव ऐसा करना चाहिये जिस से संसार में आमन मरण करने का कारण घटे, अर्थात् मेरे आत्मा की साथ जो कर्म वर्गणा हैं, उनका क्षय हो कर मेरे निजस्वभाव अनंत दर्शन अनंत ज्ञान की प्राप्ति हो मोक्ष अवस्था में तिष्ठूं इस प्रकार चिंतन कर अपने आत्मा के प्रदेशों को अपने मगज में लेजाकर अपने आत्मा का स्वरूप देखने में लवलीन हो जिस को यह ध्यान करना हो, भगवती आराधनासार ज्ञानार्णव परमात्मा प्रकाश आदि कहानी ग्रन्थ और योग धारन करने के ग्रन्थों की स्वाध्याय करे और योग जानने वाला जो मिले उस से योग का रास्ता सीखे थोड़ी बुद्धि वालों को बगैर गुरू के सिखाये योग करने की विधिका जानना कठिन है॥

माला फेरने की विधि।

जब माला फेरो तो एसे स्थान में बैठो जहां शोरगुल न हो क्योंकि जहां शोरगुल होता है, वहां परिणाम स्थिर होना बड़ा कठिन है, इस लिये जहां तक हो माला एकांत स्थान में फेरो और माला फेरती दफे न हलो न बोलो न हाथ या आंख वगैरा से किसी को सैन वगैरा करो। जौनसा मंत्र जप कर माला फेरनी हो हर एक दाने पर एक एक मंत्र पढो,मसलन तुम णमोकार मंत्र का जाप करना चाहते हो तो हर एक माला के दाने पर सम्पूर्ण णमोकार मंत्र अर्थात् णमोकार मंत्र के पांचों चरण पढो इसी प्रकार जब पंच परमेष्ठि के नाम की माला फेरो तो हर एक माला के दाने पर पांचों परमेष्ठि का नाम जपो इसी प्रकार और जो मंत्र जपना चाहो उसे जपो मालाके ऊपर जो तीन दाने होते हैं सबसे अखीर का जो उन तीनों में दाना उस से जपना शुरू करो जपते हुए अंदर चले जाओ जब सारे १०८ जप चुको उन अखीर के तीन दानों को माला के अंत में भी जपते हुए उसी अखीर के दाने पर आओ जिससे माला जपनी शुरू करी थी यह एक माला हुई जितनी माला णमोकार मंत्र की फेरनी हों एक दो तीन चार पांच आदि उतनी फेर कर फिर दूसरे मंत्र की फेरो फिर तीसरे की फिर चौथे की फिर पांचवें की फिर छट्ठे की फिर सातवें की इस के बाद चौबीसतीर्थंकरों में से जौनसे तीर्थंकर के नाम की फेरना चाहो फेरो चाहे चौबीस के चौबीस हर एक दाने पर जप कर सर्व के नामों की माला फेरो चाहे एक का नाम एक दाने पर जप कर सारी माला जपकर फिर दूसरे के नाम की जपो चाहे चौबीस के नाम की चौबीस

जपो चाहे इन में से दो चार पांच सात को जिन जिन के नाम की जपनी चाहो जपो फिर और जपनी हो विदेहक्षेत्र के बीस विद्यमान सीमन्धर आदि के नाम की फेरो चाहे णमोकार की ही फेरो चाहे भक्तामर काव्यों में जो मंत्र हैं,उनकी फेरो जितनी देर अपने भावों में फेरने की सामर्थ हो उतनी फेरो जियादा देर फेरने का जियादा फल थोडी देर फेरने का थोडा फल है, परंतु यह बात याद रखो कि यह सामायिक आदि धर्मसाधन का मौका इस इन्सान योनि में ही है अगर अब गफलत करोगे तो फिर यह इनसानयोनि उत्तम श्रावक कुल धर्मकी प्राप्ति होनी बड़ी कठिन है देखो बीज से बीज पैदा होना आसान है वगैर बीज के बीज पैदा होना कठिन होता है, इसी तरह अगर तुम कुछ धर्म कार्य इस भव में करोगे तो उसके फल से उत्तम योनि मिलने से फिर भी धर्म हासिल होनेका मौका बना रहेगा यदि धर्म कार्य कुछ भी नहीं करोगे हरवक्त पाप कार्य में ही लगे रहोगे तो इस से तिर्यंच पशु गति आदि में जा पड़ोगे जहां धर्म लाभ होना दुर्लभ होगा और भूख पियास छेदन भेदन शीत उष्णता के अनेक दुख भोगने पड़ेंगे पस अपना भला चाहो तो गफलत छोडकर सामायिक आदि धर्म संभालो इस से ही तुम्हारा कल्याण होवेगा ॥

अथ जाप्य मन्त्राः।

अब हम जाप्य मंत्र लिखते हैं।

प्रथम मंत्र।

णमोअरहंताणं, णमोसिद्धाणं, णमोआइरियाणं।
णमोउवज्झयाणं,णमोलोएसव्वसाहूणं॥

दूसरा मंत्र।

अरहंत,सिद्ध, आइरिया, उवज्झाया, साहू।

तीसरा मंत्र।

अरहंत सिद्ध।

चौथा मंत्र।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा।

पांचवां मंत्र।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

छठा मंत्र।

ॐ ह्रीं।

सातवां मंत्र।

ॐ।

इन के सिवाय भक्तामर काव्यों में जो मंत्र हैं, वह भी अनेक विघ्नों के नाश करने वाले हैं, उनका खुलासा ४८ कथा रूप भक्तामर ग्रंथ में लिखा है, वहां से जानना इसी प्रकार और भी मंत्र हैं, इस काल में उनके जानने वाले न रहने से प्रचलित नहीं हैं, मंत्रों में बड़ा असर होता है जैसे सांप या बीच्छू वगैरा का जहर मंत्र पढने से उतर जाता है इसी प्रकार वह मंत्र जिन में परमात्मा का नाम गर्भित है उनका उच्चारण करने से सर्व पापों का नाश हो जाता है लेकिन जो मंत्र पढो शुद्ध पढो अशुद्ध मत पढो अगर मन वचन और काय को लगाकर शुद्ध मंत्र पढ कर एक माला भी फेर लो तो सर्व पापों का नाश होकर अनेक प्रकार की सिद्धि प्राप्त होती हैं और माला तो जपते हो परंतु मन माला में नहीं है और मंत्र भी अशुद्ध पढते हो तो ऐसी माला बहुत सी फेरनी भी कार्यकारी नहीं इस लिये जहां तक हो मन वचन कायाको लगाकर शुद्ध मंत्र पढ कर माला जपनी चाहिये और जहां तक हो एकान्त स्थान में बैठ कर माला जपनी चाहिये यानी जहां दूसरों का शोरगुल न हो और जब कोई माला जपे पासवालों को भी चुप रहना चाहिये ताकि माला फेरने वाले भावमें हानि न पड़े। बाजे बाजे णमो की जगह नमो और अरहंताणम् की जगह अरिहंताणं पढ़ते हैं यह गलती है और णमो अरहंताणं पढना चाहिये जैसे णमो अरहंताणं इसी प्रकार सब मंत्र या उनके चरणपद वगैरा शुद्ध पढने चाहियें। णमोकार मंत्रका अर्थ जो हमने ४०पृष्ठकी पुस्तकपर छापा है जो हमारे यहां से ≈) में मिलता है, यदि किसी को किसी चरण के पाठ में शक होवे किसी चरण का अर्थ देखना हो तो उसमें देख लेवे॥

आराधना किसको कहते हैं।

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र और सम्यक्तप यह चार आराधना कहलाती हैं, सो इन का अपनी आयु पर्यंत आकुलता और दोषों करके रहित पर्णरूपसे उज्वलता सहित निर्विघ्न निर्वाह करना तिस का नाम आराधना है॥

अथ शास्त्र सुनने की विधि।

अब हम बच्चों को शास्त्र सुनने की विधि सिखाते हैं।

१ श्रोता—हे बालको तुम ऐसे श्रोता (सुनने वाले) मत बनो जो उस वक्त सुन कर पीछे भूलजाओ और उस पर अमल न करो॥

२ श्रोता—हे बालको तुम श्रोता की जगह सरोता मत बनो कि जो पंडित ने कहा उसे काटने लगो अर्थात् उस का खंडन मंडन करना प्रारंभ करदो और पंडित से झगड़ा (बहस) करते रहो ऐसा हरगिज नहीं करना॥

३ सोता—हे बालको तुम श्रोता की जगह सोता मत बनो कि शास्त्रकी सभा में आकर सो गए (ऊंघने लगे) और जब शास्त्र होचुका उठकर घरको चलदिये॥

नोट—तुम्हें चाहिये जो पंडित कहे उसे खूब ध्यान से सुनो और फिर उसे मनमें विचारो और उस पर अमल करके अपना कल्याण करो॥

मंगलाचरण पढ़ना सीखो।

बालको जब तुम कोई शास्त्र पढ़ो पहिले मंगलाचरण पढ़ कर फिर शास्त्र बांचना चाहिये सो शुद्ध मंगलाचरण हमने इस पुस्तक के शुरू में ही लिखदिया है उसे कंठ याद करलो उसका अर्थ समझना हो तो अर्थ भी लिखदिया है॥

स्वाध्याय।

दुनिया में जितने कुकर्म इस संसार में परिभ्रमण कराने के कारण नरकादिक के दुःख देने वाले यह इन्सान करता है सर्व का स्वामी करता धरता यह मन है इनसान से सारे खोटे कार्य यह मन ही करवाता है यह मन जियादातर खोटे कार्यों में लगा रहना चाहता है धर्म कार्य में लगना कम पसन्द करता है जहां आदमी ने इसे जप तप दर्शन पूजा सामायिक ध्यान आदि धर्म कार्य करने में लगाया और यह चटसे पाप कार्यों में दौड जाता है और जब यह इनसान रंडीबाजी परस्त्री सेवन जूवा खेलना शराब पीना चोरी करना पर जीवों की हिंसा करना आदि पाप कार्य करता है तब यह मन ऐसा नहीं करता कि चटसे पाप कार्य में से निकल कर धर्म कार्य में लगजावे, दूसरी

आदत इस मन में दौडने की है हरदम दौड़ता ही रहता है अगरचे यह धर्म कार्य में से निकल पाप कार्य में रहना पसंद करता है परंतु पाप कार्य में भी यह मन एक जगह नहीं ठहरता आदमी करता तो है कुछ और उसका मन होता है कहीं और यह मन क्या भगोडा है सोते वकत भी यह आराम नहीं करता और कुछ नहीं तो स्वप्न में ही दौड़जाता है और जबतक इस मन को काबू में न किया जावे इस जीव का उद्धार होना कठिन है क्योंकि जितने धर्म कार्य हैं जप करना दर्शन करना पूजा करना या सामायिक ध्यान तप जो कुछ अपने आत्मा के कल्याण करने को करना है सब मन लगाकर करना ही कार्य कारी है सो इस मन के वश करने को सब से बड़ा जरिया शास्त्र स्वाध्याय है। यानि पुस्तकों का पढना है उस में यह थोड़ी बहुती देर जरा काबू में आवे है बड़े बड़े तपस्वी साहसी मुनि भी जब उनका मन ध्यान में नहीं लगता तब लाचार इस को बुरे चिंतवन में दौडजानेसे बचानेके लिये शास्त्र स्वाध्याय में ही लगावें हैं शास्त्र स्वाध्याय से इधर तो मन पाप कार्य्यों में दौडनेसे रुकता है जिससे अशुभ कर्म का आगमन नहीं होता उधर शास्त्र स्वाध्याय से अपने निज आत्मा के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होता है जो मोक्ष रूपी महल की पौडी है शास्त्र की स्वाध्याय बिना इस पुरुष के नियम व्रत ऐसे हैं जैसे ओस की बूंद जब चाहे गिरपडे इस वास्ते जो जैनी भाई यह चाहैं कि हम सच्चे धर्मात्मा बनजावें हमारे अशुभ कर्म का आगमन रुके और शुभ की प्राप्ति होकर हमारा कल्याण होवे उनको शास्त्र स्वाध्याय की आखडी जरूर लेनी चाहिये जैसे बालक जब सब से पहले पढने बैठता है तो सबसे पहले उसका काम अक्षर सीखने का है ऐसे ही जैन मत में सबसे पहला नियम व्रत शास्त्र स्वाध्याय की आखड़ी लेने का है इसके विरुद्ध जो जैनी आखड़ी नियम पालन करते हैं वह उलटा कार्य्य अज्ञान तप है ज्ञान सहित तप एक मिनट में अनंता अनंत कर्म राशि का नष्ट करे ज्ञान रहित का तप सागरों पर्यंत करने से भी कर्म नष्ठ नहीं होते इस वास्ते हर जैनी को सब से पहले शास्त्र स्वाध्याय की आखड़ी लेनी चाहिये कि मैं प्रति दिन इतनी देर जरूर शास्त्र स्वाध्याय किया करूंगा जो इस प्रकार करेगा वह कोई दिन में सच्चा धर्मात्मा सच्चा नियम व्रत धारण करने वाला बनजावेगा उस ही की आखडी नियम व्रत निर्विघ्न पलैंगी और अपने आत्मा के स्वरूप का ज्ञाता होकर अपना कल्याण कर सकेगा।

अथ आखड़ी (नियम)।

हम देखते हैं और सुनते हैं कि बाज २ लोग मन्दिरों में लोगों को जबरन आखड़ी दिलाते रहते हैं और यही कहते रहते हैं कि तुम फलानी वस्तु खानी छोड दो ऐसी जबरन आखड़ी दिलाने से क्या फायदा इस प्रकार जिनको बगैर श्रद्धा के जबरन

आखड़ी दिखाई जाती है वह सब जब उनसे नहीं पलती तो पीछे फौरन तोड़ डाल हैं इस में आखड़ी दिलाने वाले व जिस को दिलाई जावे दोनों को महा पाप लगता है इसलिये किसी को भी जबरन आखड़ी नहीं दिलानी चाहिये आखड़ी वही है कि जिस वस्तु को शास्त्र में बुरी जान; उसका स्वरूप समझ कर स्वयमेव उस से गलानी कर उसका त्याग करे या शुभदायक व्रतादिक की अभिलाषा कर ग्रहण करे सो जो स्त्री पुरुष आखड़ी लेते हैं उन को हम अब इस विषय में कुछ आखड़ी लेने का तरीका समझाते हैं ताकि जो आखड़ी ली जावे फिर कष्ट आने पर उसका निभाव होसके टूटने न पावे आखड़ी लेने से पहिले ही सब ऊंच नीच विचार कर लेना चाहिये ॥

आखड़ी करने की तरकीब।

१—जब कोई जैन स्त्री या मरद आखड़ी लेवे तो इतनी बात विचारलवे कि जो मैं इन चीजों का त्याग करने लगा हूं मुझ से निभाव होगा या नहीं मेरा खाना मेरे आधीन है या मैं किसी दूसरे का नौकर हूं जैसा भोजन वहां बना हुआ मुझे मिलेगा वैसा खाना पड़ेगा या नहीं, मेरा इतना अखतियार है या नहीं कि रसोई करने वाले को इस बात से रोक दूं कि वह हर वस्तु की कड़छी अलग अलग रखा करे जो जो वस्तु मैं नहीं खाऊंगा उसकी कड़छी मेरे खाने वाली वस्तु में न दिया करे या मे वास्ते उस रसोई में मेरे खाने वाली भिन्न वस्तु बन जाया करे और यदि मैं किसी का नौकर नहीं रसोई अपने घर में जीमता हूं तो घरमें कुछ मेरा अखतियार है या नहीं दूसरे मेरे आधीन हैं या मैं उनके आधीन हूं, क्योंकि पराधीन की आखड़ी निभनी बहुत कठिन होती है ॥

२—यह सोचना चाहिये कि जिस रसोई में मैं रसोई खाता हूं उस रसोई के दूसरे जीमने वालों का खाना पीना शुद्ध है या अशुद्ध है और मेरी संगति के आदमी खाने पीने में कुछ विचारवान् हैं या ऐसे हैं कि जो कुछ आगे आवें सब हजम कर जावें क्योंकि यह नीति का वाक्य है, जैसी संगति आदमी की होती है उनके पास रहनेसे वह वैसे ही होजाते हैं अभक्षियों की संगति में आखड़ी का पालना बड़ा कठिन है ॥

३—यह विचारे कि यदि मैं बीमार हो जाऊं और हकीम फलानी वस्तु का अरकया मुरब्बा या गुलकंद खाना बतावे तो मैं उस समय में अपनी आखड़ी निभा सकूंगा या नहीं इसलिये जब आखड़ी करो वह वस्तु जिनके गुलकंद या मुरब्बे या अरक, रगड़ कर खानी पड़ती हैं उन को सोच लो जब आदमी सखत बीमार हो जाताहै तो ऐसे बहुत कम हैं कि जिनका भाव ऐसे मौके पर कायम रहे ॥

४—यह विचार लो कि मेरा काम एक देश में स्थिर रहने का है या देश विदेशमें सफर करने का है क्योंकि देश विदेश सफर करने में अपने हाथ से रोजमर्रह रसोई बना कर खानी अति कठिन है बनी बनाई हलवाई से या ढाबे में खानी पड़ती है ऐसी हालत में बहुत कम पुरुष अपना भाव स्थिर रख सकते हैं॥

५—जब कभी तुम किसी किसम की आखड़ी करो तो यह विचार लो कि हम धनवान हैं या निर्धन हैं, निर्धन (गरीब) से बहुत सी आखडी पालनी से अति कठिन हैं॥

जैनशास्त्रों में यह लिखा है कि जिस समय कोई पुरुष आखड़ी लेता है, जैसा उदासीन रूप भाव उस का उस समय होता है फिर होना बड़ा कठिन है, बहुत से पुरुष ऐसे हैं कि उस समय तो वह जोशमें आकर आखड़ी ले बैठते हैं परंतु पीछे निभाने में जब कठिनता पड़ जाती है तो यह विचारते हैं कि यदि मैं इस समय इस आखड़ी को तोड़ दूं तो देखने वाले बिरादरी के या मेरे कुटुम्ब के पुरुष मुझे क्या कहेंगे आखड़ी तोड़ने से जगत् में मेरा मूंह काला होगा। और दूसरे शास्त्रों में यह भी लिखा है कि जो आखड़ी तोड़ता है वह नरक में जाता है इस लिये वह डरा हुवा आखड़ी तो तोड़ता नहीं और तकलीफ सही जाय नहीं इसलिये दिल ही दिलमें उसके भाव खराब होते हैं और आखड़ी लेने के समय को याद करके पछताता है सो ऐसा पुरुष उलटा पाप बांधता है, क्योंकि कर्म का बन्ध भाव अनुसार बन्धे है हम जैनी भाववादी हैं दूसरे अन्यमती क्रियावादी हैं इसलिये जब कोई आखड़ी लेनी हो तो सारा ऊंच नीच विचार लो किसी बेसमझ के बहकाए से ऐंडी बैंडी आखड़ी मत लो, जब आखड़ी लो यह देख लो राज कैसा है देश कैसा है मेरे शरीर में ताकत इसके निभाने की है या नहीं, भाव स्थिर रहने वाले हैं या नहीं संगति कैसी है आजीविका कैसी है सारी बातें विचार कर आखड़ी करो और अनाचार का त्याग करो अतिचार रहित आखड़ी अवस्थामें कोई भी नहीं निभा सकता मसलन जिस हरयाई का तुमने त्याग कियाहै जो उसका अतिचार तुम्हें अपने बाग में बोन या बेचने या दूसरों को पकवाकर खिलाने या खरीदकर लाने या अपने मालिक या कुटुम्बियों के वास्ते या आजीविका निमित्त उसका आचार गेरने मुरब्बा बनाने अरक खैंचने में लगेगा उसको तुम नहीं बचा सकते। गृहस्थियों के त्याग अतिचार सहित होता है केवल अनाचार का त्याग होता है यानि अपनी शक्ति अनुसार उसका खाना पीना नहीं करते अतिचार रहित त्याग केवल मुनि अवस्था में होता है परंतु इस बात का ख्याल रखो कि जो हरी तुम त्याग करो उस की हरी दंतावन भी मत करो उसके हरे पात्र पर भोजन मत खाओ उसके फूलों की माला आदिक के भूषण अपनी इन्द्रिय पोषण को मत पहनो मत सूंघो अपने जखम पर उन के हरे पत्ते मत बांधो उसका अरक मत पीवो यह सखत दोष

हैं इसी प्रकार सब किसम की आखड़ी जान लेना इस लिये जब आखड़ा करो यह कोई जरूरत नहीं की तुम थोड़ी गिनती में रखो, जितना निभाव हो सके भाव परिमाण रखो परंतु जहां तक हो शुद्ध भाव से आखड़ी को निभावो देखो भरत चक्रवर्ती जो ६ खण्ड का राजा था उसके कितनी स्त्री पुत्र घोड़े हाथी रथ सेनादिक थे उनके खान पोन क्रियादिक से कितने जीवों की हिंसा प्रति दिन होती थी परंतु भावों की निर्मलता थी तनियां खोलते ही केवल ज्ञान होगया उनके भाई बाहुबली ने कसा कठिन तप किया परंतु जबतक भावों की निर्मलता न हुई तब तक केवल ज्ञान न हुआ द्रव्य लिंगी मुनि कैसा कठिन तप करते है परंतु भावों की शुद्धता बिना संसार में ही रुलते हैं तन्दुल मच्छ बिना हिंसा करे केवल अशुद्ध भाव से ही महा नरक में जाता है इसलिये जो कुछ करो भाव की शुद्धता से करो भाव सहित छोटी सी आखड़ी भी बेड़ापार करदेती है भाव रहित बड़ी २ आखड़ियां भी कार्य्यकारी नहीं ॥

अगर छोड़ी हुई वस्तु भूल कर खाई जावे।

अगर कोई शख्स अपनी छोड़ी हुई वस्तु कंदमूल, अभक्ष, विदल आदि भूल कर खाजावे, या अनजान पने से खाई जावे या जबरदस्ती खिलाई जावे जैसे जैल खानों में, या बेहोशी में खिलाई जावे या व्रत के दिन भूल कर कुरला करलेवे तो ऐसी हालत में जब यह मालूम होजावे कि फलानी वस्तु जिसका हमारे त्याग था नावाकफियत से या भूलकर खाई गई या जबरन खिलाई गई तो जब मालूम हो जावे फिर और नहीं खानी और पिछली खाई हुई के वास्ते बहुत पछतावा करना और अपने तई निंद्य मान उस दोष के धोनेको द्रव्यक्षेत्र कालभाव के अनुसार मुनि तथा शास्त्रके ज्ञाता धर्मात्मा बुद्धिमान् से निष्कपट अपना सब वृतान्त कहकर उसका दिया हुआ दंड (प्रायश्चित्त) लेना चाहिये यानि कोई और नियम उस की एवज में पालना चाहिये मसलन कुल्ल हरी का या किसी रस का दो चार दिनके वास्ते त्याग करदेना या कोई व्रत करना चाहिये और द्रव्य क्षेत्र काल भाव के माफिक दिये हुये प्रायश्चित्त को आदर पूर्वक निभावे और आइंदा के वास्ते सावधानी रखनी चाहिये।

नोट—अगर दंड नहीं लोगे तो आखड़ी भंग का घोर पाप लगेगा इस वास्ते कुछ दंड जरूर लेना चाहिये जिस दिन व्रत में दोष लगे उस दिन भी व्रत करे उसे तोड़े नहीं और उस के दंड में और भी व्रत करे।

अथ २०० हरियाइयों के नाम।

बहुत से स्त्री पुरुष गिनती की हरियाइयां रख कर बाकी का त्याग करते हैं इस लिये हम उन के वास्ते यहां २०० हरयाइयों के नाम लिखते हैं जो हमारी भूल से रह गई हैं उनका नाम इस में और शामिल कर लेवें इनमें से जौन जौनसी रखनी हों छांट कर रख लेवें॥

१ अनार (दाड़िम) २ अलूचे ३ अमरूद, ४अननताश ५ अञ्जीर, ६ अरण्ड खरबूजा, ७अङ्गूर, ८अदरख, ९अमलतास के फूल दवाई, १० अमरा ११ अखरोटहरे, १२ अजवायन हरी दवाई, १३ अरण्ड के पात दवाई, १४ आडू, १५आलू बुखारा, १६ आम, १७आलू, १८ आंवला, १९ आक के पात का अचार, २०इमली, २१ ऊम्बर २२ककड़ी, २३ कचनारी, २४ कमरख, २५ करौंदा, २६ करेला, २७ कचरा (फूट आरीया) २८ ककोड़े २९ कमलगट्टा या कमल की जड़ (भिस) ३० कद्दू मिट्ठा (काशी फल, हलवा) ३१ कसेरू, ३२ कटल, ३३ कटूम्बर, ३४ कटहरी की दाल दवाई ३५ करमकल्ला, ३६ करम का साग, ३७ कंटूरी, ३८काफीका फल, ३९काले चने की फली (बाकला) ४० कीकरकी दन्तावन, ४१ फुलफेका साग, ४२ कुकड़ छलनो दवाई, ४३ केवड़े का फूल या अर्क ४४ केले की फली या गाभ या अर्क ४५ कैंत, ४६ खरबूजा, ४७ खजूर ४८ खसखस (पोस्त हरा) ४९ खट्टी, ५० खरैंटी. दवाई, ५१ खट्टी बूटी खटनो ५२ खिरनी, ५३ खीरा, ५४ खुरचेल, ५५ खुंब, ५६ खूमाणी, ५७ गन्ना (पौंडा) ५८ गलगल, ५९ गंवारे की फली ६० गागली (अरवी) या पान, ६१ गाजर या गाजर का मुरब्बा या अर्क ६२ गिलो दवाई, ६३ गुलाब के फूलका गुलकन्द या अर्क, ६४गुलाबांस की जड़ का आचार या पात दवाई, ६५ गुलबकावली फूल ६६ गूंदनी ६७ गूलर पिशाब बढ़ जाने में दवाई, ६८ गुच्छी, ६९गेंदे के फूल, ७० गेहूं हरी (उमी) ७१गोभी गांठ, ७२गोभीफूलदार, ७३गोभी बन्द ७४ गोमा दवाई, ७५गोखरू का साग ७६घीया (आल लौकी) ७७ घी कंवार दवाई, ७८ चकोतरा ७९ चौलाई का साग ८०चना हरा (छोलिया बूट) ८१चचरींडे, ८२ चंबेली के फूल, ८३चिलगोजे हरे, ८४ छुवारे हरे ८५ जमोय, ८६ जवार हरी (परमल) ८७जामन, ८८ जिमीकंद, ८९जौंहरे (बोहर) ९०झाड़ी के बेर, ९१ झीडे ९२ टमाटर, ९३ टींट (डेले) ९४टिण्डे ९५ढाक के पात या ढकपापड़ा दवाई ९६ढेउका आचार ९७ तरबूज, (मतीरा) ९८ताड़का फल ९९तिलहरे, १००तुलसी दल (पात) १०१तूंबा दवाई (इन्द्रायणफल) १०२तून्त, १०३तेजफल दन्तावन १०४तोरी भिण्डी, १०५तोरी राम (घियातोरी) १०६तोरी काली (तोरी धारी दार) १०७थोहर का

दूध दवाई, दहिया दतावन १०९ धनियें के पात चटनी ११० नसूडे १११ नारियल, हरा ११२ नारंगी (संतरा) ११३ नासपाती, (नाक) ११४ नागफल का फल ११५ नाली का साग, ११६ नीमकी दन्तावन या पात फल दवाई ११७ नीबू (अमलवेद) ११८ नीलोफर का अर्क ११९ पोदीना १२० पनवाड़ १२१ पान या फल परवर, १२२ पालक का साग १२३ पाकरफल १२४ पीलू का फल, १२५ पिप्पल फल १२६ पिलखन फल, १२७ पियाज (गट्ठा) दवाई १२८ पेठेकी मिठाई १२९ फलाई दन्तावन, १३० फालसे, १३१ बथवा साग १३२ बढ़ल, १३३ बनफसाका हराफूल (असली खमीरा मुरब्बा जो कश्मीर से आता है) १३४ बकायन, दन्तवान या पात दवाई १३५ ब्रह्मी बूटी दवाई, १३६ बड़ का दूध दवाई या फल, १३७ बांसका आचार, १३८ बाजरा हरा, १३९ बांसे के पत्ते दवाई १४० बदाम हरा, १४१ बीहका मुरब्बा दवाई, १४२ बेर, १४३ बेदमुश्क अर्क १४४ बेल, १४५ बैंगन १४६ मटर, १४७ मकी हरी छिले सिट्टे, (कूकड़ी) १४८ मकोह दवाई १४९ महुब्वा; १५० मालटा, १५१ माला दवाई (संभालू) १५२ मिरच हरी १५३ मिट्ठे (नींबू) १५४ मूंगफली हरी १५५ मूली या मूली के पात या फल मूंगरे (सींगरी) १५६ मेथी १५७ मेंहदी, १५८ मोतिया फूल, १५९ रतालू १६० रसौत का फल, १६१ रोजवरी १६२ रतनजोत १६३ लसन दवाई, १६४ लीची, (लिसलिसी) १६५ लोबिये की फली (लूंदा) १६६ लोनिये का साग, १६७ लौकाट, १६८ सहतूत १६९ सरसों का साग या आचार, १७० सराल १७१ स्ट्रावरी, १७२ शकरन्दी १७३ शरीफा (सीताफल) १७४ सनकूकड़े का फल; १७५ सरदा (काबूल का सरदा) १७६ सांगर (जंडफली) १७७ शाहतरा दवाई १७८ सालममिसरी हरी। १७९ सिंबल डोडे या कूकड़ी १८० शीशम के पात १८१ सिंघाड़ा १८२ सूरज मुखी फूल १८३ सेमबड़ी, १८४ सेम छोटी १८५ सेंध (कचरी १८६ सेव, १८७ सेव लाहौरी, १८८ सेवती गुलकन्द १८९ सोए का साग, १९० सौंफ, १९१ सोझना फूल या फली या अर्क, १९२ हरड़े मुरब्बा १९३ हलोंसाग १९४ हलदी हरी, १९५ हरमल दवाई १९६ हाथी पिच १९७ हार सिंगार फूल १९८ हुलहुल १९९ हंसराज (परावशा) २०० बाजरे की बाल या हरी जुवार के भट्टे ॥

समझावट।

जो कोई भाई हरी खाने वासते रक्खे तो उस को इतनी बात समझ लेनी चाहिये कि वह उस हरियाई के फल या फूल या पत्ता या तना या जड़ या वकल या अर्क उसका सब हिस्सा खा पी सकता है आखड़ी उसके कुल ग्रहण की होती है एक हिस्से की नहीं होती जैसे किसी ने सुहांझना रक्खा तो वह उसके फूल को भी खा सकता है

उसकी फली को भी यदि किसी दवाई में उसका पात या वक्कल अर्क या जड़ कानी पड़जावे तो कोई दोष नहीं देखो सरसों का साग में पत्ता खाया जाता है और आचार में तना और फूल खाया जाता है इसी प्रकार कोई सबजी तो ऐसी है जिसका केवल फल ही खाया जाता है मसलन अंगूर कोई ऐसी है जिसका केवल फूल ही खाया जाता है मसलन गुलाब के फूलों का गुलकंद कोई ऐसी है कि उसके पातही खाते हैं मसलन पोदीना इसलिए कोई हरी ऐसी है कि उसका केवल एक हिस्सा फल ही खाया जाता है कोई ऐसी है कि उसके दो हिस्से फल भी और फूल भी और किसीका तीसरा हिस्सा पात भी साथ ही खाया जाता है सो ख्वाह तुम उसका एक हिस्सा खाओ ख्वाहसारे हिस्से खावो पाप तो तुम को उस हरी का होगा। इस लिये जो हरी तुम रखो उसके सब हिस्से खा सकते हो और दूसरी वार्त्ता यह है कि जो हरी तुम रक्खो उसकी तमाम जाति खासकते हो मसलन तुमने आंम रखा तो तुम तमाम जाति के आंब खा सकते हो देखो मालदा भी बम्बई भी लंगड़ा भी यह सब एक हैं हर एक चीज की शकल दूसरे देश की आबहवा में बदल जाती है मसलन गन्ना किसी की कैसी शकल है किसी को कैसी जैसा क्षेत्र वैसी सकल इसलिये गन्ने में पौंडा शामिल हैं नींबू में हर किसम के नींबू नासपाती में कश्मीरी नाक नारंगी में सन्तरा अनारमें दाड़िम या विदाना अनार अंगूर में हर जाति के अंगूर आम में हर जाति के आम शामिल हैं इस की बड़ी पहचान यह है कि इनके पेड़ के पात और गुठली अकसर करके एक शकल के होतेहैं जैसा कारण पडे वैसा समझ लेना यह हमने जो दो सौ नाम लिखे हैं इनमें से कितने ही ऐसे हैं जो खाये जाते हैं कितने ऐसे हैं कि वह केवल दंतावन के ही काम आते हैं कितने दवाई में ही काम आते हैं या डाढ़ के दरद के लिये मूंहसे चबाने पड़ जाते हैं सो जब फरद बनाओ सारा आगा पीछा सोचलेना चाहिये।

अथ ८४ पाप क्रिया मन्दिर में नहीं करनी।

१ खांसना खखारना नहीं। २ मल मूत्र वायु उसारना नहीं। ३ वमन तथा कुरला करना नहीं। ४ आंख कान नाक का मैल निकालना नहीं। ५ पसीना तथा शरीर का मैल डालना नहीं। ६ हाथ पांव के नाखून तोड़ना कटाना नहीं। ७ फस्द खुलाना नहीं घाव पटी करना नहीं। ८ हाथ पांव शरीर दबाना नहीं। ९ तेल मरदन तथा सुगन्ध अतर लगाना नहीं। १० पांव पसारना तथा गुह्य अंगादि दिखाना नहीं ११ पांव पर पांव धरना तथा ऊंट के आसन बैठना नहीं। १२ ऊंगली चटकाना तथा फोड़े की खाल चटना नहीं। १३ आलस्य तोड़ना जंभाई छींक लेना नहीं। १४ भीत

क सहारे बैठना तथा खंभ सहारे बैठना नहीं। १५ शयन करना तथा बैठे हुये ऊंघना नहीं। १६ स्नान उबटन तेल का करना नहीं। १७ गर्मी में पंखा तथा रूमाल से हवा लेना नहीं। १८ सरदी में आग से तापना नहीं। १९ अपना कपड़ा धोती वगैरह धोना सुखाना नहीं। २० अधो अंग में खाज खुजाना नहीं। २१ दान्तन मंजन तथा दान्तों में सीख करना नहीं। २२पट्टा कुरसी खाट पलंगपर बैठना नहीं। २३गद्दी तकिया लगा कर बैठना नहीं। २४ ऊंचे आसन बैठ के शास्त्र बांचना नहीं। २५ चमर छतर अपने ऊपर कराना नहीं। २६ शस्त्र बांध के कमर बांध के आना नहीं। २७ घर से कोई सवारी पै बैठ के आना नहीं २८ जूता, खड़ाऊ,मोजा तथा ऊनके वस्त्र पहन के मन्दिर में आना नहीं। २८ नंगे सिर मंदिर में बैठना नहीं। ३० शृंगार विलेपन तिलकादि करना नहीं। ३१ दर्पण में मुख देखना केश तिलक सवारना नहीं। ३२ डाढी मूछोंपर ताव देना नहीं। ३३ हजामत तथा केश लोंच करना नहीं। ३४पान तमाखू बीडीवगैरह खाना नहीं। ३५साध इलायचीलौंग सुपारी वगैरह खाना नहीं। ३६भांगमाजूनका नशा कर मन्दिरमें आना नहीं। ३७फूलोंकी माला कलंगी हार पहिनके आना नहीं। ३८पगडी साफा मंदिर में बैठ के बांधना नहीं। ३९ भोजन पान मंदिर में करना कराना नहीं। ४०औषध चूरण गोली वगैरह मंदिर में खाना नहीं। ४१रात्रिको पूजन तथा फल वगैरह चढ़ाना नहीं। ४२ जल केलि (होली)मंदिरमें खेलना नहीं। ४३विवाह सगाई नेग कारज कार्यकी चर्चा करनी नहीं। ४४ सगे सम्बन्धी मित्रादिक से मिलनी भेट लेनी देनी नहीं ४५ कुटुम्ब शुश्रूषा व आदर करना नहीं। ४६ जुहार मुजरा बंदगी राम राम करना नहीं। ४७ राजा तथा सेठ किसी का सन्मान करना कराना नहीं। ४८ बिरादरी सम्बन्धी पंचायत मंदर में करना नहीं। ४९ लड़ाई झगडा विसम्वाद करना नहीं। ५० गाली भण्ड वचन कटुक वचन कहना नहीं। ५१ झूठ गर्हित सावद्य अप्रिय वचन बोलना नहीं। ५२ लाठी मुष्टी शस्त्र प्रहार करना नहीं। ५३ हांसी ठट्ठा मसकरी छेड़ छाड़ करना नहीं। ५४ रोना विसूचना हिचकी लेना करना नहीं। ५५ स्त्री कथा तथा काम भोग की वार्ता करना नहीं। ५६ चौपड़ सतरंज गंजफा वगैरह मंदिर में खेलना नहीं। ५७ राजादि के भय से मंदिर में छिपना नहीं। ५८ गृहकार्य लौकिक कार्य की वार्ता करनी नहीं। ५९ धन उपार्ज्जन के व्यापार की वार्ता करनी नहीं। ६० वैद्यक ज्योतिष नाड़ी मंदिर में देखना नहीं। ६१ दुष्ट संकल्प विकल्प मंदिरमें करना नहीं। ६२ पच्चीस प्रकारकी विकथा करनी नहीं। ६३ देन लेन आदि कार्य की सौगंध मंदिर में खानी नहीं। ६४चमड़ा हाड़ दान्त सीप शंख कौड़ी नख लाना नहीं तथा सीप हड्डी के बटन लगाकर आना नहीं। ६५ हर एक फलफल सचित्त वस्तु अपने वास्ते

लाना नहीं। ६६ उधारका लेन देन किसी से करना नहीं। ६७ रिशवत घूस वगैरह लेना देना नहीं ६८ रत्न रुपया वस्त्र आदि कोई चीज परखे नहीं ६९ घर का द्रव्य तथा कोई वस्तु मंदिर में रखनी नहीं। ७० चढ़ा द्रव्य मंदिर के भंडार में राखना नहीं। ७१ निर्माल्य द्रव्य मंदिर का मोल लेना नहीं। ७२ कोई चीजका भाग करना नहीं। ७३ जूवा होड वगैरह करना नहीं। ७४ वेश्या का नाच भंडई रास मंदिर में कराना नहीं। ७५ कसरत तथा नटकला मंदिर में करना नहीं। ७६ मन बोलते बालक को मंदिर में लाना खिलाना नहीं। ७७ शुक मैना बुल बुल आदि पक्षी पालना नहीं। ७८ दरजी का काम कतरब्यौंत का काम कराना नहीं। ७९ गहना आभरण सुनार से मंदिर में घड़ाना नहीं। ८० अन्य मत के ग्रंथ लिखना लिखाना नहीं। ८१ विकार उपजाने वाले चित्राम लिखना नहीं। ८२ पशुगाय भैंस पक्षी सुवादि बांधना नहीं। ८३ पापड़ मंगोड़ी दाल धोना सुकाना नहीं। ८४ अभिमान सहित विनय रहित मंदिर में प्रवेश करना नहीं॥

नोट—यह आचार्यों कृत प्राकृत पाठ का (अनुवाद तरजुमा) है॥

तीसरा अध्याय समाप्त।

जैनबालगुटका दूसराभाग।

चौथा अध्याय।

इस चौथे अध्याय में बच्चों की बिमारियों का इलाज और बच्चों की रक्षा का वर्णन है ॥

अथ बच्चों का इलाज।

अब हम दया भाव से बच्चों की जान बचाने को बच्चों का इलाज लिखते हैं यह सर्व नुसखे हमारे अपने तजरबे के हैं इनका हक हमने अपने स्वाधीन रक्खा है और कोई नहीं छापे जो छापेगा उसे लाहौर की सरकारी कचहरी की सैर कर सरकारी कानून भुक्तना पड़ेगा ॥

विज्ञापन दाता,
हकीम ज्ञानचंद्रजैनी, लाहौर।

छोटा बालक बिमार हो स्त्री अपना इलाज जरूर करे।

जब चूची चूंघता बालक बिमार हो उसकी माता जुलाब जरूर लेवे ताकि जुलाब से उसका मेदा (कोठा) साफ होने से उसका दूध साफ (निरोग) होजावे बालक सिरफ दूध खराब होने से ही बिमार होता है सो जो स्त्री जुलाब लेकर अपना दूध साफ नहीं करती उनका बालक देरी में कठिनताई से अच्छा होता है इस लिये बिमार दूध चूंघते बालक की माता जुलाब लेकर अपना कोठा(मेदा)जरूर साफ कर लेवे ताकि दूध निरोग होजावे और अपना खाने पीने का परहेज जरूर करे इतने बालक बिमार रहे सिरफ मूंगी की दाल फुलका खावे खटाई, अचार, दही, छाछ, कढ़ो, राई की वस्तु कांजी तेल की वस्तु गुड़ वगैरा नहीं खावे स्नान करके या बाहिर से आकर तुरत बालक को गोद में नहीं लेवे गरम ऋतु में सखत गरम वस्तु सरद ऋतु में सखत सरद वस्तु नहीं खावे ॥

अचारों की और डाक्टरी दवा का झूठा परहेज।

हमारे बहुत से भोले जैनी भाई कलयुगी पंडितों के बहकाये अचारों की और

डाक्टरी दवा का त्याग कर बैठते हैं सो यह उनकी भूल है,क्योंकि पंसारी की दवा भी सारी ही शुद्ध नहीं होती, उन में भी तो बहुतेरा अपवित्र हैं जैसे गऊलोचन, कस्तूरी, मिमाई, तिरयाक, शहत वगैरह हैं, देखो काला नमक सतगिलो, सतमुलहटी, सतवेरजा, सतसलाजीत जंवखार शीरखिश्त, कत्था, हींग, वगैरा अनेक पंसारियों की दवा ऐसे मनुष्यों की बनाई हुई हैं जिनको हम छू भी नहीं सकते, पंसारी गुलकंद डालने के समय फूलों में अनेक जीव मसल देते हैं मुरब्बों में अनेक जीव लापरवाही की साथ मिला देते हैं उन को कौन नहीं खाता है। हलवाइयों के यहां मिठाइयों में अनेक मक्खी और जीव मिल जाते हैं गुड़ को चमार चमड़े के हाथों से बान्धते हैं कोरी खांड को सुकाते हुए उस पर कुत्ते मूत जाते हैं चमार वगैरः पैरों से मलते हैं कौनसा पंडित है जो इन चीजों को नहीं खाता पस यह वाद विवाद करना नावाकिफियत है इसलिये अतारों की और अंगरेजी दवा जरूर खानी चाहिये इस में कुछ दोष नहीं ॥

इस पुस्तक में हमने थोड़ीसी अंगरेजी दवा भी लिखी हैं, सो अंगरेजी दवा हमारे स्वर्ग वासी पुत्र डाक्टर जयचंद जैनी बी०ए०अैम, बी असिसटैंट सरजनके उनके अपने तजरबे के तुरत आराम करनेवाले बेनजीर नुसखे हैं ॥

उन सर्व में बडे मनुष्य की खुराक का मिकदार लिखा है सो बच्चों की जितनी उमर कम हो उसे उतनी ही कम देनी चाहिये जब अंग्रेजी दुकान से दवा खरीदो उस से दरयाफत करलो कि किस तरह देवें बिमार की उमर इतने साल की है उसे कितनी देवें और अंग्रेजी दवा बहुत तेज होती हैं मिकदार से जियादा नहीं देनी, और शिशियां अच्छी तरह सम्भाल कर उसमेंसे देनी चाहिये ताकि गलतीसे दूसरी दवा न दीजावे।

कुश्ते कभी नहीं खावे।

जो बिमार वैद्यों के बहकाये धातु के कुश्ते खाबैठते हैं उन के शरीर का मांस खराब होजाता हैं शरीर में अनेक बिमारी होजाती हैं कुश्ते खाने वाले की आयु बहुत कम होती है इसलिये धातु के कुश्ते कभी भी नहीं खावें ॥

बच्चों की जन्म घूंटी।

हरड़ें छोटी, एक तोला। हरड़ें बड़ी, एक तोला। अमलतास, तीन तोले सनाय, दो तोले। तिरबी, एक तोला। गुलबनफशा, दो तोले। सुहागा, एक तोला जीरा सफेद एक तोला। जीरा सियाह कशमीरी, एक तोला। मुलहठी, एक तोला गुलाब के फूल सूके हुए मौसमी गुलाब के उमदा,एक तोला। मुनक्का, दो तोले सौंफ,एक तोला। इन्द्र जौ, एक तोला। पलासपापड़ा, एक तोला। मरोड़ फली एक तोला। मुसब्बर, दो माशे

नासपाल की टोपी, छै माशे। काला नमक, तीन माशे दनदन दाना, एक तोला अजवायन देसी तीन माशे हलदी खाने वाली ६ माशे रेवंद खताई छै माशे, हींग दो रत्ती। यह सर्व दवाई नई अलग अलग लाकर जरा धूप में सुकाकर खूब वारीक कूट कर बच्चों के वास्ते रख छोड़े जब बच्चे को कबज हो जरासी पकाकर देवे॥

तिरवी नसोत को कहते हैं यह बहुत प्रकार की होती है सो बढिया खरीदनी दवाई में सुफैद डालनी चाहिये ऊपर का मटियाला छिलका छोल कर फैंक देवे सनाय सोनमुखी को कहते है जो इमली जैसे पात दस्तावर होते हैं इस के पत्ते हों अमलतास का केवल गूदाहो बीज न हों वनफशा उमदा फूलदार हो बड़ी हरड़ों की छाल हो वजन साफ करी हुई दवा का लिखा है सुहागे की खील करके डाले पलासपापड़ा ढक पापड़े को, नासपाल की टोपी कच्चे अनार के सिर को मुलब्बर पलत्रे को कहते हैं हींग भून कर मिलावे हमामदस्ते को पहिले खूब धोकर सुका लेवे ताकि किसी ने उस में सुरख मिर्च या कोई जहरीली दवाई न कूटी हो॥

जब बच्चा जन्मे सब से पहले यह जन्म घूंटी पका छान कर इसमें जरासी कोरी खांड डाल कर बच्चे को देते हैं जब कभी बच्चे को कबज हो छै वर्ष की उमर तक उमर के लिहाज से यही जन्म घूंटी दी जाती है इससे बालक को दस्त खुलकर आताहै दूध हजम होता है कभी दरद नहीं होता चुरणे हों तो वह भी मरजातेहैं यह जन्म घूंटी बच्चे के वास्ते बड़ी गुणदाई है परंतु एकवार बहुत नहीं देवे जरा जरासी घंटा घंटा बाद दो तीन बार देवे इससे दवा उगलता नहीं और पेट नरम होकर दस्त जरूर आजाता है॥

जन्म घूंटी पिलाने की तरकीब।

बहुत से अज्ञान बच्चे को जन्म घूंटी के चुंगल भर भर कर पका कर देनी शुरूकर देते हैं,ऐसे नातजरबेकार अनेक बच्चे हाथ से खो बैठते हैं जियादा जुलाब देने से बच्चे का मेदा फट जाताहै इसलिये मौताजसे जियादा नहीं देनी बाजे बाजे अनाड़ी जन्मघूंटी में नोशादरडाल देते हैं नोशादर बहुत सखत वस्तु है इससे बच्चेकी आंतड़ियां खराब होजाती हैं इस लिये जन्म घूण्टी में नौशादरहरगिज मत डालना जब बच्चा पैदा होवे उससे तीनघण्टेबाद एक माशा जन्मघूंटी एक मिट्टीकी कुंजीमें पांच तोले पानी डालकर पकालेवे जब खूब उबाल आजावे पानी जलकर आधे से थोड़ा रहजावे उतारकर कपड़े से छान कर किसी चम्मच से या सीपी से बच्चे को वह पानी एक तोला देदेवे बाकी को फिर जरा गरम करके इस से १२ घण्टे बाद देनो चाहिये जरा गरम देनो चाहिये फिर इसके बाद तीसरे रोज फिर चार दिन बाद फिर एक हफते में एक दफे देनी

चाहिये बच्चे को यदि टट्टी खुल कर न आवे बच्चे को कब्ज होवे या बच्चे का पेट सखत मालूम होवे या अफारा मालूम होवे या पेटके दरद के कारण या गुदा में चुरने हो जानेके कारण बच्चा रोता होवे तो फौरन बच्चे को जन्म घूण्टी देनी चाहिये परंतु जन्म घूण्टी कांसी पीतल तांबे के बरतन में न तो पकाई जावे और न इनसे दी जावे इन बरतनों में एक जाती का कस होता है जिस से जन्म घूण्टी खराब होजाती है यदि कोई किसी मौके पर बच्चे को जन्म घूण्टी की जगह अरण्डी का तेल (Casteroil) देना चाहे तो दे सकते हैं परन्तु तीन मास से कम उमर के बच्चे को न देवें तीन मास के बच्चे को देना होवे तो एक मासा देवें बाकी जितना बड़ा बच्चा होवे उसी कदर से जरा जियादा देना परन्तु चमचा भर कर न देना जो चमचा भर कर देवेंगे तो बच्चे के टट्टी में खून आने लगेगा बच्चा फना हो जावेगा और जो गुण जन्म घूण्टी में हैं वोह अरंडी के तेल में नहीं हैं जो जन्म घूण्टी हमने लिखी है यह दस्त लाने के सिवा दरद को खांसी को बवासीर को खोती है पेटमें चुरने (कीड़े) पैदा होने नहीं पाते और भी अनेक फायदे करती है बच्चे का हाजमा ठीक ठीक रखती है जामते ही बच्चे को जन्म घूण्टी इस मतलब के वास्ते देते हैं कि बच्चा माता के पेट में सूण्डी के द्वारे माता का रुधिर पीता रहता है। इस से बच्चे के मेदे में एक जाती का मैल जिस को अंगरेजी में (Meconiu) बोलते हैं जमा होजाता है यह बच्चे के वास्ते बहुत हानिकारक है उस को फौरन निकाल देना चाहिये दूसरे जब बच्चा पैदा होता है उस का टट्टी फिरने का द्वार साफ नहीं होता जन्म घूण्टी का जुलाब देकर उस को खूब साफ करा जाता है इस लिये बच्चे को जन्म घूण्टी दी जाती है सो जिन बच्चों को हमारे लिखे अनुसार जन्म घूण्टी दी जावेगी वह सदा आनन्द से रहेंगे॥

बच्चे को दस्तावर दवा।

हरड़े जरद (बडी) छै मासे, आमला खुशक छै मासे, बहेड़ा छै मासे, सनाय (सोनमुखी) एक तोला, तिवरी (नसोत) छै मासे, काला दाना तीन मासे, रेवंद खताई तीन मासे,सौंफ छै मासे,मरोडफली छै मासे,अजवायन डेढ मासा,एलवा (मुसबर) डेढ मासा। यह सर्व दवा बारीक पीस छोटे बालक को चार रत्ती बडे, बालक को एक मासा नीचे लिखी दवा में मिलाकर दोनों वक्त देवे बालक को दस्त आवे॥

ऊपर लिखी दस्तावर दवा में यह दवा मिलावें।

गरीब आदमी छोटे बालक को एक मासा बडे बालक को दो मासे तुरंज बीन कोसाथ पानी में रगड छान कर जरा गरम करके देवे या छोटे बालक को दो मासे बडे,

बालक को चार मासे शरवत वरद यानी शरवत गुलाब में मिलाकर चटावे (खिलावे) अमीर आदमी छोटे बालक को दो मासे वडे बालकको चार मासे असली शोर खिश्त की साथ पानी में रगड छान कर देवे या छोटे बालक को एक मासा वडे बालक को दो मासे त्रिफल जमानी में मिलाकर चटावे॥

नोट—असली शीरखिश्त एक दरखत का दूध जमाहुवा है लाहौर अमृतसर दिल्ली में बडे अत्तारों के एक रुपये तोला मिलती है राजपूताने में नकली शोरखिश्त एक आना दो आने तोला मिलती है वह जहरीली है वह हरगिज नहीं देनी असली शोरखिश्त नहीं मिले तो तुरंजवीन में ही रगड छान कर देवे चाहे शरवत गुलाब में रगड छान कर देवे चाहे शरवत बनफशा में रगड छान कर देवे दवा जरा गरम करके देवे दवा सुभे श्याम दोनों वक्त देवे बालक को जरूर दस्त आवे बालक का पेट साफ होवे।

बच्चों का कबज दूर करने की अंग्रेजी दवा।

R,

Sulphate of Magnesia	... 4 grains.
Sulphuric Acid dilute	... 2 minims.
Sulphate of Iron.	... ½ grain.
Peppermint Water	... 1 drachm.

One such dose three times a day.

अगर बच्चों को कबज हो दस्त ठीक न आता होवे तो यह दवा एक एक खुराक दिन में तीन वार देवे जरूर दस्त आने लगेगा॥

बच्चों की दस्त बंद करने की दवा।

गुठली जामन तीन मासे, गिरीगुठलीआंब तीन मासे, गुलअनार तीन मासे, मस्तगी तीन मासे, गूंदकतीरा तीन मासे, बेलगिरी छै मासे हाउबेर अघभुने तीन मासे, यह सर्व दवा बारीक पीस छोटे बालक को दो रत्ती वडे बालक को चार रत्ती छुवारे के दल में पानी से पीस कर जरा गरम करके या मुरबे बीह में मिलाकर दो सुभे श्याम दोनों वक्त दिया करे बच्चे के दस्त बंद होवें॥

बच्चों के दस्त बंद करने की और दवा।

अगर बालक को बहुत दस्त आने लगें बंद नहीं होवें तो यह दवा देवे उड़द के दाने प्रमाण अफीम छुवारे की गुठली निकाल छुवारे में वह अफीम रख तागा बांध ऊपर आटा गूंद कर लगा गरम आग की भूबल में दबादे जब वह सिक जावे निकाल कर आटा फैंक छुवारे की रत्ती प्रमाण गोली बांधलेवे माता के दूध में एक गोली रगड़

कर देने से बच्चे के दस्त बंद होजाते हैं कसर रहे तो यह दवा फिर देवे । छुहारे को खूब रगड़ लेवे ताकि अफीम उसमें खूब मिल जावे ॥

बच्चों के मरोड़े वाले दस्त बन्द करने की अंगरेजी दवा।

R,

Dover's powder	... ½ grain.
Ipecacuahna powder	... 1 grain.
Aromatic Chalk powder	... 3 grains.

One such powder three times a day.

अगर दूध पीने वाले बच्चों को मरोड़ लगे हुए होवें तो एक एक पुड़िया माता के दूध में घोल कर चमचे या सीपी से दिनमें तीन वार देवे तो बच्चा अच्छा होजावे ॥

बच्चे का मुंह पेट दोनों चलें उस का इलाज ।

जिस बच्चे का मुंह पेट दोनों चलते हों अर्थात् दस्त भी बहुत आरहे हों और दूध भी बहुत उगलता हो, तो अगर मौसम गर्म है तो उसे जरासा दरयाईनारयल जरासा जहरमोहरा घसकर दोनों मिलाकर सुभे श्याम दोनों वक्त दिया करे तो वह फौरन अच्छा होजावेगा जो सिरफ दूध फैंकता हो उसे सिरफ दरयाई नारयल रगड़ कर देवे ॥

बहुत दूध फैंकना बुरा होताहै अगर एक दो वार जरासा दूध उगले तो अच्छा है इस से बच्चे की छाती हलकी होजाती है बलगम निकल जाता है ॥

बालक दूध फैंके उसके बंद करने का इलाज ।

आक (मदार) के फल की दाल (बीचकी फूली) १४ अदद कालीमिरच ११ अदद अफीम १ रत्ती ।

सब दवा बारीक पीस खरल कर मसर के दाने बराबर गोली बनावे एक एक गोली दोनों वक्त माता के दूध में घस कर देवे बालक का दूध फैंकना बंद होवे ॥

बच्चे का दरद दूर करने की दवा ।

जिस वकत बच्चे के पेट में दरद होना शुरू होता है तो बच्चा रोने लगता है बच्चे की माता उसको यूंही रोता जान कर जब वह चुप नहीं रहता तो उस पर खफा होकर उसे मार मार कर सुलाना चाहती है पास से बेवकूफ औरतें कहने लगती हैं कि इसे तो आज परियों की झपेट हो गई है सो यह सब गलती है ऐसी स्त्री सखत बीमार होजाने से बच्चे को खो बैठती हैं जब बच्चे की ऐसी हालत होवे उसे जरासी देसी अजवायन चकले पर पानी के साथ रगड़ कर छान कर कड़छी वगैरा में गरम करके जब जरा ही गरम रहे पिला देनी चाहिये इससे फौरन दरद दूर होजाता है ॥

नोट—अजवायन के साथ काला नमक खाने से आदमी का भी दरद हट जाताहै।

बालक का दरद दूर करने की और दवा।

समंदरफल चार मासे, पौदीनाखुश्क सिरफपत्ती एक मासा, हरडे जरद (बडी) तीन मासे, इलायची बडी एक मासा, अजवायन देसी चार रत्ती, कालानमक एक मासा सूंठ एक मासा, पीपल (मघ) चार रत्ती, मकोह डोडी दो मासे, हींग भूना हुवा दो रत्ती, सौंफ एक मासा, कालीमीरच दो रत्ती, आक (मदार) के फूल की दाल साये में सुकी हुई एक मासा, सनाय(सोनामुखी) एक मासा नौसादर चार रत्ती, यह सब दवा बारीक पीस खरल कर रख छोडे छोटे बालक को एक रत्ती माता अपने दूध में मिलाकर देवे बडे बालक को दो रत्ती शहत में मिलाकर या नीबूं की सकंजबी में मिलाकर देवे बालक का दरद दूर होय ॥

बालक की खांसी दूर करने की दवा।

Acid Benzai जोलोवान का सत विलायत से आता है चार रत्ती, जौखार असली चार रत्ती, सतमुलहठी चार रत्ती, सत कंडाई चार रत्ती, सवज कंडाई जिस के पेलेबेर होते हैं जंगल से सवज लाकर कूट कर उसका रस छान कर कटोरे में साये में रख छोडते हैं वह सूक कर जमजाता है उसका नाम सत कंडाई है काकडा सींगी एक मासा कायफल एक मासा पीपल (मघ) एक मासा, पोहकरमूल एक मासा, अजवायन देसी एक मासा वछछुरालानी (घुड़बछ) एक मासा, यह सब दवा बारीक पीस खरल करके रख छोडे छोटे बालक को आध रत्ती बडे बालक को एक रत्ती शहत में मिलाकर चटावे या माता अपने दूध में घोलकर सुभे श्याम दोनों वक्त देवे बालक की खांसी जावे ॥

बच्चों की खुशक खांसी दूर करने की अंगरेजी दवा।

R,

Ipecacuanha Wine	... 3 minims.
Carbonate of Ammonia	... ½ grain.
Mucilage	...10 minims.
Water	... 1 drachm.

One such dose three times a day.

एक एक खुराक दिन में तीन बार पिलावे ॥

बच्चों की सरदी दूर करने की दवा।

शरद ऋतु में बच्चे को जब सरदी होजाती है नाक बहने लगती है तो जरासा पान जरासे पानी में रगड़ कर गरम करके देने से अच्छा होजाता है पान के साथ जरासी अजवायन भी रगड़ कर देदेते हैं बाकी बच्चे की खांसी बुखार दूर करने को दवाई

अंगरेजो करे, बच्चों का इलाज हर बीमारी का डाक्टरी में है वैद्यों और हकीमों पर बच्चों का काफी इलाज नहीं है बाजी स्त्रियें बच्चों को अफीम देदेती हैं। यह बड़ी गलती है अफीम बच्चों को सखत नुकसान पहुंचाती है। जिस को बचपन में अफीम दी जावे वह बड़ी उमर में भी सदा बीमार रहता है इस लिये बच्चों को अफीम हरगिज नहीं देनी चाहिये ॥

हाफू दूर करने की दवा।

बाज बच्चों के कान के आगे पटपटी फूल जाती है दरद करती है इसके जो रसे बालकको बुखार होजाता है इसे हाफू कहते हैं सो उसके दूर करने का इलाज यह है।

दावात में से कलम भर भर कर पांच छै बार हाफू पर कलम फेरे हाफू को कलम से काटे पहले एक तरफ सीधी कोरी स्याही को करे फिर दूसरी तरफ कलम जरा करडी फेरे ताकि हाफू कटजावे इसी तरह दूसरे तरफ करे यह एक हुवा ठहर जाती है कान का आगाफूल जाता है तीन दिन दोनों वक्त ऐसा करने से हाफ दूर होजाते हैं।

बालकों के काग का इलाज।

अनेक बालकों का काग बढजाता है वोह चूची पीनी छोड देते हैं काग उसे कहते हैं जो हलक के अंदर दाना सा होता है वह किसी कारण से बढ जाता है उसे काग गिरा बोलते हैं उसे अनेक स्त्री अंगुली से उठाना जानती हैं ॥

उसका यह भी इलाज है कि कान के दोनों टैंटवे दोनों हाथों से आगे की तरफ कल्लों की तरफ अंगुली से दबावे फिर दोनों हाथ उसके कल्लों पर ऐसे जमावे कि सहज में थोडा सा उस बालक को ऊपर उठालेवे इस तरह जमीन पर टेक टेक तीन बार जरा जरा उठावे तो बालक का काग फौरन अच्छा होवे सहज से उठावे ताकि गरदन में झटका न लगे कमजोर बालक को न उठावे उसके मरजाने का डर है जरा ही उठावे जियादा नहीं कान का टैंटवा उसे कहते हैं जो कोकरू के बाहिर कान पर छोटा सा दाना है उठाती दफे वोह टैंटू अंगुली से बाहिर गालों की तरफ को दवाऊ रक्खे ॥

बडे पुरुष का भी इसी तरह दबाने से अच्छा होजाता है ॥

पैर की हाथ की बिवाइ दूर करने का इलाज।

मोम पांच तोला घी पांच तोला दोनों को आग पर रख मिलावे रातको सोने से पहले इसकी गरम गरम बून्द बिवाई में टपकाया करे तो बिवाई जाय ॥

पैर की हाथ की बिवाई दूर करने की और दवा।

vaslin वैसलिन ढाई तोला Carbulic Acid M XVI कारबुलक ऐसिड १६ बून्द दोनों को मिलाकर रख छोडे इसको बिवाई में भर कर सेकाकरे तो बिवाई जाय।

पर को जूती काटे उसको अच्छा करने की दवा।

मोम एक तोला घी एक तोल लौंग तीन मासे लौंग को पीस घी में जलावे फिर उस में मोम डाल दे जब मिलजावें उतार ले यह मरहम बन गया जूती के काटे पर लगावे तो अच्छा होवे ॥

पैर को जूती काटे उसको अच्छा करने की और दवा।

पुराणा चमड़ा जला कर उसे पानी में पीस कर लगाता रहे तो जूती का कटा अच्छा होवे ॥

पैर को जूती काटे उसको अच्छा करने की और दवा।

आदमी के सिरके बाल बांस की लाठी से पत्थर पर रगड़ कर जूते के काटे पर लगाता रहे जूती का काटा अच्छा होजावे ॥

पैर के जूते केकाटे के छाले दूर करने का दवा।

जूते के छाले मंहदी लगाने से भी दब जाते हैं ॥

चमलस दूर करने का दवा।

यदि जूती का काटा हुवा जखम खराब होकर चमलस होजावे तो यह दवा करे

Vaslin Z !

Carbulic Acid M. XXIV.

इस को मिलाकर यह मरहम चमलस पर लगाता रहे पहला साफ कर जखमको पूंछकर फिर दूबारा लगाया करे ॥

नोट—इतने पैर अच्छा हो पैर के पानी कभी नहीं लगावे ॥

बच्चे का फोक या मसान दूर करने का इलाज।

जिस बालक के शरीर पर फोके (आबले) पड पड कर फूटते रहैं उसे समझो फोक या मसान है फोक या मसान से बालक मर जाता है फोक या मसान दूर करने को जो मरहम हमने फोक या मसान दूर करने का आगे लिखा है वोह मरहम फोक या मसान वाले बालक के फोकों पर जखमों पर लगाया करें फोक या मसान जावे ॥

इस बालक को खूनसफा की दवा पिलावे मिठाई नहीं खाने देवे ॥

बालक दूध पीता हो उसकी माता दूध पिलाने वाली जुलाब लेवे फिर खूनसफा की दवा खावे मिठाई नहीं खावे शहत आप भी खाया करे बालक को भी चटाया करे ॥

बच्चे का फोक या मसान दूर करने का मलहम।

मुरदासंग, कमेला, कत्था, सींगकीफली, मुरदे की जली हुई हड्डी हरएक दवा एक एक तोला, नीलाथोता एक मासा, नीम के सबज पात दो तोले, घी इक्कीस (२१) तोले।

घी कड़ाही में पकाना चढा देवे उस में सबज नीम के पात कूट कर डाल देवे जब पात जलजावें बाकी सब दवा बारीक कूट कर उसमें डाल दे और लकड़ी से फेरता रहे जब सब दवा जलजावे, उतार कर सरद होने पर खूब घोटे किसी डबे में रख छोडे यह मरहम बन गया बच्चे के फोकों पर लगाया करे फोके अच्छे होवें मसान जावे॥

चौमासे में जंगल में सींग पड़ा हुवा जाम आता है उस पर फली सी (जडांसी) जाम आती हैं उस का नाम सींग फली है जब देखे सींग से उतरवा कर साये में सुका कर रख छोडे॥

अथ मसान दूर करने का यन्त्र।

ऊन	२५	२५	वरी
वरी	२५	वरी	२५२
२५२	२५२	२५२	२५२
वरी	वरी	वरी	वरी

मसान वाले बालक के गले में यह यन्त्र लिख कर बांध देवे फिर मसान का असर नहीं रहेगा॥

बच्चे का कमेड़ा दूर करने का इलाज।

यह एक बड़ी नामुराद बीमारी है इसने अनेक बच्चे खा खा कर घराने के घराने उजाड़ दिये हैं बाज़ी स्त्रियें विचारी सोलह सोलह बच्चे जन कर भी बे औलाद ही नजर आती हैं। इस में बच्चे के मुंह में झाग आकर बच्चा बे होश होजाता है बहुत से बच्चे सोए के सोए रहजाते हैं स्त्रियें उस का मूंह खूब कपडों से ढक कर उसे गोद में लको कर बैठ जाती हैं बस दम रुकने के कारण वह मरा का मरा रहजाता है कपडों में जो लकोती हैं सो यह बीमारी सरदी से तो नहीं है यह तो खून की गरमी खुशकी से है इस लिये जब कभी किसी बच्चे को कमेड़ा आवे तो उस का मूंह हरगिज मत ढको अपने हाथ की अंगुली पर कपड़ा लपेट कर या कड़छी की डंडी या कलम का

सिरा बच्चे के मूंह में फौरन देदो ताकि उसके मुंह की जबाड़ी बन्द न होने पावे जब तक उसे होश न आवे मुंह से अंगुली मत निकालो जब वह रोने लगे तब निकालो॥

बच्चे का कमेड़ा दूर करने दवा।

जब बच्चे को कमेड़ा आवे फौरन उसी दम कमेड़ा आते ही जरासा दूध सील निवाया करके यानि जरा गरम करके चमचे या सींपी या रूई के फोए से उसके मूंह में डाल दो दूध डालने में देर मत करो यदि दूध मवसर न आसके तो जरा गरम करके जरासा पानी ही डाल दो परन्तु बहुत न डालना। दो रुपये भर पानी काफी है, और एक साथ दवा दब मत डालो क्योंकि उस वक्त उस का दम कमजोर होता है जब एक दफे का डाला हुआ उस के अन्दर चला जावे तब दूसरे मरतबे डालो कमेड़े में बालक दम रूक कर गले की चूडी घुटने से मरता है सो अगर उसका मूंह बंद न होनेदे, सांस जरूर आता रहेगा और मुख में दूध या पानी जाने से हलक में तरी रहने से गले की चूडी नहीं घुटती इससे बच्चा बच रहता है॥

बच्चे का कमेड़ा दूर करने की और दवा।

सुफेद रंग की दूब खेतों में मिल जाती है फौरन लाकर उस के दो चार पत्ते एक काली मिरच के साथ जरासे पानी में रगड़ छान कर जरा गरम करके दे दो।

सफैद रंग की दूब इस मरज के रफे करने को एक बड़ी मुफीद जड़ी हैं जिस बच्चे के अन्दर एक बार यह दवा लंघ गई तो फिर उस को कोई चिन्ता नहीं जरूर जरूर थोड़ी देर में वह रुदन करने लगेगा और होश आजावेगी॥

अगर सुफैद दूब नहीं मिले तो हरी दूब ही रगड़ छान कर देदो यदि कुछ भी न मिले तो जरासा गरम पानी ही जरूर देदो परन्तु देर मत करो जिस वक्त उस के मूंह में झगड़ आवें फौरन दूध या पानी बीस तीस बूंदें मूंह में डाल दो खालिस दूध भी इस बीमारी के दूर करने की बड़ी दवाई है॥

बच्चों का कमेड़ा दूर करने की और दवा।

बनगंठा दो तोले, हींग दो मासे, जिसके बालक को कमेड़ा आता हो यह दोनों दवा पीस कर रख छोडे जब बच्चे को कमेड़ा आवे इस में से एक रत्ती दवा एक तोला पानी में या एक चम्मच पानी में रगड़ कर जरा गरम करके बच्चे के मुंह में डालदे फोरन कमेड़ा आता रहेगा फिर कभी नहीं आवेगा॥

नोट—बनगंठा पहाड़ो में होता है इसके पात गंठे जैसे होते हैं पांच पत्ते होते हैं इस का नाम जंगली कांदा भी है॥

बच्चों का कमेडा दूर करने की और दवा।

काली घोडी का पर एक रत्ती काली मिरच एक रत्ती जिस के बालक को कमेडा आता हो यह दोनों दवा रख छोडे काली घोडी का पर कहीं से मंगा लेवे जब बच्चे को कमेडा उठे फौरन यह दोनो दवा एक चम्मच पानी में रगड कर जरा गरम करके बच्चे के मुख में डालदे कमेडा जाता रहेगा फिर कभी उस कमडा नहीं आवेगा॥

बच्चों का कमेड़ा बंद करने का यतन।

जिस बच्चे को कमेडा आता हो काली घोडी की नाल उतरी हुई की हंसली बनवा कर बच्चे के गले में डालदे फिर उसे कमेड़ा नहीं आवेगा, अगर आभी जावे बहुत कम आवेगा फिर उसी दम काली घोड़ी के पर वाली दवा देकर फिर यह हंसली गले में डालदे फिर कभी कमेडा नहीं आवेगा॥

बच्चे का कमेड़ा दूर करने को अंगरेजी दवा।

कमेडा दूर करने की अंगरेजी दवा एंटीपाईरीन (Antipyrin) है यह एक अंगरेजी दवाई है बुखार दूर करने को भी दूध के साथ खिलाई जाती है जिसके बच्चे को कमेडे आते हों डाक्टर से या अंगरेजी दवा बेचने वाले से लाकर एक शीशी में रख छोडे जब कमेड़ा आवे झट से जरासा दूध गरम करके एक चमचा दूध में यह दवाई मिला कर बच्चे के मूंह में डालदो अगर बच्चा आठ दस वर्ष का हो तो दो रत्ती यदि दो वर्ष और आठ वर्ष के बीच में हो तो केवल एक रती मिलाओ और अगर दो वर्ष से कम उमर का हो तो केवल आध रती ही मिलाओ परन्तु इस मौके पर देरी मत करो झट अटकल से देही दो, यदि एंटीपाईरिन न मिले तो एंटीफेब्रीन (Antifebrin) दो यह भी न मिले तो ब्रोमामाइड आफ पोटाश (Bromide of Potash) दो इनकी खुराक भी उतनी ही है उसी तरह दो॥

बच्चे का कमेड़ा दूर करने की अंगरेजी दवा।

R,

Pulvis Rhei Co.	...	Gr. XX.
Gum Ammoniaci	...	Gr. X.
Balsam Peru	...	MX.
Balsam Tolu	...	Gr. X.
Syrupi Toillae	...	dr. II.
Olei Anisi	...	MVI.
Olei Anethi	...	MV.

Infusi Senegæ ... dr. IV.
Aquæ Camphori ... dr. VI.
M. Ft. Mixture.
Signa. A Teaspoonful to be given every four hours.
R,

एक ड्राम यानि साठ बून्द चार चार घण्टे बाद देवे जब कमेड़ा उठे एक छोटा चमचा भरकर यानि ६० बून्द फौरन कमेडे वाले बच्चे को देवे ॥

कमेडा आकर मरा हुवा बालक जिंदा (जीवता) करने की विधि

यदि कमेड़ा आकर बच्चे को थोड़ी देर तक सांस न आवे तो बच्चे को चारपाई पर लिटा दो दो आदमी बच्चे के दोनों पासे बैठकर उसकी दोनों बांहें ऊपर नीचे को हिलाते रहो यह न करना, कि बांह का हाथ वाला पासा हिलाते रहो नहीं पिछले बाजू समेत हिलाओ खूब ऊंचे नीचे करो बांहों को इस प्रकार करने से फेफड़े को हरकत पहुंचती है फेफडे को हरकत पहुंचाने से जरूर दम आना शुरू होजाता है सो यदि इस प्रकार दो घण्टे तक बच्चे की बांह हिलाई जावे तो बच्चा जरूर सांस लेना शुरू कर देवेगा विलायत में अनेक बच्चे दम रुकने से मरे हुए इस प्रकार तीन चार घण्टे तक बांहें हिलवा कर डाक्टर जिवा देते हैं ॥

बच्चे का निमोनिया दूर करने का इलाज

बच्चों को बुखार में ठंडी हवा लगने से निमोनिया होजाता है इससे बालक की पंसली चलने लगती है जिसे डंभा सांस कहते हैं लाखों बच्चों की जान इस बिमारी में जाती है दश दश बच्चे जन कर भी अनेक माता इस भयानक रोग की बरबादी से बऔलाद हो बैठी हैं सो जहां तक देखागया है बालकों का निमोनिया अर्थात् डंभा सांस (पंसली चलती हुई बंद करने का कामिल (सब में उत्तम) इलाज या तो फकीरी चुटकले हैं या डाम देना है बाकी सब ढकौंसले हैं ॥

वैद्क हिकमत में जो बालकों का निमोनिया दूर करने का इलाज लिखा है वह सिरफ तसल्ली के वास्ते पाखंड भरे हुए हैं जैसे लटके (टोटके) पस निमोनिया का फकीरी चुटकले या डाम की बराबर कोई भी इलाज नहीं है ॥

डाम से निमोनिया (डंभा सांस) के बालक तुरत बचते हैं

हमारे तजरबे में इसका अकसीर इलाज राजपूताने हाडौती में देखने में आया है और इलाकों में अगर सौ बालक को निमोनिया होवे तो दो भी नहीं बचते राजपूताने

हाडौती में अगर सौ बालक को निमोनिया होवे तो सौ में से दो भी नहीं मरते सर्व ही बचजाते हैं वहां यह कहावत है या बचावे राम या बाचावे डाम डाम से मरता मरता बालक भी बच जाता है वो दांतो गरम करके या सूई गरम करके दाग देते हैं देते ही पंसली बंद होजाती है निमोनिया जाता रहता है बाज नाक के नीचे बाज नाक के उपर बाज पंसली से जरा इधर उधर पेट की तरफ और पंसली जहां उठे उस से नीचे दाग देते हैं बस यह इलाज बचा बालक को नई जिंदगी देती है, डाम दिया और बालक बचा।

अगर बालक के माता निकली हो तब तो कोई दवानहीं देवे हां अगर माता न हो केवल बुखार हो या निमोनिया हो या पंसली चलती हो तब दवा जरूर देवे॥

सो निमोनिया वाले बालक को ऐसी दवा देनी चाहिये जो खांसी को कम करे ताकत बढती रहे कबज न होने दे। जरार बुखार को घटाती रहे। एक दम बुखार को नहीं घटावे अगर कबज हो तो मिट्ठे अंगूर का रस देवे या मुनका रगड कर उस का पानी जरा गरम करके देवे या बडी हरडे गरम कर जरा गरम करके देवे या शरबत वरद (गुलाब का शरबत) या त्रिफल जमानी जरा सा चटावे ताकिदस्त आता रहे मगर घणे दस्त हों तो दस्त रोकने को ऐसी दवा देवे जो ठंडी हरगिज न हो और बिलकुल कबज न होजावे॥

यह बिमारी बालकके फेफडेमें बलगम जमा होनेसे होती है सो बालक कोऐसी दवा देवे जो कै के रास्ते या दस्त के रास्ते बालक का बलगम निकाले फेफडे को साफ करे, सो फेफडा साफ करने को बालक के कमरे(मकान)में लोबान की धूनी देवे लोबान का धूवां हवा में मिलने से वोह हवा सांस के द्वारे अंदर जाने से फेफडे साफ होते हैं॥

बच्चों का डंभा सांस (पंसली) बंद करने को फकीरी चुटकले

फकीरों की दवा कमाल करती है फौरन असर कर बचा देती है इस लिये निमोनिया (डंभा सांस) से बालकों को बचाने को कुछ फकीरी नुसखे लिखते हैं॥

बच्चे का डंभा सांस (निमोनिया) दूर करने की फकीरी दवा।

खरगोश का खून देवे खरगोश का कान छुवा कर उस में से खून निकलवा कर किसी पत्ते पर या कटोरी में लाकर उस बालक के मुख में पांच चार बूंद उस खून को डाले ऊपर से स्त्री अपना स्तन (चूंचो) बालक के मुख में देवे ताकि दूध की साथ खून बालक के पेट में जावे इससे हजारों बालक बच जाते हैं॥

नोट—खरगोश के खून में कपडा तर करके साये में सुका कर रख छोडे ताजा मिलजावे तो बहुत ही गुण दाई है खरगोश का कान छुवा कर खून ले लेवे॥

बच्चे का डंभा सांस (निमोनिया) दूर करने की और दवा।

ऊंट के मगज का कोडा एक हिस्सा खरगोश का खून एक हिस्सा गुला बांस की जड दो हिस्से ॥

यह दवा रगड कर चने प्रमाण गोलियां बना कर साये में सुका कर शीशी में रखे वक्त जरूरत माता के दूध में एक गोली रगड कर देवे, पंसली थंमे कसर रहे तो दो तीन घंटे बाद और जरूरत समझे और देवे यह लाखों में एक दवा पंसली रोकने की है।

बच्चे का डंभा सांस (निमोनिया) दूर करने की और दवा।

झाडचूहे का कांटा खरगोश का खून यह दोनों माता के दूध में रगड कर जरा गरम करके बालक को देवे पंसली थंमे ॥

बच्चे का डंभा सांस (निमोनिया) दूर करने की और दवा

कागज में की मछली ॥

उस की माता के दूध में रगड़ कर जरा गरम करके बालक को देवे फौरन पंसली थंमे कागजों में छोटा सा जानवर सुफैद रंग का मछली की शकल का होता है।

बच्चे का डंभा सांस (निमोनिया) दूर करने का और दवा।

बाज वक्त गउलोचन माता के दूध में रगड कर देने से भी पंसली थंम जाती है परंतु डाम देना या ऊंट के कोडे वाली दवा की गोली या झाड चहे वाली दवा डंभा सांस की बिमारी को फौरन दूर कर देने वाली है ॥

बच्चें का डंभा सांस (निमोनिया) दूर करने की और दवा

एलवा (मुसबर) और बारासिंगा रगड कर जरा गरम करके पंसली पर लेप करे पंसली बंद होवे ॥

बच्चे का डंभा सांस (निमोनिया) दूर करने की और दवा।

इस बीमारी के दूर करने की एक बूटी राजपूताने में होती है उसके पात महवे जैसे हैं उसकी जड में से सुपारी सी निकलती है वह सुपारी दो रत्ती, अजवायन दो रत्ती फटकडी एक रत्ती, सज्जी दो रत्ती, यह दवा पानी में पीस कर जरा गरम करके देवे तो डंभा सांस जाय पंसली थंमे ॥

नोट — दवा सारी एक दम नहीं देने आधी देवे थोडी देर के बाद फिर देवे फायदा मालूम हो दोनों वक्त यही दवा दिया करे ॥

बच्चे का डंभा सांस (निमोनिया) दूर करने की और दवा।

हुलहुल के दो पात रगड कर जरा गरम करके बालक को देवे पंसली थंभे हुलहुल एक मशहूर बूटी है ॥

निमोनिया में बालक की ताकत घटने नहीं देवे बालक की ताकत बनी रहने को कभी कभी बरांडी या रम शराब की बूंद देता रहे अगर दस बूंद बरांडी हो तो उस म बीस बूंद गरम पानी की डाल कर देवे ॥

नाताकत बीमार बच्चे की नबज़ घटी हुई बढाने की दवा।

जब बालक बहुत बीमार हो जावे नबज घट जावे उसको नबज ठीक होने को यह दवा देवे ॥

Sprt. Ammonia Arometic की तीन बूंद या पांच बूंद उमर के लिहाज से एक ड्राम यानि साठ बूंद पानी में मिलाकर देवे फौरन नबज आजावेगी। अमोनिया नहीं मिले तो रम या बरांडी शराब की १० बूंद या २० बूंद उमर के लिहाज से इससे दूना पानी मिलाकर देवे तुरत नबज आजावेगी ॥

नोट—यह दवा नहीं दोगे तो नबज घटने से बालक मर जावेगा ॥

मौसम सरदी में जब दवा देवे चमच को जराहो गरम कर उस में दवा डाले जब ठंडापन नहीं रहे दवा देवे ॥

मौसम गरमी में पियास हो तो बरफ चसावे पानी में डाल कर नहीं पिलावे खाली बरफ पियास को मेटता है सरदी नहीं करता पियास सखत हो होट सुकते हों तो जरासा बरफ कूटकर बरफ का चूरा बारीक मल मल के कपडे में पोटली सी बना कर बालक के मुख में देवे ताकि चूंची की तरह वोह उसे चूसे हरवक्त नहीं देवे कभी कभी देवे छाती पर पतली सी रूई रखकर ऊपर गरम कुरता गरम जाकट पहनावे गरम पाजामा पहनावे सिरपर टोपा राखे ॥

बालक की माता कोई सरद वस्तु बादी की वस्तु नहीं खावे जैसे उडदकी दाल गोभी भिंडी दही छाछ शरबत संतरा अनार फालसे चावल कढी खटाई वगैरा ऐसी वस्तु कोई भी नहीं खावे मूंगी की दाल या अरहर की दाल फुलका खावे अगर कोई बडा होशयार यूनानी हकीम हो तो उसकी राय भी लेवे परंतु ठंडी दवा नहीं देवे ॥

अगर अलसी मिले अलसी को ओखल में कूटवा कर उसका चूनसा बना लेवे आधपाव यानि १० तोले अलसी का चून लेवे उस में दो तोले तिल्ली का तेल मिलाकर जरासा पानी मिलाकर आगपर लेईकी तरह पकावे पतली न हो सखत कच्ची रहे

मल मल पर रख चौडी कर ऊपर भी मल मल रखे पंसली पर रख कर गरम गरम सुहाती सुहती बांधे अर्थात् इस पुलसट के दोनों तरफ मल मल बारीक कपडा हो कपडे में को सेक लगे इसी तरह दिन में तीन चार बांधे सुभे की बांधी दूपहर तक रहे दूपहर की बंधी सांझ तक रहे सांझ की बंधी रात को रहे इस पुलसट से बालक का या बडे का सब का निमोनिया दूर होजाता है बुखार उतर जाता है ॥

निमोनिया में बच्चे का डाक्टरी इलाज।

अगर डाम नहीं दिवा सकते और फकीरी चुटकलों का इलाज नहीं बन आता तो डाक्टरी इलाज करो परंतु किसी होशयार डाक्टर का करो ॥

बहुतेरों के मगज में समझ ही नहीं होती तोते की तरह पढ़ कर पास हो जाना और बात है हिकमत में सिरफ सोच है दस हकीम या डाक्टर इलाज करें नौसे कुछ नहीं होवे एक के इलाज से आराम हो जावे दवा तो सब वही बरतते हैं परंतु सोच तजवीज हिकमत में गालिब रहती है देखो तजवीज से ही जरा से जपान ने इतने बडे रूस को जीत लिया तजवीज से ही वकील झूठे मुकदमें को सच्चा बना कर जीत जाते हैं और सच्चे को झूठा बनादेते हैं हिकमत में भी जो कुछ है बिमारी का विचार करना ही है सो जब डाक्टरी इलाज करो जो डाक्टर मालिस की दवा दे जरा हाथ गरम करके वोह दवा हाथ के लगा कर मालिस करे हरदफे हाथ गरम करके दवा की मालिस करे गरम रूवड़ से खूब सके और ऊपर गरम रूई बांधे ॥

निमोनिया दूर करने को मालिस की अंगरेजी दवा।

Oil Eucalypti	...	z i
Liniment Camphor	...	dr. iv
Belladanna	...	dr. iv

इस अंगरेजी दवा में बराबर का तिल्ली का मिठातेल मिलाकर छाती पर मालिस करवा कर सेका करें खूब ही रूवड गरम करके सेका करें सेक कर गरम रूवड बांध दिया करे इस बिमारी में जितना जियादा सेकोगे उतना ही जलदी आराम होवेगा, मालिस की दवा चरमरावे तो इस में मिठातेल और मिलालेवे ॥

बालक का निमोनिया दूर करने को अंगरेजी दवा।

Calcii chloride	...	Gr. IV.
Spt. Ether Nit	...	MXL.
Spt Ammonia Aromat	...	MXL.
Spt. Vin Gallici	...	MXL.
Inf. senega ad	....	ZII.

Put 8 marks one mark every four hours.

यह २ से ४ साल तक के बालक के वास्ते है पंसली चले तौ भी देवे चार चार घंटे बाद पिलाता रहे ॥

नोट—डाक्टर के बालक की उमर बिमारी बताकर दवा की खुराक का मिकदार पूछ लेवे ॥

बुखार में बालक को निमोनिया नहीं होवे सो हिफाजत।

बुखार में बालक को निमोनिया से बचाने को सब में बड़ी हिफाजत बालक को खुली हवा में नहीं लेजाना है बुखार वाले बालक को हरगिज हवा नहीं लगने दे हवा लगी और बालकको निमोनिया हुवा ओर बालक मरा बस बुखार वाले बालक को हवा नहीं लगानी। गरम कपड़े पहनाये रक्खे अंदर कमरे में रक्खे बाहिर हरगिज नहीं। बालक को निमोनिया से बचाने को इतने बालक को बुखार आवे या माता में, यानि निमोनिया वगैरा में बाल को माता (रक्षक) स्नान नहीं करे कोई स्नान करके दो घंटे तक बालक के पास नहीं आवे यह हिकमत की बात है जब इनसान स्नान करता है उसके बदन में से रूवों द्वारे बुखारात निकलने लगते हैं जो माता वाले निमोनिया वाले बुखार वाले बच्चे को लगने से सखत मुजिर होते हैं ॥

उसके कमर में गीला वस्त्र नहीं लावे छिडकाव नहीं करे पानी नहीं डाले कमरा तरी से बचावे खुश्क कमरे में ऐसे बिमार बालक को रखे ॥

बुखार वाले बालक को निमोनिया न होजावे इस से बचाने को ऐसे मकान में रखे जहां खुली हवा न आती हो एक दरवाजा खुला रहे बाकी मोरियां बंद रहें मौसम सरदी का हो तो उस दरवाजे के आगे भी पडदा तानदे बालक को माता उसे गोद में लिये बैठी रहे ताकि बालक गरम रहे एक स्त्री का बालक मरगया अर्थात् उस का दम आना बंद होगया उस स्त्री के वोह बालक बडी उमर में तड़फकर हुवा था एकही पुत्र था स्त्रीने मरा बालक मारे मोहब्बत के अपनी छाती के लगाकर जोर से दबालिया दो घंटे दबाओ रहने से छाती की गरमी बालक को पहुंचने से बालक को जरा जरा सांस आया अखिर बालक जी उठा ॥

इन्सान में गरमी है इसलिये बुखार वाले बालक को स्त्री अपनी गोदी में लिये बैठी रहे तो निमोनिया न होने पावे पिछले जमाने में जब बालक को बुखार होता था स्त्री यह कहती थी बुखार वाले को बाहिर मत लाओ इसे बाहिर लाने से परियों की झपेट हो जावेगी फिर बचना कठिन होजायगा सो यह केवल बेसमझो के वास्ते डरावा था असली मतलब सरद हवा से बचाने का था सो जो स्त्री अपने बालक को घर में लिये बैठी रहती हैं उनके बालक को निमोनिया नहीं होता ॥

जिस दिन बुखार उतरे उस दिन बड़ी खबरदारी रखे उस दिन एकदम कमजोरी होकर पंसली चल कर अनेक बालक मरजाते हैं उस दिन जियादा हिलावे नहीं गोद में लिये कपडे से ढके हुए बैठी रहे ताकि बालक गरम रहे हवा नहीं लगने देवे ॥

निमोनिया में जैनी होकर अपवित्र दवा क्यों लिखी।

इन्सान जो काम करता है उस का मतलब उस में कामयाब होने का होता है, देखो बडे बडे, ६३ शलाका या दूसरे पुण्यवान मोक्ष गामी परम पूज्य पुरुषों ने जब गृहस्थ में थे केवल राज संपदा के वास्ते लाखों पुरुष हाथी घोडा कतल करके खून की नदियां बहादी थी ॥

इसी प्रकार हमारा विचार इस वक्त बालक की जिंदगी बचाने का है जब पवित्र दवा से बचता नहीं समझा तब अपवित्र दवा लिखी हैं दुनियां में पुत्र समान सम्पदा नहीं है दुनियां में सारे अलछल झूठ पाप स्त्री पुत्रादिक के वास्ते ही करीये हैं पाप तो पुण्य करनेसे दूर हो सक्ता है मरा पुत्र नहीं आसकता इस वास्ते अगर अपवित्र दवा के जरा से पाप से पुत्र बच जावे तो जरूर बचालेना चाहिये उसका प्रायश्चित पुण्य दान से दूर हो सकता है ॥

बच्चों की दुखती आंखें तुरत अच्छी करने की दवा।

पठानीलोद, फटकडी, मुरदासंग, हलदी, सुफैद जीरा, यह पांचों दवा तीन तीन मासे लेवे इन को तोड़ कर चूरासा कर लेवे और एकचने बराबर अफीम, उडद बराबर नीला थोता, और चार काली मिरचों के टुकडे करके इस में डाले सुफैद बारीक कपडे में पोटली बांध पोस्त अर्थात् अफीम के अनपछ चार डोडे का आध सेर पानी पका उस में पोटली भिगो कर आंखों को लगाता रहे कैसी हो सूजी हुई सुरख आंखें हों एक दिन में अच्छी होजावेंगी। यह नुसखा अरस्तु ने बादशाह सिकंदर आजिम के वास्ते लिखा था, बादशाह की आंख अच्छी होने से उसे ५०००) इनाम मिला था ॥

दुखती आंख अच्छी करने की और दवा।

रसोत, फटकड़ी, छोटी हरडे, अफीम, इन सब चीजों को थोड़ी २ किसी पत्थर के चकले पर घिस कर रात को सोते वक्त आंखों के ऊपर लेप कर लेवे इस से आंखों की सुरखी घटती है दुखती हुई की सोजस फौरन दूर होजाती है ॥

दुखती आंख अच्छी करने की और दवा।

खट्टे अनार का छिलका एक तोला, कीकर की पत्ती एक तोला लोध पठानी छै मासे फटकड़ी तीन मासे। इन सब को कूट कर इस में जरासा पानी मिलाकर दो टिक्की बना कर एक घण्टा पानी के भरे हुए घडे पर रख छोडे फिर दुखती हुई आंखों पर बांध कर सो जावे इससे आंखों की सुरखी सोजश दूर होजाती है॥

दुखती हुई आंख अच्छी करने की और दवा।

रसौंत एक तोला, छोटी हरड़ छै मासे, फटकड़ी ३ मासे इन को पानी के साथ खब खरल कर लेवे दोनों वकत दुखती हुई आंखों में एक एक सलाई भर कर डाला करे इससे आंख अच्छी होजाती है परन्तु यह लगती है। बच्चों के नहीं डालनी॥

दुखती आंख अच्छी करने की और दवा।

जिसत की खील को बहुत बारीक पीस कर डालने से आंखों के रोहे दूर होजाते हैं दवाई डालती दफे जिस्त को रोहों पर सहज से मल देना चाहिये॥

दुखती आंख अच्छी करने की और दवा।

सबज नींव को कोंपल (छोटेपात) गऊ की छाछ में कांसीके बरतन में बांस की लाठी से घिस कर सलाई से सुभे श्याम दोनों वक्त आंखों में डालने से आंख अच्छी होजाती है॥

दुखती आंख अच्छी करने की अंगरेजी दवा।

R,	Zinci Sulphatis	...	Gr. III.
	Aquæ Destillato	...	Oz. I.

Two or three drops to be put into the sore eye twice a day.

आंख धोकर दिन में दो वार इस दवा की तीन बून्द दुखती आंख में डाले।

आंख के रोहे दूर करने की अंगरेजी दवा।

R,	Acid Boric	...Gr. X.
	Alum Sulph	...Gr. IV.
	Coacaine Hydrochlor	...Gr. III.
	Aq. dist.	...oz. I.

Two or three drops to be put into the eye twice a day.

दो या तीन बूंद आंख में प्रति दिन दो बार डाले रोहे जाते रहेंगे. आंख साफ रहेगी नजर के ठीक रखने की यह बड़ी उमदा दवाई है॥

आंख नहीं दूखें सो दवा।

जो यह चाहे मेरी आंख नहीं दूखें या जिस की आंख खराब रहें दुखनी आया करें, मूंडी बूटी की मौसम में मूंडी बूटी के पौदे के पास जाकर मूंडी को दो घूंडी हाथ से तोड कर जलदी से खाजावे फिर उसकी आंख दो साल तक नहीं दुखेंगी, जो हर साल ऐसा करे उसकी आंख कभी नहीं दूखें॥

धूंद दूर करने की दवा।

जिस को मोटा नजर आने लगे नजर घट जावे वह यह दवा करे नमक लाहौरी एक तोला, काली मिरच तीन तासे, जिस्त फूंकाहुवा एक तोला, यह तीनों दवा खूब बारीक खरल कर सलाई दोनों वक्त आंखमें डाला करे धुन्द दूर होय नजर तेज होय॥

धुन्द दूर करने का अंजन।

सिक्के की गोली बन्दूक में चलाते हैं या सिक्का दस तोले लोहे के कड़छे में डाल आग पर रखे जब पिघल जावे गढा खोदकर उसमें सहजसे गिरावे जो मैल कड़छे में बचे उसे फैंक देवे फिर वह सिक्का कड़छे में गेर आग पर रखे एक तोला गंधक रगड़ कर उस सिके को नींब की लकड़ी से हिलाता जावे और दूसरा आदमी उस में वह पीसी हुई गन्धक जरा जरा सो फैंकता जावे ज्यों ज्यों उस में गन्धक डालोगे वह जल जावेगा जब वह बिलकुल जल जावे और सिक्के का रवा उस में नजर न आवे आग से उतार कर फिर भी नींब की लकड़ी से फिराता रहे ठंडा होजाने पर खरल में डाल कर उस में तीन मासे पीपल (मघ) डाल कर खूब खरल करे उस में गुलाब का अरक डाल डाल कर १५ दिन तक दो दो चार चार घण्टे रगड़वाता रहे १५ दिन के बाद उसको खरल कर अब वह खूब सूक कर बारीक होजावे एक शीशी में रख छोडे, यह एक उमदा अंजन बन गया जिस को नजर मोटी पड़गई हो या आंखों से पानी जाया करता हो या आंखों में खारिश हो या पड़बाल हो रचौंधा पड़ता हो इस को सोते वक्त सलाई से डालकर सोजाया करे तो यह सारी बिमारियां इस अंजन से जाती रहेंगी यह जरा लगता है सो लगने की परवाह नहीं करनी चाहिये, और इतनी बातों का खयाल रखे कि अंजन के नीचे नींब की लकड़ी जलावे और इसे बहुते दिन हर रोज नहीं डाले क्योंकि

यह बहुत तेज है यह काले रंग का अंजन है अगर सफेद करो तो बनाती दफे बजाय गन्धक के कलमी शोरा काम में लाओ ॥

पड़वाल दूर करने की दवा ।

जिस की आंख में पडवाल होजावें यह दवा करे ऊंगा की जड़ टंक एक नमक लाहौरी टंक एक गऊलोचन टंक एक यह दवा गऊके दूध की दही में तांबे के बरतन में खूब रगडवा कर सुकावे आंख में सलाई से डाला करे पडवाल जांय ॥

नोट—ऊंगा को आंधा झाडी या आपा मारग भी कहते हैं इस का जरा जरा मछर समान फल कांटेदार कपडों के चिमट जाता है ॥

रचौंधा दूर करने की दवा ।

जिसे रात को नजर नहीं आवे कसौंधी के फूल पानी में रगड कर सलाई से दोनों वक्त आंख में डाला करे रात को नजर आने लगेगा ॥

नोट—एक दवा मगज को ताकत देने वाली भी खावे ॥

फोला काटने का अंजन ।

एक मिट्टी की कुज्जी में छ मासे हरताल कूट कर रख कर ऊपर एक डबल पैसा रख देवे फिर उस के ऊपर छै मासे हरताल रख कर कुज्जी का मुंह बन्द करके ऊपर खड़िया मिट्टी लगा देवे फिर श्याम को दस सेर उपलों के बीच में रख कर आग लगा देवे सुभे को उसे कुज्जी में से निकाल लेवे अगर इस के फूकने में कसर रहे तो फिर पहली तरह ही उसे फूके जब फुक जावे जो उसे गुलाब के अरक में १५ दिन तक पहले अंजन की तरह खरल करके शीशी में डालकर रख छोडे इस अंजन को रात को सोते वकत कुछ दिन तक डालने से फोला कट जाता है यह एक बड़ा बेश कीमती सुफेद रंग का अंजन है ॥

फोला काटने की और दवा ।

नौशादर पांच तोले,इलायची छोटी एक तोला, काली मिरच एक तोला ॥

इन को कूट कर मट्टी के पियाले में बंद करके गिले हिकमत करके कम आंच (अग्नि) पर इस का जो हर उडाउ दो सेर लकड़ी जलाओ फिर उतार लो जब पियाले सरद होजावें ऊपरले पियाले में से जौहर उतार लो खरल करके शीशी में रख छोडे सोती दफे आंख में डाला करो इससे फोला जरूर कट जावेगा ॥

नोट—इतने खटाई आचार लाल मिरच नहीं खावे ॥

फोला काटने की और दवा।

नर मुरगे की बीट छे मासे,सावन अंबरसरी छै मासे, नमक लाहौरी एक मासा, फटकडी भुनी हुई एक मासा ॥

इन सब को खूब वारीक खरल कर छोटी छोटी गोली बना लेवे।

जरा से सहत में पत्थर पर गोली रगड सलाई से आंख में डाला करे तो फोला जरूर जात रहेगा ॥

फोला काटने की और दवा।

गधे की डाढ पानी में रगड़ कर कुछ दिनों तक आंख में गेरते रहने से फोला जाता रहता है ॥

फोला काटने की और दवा।

सिरस का बीज स्त्री के दूध में रगड कर कुछ दिनों तक आंखों में डालते रहने से फोला जाता रहता है ॥

फोला काटने की और दवा।

हाथी का नखून पानी में रगड कर कुछ दिनों तक आंख में डालते रहने से फोला जाता रहता है ॥

मोतियाबिंद की दवा।

भीमसेनी काफूर, समुद्रफेन, छोटी इलायची, यह बराबर ले सिरस के बीज के रस में कई दिन तक खूब खरल कर गोली करे। स्त्री के दूध में गोली रगड़ आंख में दोनों वकत डाला करे। मोतियाबिंदु जावे रचौंधा धुन्द आदि आंखके सर्व रोग जावें॥

कान का इलाज।

कान से राद् बहती हो वे तो कान पिचकारी से धुलवा कर फिर दवा पानी गरम करके उस में जरासा सोडा डाल कर उस पानी से पिचकारी से हर कान धोया करे कान में पिचकारी करती दफे इस बात का ध्यान रखे कि पानी गरम नहीं हो अगर सोडा नहीं मिले दो रती सज्जी वारीक पीस कर पानी में कान धुलवा कर जो पानी कान में बाकी रह जावे पिचकारी उलटी खिचवा कर से पानी निकलवा डाले, कान बडी खबरदारी से धुलवावे पिचकारी बहुत अंदर देवे ताकि कान का कोकरू नहीं फूटे कान के छेक पर पिचकारी का मूंह रख कर की धार से कान धोवे पिचकारी कान के अंदर नहीं देवे अमीर आदमी अपने

पर कान धुलवावें हसपतालोंमें मुफत का काम जानकर कम्पाउण्डर या सीखतड़ लड़के बाज दफे कान में अंदर लापरवाही से पिचकारी दे कर नोंक से कान का कोकड़ फोड़ देते हैं।

राद बंद करने को कान में डालने की दवा।

कान पिचकारी से धोकर उस में चार पांच बून्द वेरजे के तेल की डाले वेरजे का तेल नहीं मिले तब बादाम रोगन की डाले कुछ दिन ऐसा करने से कान अच्छा होवे।

कान का दरद दूर करने की दवा।

नीम के हरे पात रगड़ उस का अरक निकाले जरासे घी में गरम कर मिला कर जरासा कान में डाले तो कान अच्छा होय अगर कान से राद बहती हो तो गरम पानी से पिचकारी से सहज में कान धो कर फिर दवा डाले।

कान का दरद दूर करने की और दवा।

कान धोकर बकरी के मूत्र की चार पांच बूंद कुछ दिन कान में डाला करें तो कान का दरद जाय।

कान का दरद दूर करने की और दवा।

कान धो कर अपने मूत्र की चार पांच बूंद कुछ दिन कान में डाला करे तो कान का दरद जाय।

कान में जीव पड़जायें तिनके दूर करने की दवा।

अरंड का सबज पात रगड कर उस का रस कुछ दिन कान में डारे कान अच्छा होय।

कान का जखम अच्छा करने की दवा।

जिस के कान पर जखम हो जावे सिरसों के तेल में कमेला मिला कर लगाया करे कान का जखम अच्छा होवे।

आंख और कान के दरद दूर करने की अंग्रेजी दवा।

R,

Atropine	... Gr.	IV.
Cocaine	... Gr.	III.
Aqua Destillata	... oz.	I.
Fiat Lotio	...	

Two drops to be put into the affected ear or eye twice a day.

दो बून्दे दुखनेवाली आंख या दरद वाले कानमें सुभे और स्याकको प्रतिदिन डाले।

दाढ का दरद दूर करने की दवाई

नीलाथोथा एक तोला, मिस्सी ६ मासे फटकड़ी ६ मासे नमक लाहौरी ६ मासे, नौशादर ६ मासे काली मिरच ३ मासे॥

नीलेथोथे को आग में फूक लेवे फिर सब दवाइयों को खूब बारीक कूट कर रख छोडे रात को सोती दफे दांत दाढों के मलकर नीचे मुंह करके राल छोड देवे आध घण्टा तक मुंह से राल गिरता रहे फिर थक कर सो जावे उस के बाद फिर कुछ खावे पीवे नहीं कुरला भी नहीं करे सुबे को कुरला करके दांत साफ कर लेवे तीन दिन ऐसा करने से दरद जाता रहेगा, फिर सारी उमर डाढ में दरद नहीं होगा, दस बीस वर्ष में होवे तो फिर यही दवा करे, कैसे ही हिलते हुए दाढ दांत हों इस से जमजाते हैं।

डाढ का दरद दूर करने की और दवा।

जब डाढ में दरद हो सीख के ऊपर रूई का फोहा लगा कर वोह फोहा हमारी बनाई अमृत धारा में भिगोकरडाढ के मले मल कर राल छोड देवें दरद डाढ का दूर हो जावेगा कसर रहे तो फिर दूसरे वक्त मले॥

अमृत धारा का नुसखा हमने इसी पुस्तक में लिखा है उस मुताबिक बनालो।

डाढ का दरद दूर करने की और दवा।

सीख पर रूई का फोहा लपेट कर लौंग के तेल में भगोकर राल छोड देवे दरद दूर हो जावेगा, कसर रहे तो फिर दूसरे वक्त लगावे।

डाढ का दरद दूर करने की और दवा।

अकरकरा की थोडी सी गांठ (टुकड़ा) जाड़ में दबावे दरद बंद हो जावेगा।

दाढ हिलने का सोजिश।

अगर मसूडे दाढ हिलने से सूजे हैं तो इस का इलाज दाढ निकलवाना है हिलती दाढ फिर नहीं जमा करती अगर दाढ में कीडा लगने से दरद है तो भी दाढ निकलवा डालनी चाहिये अगर यूं ही दरद और सोजिश है तो इस का इलाज जौंक लगवा कर खून निकलवाना है क्योंकि यह भी खूनका फिसाद है।

दांतों को मजबूत करने वाला मंजन।

कत्था एक तोला, रतनजोत एक तोला, माजू एक तोला, सोदनमखी एक तोला

रूमीमस्तगी एक तोला फटकड़ी एक तोला, छाल कीकर एक तोला, सौंठ एक तोला, बड़ी हरडे की छाल एक तोला, काली मिरच एक तोला, नमक लाहौरी छै मासे, पीपल एक तोला, सुपारी एक तोला ॥

इन सब चीजों को वारीक कूट कर रख छोडे, सुबे ही प्रति दिन दांतों के मला करे इस से दांत बहुत मजबूत रहते है कुछ मसूडे वगैरा फूलने नहीं पाते ॥

दांतों को मजबूत करने वाला दूसरा मंजन।

रत्नजोत आध तोला, सोहनमक्खी आध तोला, सुपारी एक तोला, संग जराहत आध तोला, छाल कीकर एक तोला, कत्था एक तोला, रूमीमस्तगी एक तोला, इलायची छोटी आध तोला, तवाशीर एक तोला।

दांतों से गोश्तखोरा दूर करने की दवा।

जिस के दांतों को मैल लग कर पोले से हो जावें तो वह मैल दूर करने को तमाकू कूट कर रात को सोती दफे दांतों के खूब मले मलकर राल छोड देवे फिर सो जावे सुबे को मंजन मलकर धो डाले कुछ दिन ऐसा करने से गोश्तखोरा जाता रहेगा दांत सुफेद हो जावेंगे।

बच्चे का मुंह आया हुवा अच्छा करने की दवा।

जब बालक का मुंह आजावे तो यह दवा करे बंसलोचन तीन माशे, शीतलचीनी तीन माशे, सतगिलो तीन माशे, सतमुलहठी तीन माशे, इलायची छोटी तीन माशे सेलखडी तीन माशे, काफूर चीनीयां डेढमाशे, कत्था सुफेद तीन माशे, बुंब (ढाल) का धुवां तीन माशे ॥

समझावट--बंसलोचन तवाशीर को कहते हैं सेलखडी संगजराहत को कहते हैं शीतलचीनी कबाबचीनीको कहते हैं ढालका धूवा यह चौमासे में जंगलों में या मकान के कोठों पर उगती है इसका कालासा धूवां पंसारियों के होता है लाहौर में बहुत होता है यह जरा जरासी मुख में डालने से मुंह फौरन अच्छा होजाताहै कपूर चीनियां जो केले से निकलता है वह डालना इस के बर खिलाफ एक रसकपूर होता है वह संखिये समान जहर है वह नहीं डालना जो कपूर जलता है खशबोदार है वह डालना ऊपरली सब दवाई कूट छान खरल कर लेवे जिस बच्चे का मुंह आया होवे तो उस के मुंह में जरा जरा सी दो दो घण्टे बाद डलता रहे इस से फौरन मुंह आया हुवा अच्छा होजाता है अगर मौसम गरमीका होवे तो इसके साथ इतनी दवाई और करे॥

मेंहदी के पत्ते एकतोला, जीरा सफेद ६ माशे, काफूरचीनीयां खानेवाला ६ माशे। इन तीनों दवाइयों को एक कोरे मिट्टी के कुज्जे में आध सेर पानी में भिगो छोडे पांच सात घण्टे के बाद जब पानी में दवाई का असर आजावे तो इसमें से आधा आधा चमचा इस पानी का भी छान कर कभी कभी बच्चे के मुंह में डालता रहे इस से कैसा ही मुंह आया हुवा हो फौरन अच्छा होजाता है रात को यह बरतन ओस में रख देना चाहिये यह एक बार की भिगोई कई दिनतक काम दे सकती है परन्तु यह पानी वाली दवाई गरम ऋतु में ही करनी सरद में नहीं करनी यह बहुत सरद है॥

बच्चे का मुंह आया हुवा अच्छे करने की और दवा।

केले की ओस भी बच्चे के मुंह में निचोड़ने से आराम होजाता है सुभे हो सुफैद रूमाल केलों के पत्ते के मल कर गीला कर लावे उस को निचोड़ जरा जरासा पानी बच्चे के मुंह में डाले तो मुंह अच्छा होवे।

बच्चे का मुंह आया हुवा अच्छा करने की और दवा।

कूवां में जो हंसराज उगा रहता है यह भी रगड़ छान कर इसका पानी भी बच्चे के मुंह में डालने से बच्चे का मुंह अच्छा हो जाता है।

बच्चे का मुंह आया हुवा अच्छा करने की और दवा।

सुहागा कच्चा ही पीसकर शहद में मिला कर बार बार बच्चे के मुंह में लगाने से भी मुंह आच्छा हो जाता है।

मुंह आया हुवा अच्छा करने की और दवा।

जरा जरासा खुंब का धूवां मुख में डालते रहने से मुख अच्छा हो जाता है।

मुंह आया हुआ अच्छा करने की और दवा।

गुंदनी का बक्कल कत्था दोनों को कूट कर मिला कर मुख में चबाता रहे पीक थूकता रहे मुख अच्छा होवे।

मुंह आया हुआ अच्छा करने की और दवा।

कीकर (बबूल) के जामते पत्ते जिसे लूंग कहते हैं मुख में चबाने से मुख अच्छा हो जाता है।

मुंह आया हुवा अच्छा करने की और दवा।

सौती दफे तवे की श्याही मुख में जखमों पर मल कर राल चुवा कर सो जावे मुख अच्छा होवे।

मुंह आया हुआ अच्छा करने की और दवा ।

फटकडी पानी में पकाकर कुरले करने से मुंह अच्छा हो जाता है, दो दो घंटे बाद कुरला करता रहे ।

मुंह आया हुआ अच्छा करने की और दवा ।

पिटोनिया के पात और फटकड़ी दोनों को उबाल कर दो दो घंटे बाद कुरले करता रहने से मुंह अच्छा हो जाता है ॥

नोट—बगीचों में चमन के इरद गिरद जिन बूटों की बाड़ लगाते हैं जिस के पात सोनामुखी जैसे लंबे से होते हैं उस का नाम पिटोनिया है ॥

मुंह आया हुआ अच्छा करने की और दवा ।

बकल (छाल) फालसा ५ तोले, बकल बबूल ५ तोले । बकल गूंदनी ५ तोले जंगलझाड़ी की जड़ ५ तोले, चमेली के पात ५ तोले, सीतलचीनी १ तोला, कत्था एक तोला, सब दवा कूट कर दो सेर पानी में पकावे, दो दो घंटे बाद गरारे करता रहे, जब गरारा करे थोड़ासा पानी इसमें से छान कर गर्म कर लिया करे, गरारे गरम पानी से करे, गरारे करके मुख से राल टपकाया करे मुख फौरन अच्छा होजाता है ॥

नोट—आतशक सोजाक में जब रसकपूर वगैरा जहरीली दवा खाने से मुख आजाता है तब इसी दवा के गरारे करने से मुख अच्छा होता है, मुख से जितनी ज्यादा राल टपकावे उतनी जल्दी ही मुख अच्छा होजाता है, जंगल में जिस झाड़ी के सुरख बेर आवें इस दवा में उस झाड़ी की जड़ है ॥

नोट—इन दवाइयों से बच्चा स्त्री, पुरुष सब का मुख आया हुआ अच्छा हो जाता है, मुख में जखम या छाले पड़े हुए भी इन दवाइयों से अच्छे होजाते हैं ॥

मुंह का सोजिश दूर करने का इलाज ।

बाजे वक्त एक तरफ से या दोनों तरफ से मुंह सूज जाता है सो वैद्य हकीम अनेक लेप या पीने की दवा देते हैं सो सब बेफायदा है इस बीमारी को ननाई की बिमारी कहते हैं इस बिमारी में फौरन ठोडी के नीचे ४० जोंक लगवा देनी चाहिये इतनी ही अगले दिन लगवा देवे इस से फौरन मुंह अच्छा हो जावेगा इस की यही दवा है अगर देरी करोगे और सोज गले के अन्दर चला गया तो जिन्दगी का खतरा है इस बिमारी में खटाई मिठाई बादी की वस्तु अचार दही मट्ठा वगैरा नहीं खाना ।

बच्चों के चुरणे दूर करने का इलाज।

बाजे बालकों की गुदा में कीड़े पैदा हो जाते हैं उन को चुरणे कहते हैं, जब यह बालकों की गुदा में काटते हैं बालक सखत रो रो कर तड़फते हैं यह बालकों को सखत दुःख देने वाली बिमारी है, अगर यह चुरणे दूर नहीं किये जावें तो इन के काटने से ही गुदा में जरा जरा से मसे बनते हैं जो बडी उमर में बड़े हो कर इनसान को सखत तकलीफ देते हैं इसी का नाम बवासीर है, सो बालकों के चुरणे जरूर दवा देकर दूर कर देने चाहियें॥

बच्चों के चुरणे दूर करने की दवा।

चुरने दूर करने को बच्चों को जरासी रसौंत पानी में घोल कर सीपी या चमचे से प्रति दिन कुछ दिन तक देने से चुरणे दूर होजाते हैं, जिस बच्चे के फोड़े फुनसी बदन में हो जाते हैं उस को रसौंत पीलाने से सब फोड़े फुनसी वगैरा भी जाते रहते हैं रसौंत से दस्त खुल कर आता रहता है यह दस्तावर है खून सफा करती है असली रसौंत कांगडे से आती है परंतु रसौंत बहुत सरद है गरम ऋतु में बालक को देवे सरदो में नहीं देवे॥

बच्चों के दूर करने की दवा।

अरंडी की कूंपल मलके लड़के की गुदा दें निचोडे चुरणे मरें।

बच्चों के चुरणे दूर करने की दवा।

कुकड़छलनी का रस निकाल कर गुदा में दो चार बार लगाने से चुरणे मरें।

बच्चों के चुरणे दूर करने की दवा।

बछ छै मासे, छुहारा छै मासे, मिसरी छै मासे, इन सब दवाइयों को खूब बारीक कूट कर चने प्रमाण गोली बांध लेवे छोटे बच्चे को एक गोली बड़े को दो गोली सुभे को पानी के साथ खाने से चुरणे जाते रहते हैं।

बच्चों के चुरणे दूर करने की दवा।

पांच सात वर्ष के बच्चे को एक माशा कमेला दही में मिलाकर पांच सात दिन तक हर रोज खिलाने से चुरणे दूर होजाते हैं॥

बच्चों के चुरणे दूर करने की और दवा।

करंजवे को आग पर अधभुना करके उसकी गिरी पीसकर सुभे ही निहार

मुंह एक माला पानी की साथ कुछ दिनों तक खावे टटी में चुरणे निकल पडेंगे ॥

नोट—इससे ववासीर भी घट जाती है ॥

बच्चों के चुरणें दूर करने की दवा।

पियाजो जो गेहूं के खेतों में खड़ी रहती है उस के बीज दो मासे प्रति दिन सुभे ही पानी के साथ खालेने से चुरणे दूर होजाते हैं ॥

बच्चों के चुरणे दूर करने की दवा।

त्रिफला ३ तोला, वायबिडंग १ तोला, वाखूंवा आधा तोला, रसौत १ तोला एलवा, पौन तोला, हींग १॥ मासा इन को कूट कर खूब वारीक खरल कर जवार के दाने वरावर गोली बनाय छोटे बच्चे को १ गोली माता के दूध में रगड़ कर देवें वडे बच्चे को पानी से देवे तीन चार दिन वरावर देवे तो टट्टी के रास्ते चुरणे निकल पडेंगे बडे वच्चेको दोनों वकत देवें बालक के चुरणे दूर होवें ॥

नोट—सखत से सखत ववासीर भी इस दवा से जाती रहती है ॥

बच्चों के चुरणे दूर करने की अंगरेजी दवा।

R,		
	Tincture of Muriate of Iron	... 5 minims.
	Sulphate of magnesia	... 10 grains.
	Water	... ½ ounce.

One such dose twice a day.

एक एक खुराक दिन में दो वार पिलावे।

बालक के चुरणे दूर करने की और दवा।

Santonine. सेंटोनाइन यह अंगरेजी दवा है दूध चूंघते छोटे बालक को आध रत्ती जरा बडे को एक रत्ती वडे बालक को डेड रत्ती सुभे श्याम दोनों वक्त देने से बालक के चुरणे टटी के रास्ते गुच्छे के गुच्छे सब निकल पडते हैं इस दवा के देने से चुरणे हरगिज नहीं रहते ॥

तिल्ली दूर करने की दवा।

पीली कौडियों को नींबू के रस में डाल दे, जब वह उस में गल जावें शीशी में यह रस रख छोडे, सुभे ही दश बूंद पानी में डाल कर पिया करे तिल्ली दूर होजाती है।

तिल्ली दूर करने की और दवा।

सिरका चालीस तोले, लोटा सज्जी छै मासे नौसादर छै मासे सुहागाभुना हुआ छै मासे, पाचों नमक मनयारी, लाहौरी, सांभर, काला, पापडो फारसी में आरमनी पांच तोले ॥

सब दवा कूट कर सिरके में डाल चालीस दिन रखे फिर एक तोला हर रोज खाया करे तिल्ली दूर होजाती है। बालक को तीन मासे या उमर के लिहाज़ से देवे॥

तिल्ली दूर करने की और दवा।

मूली का नमक एक रत्ती झाउ का अरक आध पाव यह नमक मुख में डाल ऊपर से अरक पीवे, कुछ दिन ऐसा करने से तिल्ली जावे, बालक को आधी या उमर के लिहाज़ से देवे॥

झाउ का अरक निकालने की विधि।

झाउ जो दरया में खड़ा रहता है जिस के पात फरांस जैसे होते हैं सबज झाउ के पात मंगाकर अत्तार से नाल में उनका अरक खिचवा लेवे, झाउ के पत्तों को खूब कूट कर अरक खैंचने वाले पानी में डाले दो सेर पत्ते झाउ के हों तो उस में दस सेर पानी डलवा कर पांच सेर अरक खिचवावे यह मूली के नमक की साथ पीने से तिल्ली को दूर करता है॥

मूली का नमक बनाने की विधि।

मूलियों को जलाकर उसको पानी में घोल कर गाहडे कपडे में उसकी रैणी चवावे फिर उस पानी को कढाई में डाल कर आग पर जलावे पानी जलकर नमक बन जावेगा परंतु अग्नी पर जियादा नहीं जलावे कभी नमक भी जलजावे जरा तर (करड़ा होनेपर) उतारले सरद होने पर जम कर नमक बन जावेगा यह तिल्ली दूर करने को बड़ी दवा है।

तिल्ली दूर करने की और दवा।

एक सेर कांजी सात दिन तक हरोज पीवे सांझ को खिचड़ी खाय तिल्ली दूर हो।

तिल्ली दूर करने की और दवा।

अजमोद पैसा भर, संचल लूण पैसा भर, हरडे बड़ी पैसा भर, सब दवा पीस कर सुभे ही तीन मासे हर रोज बछिया के मूत से खाया करे तिल्ली दूर होय॥

तिल्ली दूर करने की और दवा।

राई एक तोला, निमक लाहौरी एक तोला, सुहागा भूना हुआ डेढ माशा, नौसादर तीन मासे, यह सब दवा बारीक कूट कर डेढ मासा प्रति दिन सुभे ही पानी से खावे तिल्ली दूर होय॥

तिल्ली दूर करने की दवा।

त्रिफला (हरड़ बहेड़ा आमला) दो तोले, तिर कुटा (सूंठ पीपल काली मिरच) दो तोले, अजवायन एक तोला ॥

यह सब दवा बारीक कूट डेढ मासा प्रति दिन सुभेही पानीसे खावे तिल्ली दूर होय

तिल्ली दूर करने की अंगरेजी दवा।

R,

Quin. Sulph	...	Gr. V.
Acid. Sulph. Dil	...	MX.
Ext. Ergotinæ Liquidi	...	MXXX.
Aquæ	...	ad. oz. I.

Three times a day.

एक एक खुराक दिन में तीन बार पीवे ॥

तिल्ली दूर करने की अंगरेजी दवा।

Mag Sulph	...	Z I.
Iron Sulphate	...	Gr II.
Amonian clorite	...	Gr V.
Aquæ red	...	O Z I.

Twice a day.

जिस का जिगर बढा हो उसे भी मूफीद है बालक को एक डराम या उमर के लिहाज से देवे ॥

तिल्ली दूर करने की अंगरेजी गोलियां।

R,

Cinchona febrifuge	...	4 grains.
Sulphate of Iron	...	2 grains.
Arseninus Acid	...	$\frac{1}{30}$ grains.

Make into a pill with mucilage.

One pill three times a day.

एक एक गोली दिन में तीन बार पानी से खावे ॥

तिल्ली दूर करने की लगाने की दवा।

बलक बंद एक तोला, जरावंद एक तोला, गूंद कीकर तीन मासे, मंजलताश

का गूदा छै मासे, अफीम १ माशा, यह दवा पीस कर रखे तीन मासे दवा पानी में घोल कर लेप तिल्ली पर कर लिया करे तिल्ली दूर होय ॥

तिल्ली दूर करने की लगाने की अंगरेजी दवा।

Tr. I dine एक दफे हर रोज तिल्ली पर लगाया करे परंतु कुछ दिन लगाने से खाल उड़ जाती है। जब खाल उडे एक महीना तक दवा लगाना बंद कर देवे ॥

तिल्ली दूर करने को लगाने की अंगरेजी दवा।

Red ointment of murcury.

यह तिल्ली पर लगा कर धूप में २५ मिनट बैठा रहे, तो छाले पड़ आवेंगे फिर उन छालों को फोड़ कर छालों का पानी निकाल दे, ऊपर मक्खन लगा कर मल मल की पट्टी बांध देवे, यह सिरफ एक दिन करे इससे सखत आग लगजाती है, यह इलाज गांव के गंवार बड़े ताकत वाले का है, जिस के बहुत ही तिल्ली बढ गई हो बालक अमीर कमजोर के नहीं लगावे ॥

जला हुवा अच्छा करने की दवा।

धाय के फूल मट्टी के बरतन में आग पर रख उस के कोयले कर खूब बारीक पीस लेवे प्रति दिन दो दफे वा तीन दफे जले हुए पर नारियल का तेल लगा कर ऊपर से यह बरबराता रहे पहला भी जमा रहे उसे छेडे नहीं जहां राध फूटे रूई के फोहे से साफ कर ऊपर यही दवा डालता रहे जला हुवा अच्छा होवे ॥

जला हुवा अच्छा करने की और दवा।

कीकर के वक्कल को जला कर कोयला बनाकर पीस कर या पत्थर का कोयला जो इंजन में जलता है वह बारीक पीस कर या पुराणा चमड़ा जला कर पीस कर या नीम के पात जला कर पीस कर वा मालेके पात जला कर पीस कर नारियल का तेल जले हुए पर लगा कर ऊपर से इन में से कोई दवा छिड़कता रहे तो जला हुवा अच्छा होजावे ॥

नोट—जले हुए बच्चे के पास कोई हजामत करवा कर या न्हाकर, स्त्री सिर वगैरा धोकर या रजस्वला स्त्री न आवे न उस घर में छौंक तड़का देवे इस से साया पड़ जाता है जले हुए जखम पर हरमल को जला कर उसको धूनी देता रहे ॥

जले हुए तथा जखमों को अच्छा करने वाली जादू समान दवा।

आक (मदार) की जड़ का छिलका पांच तोले, सरसों दाना पांच तोले, सरसों का तेल बीस तोले ॥

मदार की जड़ का छिलका जरा तोड़ कर तेल में डाल कर आग पर जलावे, जलते हुए में सरसों भी डाल दे जब यह दोनों दवा जल जावें उतार कर सरद होने पर खूब खरल करे, तेल कम हो तो उस में मिट्ठा तेल (तिल्ली का तेल) और मिलादे यह मल्हम बन गया ॥

कैसा ही जला हुवा हो कैसे ही जखम हों यह मल्हम लगाने से अच्छे होजाते हैं यह मल्हम जले हुए पर लगा कर ऊपर मल मल का कपड़ा चिपका देवे ताकि जखम पर मक्खी नहीं बैठे गरदा नहीं लगे ॥

बच्चों के घाव की दवा ।

अगर किसी बच्चे के ठोकर लग कर खून जारी होजावे या चाकू वगैरा लग जावे तो फौरन उसके ऊपर संग जराहत यानि सेलखड़ी बारीक पीस कर उसके ऊपर बहुत सी धर कर दबा कर ऊपर से पट्टी बांध देवे फौरन खून बन्द होजाता है इस से जखम पकता नहीं और बहुत जल्द अच्छा होता है ॥

अगर बच्चे को बिच्छू काटखावे उसका जहर उतारने का मंत्र ।

जब बिच्छू काट खावे तो फौरन जिस जगह काटा होवे उसके ऊपर राख रख कर जखम को अंगुली से दबावे फिर लोहे की कुछ वस्तु हाथ में लेकर जखम के ऊपर फेरता जावे और २१ बार यह मन्त्र पढे ॥

मन्त्र-ओंआदित्यरथवेगेन विष्णोर्बाहुबलेनच,
सुपर्णपक्षपातेन भूम्यांगच्छ महाविष । १ ।
झोपक्ष जोगपत्तश्री शिवोत्तमप्रभुपदाज्ञा ।
भूम्यां गच्छ महाविष ।

यह मन्त्र २१ बार पढ़े बिच्छू के काटे का जहर जावे ॥

नोट—फिर ऊपर दवा लगावे दवा आगे लिखते हैं ॥

बिच्छू के काटे का जहर दूर करने की दवा ॥

जमाल गोटे को पानी में घिस कर बिच्छू के काटे डंक पर लगावे पीड़ दूर होवे।

बिच्छू के काटे का जहर दूर करने की और दवा ।

बिच्छू का डंक काट कर बाकी हिस्सा बिच्छू का रगड़ कर बिच्छू के काटे डंक पर लगावे जहर जावे तुरत पीड़ थंमे ॥

बिच्छू के काटे का जहर दूर करने की और दवा।

नौसादर और हरताल दोनों को पानी में पीस कर बिच्छू के काटे डंक पर लगावे पीड़ थंभे ॥

बिच्छू के काटे का जहर दूर करने की और दवा।

अमृतधारा बिच्छू के काटे डंक पर लगावे फौरन पीड़ बंद होवे ॥

अथ अमृतधारा बनाने की विधि।

काफूर चीनया (केले का) एक तोला, सत अजवायन एक तोला, यह विलायत से निकला हुवा आता है, पीपलमैंट (पैपरमैंट) सूका हुवा तीन मासे ॥

यह तीनों दवा एक शीशी में डाल कर शीशी को डाट लगा कर धूप में रखे थोड़ी देर में तेलसा बन जावेगा यह अमृतधारा बनगई ॥

अमृतधारा के गुण।

जब जाढ़ में दरद हो सींक के ऊपर रूई का फोहा लगा वह फोहा इस दवा में भिगो जाड के मले मल कर राल छोड देवे तो दरद जावे कसर रहे तो फिर दूसरे वकत मले ॥

जिस के सिर में दरद हो जरासा फोहे से सिर के मले तो दरद जाय ॥

जिस का जी मचलाता हो पेट में दरद हो अफारा हो जिसे हैजा हो इस की तीन बूंद पतासे में डाल कर खिलावे यह सर्व रोग जावें ॥

जिसके भिरड, ततैयां, बिच्छू काट खावे तो वहां लगावे पीड़ जलद दूर हो वरम नहीं चढे ॥

जिस को ताऊन यानि प्लेग की बिमारी हो इस दवाई की चार बूंद पताशे में डाल कर देवे और इसी तरह तीन तीन घंटे बाद बराबर देता रहे पीने को सिरफ उस को दूध में मिसरी डाल कर देवे ॥

अगर प्लेग के बिमार के गिलटी हो तो इस दवा को ही उस पर मालिश करते रहना चाहिये मरीज को पोदीना और इलायची का पानी पका कर देना चाहिये बिमार को सिवाय सागू दूध दवा छोलों का रसा और कोई खुराक नहीं देनी चाहिये।

बच्चेको ततैया या भिरड (डेमू) काटे उसका जहर दूर करने की दवा।

जिस जगह काटा हो भींच कर उसका पानी सा निकाल कर उस पर अमृतधारा लगावे पीड़ थंभे सोजा नहीं चढे ॥

भिरड ततैये के काटे का जहर दूर करने की और दवा।

नौसादर और हरताल दोनों को पानी में पीस कर काटे हुए डंग पर लगावे पीड़ थंमे सोज नहीं चढे ॥

यदि बच्चे को सांप काट खावे उसका जहर दूर करने का इलाज

जब सांप काटे ब्लोटिंग (Blotting) जिसे फारसी में सोखता हिंदी में स्याहीचट कहते हैं यह कागज फौरन जखम पर रख कर खूब दबावे फिर जल्दी से उसे फेंक और दबाये इस तरह तीन चार बार यह स्याहीचट जखम पर दबा कर फौरन सूखी राख जखम पर लगा कर बडे जोर से जखम को मले फिर फौरन जखम खूब धोकर जिस जगह काटा चाकू से जरासा मांस उतार डाले इस तरह भी जहर नहीं चढ़ता।

फिर सांप के काटे जखम पर पपीता पीस कर बांधे ॥

अगर पपीता नहीं मिले तो राख ही बांध देवे सांप का काटा जरूर बच जावेगा ॥

सांप का काटा अच्छा करने की दवा।

जिसे सांप काट खावे उसे पाव भर मट्टी फौरन खिलावे फिर वोह नहीं मरेगा॥

सांप का काटा अच्छा करने की दवा।

जिसे सांप काटे उसे फौरन कसौंधी के पत्ते रगड़ कर पिलावे जहर जाता रहेगा॥

सांप काटा अच्छा करने की सब में बढिया दवा।

श्री श्री श्री १००८ श्री श्री हजूर महाराजा साहब सजनसिंह जी बहादुर रतलाम के पास सांप के काटे को ऐसी अकसीर दवा है। जो कैसा ही सांप काट खावे उनकी दवा से जरूर बचजाता है रियासत रतलाम में सांप का काटा एक भी नहीं मरता महाराजा साहब का यह हुकम है कि सांप के काटे की जब कोई दवा मांगने कोट के दरवाजे पर आवे हमें फौरन खबर दो खा आधी रात्री क्यूं न हो महाराजा साहब बहादुर अगर सोते भी हों फौरन उठ कर दवा बखशते हैं उस दवा के खिलाते ही सांप का काटा अच्छा होजाता है परंतु जिसे सांप ने नहीं काटा वह उस दवा को खावे तो मरजाता है। यह हमारा खुद देखा हुआ है जब हम रतलाम में थे हमारे सामने ऐसा कई बार देखने में आया ॥

सांप का काटा अच्छा करते हैं।

गाम बरडया जो नीमच की छावनी के पास स्टेशन मल्हार गढ से १ मील है उस गाम में एक आदमी सांप के जखम को अपने मुख से चूस चूस कर थूक देता है सांप का काटा अच्छा होजाता है यह हमारा खुद देखा हुआ है ॥

सांप के काटे की और दवा।

सांप के काटे की दवा गवरमिंट अंगरेजी ने बडे तजरबे करके हासिल की है कसौली पहाड़ (Kasauli Hill) में जो पागल कुत्ते के काटे को अच्छा करने का हसपताल है वहां से १०) दस रुपये में एक शीशी मिलती है जिस से कई आदमी अच्छे हो सकते हैं अमीर आदमियों को एक शीशी दान करने को जरूर मंगाकर रखनी चाहिये जिसे सांप काटे अंगरेजी बारीक पिचकारी से फौरन डाक्टर से उसके खून में वह दवा चढाई जाती है चढाने की तरकीब शीशी पर लिखी है॥

सांप के काटे की और दवा।

पोटाशीमगनेट दवा जो सरकार कूवों में डाला करती है सांप के काटे जखम पर यह दवा फौरन बांध देने से जहर नहीं चढता डाक्टरों ने इस दवा का तजरबा अच्छी तरह से कर लिया है॥

हडकाया कुत्ता (पागल कुत्ता) काटे उस का जहर दूर करने का इलाज

जिसे हडकाया कुत्ता काट खावे उसे कसौंधी के पात पानी में रगड़ कर पिलावे जहर दूर हो जावेगा॥

शेर का वाल खाया हो उसका जहर दूर करने की दवा।

कसौंधी की जड़ पानी में रगड़ कर पिलावे शेर के वाल का जहर जाता रहेगा॥

जहर उगलाने की दवा।

जिस ने जहर खाया हो उसे कसौंधी के पात रगड़ कर पिलावे फौरन जहर उगल देगा अगर "कै" नहीं भी आवे तौ भी जहर का असर जाता रहेगा कसौंधी का पेड़ बहुत बड़ा नहीं होता इसके फूल जरद पात अमली जैसे होते हैं॥

नींद लाने वाली दवाई।

अच्छे को या बीमार का जिस को नींद आनी बंद हो गई हो वह यह दवा करे नींद जरूर आया करेगी॥

R,

Pot Bromidi	...	Gr. XV.
Chloral Hydrate	...	Gr. XV.
Aqua	...	oz. I.

Draught, to be taken at bed time.

अगर किसी को नींद न आती हो या जिसम में दरद सखत हो या बेचैनी हो तो सोती दफे एक खुराक इस दवा की पीवे तमाम तकलीफ मेटकर नींद लावेगी।

अथ बालरक्षा (बच्चों की हिफाज़त)

अब हम बच्चों की रक्षा का लेख लिखते हैं।

१—बच्चे के वारसों को चाहिये कि हर वक्त बच्चों की सरदी गरमी भूख पियास बिमारी वगैरा तकलीफें दूर करते रहैं, उनको दरिंदे भेड़िया, वगैरा परिंदे उकाव वगैरा जमीनी जानवर सांप, बिच्छू कानखजूरा वगैरा या और दूसरे डांस मच्छर पिस्सू खटमल भिरड ततैया मक्खी आग फूस वगैरा से बचाते रहैं ॥

२- बहुत सी स्त्री जब बच्चा पैदा होता है दाई नादान बेअकल ना तजरबेकार अनाड़न को बुलाती हैं ताकि बहुता देना न पड़े सो अनेक दाई बच्चा जब नहीं निकता स्त्री का पेट ऐसा बेकायदा मलती हैं या बच्चे को ऐसा बेकायदे दबाकर खैंचती हैं कि अनेक बच्चे स्त्री का पेट जोर से दबाने से या मलने से पेट में जरब पहुंचने से या जामते हुए खैंचने से मरजाते हैं अनेक की बांह टांग गरदन कमर में जरब पहुंच जाती है बड़े हो कर उनकी गरदन सीधी नहीं होती कितने कुबड़े हो जाते हैं कितने लंगड़े हो जाते हैं कितने लुंजे हो जाते हैं जिनको जन्म के लंगड़े लुंजे कहते हैं यह सब अनाड़ी दाइयों की किरपा होती है इसलिये दाम देने का लोभकर दाई अनाड़ी नहीं बुलानी होशयार दाई बुलानी चाहिये और जो धनवान हैं यदि उनके नगर में कोई असीसटैंट सरजन या हौसपिटल असीसटैंट या मेडीकल की पढी हुई डाक्टरनी हो तो बच्चा होने के समय उसे बुलाना चाहिये ॥

३—बच्चे जब पैदा होते हैं तो बाहिर निकलते ही रोने लगते हैं परन्तु बाजे बाजे बच्चे जब बाहिर निकल आते हैं वह देखने में खूब सूरत जिंदा मालूम होते हैं परन्तु न तो उनकी नबज चलती है न रोते हैं ऐसे बच्चे को दाई उनके वारिस को बुलाकर दिखाती है वारिस ना वाकफियत के सबब उसको मरा हुआ जानकर रोना पीटना शुरू कर देते हैं और झट से उस बच्चे को दरया में पधरा आते हैं जिन नगरों के पास दरया नहीं होता वहां जमीन में गाड़ आते हैं सो यह बड़ी गलती है ऐसे बच्चे मरे हुये नहीं होते मरे हुये बच्चों पर रूप नहीं होता इस किसम के बच्चे देखने में बड़े खूब सूरत होते हैं सिरफ बोलते नहीं सो ऐसे बच्चों के न रोने के दो कारण हैं एक जाति के बच्चे का खून नालवे में अटका रह जाता है सो ना वाकिफ दाई उस नालवे को काट देती हैं बच्चे के अंदर खून न पहुंचने से न बच्चा रोता है न नबज चलती है सो रोने कहां से और नबज चले कहां से सारी माया तो खून की है पस वह बच्चे

मरजाते हैं सो ऐसे नहीं रोने वाले बच्चे की फौरन सारी नाल ऊपर उठा कर उसका खून बच्चे की नाफ के द्वारे उसके पेट में सूंत देना चाहिये खून सूंत कर रेशम के मजबूत तागे बारीक तांत से नाफ के पास से नालवा बांध कर तेज कैंची या तेज चाकू से बाकी का फालतू नालवा काट डालना चाहिये परंतु यह खून बच्चा जामते ही फौरन सूत देना चाहिये अगर सूतने में देरी हो जावेगी। तो हवा लगने से खून ठंडा हो जाने के कारण नालवा मोटा हो जावेगा आ. फिर बच्चे को जिन्दा करने को काबिल नहीं रहेगा जब खून सूत कर नालवा बांध कर फालतू काटा जावे तो थोड़ी देर बाद बच्चा जरूर रुदन करने लगेगा फिर उसको तंदरुस्त समझो। दूसरी जाती के बच्चों का खून सिर में चढ जाता है बदन में न आने से वह रुदन नहीं करते सो जब नालवा सूतकर बांध देने से भी बच्चा न रोवे तो उसके सिर पर सरद जल के छींटे देवो सरद जलके छींटे देने से मगज का खून बदन में उतर आवेगा और थोड़ी देर बाद बच्चा रुदन करने लगेगा परंतु ऐसा मत करना कि दबा दब सरद पानी के तरडे ही देदो, सिरफ एक बार जरा से सरद पानी से छींटे देदो चाहे रोवे चाहे न रोवे और छींटे मत दो ऊपर लिखे अनुसार क्रिया करने से ना रुदन करने वाले बच्चे फौरन जिंदा हो जाते हैं॥

नोट—यह मत समझो कि केवल रोने वाले बच्चे का नालवा सूतना चाहिये नहीं बलकि हर एक बच्चा जब पैदा हो दाई को चाहिये कि उसकी नाल हाथ में पकड़ कर ऊपर उठाले ताकि यदि उस में कुछ खून हो वह नाफ के जरिये बच्चे के अंदर चलाजावे उस नालवे के ऊपर को जरा सहज से बतौर सूतने के हाथ फेरदे फिर रेशम का बारीक मजबूत तागा या तांत बांध कर पीछे नालवा काटे नालवा काटने में जलदी न करे॥

बाज बाज स्त्रियें अपने सिर की मेंडी में से जो सूतका नाला बंधा रहता है उस का तागा नालवे में बांधती हैं सो यह कार्य्य बहुत खराब है उस में उसके सिरका मैल या पसीना लग जाने से वह जहरीला हो जाता है बच्चे की तंदुरुस्ती को सखत नुकसान पहुंचाता है हरगिज बांधना नहीं चाहिये रेशम का बारीक तागा या तांत बांधना चाहिये यदि यह दोनों ही मयस्सिर न आसकें तो बारीक साफ सूत का मजबूत तागा बांध दो परन्तु फरज रेशम व तांत के बांधने का है जब एक बार बांध चुके उस को फिर खोलना नहीं चाहिये यदि खोला जावे तो बच्चा मरजाता है॥

यदि नालवा सूतने व सिरपर छींटे देने से भी न रोवे तो उस बच्चे की दोनों बांह के बाजू पकड़ कर सहज से उनको ऊपर नीचे करने शुरू करे इससे फेफडे को हरकत

पहुंचती है फेफड़े में हवा के पहुंचने से सांस आना शुरू हो जाता है बच्चा सांस लेना और रोना शुरू कर देता है विलायत में ना रोने वाले बच्चे इस तरह सैंकड़ों जिंदा कर लेते हैं सौ में से ९९ जी उठते हैं इस विषय में हम अपना तजरबा सुनाते हैं कि सन १९०० ईसवी में हमारे एक पोता जामा जो जन्मके बाद चुपचाप था न तो रोता था न देखता था न हिलता था न सांस लेता था न नबज चलती थी ऐसी हालत में नावाकिफ बच्चे के वारिस हाथ से बच्चा खो बैठते हैं उसे मरा हुआ जान कर गाड आते हैं या दरया में बहा आते हैं उस मौके पर हमारे घर में हमारे पुत्र असिसटैंट सरजन डाक्टर जयचन्द बी०ए०एम०बी० जिनका स्वर्गवास हो चुकाहै जो आला दरजे का होश यारथा अपनी केवल १९ वर्ष की उमर में बी०ए० और एम०बी० असिसटैंट सरजन जमात का पास कर अपने कालिज में अव्वल रहाथा जो एक आला खानदान जगत विख्यात जिन का नाम तमाम ऐशया यूरप ऐफरीका ऐमरीका में मशहूर है बाबू लाजपतराय साहबकी पुत्री से व्याहाथा जोमुझे और बाबू लाजपतरायजी को पजमुरदा कर सदाके वास्ते हमें तड़फते हुए छोड कर आप भर जवानी में चल बसा उस वकत घर में मौजूद था जब हौसपिटल असिसटैंट डाकटरनी जो बजाय दाई के हमारे यहां बच्चा जमाने को आई थी उसने कहा की डाक्टर साहब बच्चा रोता नहीं क्या हुकम है तब उन्हों ने कहा बच्चे को फौरन बच्चा खाने से बाहिर हमारे पास ले आवो वह फौरन बच्चे को बाहिर ले आई उस वकत रातका समय था श्रावण का महीना होने के कारण मकान में गरमी थी डाक्टर जयचंद ने कहा कि इस बच्चे को सब से ऊपरली मंजिल की छत के ऊपर हवा में ले चलो यह सुन कर हमारी स्त्रियें बहुत घबराई कि जन्मते बच्चे को ही यह ऊपर खुली छत पर ले चले बहुत कुछ कहने लगी परंतु हम बच्चे को ऊपरली छत पर ले गए जहां खूब खुली हवा आरही थी तब डाक्टर जयचंद ने उसकी दोनों बाहों के ऊपर से खवे के पासके बाजू पकड़ उस बच्चे की छाती (फेफड़ों को) हरकत देनी शुरू करदी जब करीब एक घंटे के उनका यह हरकत देते देते हो गया तो बच्चे को जरा जरा सांस आना शुरू हो गया लेकिन जब वह हरकत करनी छोड देते थे तो दस पंदरह मिनट सांस आकर बंद होने लगता था आखिर आधी रात के तीन घंटे तक उसको हरकत देने से बच्चा रो पड़ा और बच्चे को होश आगई और बच्चा जी गया पस ना रूदन करने वाले बच्चे को जलदी से दफन करना नहीं चाहिये हमारे लिखे अनुसार क्रिया करनी चाहिये बच्चा जरूर जिंदा हो जावेगा ऐसे मौके पर अगर कोई होशयार डाक्टर मिलसके तो उसे फौरन बुलालेना चाहिये ॥

४—जब कभी किसी स्त्री का दूध खराब यानि जहरीला हो जाता है या जामते हुए

या दूध चूंघते हुये बच्चे की माता मरजाती है तो ऐसी हालत में बच्चों का पालना बड़ा कठिन हो जाता है ऐसे बच्चों के वारिसों को बच्चा पलवाने के लिये धाय की जरूरत होती है सो यदि ऊंच जाति की धाय न मिले तो मुसलमानी, या मेम या छोटी जाति की धाय को ही देना पड़ता है ऐसी हालत में बाजे २ बिरादरी के मूरख लोग उनकी अपवित्रता की अनेक बातें बनाते हैं सो अनजान बच्चा अपवित्र नहीं होता इसलिये ऐसे मूरखों की कभी भी परवाह मत करो फौरन जिस धाय के दूध घना उतरता होय उसका दूध डाक्टर पर इमताहन करवा कर फौरन धाय को देदेना चाहिये परन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि बाजी २ धाय बच्चे को अपने देश या घर लेजाकर अपना दूध तो अपने बच्चे को पिलाती है पालने वाले बच्चे को इधर उधर का दूध देती रहती है चूंकि वह गरीब होती है बार २ उसके ताकत ताजा दूध नहीं खरीद सकती एक दफे का लिया हुआ सारे दिन रात पड़ा रहता है पड़ा २ वह खराब हो जाता है वही खराब दूध उसको देती रहती है इसका नतीजा यह होता है कि बच्चे का पेट बढ़ता चला जाता है हाथ पैर सूकते जाते हैं आखिर को बच्चा फना हो जाता है ऐसी हालत में बच्चा भी जाता है और धाय के खरच का धन भी जाता है इसलिये अगर धाय के देने वाले बच्चे के माता पिता में कुछ द्रव्य खर्च करने की शक्ति हो तो अपने मकान पर धाय को रख कर अपनी निगरानी में बच्चा पलवाना चाहिये देखो अंग्रेज लोग कभी भी अपने बच्चे को अपनी आंखों से अलग नहीं करते अपनी कोठी में ही धाय को नौकर रख कर अपने लाडले पलवाते हैं यदि तुम गरमी के कारण बच्चे के लिये अपने देश की आबहवा मुआफिक नहीं समझते तो गरमी की ऋतु में धाय के साथ अपनी स्त्री या बहन वगैरा खून से मिलती हुई कुटुंब की स्त्री को किसी पहाड़ पर भेज देनी चाहिये वहां एक मकान किराये लेकर नौकर रसोई दूध वगैरा का इन्तजाम कर लेवे और कम से कम दूसरे मास अपने बच्चे को जरूर देखने को जाना चाहिये। सरद ऋतु में घर पर ही बुलवा लेना चाहिये॥

५—यदि किसी को धाय न मिलसके या धाय का खरच बरदाश्त न कर सके तो एक गऊ दूध देती हुई मोल ले लेवे इस दूध से परवरिश करने की सब से उमदा तरकीब यह है की जो कांच कि शीशी बच्चों को दूध पिलाने वाली विलायत से आती है एक शीशी खरीद लेवे इसको चूची भी कहते हैं बड़े शहरों में यह चूची तखमीनन पांच आने को आती है यह दो जाती की होती हैं एक के मुंह पर तो रबड़ का टूटना (थनों कैसा मुंह) लगा रहता है दूसरी शीशी और टूटने के बीच में रबड़ की नली भी होती है सो नली वाली नहीं लेनी क्योंकि नाली अन्दर से अच्छी तरह साफ नहीं

हों सकती और जलदी फटजाने के कारण शीशी रही जाती है सो जब बच्चे को दूध पिलाना हो आधा दूध आधा पानी, यानि आध पाव (दसरुपये भर) दूध आध पाव पानी मिलाकर खूब गरम करके पकालेवे उस में एक रुपैया भर मिशरी या पताशे डाल कर जब सीलनवाया रह जावे शीशी में डालकर बच्चे के मूंह में वह टूंटना देकर शीशी अपने हाथ में ऐसे अन्दाजे से पकडे रहो कि दूध टूंटने के अंदर को बच्चे के मूंह में जाता रहे इतने बच्चा टूंटने को चसोडता रहे शीशी हाथ में लिये रखो जब वह पेट भर जाने के कारण पीना छोड़ दे शीशी को उठा कर रख दो शीशी को ऐसी जगह उठा कर रखो जहां उसके ऊपर किसी का पैर आकर वह फूट न जावे या मिठाई दूध की खशबू से उस में कीड़ी मकोड़े न चढजावें न चहे कतर जावें न उसके टूंटने पर मक्खी बैठ कर हगहग कर उसको जहरीला करें जब बच्चा भूख के सबब फिर रोने लगे फिर उसी तरह पिलादो जब उस में से सारा दूध बच्चा पीजावे उसी प्रकार फिर गरम करके दूध उस में डाल दो परन्तु बहुत गरम न डालना शीशी फट जावेगी और शीशी को प्रतिदिन अन्दर से गरम पानी से धोकर साफ कर देनी चाहियें ताकि उस में बाशी दूध का अंशबाकी न रहे शीशी के मूंह में लगे रहने वाले टूंटने अलग भी बिकते हैं सो पांच चार फालतू अलग भी खरीदने चाहियें क्योंकि वह बाजे वकत आप ही फट जाता है सो जब वह फट जावे उस को उतार कर फेंक दो दूसरा नवां उस कांच की शीशी पर चढा दो जब खरीदकर लाओ तो टूंटना उतारना चढाना दुकानदार से सीखते आओ यह रबड़ का टूंटना बडे शहरों में दो पैसे को आता है छोटों में जितने को आवे ले लेना रबड़ एक जाति का गून्द है जो इस को चमड़ा बताते हैं वह मूरख हैं सो मूरखों का कहना मानना योग्य नहीं आज कल बहुत से दुष्ट चीनी (बूरा) में वेसन नशेरा मिलादेते हैं यदि ऐसी दगा की चीनी बच्चे को दई जावे तो सखत नुकसान पहुंचा देवेगी और अगर रातबिरात को अंधेरे में चीनी के भुलावे बच्चे के दूध में गलती से मैदा आटा या पीसा हुआ नमक पड़ जावे तो बहुत खतरा है इसलिये अगर हो सके तो बजाय चीनी के दूध में मिशरी या पताशे गेरने चाहियें ॥

दूध बच्चे को देने वाला न तो बहुत गरम हो न सरद जरा यूंही मामूली सील नवाया हो॥

बच्चे को देने वाला दूध चीनी मिला हुआ बहुत देरका पड़ा हुआ न हो क्योंकि मीठा मिला हुआ दूध दो तीन घंटे के बाद खराब हो जाता है बच्चे को देने योग्य नहीं रहता वह बच्चे को नुकसान पहुंचाता है॥

बच्चे को दूध पिलाने के बाद जितना दूध शीशी में बच रहे तो मौसम सरदी में जब कि फिर उसे देने लगो तो उस को शीशी में से निकाल कर फिर जरा गरम करलो सरद मत दो मौसम सरदी में सरद दूध बच्चे को सरदी और बलगम पैदा करता है॥

ऐसा मत करो कि बच्चे के लिये आलस के मारे एक साथ ही सेर आध सेर दूध और सेर आध सेर पानी मिला कर गरम कर के रख छोड़ो उसी में से जब चाहो पिलाते रहो ऐसा दूध बच्चे को नुकसान करेगा दूध और पानी मिला हुआ तीन चार घंटे के बाद खराब हो जाता है इसलिये दूध और पानी इतना मिलाना चाहिये जो बच्चा दो तीन घंटे तक पी जावे।

बच्चे का दूध पहले मरतबे खूब पकालेना चाहिये ताकि उस में कच्चा पन बाकी न रहे कच्चे पन से बच्चे को सख्त नुकसान पैठता है॥

एक बारका गरम करा हुआ दूध दुबारा बच्चे को देने के लिये फिर बहुत गरम करने की कोई जरूरत नहीं केवल उसका ठंडापन दूर करने को जरा गरम कर लेना चाहिये॥

ऐसा नहीं करना कि दूध तो खूब पकालो और पिछे से पानी उस में कच्चा ही डाल दो ऐसा करने से कच्चा पानी बच्चे को फना करडालता है इस लिये दूध और पानी दोनों ही एक साथ मिलाकर खूब पकाना चाहिये॥

दूध में कीड़ी वगैरा चढजाने का ध्यान रखो जब दो देख भाल कर दो रातको जब पिलाओ दीवे के चांदने में देखलो॥

बच्चे को जहां तक हो गो का दूध देना चाहिये अगर किसी वकत गौ का न मिले तो बकरी का लेलो सिवाय गौ बकरी के और किसी जानवर का दूध बच्चे को मतदो॥

मौसम गरमी में कच्चा दूध बहुत देरतक नहीं ठहर सकता। इसलिये गरम करके उठाकर रखदो मौसम गरमी में दूध वाला बरतन ठंडे पानी में रखा रहे वह ठंडा पानी तीन चार घंटे के बाद बदल देना चाहिये पहला फैंक कर और ठंडा पानी उस में डाल देना चाहिये ठंडे पानी में रखा हुआ दूध गरम खट्टा नहीं होता खराब नहीं होता मौसम सरदी में एक अंगीठी में एक उपला (गोसा) राख में दबा रहे उसके ऊपर दूध का बरतन रखा रहे उसको जरा जरासी आंच लगती रहने से वह दूध बिलकुल भी सुबे का रखा श्याम तक खराब नहीं होगा॥

एक दफे का लाया हुआ दूध २४ घंटे तक मतदो दोनों वकत खरीदना चाहिये १२ घंटे के बाद का बचा हुआ दूध बच्चे को दोगे तो छाती पर जम जावेगा॥

बच्चे के देने वाला दूध बाजार से हलवाई से मत खरीदो क्योंकि हलवाईयों के मखनिया मखन निकाला हुआ दूध भी आता है भैंस, भेड़ आदि का मिला हुआ भी आता है वासी ताजे मिले हुये का कुछ विचार नहीं कितनों के दूध में नशासता मिला रहता है अगर अपने घर में दूध देने वाला जानवर नहीं है तो जहां से मोल लो अपने सामने निकलवाया करो दुकानदार का इतबार मतकरो ॥

बच्चे के लिये दूध गरम करने वाला बरतन बहुत पतला हो ताकि आग पर रखते ही दूध गरम हो जावे और सफर में हलका होने के कारण आसानी से साथ लेजा सके उस में कलई जरूर करवा देनी चाहिये ॥

बच्चे के लिये दूध उठाकर रखने वाले या दूध पिलाने वाले बरतन जहांतक मुमकिन हो चांदी जरमन सिल्वर एल्यूमिनियम कांसीरांग (कलई) जसत कांच आरन मैटल चीनीमिट्टी मट्टी या लकड़ी के हों ताकि दूध को कस न पहुंचे यदि यह भी पीतल या तांम्बे के हों तो इनमें भी कलई करवा दो ताकि दूध को कस न पहुंचे कलई नाम रांग के झोल फिरवा देने का है, चूंकि बच्चे छूछा से वरजित होते हैं, इसलिये बच्चों के वास्ते हर प्रकार के बरतन जायज हैं ॥

बच्चे के लिये दूध गरम करने को एक लोहे की अंगीठी जरूर खरीद लेनी चाहिये ताकि उसमें जलद आग सुलगाने से दूध रखते ही फौरन गरम हो जाया करे ॥

दूध के हिलाने का चमचा होना चाहिये छोटे बच्चे के मुंह में चमचा या तूती से दूध डालने से बच्चे के मूंह में एक साथ पड़ने से बच्चे को सखत नुकसान पहुंचता है जहां तक हो शीशी से देना चाहिये यदि शीशी न मिले तो बहुत छोटे बच्चे को रुई का फोया दूध में भगो भगो कर उस के मूंह में नचोड़ते रहें बड़े बच्चे को चमचा या तूती से पिलावें परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि जरा जरासा उस के मूंह में डालें जब पहला डाला हुआ निगलजावे फिर सांस लेने के बाद दूसरी बार डालो इस प्रकार डालना चाहिये जो अनजान पुरुष बच्चे के मूंह में दवा दब बहुतसा एक साथ डाले जाते हैं बच्चे गरल गरल करे जाते हैं कई बार दूध उसके नाक में को निकल आता है कई बार खपता नहीं कय कर देते हैं यदि खपता भी है तो छाती में बलगम पैदा हो जाता है ऐसे बच्चे जरूर जरूर मरजाते हैं सो जरासी देर लगने की तकलीफ से बचने के लिये बच्चा हाथ से खो देना बड़ी गलती है इसलिये बच्चों को दूध जरा जरासा आहिसते आहिसते देना चाहिये जो बच्चे कांक की दवों से दब नहीं देवे

चमच या तूती से देना पड़ता है उनके वास्ते सब से उमदा तजवीज यह है कि टीन का पीप जिनसे मटी का तेल बोतल चिमनी आदि में डालते हैं ऐसा एक टीन छोटासा बनवा लेवे नीचे से उस के टीनका मुड़वा कर उसका मुंह मोटा करवा देना चाहिये ताकि बच्चे के मुंह में न चुभे ऊपर से भी टीन का सिरा मुड़वाकर मोटा करवा देना चाहिये ताकि बच्चा कभी हाथ मारे उसके हाथ में न चुभे जब बच्चे को दूध दे इस पीप की डंडी बच्चे के मुंह में देकर उस में चमच से या तूती से जरा जरासा दूध डाली जावे जब पहला निगल ले सांस लेले तब दूबारा डाले ऐसे डालने से बच्चे का दम नहीं घुटता मुंह से बाहिर दूध नहीं खिंडता चमच वगैरा से मुंह से बाहिर खिंडने से चमच वगैरा से देनेसे या दवा दब बहुत देने से दूध मुंह से बाहिर खिंडकर गले की साथ बहकर कुरता वगैरा बच्चे के कपड़े में जाकर उसे भिगो देता है जो मौसम सरदी में भीग जाने से बच्चे के भीगा लगने से बच्चे को सख्त नुकसान पहुंचाता है गरमीमें भी कुरता दूध में लिहस कर गंधा होजाता है पस सब से उमदा तजवीज टीनके छोटे पीपसे देने की है यह जो लोगोंने मशहूर कर रखाहै कि बच्चों को ओपरा दूधमुवाफिक नहीं आता यह सिरफ उनको बेतरतीबी से देने का नतीजा है पस जो हमारी लिखी हुई तरकीब के मुवाफिक बच्चों को दूध देवेंगे उनके बच्चे बराबर परवरिश हो जावेंगे॥

मेलैनज फूड।

(MELLIN'S FOOD.)

यह एक जाति की सूकी हुई वस्तू (Powder) है इस का रंग सुफैदसा होता है यह शीशी १॥) रु० को आती है बच्चे को पिलानेवाले दूध में डालकर देनी चाहिये यह वस्तु बच्चों के बहुत आसानी से हजम हो जाती है कबज भी नहीं करती ताकत को बढ़ाती है जिस बच्चे के दूध में यह वस्तु डाली जावे उस में मिठाई डालने की कोई हाजत नहीं क्योंकि इस वस्तु में काफी मिठाई होती है इस के मिलाने का कायदा यह है कि जब बच्चे के वास्ते दूध गरम करना हो एक बरतन में आध पाव पानी डाल कर आग पर गरम रखदो जब पानी पकने लगे उस में एक तोला शीशी में से निकाल कर यह वस्तु डाल दो और चमचे या लकड़ी से हिलाते रहो जब यह वस्तु पानी में घुल जावे उसी में आध पाव दूध डाल दो जब दूध भी उस में मिला हुआ खूब गरम हो जावे तब उतार सील नवाया रहजाने के बाद शीशी में डाललो और पहिले जो बच्चे को दूध देने की तरकीब बयान हो चुकी है उस तरकीब के अनुसार बच्चे को दिया करो यह बच्चों को बनिसबत मामूली दूध के बहुत फायदे मंद है इसके इस्तेमाल से बच्चे मोटे हो जाते हैं॥

अमरीकन मिलक।

७—इस का अर्थ अमैरीका देश का दूध है इस को कानडैंसडमिलक (Condensed milk) यानि जमा हुआ दूध बोलते हैं यह सफैद रंगका दही जैसा होताहै और टीन के डब्बों में बन्द हुआ हुआ आता है आज कल इस का बहुत ही रिवाज चल पड़ा है विलायत आदि अनेक देशों में लाखों बच्चे इसी दूध से परवरिश किये जाते हैं जिन बच्चों को यह दूध दिया जाता है उनको उनकी माता या गऊ आदिक का कोई दूध देने की जरूरत नहीं इसी से बच्चे परवरिश हो सकते हैं और होते हैं खासकर सफ़र में तो यह बड़ाही फायदे मन्द है जब कभी स्त्री के इलावे दूसरे दूध पर परवरिश पानेवाले बच्चे को सफर में ले जाना पड़जाता है, तो अव्वल तो रास्ते में दूध का मिलना कठिन होता है यदि मिल भी जावे तो हर वकत पास रखना कठिन होता है क्योंकि उछल २ कर खिंडता रहता है ऐसी हालत में यह बड़ाही काम देता है एक डब्बा खरीदकर गठड़ी में बांधलिया जब चाहा दूध बनाकर बच्चे को पिलादिया या जब बच्चे की माता बिमार हो जाने के कारण उसके स्तनों में दूध नहीं उतरता तब भी इस से बच्चे का काम चला लेते हैं बहुत से साहिब लोग सफर में जहां दूध नहीं मिलता चाह में दूधकी जगह इसकोही इस्तैमाल करते हैं यह डब्बा तखमीनन सात आने को आता है इस डब्बे का मुंह ऊपर से रांग के साथ बन्द होता है ऊपर से खोल लेना चाहिये एकमास में एक बच्चे को दो डब्बे या हद तीन डब्बे काफी हैं इस के बनाने की तरकीब यह है कि जब बच्च को दूध देना हो आधपाव पानी खूब गरम करलिया उस डब्बे में से चमचे से दूध निकाल कर पानीमें डालकर हलादिया डालते ही फौरन दूध बनजावेगा यदि यह दूध बहुत गाढ़ा नजर आवे तो जरासा गरमपानी उसमें और डाल दिया यदि पतला नजर आवे तो जरा सा दूध टीन में से उस में और डाल हिलादिया जब एक बार बनानेकी अटकल पड़गई तो फिर उसी अंदाज से जब चाहा बनालिया और शीशी में डालकर पिलादिया जब दूध के पिलाने वगैरह क बरतन भी कलई आदिक के ही हों परन्तु यह एक साथ बहुतसा बनाकर नहीं रख छोड़ना बल्कि जब बच्चे को देना हो ताजा बनालेना चाहिये इसमें पानी कच्चा कभी भी मत डालना पानी खूब पकाकर डालना चाहिये बिना पका जल बच्च को सखत नुकसान पहुंचता है। इस में मिठाई वगैरः या मैलनजफूड वगैरः कुछ नहीं मिलाया जाता यह दूध और मिठाई दोनों का काम आपही देता है यह बच्चों को बहुत मुफीद है जो बच्चे इस पर परवरिश पाते हैं वह फूलकर तकिये से बने रहते हैं इस दूध में

दो खराबी भी हैं एक तो इस दूधपर परवरिश पाने वाले बच्चे मोटे तो हो जाते हैं परन्तु वह बहुते ताकत वाले नहीं होते दूसरे बहुत मुद्दत पड़े रहने से इस दूध में एक किसम का जहर पैदा होजाताहै पस यदि कोई सौदागर बहुत मुद्दत का पड़ा हुआ डब्बा दे देवे तो पुराना हो जाने के कारण बच्चों को मारडालता है जिस प्रकार मुद्दत के पड़े हुये लड्डू वगैरह जहरीले हो जाते हैं इसी प्रकार वर्षों तक पड़े हुये यह भी जहरीले हो जाते हैं देते ही बच्चा बीमार हो कर एक दो दिन देते रहने से मरजाता है सो जब यह टीन खरीदो किसी बड़े अंग्रेजी सौदागर से खरीदो जिस के यहां बहुत अंग्रेज आदि सौदा लेने आते हों क्योंकि इसका रिवाज अंग्रेजों में बहुत है जिस के जियादह माल की बिक्री होती है उसके नित नया माल आता रहता है पड़ा २ खराब नहीं होने पाता और जिन को अपने बच्चे इस दूध से परवरिश करने मंजूर हों जहां तक हो सके पारसल बम्बई कलकत्ता कराची से वैल्यू पेबल इकट्ठा दो तीन मास के खरच मुवाफिक डब्बे मंगवा लिया करें क्योंकि इन शहरों में नित नये जहाज आनकर उतरते हैं।

माता का दूध।

८—आज कल मेमों की देखमदेखी हमारे मुलक के अमीरोंमें ऐसा रिवाज फैल गया है कि बच्चे को उसकी माता का दूध छुड़वा कर ओपरे दूध पर डाल देते हैं या तो गउ बकरी का देने लगते हैं या ऐमरीकन वगैरा देते रहते हैं सो यह उनकी बड़ी भूल है बच्चे की तंदरुस्ती रखने को उसको ताकतवर बनाना को जितने फायदेमंद उसको माता का दूध है उतना और नहीं दूसरा दूध तो जैसे भूख में रोटी न मिलने से चने चाब कर गुजारा करना प्यास में पानी न मिलने से गन्ना चूस कर सबर करना ऐसे ही जिस को माता का दूध न मयसिर आवे उसकी परवरिश के वास्ते दूसरे दूध हैं जिन की माता सही सलामत हैं तंदुरुस्त हैं उनके दूध उतरता है उनका दूध जहरिला नहीं उन बच्चों को उनकी माता का दूध ही देना चाहिये॥

बच्चों को अकसर करके कबज हो जाता है जिस के कारण कई कई दिन तक टट्टी नहीं फिरते या खुल कर दस्त नहीं आता अरा जरासा सबज रंग का मैला घड़ी घड़ी चिरकते रहते हैं या बदहजमी हो जाती है जिस से मूंह और पेट दोनों जारी हो जाते हैं या केवल दूध ही उगलते रहते हैं छाती में बलगम पैदा हो जाने से खांसते रहते हैं छाती में दूध जमा हो जाता है पसली चलने लगजाती है बुखार आना शुरू हो जाता है आंखें दुखनी आजाती हैं चूतड़ों में चुरने पैदा हो जाने के कारण रात भर

दिल बलाते (रोते) रहते हैं सो ऐसी हालतों में अन पढ स्त्रियें अज्ञान होने के कारण बुड्ढे चमार झीवर वगैरा को बुलाकर गंडातवीज झाडे झपाडे करवाने शुरू करदेती हैं या देवी दिहाडी की बोल कबली बोलनी शुरू करदेती हैं या भूतडी परेतकी आसेब आदिक के नामके उतारे दिलवातीहैं और इलाज करती नहीं जिसका नतीजा यह होता है कि मुफत में धन को तो लूट कर पाखंडी झाडे झपाड़े वाले लेजाते हैं और बीमारी वढते २ अनेक बच्चे गुजर जाते हैं इसलिये गंडेताबीज झाडे झपाडे उतारे वगैरा बिल कुल बेफायदा हैं बिमारी विना दवाई देने के दूर नहीं हो सकती परंतु इस समय की स्त्रियें बहुत जिद्दी हैं सो अगर उन को जंत्र मंत्र झाड़े झपाड़े उतारे करने ही मंजूर हैं तो बेशक करें इस में केवल धन की ही हानि है। और कुछ नहीं परन्तु केवल इन ही के भरोसे रह कर बच्चे का इलाज न कराना गोया बच्चे को कतल करना है इसलिये इलाज भी जरूर करना चाहिये वगैर इलाज के बीमारी नहीं जा सकती॥

अनाड़ी विद्या प्राणों का घात।

१०—बीमार बच्चों का यदि कोई स्त्री इलाज भी करती है तो जो कुछ किसी ने बताया वही देना शुरू करदेती है इस बात की तमीज नहीं करती कि यह बताने वाला आया कोई तजुरबे कार हकीम है या अनाड़ी जो दवा इसने बताई है इसकी तासीर सरद है या गरम आजकल मौसम गरमीका है या शरदी का बच्चे को बीमारी कबज से है या बलगम से या सरदी से या गरमी से या बदहजमी से या किसी दूसरे कारण से पस ऐसी हालत में जिस प्रकार किसी आंधे के हाथ में ताली बजाते हुये कोई बटेर आगया उसी तरह यदि वह दवाई इतफाक से बच्चे को मुआफिक आगई तो बच्चा बच जाता है मरने में तो कुछ शक होता ही नहीं। इस लिये बच्चों को दवा बहुत सोच विचार कर देनी चाहिये यह नहीं करना जो किसी ने बताया सोई उठाया दे दिया जहां तक हो सके बच्चे का इलाज किसी तजरबेकार हकीम डाक्टर का करना चाहिये अगर कोई फकीरी चुटकला जडी वगैरा मिल जावे तो भी डर नहीं। परंतु फकीर लालची न हो लालची असल में फकीर नहीं होते फकीर के भेस में दगा बाज ठग झूठी मूठी पुड़िया देकर धनके ठगने वाले होते हैं उनकी उलटी पुलटी पुड़िया से बच्चे की जान का खतरा हो जाता है॥

अनाड़ी हकीमों की लियाकत।

११—अब हम अनाड़ी हकीमों की लियाकत का जिकर करते हैं॥

(१) एक मनुष्य नामरद था उस के घर में एक बहुत सुन्दर नार थी उसको

देख कर वह भोग न सकने के कारण हर वक्त रंजीदा रहता था आखिर को उसने अपनी जिंदगी से बेजार हो कर एक दिन संखिया खालिया इतफाक से जरासी देर के बाद उस को कै हो जाने के कारण वह बच रहा परन्तु संखियेने इतना असर कर दिया कि वह ना मरद से मरद हो गया इस से उसने यह तजुरबा हासिल किया कि संखिये से ना मरद से मरद हो जाता है सो जो उसको कोई अपनी ना मरदी की शिकायत करता हकीम साहब उस को वह संखिये की पुड़या दे देते जिस से मरीज साहब खाते ही मर जाते ॥

(२) एक मरतबे एक जमीदार को कबज हो गया वह हकीम के पास गया हकीम ने उसे गरीब जान कर अमलतास का गुद्दा खाना बताया जिस के खाने से उसका कबज जाता रहा इस से जमीदार ने यह तजुरबा हासिल किया कि बस यह दवाई क्या यह तो सरजीवन बूटी है एक दरखत अमलतास का उसके खेतमें खडा था सो जिस किसी को यह जमीदार बिमार देखता तो कहता मेरे पास आना मैं सरजीवन बूटी से बढ कर तुझे दवाई दूंगा सो जो आता एक फली अमलतास की उसे दे देता सो बिमारी अकसर कबज से ही होती है कबज दूर होने से अनेक को फायदा हो जाता सो हकीम साहब बहुत मशहूर हो गये एक मरतबे एक कुम्हार का गधा खोया गया वह भी इस के पास आया उसने उसको दो तीन फली दे दई कुम्हार को उन के खाने से रात के समय दस्त जाने की हाजत हुई वह कुरडी पर अपनी हाजत रफे करने के लिये गया वह गधा रात को चुगते चुगते कुरडी पर आन कर चुगने लगा कुम्हार देखे क्या गधा चुग रहा है फौरन पकड़ कर ले आया। एक मरतबे उस नगर के ठाकुर साहब ने अपनी स्त्री से खफा होकर उसको दुहाग दे दिया जमीदार की शोहरत सुन कर वह भी उस के पास पहुंची और उस को हाकमनी जानकर पांच फली दे दई जिस के खाने से इतने दस्त लगे कि बहुत कमजोर हो कर करीबुल मरग हो गई हाकम ने जब यह माजरा सुना उसकी मृत्यु का समय जान कर आखरी मुलाकात करने आया उस को रुदन करती हुई देखत कर बहुत रहम आया और उस का कसूर मुवाफ करके इलाज कर फिर सुहाग दे दिया ॥

(३) एक मरतबे अकबर ने बीरबल से पूछा कि दुनियां में हकीम जियादा हैं या मरीज। बीरबल ने कहा हकीम जियादा हैं बादशाह ने कहा इसकी परीक्षा क्या बीरबल ने कहा सुबह को परीक्षा दूंगा सुबह होते ही बीरबल और बादशाह उस मुकाम पर जहां को लोग जमना जी से न्हाकर आते थे भेष बदलकर जाखडे हुए एक तीसरे

आदमी के उसकी आंख के पटी बांध कर बिठादिया और उस को कहा कि तू रोतारह लोग आते जाते पूछने लगे कि यह क्यों रोवे है बीरबल बोला इसको आंख दुखे हैं सो जो आता पूछ कर कुछ न कुछ दवा बता जाता हजारों आदमी लंघे सबै ने पूछा और जो समझ में आई दवा बता बता कर चल दिये तब बीरबल बोला कि देखिये जहांपनाह दुनियां में मरीजों से हकीम जियादा हैं सो यही हाल हकीमों का है हर कोई अपने तैंई छोटा मोटा हकीम समझता है एक दवाई को ही हर बीमारी में देना शुरू कर देते हैं मरीज की तबीयत मौसम का असर दवाई का खाला जाने बदून ही संखिया बताने वाले के तुल्य अनेक मरीजों को फनाह करते हैं इसलिये ऐसे अनाडियों का इलाज करना सखत गलती है ॥

१२—बच्चों को कुछ तमीज नहीं होती ख्वाह अच्छी जगह हो ख्वाह गंदीजगह हो ख्वाह मंजा हो ख्वा बिस्तरहो ख्वाह गोद में लेटे बैठे हों ख्वाह उमदा कपडों पर जहां चाहें या जब चाहें झट से मैला या पेशाब कर देते हैं जहां चाहें मैली कुचैली जगह में लेट जाते हैं बैठ जाते हैं जो हाथ में आवे चट पट मूंह में ही दे लेते हैं, जहर व इमरत बुरे व भले की कुछ भी तमीज नहीं होती यहां तक कि बाजे बाजे बच्चे तो टट्टी फिर कर रुडकते रुडकते उसमें सारे सन जाते हैं ऐसी हालत में जो बच्चों को लेने पकडने धोने पूंछने से बच्चे को या अपने तैंई अपवित्र मानते हैं वह नादान हैं बच्चे इन किरया करम से अज्ञात होने के कारण हर प्रकार की छूआ व रोक टोक से वरजित हैं देखो एक दफे बांदी ने बच्चे को लाकर बादशाह की गोदी में दे दिया ज्यूंही बादशाह उसको गोद में लेकर उस का मूंह चूमने लगा बच्चे ने दोनों हाथों से बादशाह की दाडी कस कर पकड़ली बादशाह ने यह विचार कर कि जब जरा से बच्चे ने सरे इजलास मेरी दाढ़ी उपाड ली तो जब यह बड़ा होगा तो तब मेरा क्या हाल करेगा उसके मार डालने का हुकम दे दिया वजीरने झट से दरवान को इशारा कर एक सपेरे को बुला कर उस के आगे एक छोटासा सांप गिरवादिया बच्चे ने दौड कर उसको पकड़ लिया और अपने मूंह में देने लगा बादशाह हैरान हुआ वजीरने अरज करी कि यह इन बातों से नावाकिफ है नावाकिफ को सजा देनी योग्य नहीं बादशाह ने फौरन मुआफ कर दिया इस लिये अमजान बच्चों को इन कियाओं के करने से अपवित्र मानना सखत गलती है उनके पेशाब आदि से डरकर उनको लेने से इनकार करना नहीं चाहिये बरा बर लेकर खिलाना पिलाना चाहिये ॥

१३—बाजो २ स्त्रियें बच्चों को तागडी नहीं पहनाती इस से बच्चों को बडी हानि

पहुंचती है इस का कारण यह है कि जब बच्चा पैदा होता है तो उसके पेट से जंगासी तक एक खोल कहिये रास्ता होता है यदि इसके तंग करने का इन्तजाम किया जाय तो ज्यों २ बच्चा बड़ा होता है यह रास्ता तंग होता जाता है यदि इस के तंग होने में जरा देरी पड़ जावे तो बाजे बच्चों के अंतड़ीया हवा नीचे उतरनी शुरू हो जाती है जिस से बच्चा गृहस्थ सेवने के काबिल नहीं रहता सो इसके तंग कर देने का इन्तजाम यही है कि बच्चे की कटि में कुछ कसके बांध देना चाहिये सो इस देश में इस छेक के तंग करने के लिये एक सूत का मोटा डोरा बांध देते हैं जो हर वक्त बंधा रहता है इस को तागड़ी बोलते हैं इसके बांधने से वह छेक रफता २ तंग होता जाता है और जब तक वह बंधा रहे छेक तंग हो रहता है बढता नहीं परन्तु यह चांदी सोने की तागड़ी पहनाना बिलकुल बे फायदा है जो पुरुष असली तागड़ी के फायदों से अज्ञात थे उन्हों ने यह सूत की तागड़ी कम कीमत की जान कर इसको छोड़ कर चांदी सोने की कीमती पहननी शुरू करदी है सो यह ढिली रहती है इस से केवल शोभा है और कोई फायदा नहीं इसलिये तागड़ी सूतकी ही पहननी चाहिये अंग्रेजों वा मुसलमानों में तागड़ी की जगह पेटी बांधते हैं यह देशदेश का रिवाज है परन्तु यह तागड़ी सूतके तागों की वगैर वटी होनी चाहिये ताकि बच्चे की कटि में उसके कसने से आंट कहिये कटाव न पड़े लोगों ने मजबूती के ख्याल से तागड़ी को पेंठे देकर पहनाना शुरू कर दिया है सो इस से मांस में नशान पढ़ जाता है इस लिये तागड़ी वगैर वटी ही होनी चाहिये और न बहुत सखत कसके न बहुत ढीली बलके मामूली तौर से कसकर पहनानी चाहिये और बचपन से लेकर बुढापे तक सारी उमर पहननी चाहिये तागड़ी की जरूरत दिखलाने के लिये हम शास्त्रों से एक मिसाल देते हैं देखो हालांकि तीर्थङ्कर के बिमारी नहीं होती परंतु जब इन्द्राणी सुमेरपर्वत पर भगवान को जेवर पहनाती है तो जगत में मर्यादा बनी रहने के वास्ते तागड़ी जरूर पहनाती है पस तागड़ी जरूर पहननी चाहिये इसमें बड़े गुण हैं ॥

बाजी २ ना तजरबेकार स्त्रियें बच्चों को अफीम देनी शुरू करदेती हैं उनका यह विचार होता है कि इससे बच्चे बार बार टट्टी नहीं करते इससे स्त्रियों को यह आराम होता है कि बच्चे को किसी खटोले वगैरः पर पड़ा दिया बच्चा अफीम के नशे में खेलो जाता है रुदन नहीं करता स्त्रियें उसके खिलाने को उस को लिये लिये फिरने से बच जाती हैं दूसरे उसके बार २ टट्टी न फिरने से बार २ स्त्री के कपडे नहीं भरते तीसरे कपड़ों के न भरने से बार २ उनके धोने से बच रहती हैं चौथे बच्चे से फुरसत मिलने से अपने घर का काम करती रहती हैं सो इस अपने जरा से फायदे के वास्ते बच्चों की जड़ काट देती हैं अफीम का देना बच्चा पर बड़ा जुलम करना है क्योंकि

बच्चों का मेदा बहुत छोटा सा होता है उस में जमा रखने की गुंजायश नहीं होती ज्यूं बच्चे बार २ दूध चूंघते रहते हैं ज्यों ही बार बार टट्टी फिरते रहते हैं २४ घंटे में कई दफे दूध पीते हैं कई दफे टट्टी फिरते हैं सो अफीम के देने से बार २ का टट्टी फिरना बन्द हो जाता है उसी कद्र अंदर मलवा रुका रहने के कारण बार बार दूध पीने की समाई नहीं रहती खुराक कम पीने के कारण बच्चा कमजोर रहता है जब पैदा होने पर ही कमजोरी पड़ गई फिर वडे हो कर उसने क्या ताकत धारण करनी थी दूसरे अफीम के खाने से लहू सेहत बख्श पैदा नहीं होता अफीमी के अन्दर खून रेशे सहित पैदा होने लगता है इसका नतीजा यह होता है कि जिन बच्चों को बचपन में अफीम दी जावे वह वडा हो कर अकसर बीमार रहता है अर्थात थोड़ी उमर में ही मरजाता है अफीम से कबज होने के कारण अनेक बीमारी बच्चों को हो जाती हैं कबज सारी बीमरीयों की माता है और कबज की माता अफीम है जिन बच्चों को कबज रहता है उनके बवासीर तो अंकर ही पैदा हो जाती है जिस से सारी उमर दुःख भुगतता रहता है अफीम ऐसी जहरीली दवा है कि इलम डाकटरी में छै मास तक के बच्चे को तो बिमारी में तो दवा कभी नहीं देते सख्त मुमानियत है इसलिये बच्चों को अफीम हरगिज नहीं देनी॥

१५—बच्चों को जेवर पहनाना तो इस मुलक में आम रिवाज चल पड़ा है रात दिन हर एक अखबार में यही देखने में आता है कि फलाने नगर में उच्चके ने बच्चे का जेवर उतार गला घोट कर मारदिया है या मार कर दरया या कुआंमें फैंक गया है सन १८९७ ई०में बरेली फ़तेगंज तहसील फिरोजपुर में एक महाजन ने अपने दो सके भतीजों को साठ या सत्तर रुपये के जेवर के लालच से मार कर उनका जेवर उतार उन दोनों को कूवे में फैंक आया था अनेक घर के नौकर जेवर के लालच से बच्चों को मार देते हैं पडोसी पडोसन मार देते हैं अखबारों में हजारों लेख रात दिन ऐसे देखने में आते हैं हजारों बच्चों की जान जेवर पहनाने से जाया होती हैं बच्चे को जेवर पहनाना गोया काला नाग उनके गले में गेरना है अर्थात् हर वकत उनकी जान को खतरे में डालना है इसलिये बच्चों को जेवर हरगिज नहीं पहनाना चाहिये ॥

१६—श्याम के वकत बच्चों को दरखतों के पास नहीं लेजाना चाहिये क्योंकि तमाम दिन दरखत जहरीली हवा चूसते रहते हैं जिस को फिर वह श्याम को उगते हैं सो जहरीली हवा लगते ही कोमल बच्चे बिमार हो जाते हैं जिस को स्त्रियें यह कहती हैं कि इस बच्चे को मैं फलाने दरखत के पास लेकर गई थी वहां से इसे कोई भूतनी आदि चिमट गई है सो वह भूतनी नहीं होती जहरीली हवा की तासीर होती है इसलिये श्याम के वकत बच्चों को दरखतों के पास नहीं लेजाना चाहिये ॥

१७—बाजी स्त्रियें असनान करके तुरत ही बच्चे को गोद में लेलेती हैं सो मौसम सरदी में ऐसा २ करने से बच्चे को फौरन सरदी हो जाती है इसका कारण यह है कि जब इनसान असनान करता है तो शरीरमें से रूवों के द्वारे बुखारात निकलते हैं बच्चों को इनके लगने से सरदी हो जातीहै इस लिये मौसम सरदी में जब स्त्री असनान करे जब बदनसुक जावे असनान करने से आध घंटा बाद बच्चे को लेवे न्हाकर तुरत ही बच्चे को दूध तो गरमी में भी नहीं चूंघावे इससे भी बच्चा बिमार हो जाता है॥

१८—सरद ऋतु में रात को खुली हवा में बच्चा निकालना सखत गलती है अनेक बच्चों को ठण्डी हवा लगकर निमोनिया हो जाता है रात्री को ठंडी हवा में बच्चा नहीं निकाले अगर बच्चा बिमार हो बच्चे को बुखार हो तो सरद ऋतु में दिन में भी बच्चे को खुली ठंडी हवा में नहीं निकालना चाहिये॥

१९—मौसम सरदी में जब रात को बच्चा टट्टी फिर कर अपना बदन भर लेता है बहुत भरजाने के कारण स्त्री उसको धोती है गरम पानी करने का तो आलकस करती हैं ठंडे में ही धोदेती हैं ऐसा करने से अनेक बच्चों को शीत हो जाता है सो ऐसी हालत में रात को सिरफ बच्चों का बदन कपडे से पूंछ कर साफ करदेना चाहिये फिर दिन में गरम पानी से धोवे अगर रात को ही धोना हो तो गरम पानी से धोवे।

२०—बाजी स्त्रियें मौसम सरदी में चारपाई के नीचे आग की अंगीठी रख कर चारपाई पर बच्चे को लिटा देती हैं ताकि अगनी की गरमी से बच्चेको सरदी न लग सके अग्नी की नवाच (गरमाई) में बच्चा पड कर सो जावे ऐसी हालत में कई मरतबे खाट के नीचे तेज अग्नी रखने से खाट के बाणों को सेक लगते लगते वह जल उठते हैं उनका जलना था कि बिसतर में आग लगकर बच्चा जलजाता है स्त्रियों को मंजे के नीचे तेज अगनी नहीं रखनी चाहिये और कपडे वगैरा का न लटकने देने का ख्याल रखना चाहिये अगर खाट के नीचे कोई बान लटकता हो तो उसे कैंची से काट डालना चाहिये॥

२१—जिन धनवान पुरुषों के औलाद नहीं होती उसके धन का हक जिन रिश्तेदारों को पहुंचता है वह यह ताकते रहते हैं कि कब यह मरे कब माल हाथ आवे हर वकत उसकी मृत्यु ही मनाते रहते हैं यदि उसके किसी कारण से बडी उमर में बच्चा पैदा हो जावे या वह गोद लेलेवे तो हर वकत उस बच्चे को मरवा देने की कोशिश में रहते हैं अनेक बच्चे ऐसे दुष्टों की साजिस से जहर देकर या छज्जे या कोठे से धक्का देकर गिरा देने से मारे जाते हैं सो ऐसी हालत में किसी रिश्तेदार स्त्री या मरद या उनके मुलाजिम वगैरा का खिलाने पिलाने का इतबार नहीं करना हर वकत बच्चे को

अपनी निगहबानी में रखना अपने हाथ से उसे खिलाना पिलाना और रिश्तेदारों से कतई ताल्लुक हटालेना चाहिये अपने मकान में उनको नहीं फटकने देवे ॥

२२—बाजे बाजे धनवान हवेली बनाने में तो हजारों रुपैया लगादेते हैं परंतु छज्जे पर जंगला लगाने में चालीस पचास रुपया भी खरच नहीं करते अनेक बच्चे छज्जे से सहन में गिरते ही मरजाते हैं यदि कोई बनवाता भी है तो केवल डेढ फुट या पौने दो फुट ऊंचा बनाते हैं उनका खियाल यह होताहै कि कोई छोटा बच्चा गुडली २ चलता हुआ छज्जे से न जापड़े यह नहीं विचारते कि थोड़ा ऊंचा छज्जा होने से बड़े बच्चों को भी झोक लगती है अनेक बडे बच्चे भी झोक लगकर छज्जे से गिर कर मरजाते हैं। इसलिये छज्जे का जंगला अव्वल तो तीन फुट ऊंचा लगवाना वरने ढाई फुट से तो हरहालत में कम नहीं होना चाहिये और जहां हजारों रुपये हवेली पर खरच करते हैं वहां अगर अपने बच्चों की मामता है और उन की जान को खतरे में डालना नहीं चाहते तो छज्जे पर ऊंचा जंगला जरूर बनाना चाहिये अगर बनवाने के समय पूंजी थोड़ी हो तो कुछ कमरे कम बनवाओ परंतु छज्जे पर जंगला जरूर बनवाना चाहिये ॥

२३—बाजे बाजे पुरुष ऊपरली मंजिल में जो हवा आने के लिये बारियां रखते हैं उन में जंगले नहीं लगवाते सो अनेक बच्चे उन में खेलते हुये गिर कर प्राण देदेते हैं सो बारियों में लोहे या लकड़ी आदिक के जंगले जरूर लगादेने चाहियें या बाहिर की तरफ लकड़ी या बांस के मजबूत डंडे पडेरूख लोहे की किलों से चौकट के बाजूओं में जड़वा देने चाहियें परंतु यह डंडे एक दूसरे से इतने फासले पर जड़वाओ कि उनके बीच को खेलते हुये बच्चे बाहिर न गिरसकें ॥

२४—बाजे बाजे पुरुषों को रसोई में बैठे बैठे कूवों में से जल निकालने का बड़ा शौक होता है इस लिये वह रहने वाली हवेली में ही कूवा बनवा लेते हैं सो और इतफाक तो बच्चों के खतरे का कभी कभी होता है यह खतरा हर वकत का हो जाता है घर में बच्चा हर वक्त खेलता रहता है हर वकत का ध्यान रखना कठिन है बच्चे कुवे के पास भी खेलने लगते हैं माता पिता की गैर हाजरी में कूवों में झाकने लगजाते हैं अनेक बच्चे कूवों में गिर कर मरजाते हैं बछड़ा वगैरा जानवर गिरजाते हैं औरतें खफा हो कर कूवों में डूब जाती हैं दुनया में अपने रहने वाली हवेली में कूवा बनाने समान दूसरी गलती नहीं है हरगिज अपनी हवेली में जहां अपने बाल बच्चे रहते हों कूवा बनवाना उचित नहीं ॥

२५—अनेक बच्चे झीलों में जोहड़ों में तालाबों में दरयावों में नदियों में असनान करने या कवल ककड़ी या निलोफर के फूल फल वगैरा तोड़ने चले जाते हैं कितने ही डूब

जाते हैं कितनों को तांदवा नाकू पसल बड़े कछवे वगैरा खाजाते हैं सांप डस जाते हैं इसलिये बच्चों को दरयाव तालाव वगैरा में स्नानादि करने को हरगिज नहीं भेजना॥

२६—आज कल बडे बडे शहरों में अंगरेजी दवाइयों का बहुत रिवाज है बहुत से पुरुषों को प्रति दिन हाजमा या ताकत की दवाई खाने का बड़ा शौक पैदा होजाता है, वह आप ही उनके कतरे गेर कर पानी में मिक्चर बना बना कर पिया करते हैं छोटे छोटे बच्चे देखते रहते हैं उनका जी भी पीने को करता है, अपने माता पिता की गैरहाजरी में तेजाब या स्टिकनिया या आरसैनिक वगैरा की शीशी जो उनके हाथ आवे उठा कर चोरी से पी जाते हैं पीते ही मरजाते हैं क्योंकि अंगरेजी दवाई अकसर जहरों से निकाली जाती हैं स्टिकनियां ऐसा जहर है कि एक चावल भर के खाने से १६ आदमी मरजाते हैं आरसेनिक संखिये से बनता है तेजाब फौरन कलेजा फाड डालती है, अंग्रेजी दवाई बच्चों का हाथ पहुंचने वाली जगह रखना सखत गलती है बच्चों के घर में जहरीली दवाई या तेजाब वगैरा ताले के अंदर रखनी चाहिये।

२७—बाजे बच्चे हर वकत हाथ में तेज चाकू लेकर कुछ छीलते बनाते रहते हैं कई मरतबे अंगुलियां हाथ की नस काट लेते हैं। हाथ में सरोता उठा कर अपने माता पिता की रीस कर उनकी गैरहाजरी में सुपारी काटने लग जाते हैं फौरन हाथ काट बैठते हैं। पस छोटे बच्चों को चाकू कैंची उसतरा सरोता वगैरा औजारों के पास नहीं आने देना चाहिये और इनके लेने की उनको इजाजत भी नहीं देनी चाहिये। जिन के घरों में छोटे बालक हों, सेलखडी जिसे संग जराहत कहते हैं पीस कर एक शीशी में रख छोड़नी चाहिये हर वकत घर में तैय्यार रहे, जब कभी चाकू वगैरा मार लेने के जखम से या चोट लगने से खून जारी हो फौरन जखम पर वह पिसी हुई सेलखडी डाल कर पटी बांध देनी चाहिये, इसके लगाने से खून फौरन बंद हो जावेगा जखम हरगिज नहीं पकेगा, दो तीन दिन में बिलकुल अच्छा हो जावेगा॥

२८—सैकड़ों नादान स्त्रियें जब रोटी पकाती हैं लापरवाही से बच्चों को पास आने से नहीं रोकती अनेक बच्चे चटा पट गुडलियों गुडलियों आन कर गर्म गर्म दाल कढी घी दूध तेल पानी बाखर वगैरः में हाथ पांव वगैरः देदेते हैं या लोहे की तपती हुई अंगीठी को आन कर हाथ लगा देते हैं गरम तवा पकड़ लेते हैं इस प्रकार की गफलत से अनेक बच्चों के हाथ पैर बदन जल जाते हैं स्त्रियों को चाहिये ऐसे मौकों पर बच्चों को चुल्हे अंगीठी तवा भट्ठी तंदूर वगैरा गरम वस्तु के पास नहीं आने देवें॥

२९—अनेक पिता हजामत बनवाते हुए छोटे बच्चों का ध्यान नहीं रखते बच्चा झट से आन कर उसतरा पकड लेता है पकडते ही अंगुलियां कट जाती हैं छोटे बच्चे को उसतरे के पास नहीं आने देना चाहिये॥

३०—बाजे बाजे माता पिता बच्चे को जलते हुए लंप चिमनी वगैरा के पास छोड कर अपना ध्यान दूसरे कामों में कर लेते हैं। छोटा बालक झट से लंपादिक में हाथ मार कर उसको गिरा देता हैं। मट्टी का तेल ऊपर गिरते ही बच्चे के कपडों में आग लग कर तमाम बदन की खाल जल जाती है अनेक मकान हजारों लाखों रुपये के मालसे भरे हुए जल जाते हैं छोटे बालक को लैम्प वगैराके पास नहीं आने देना चाहिये।

३१—रेल में बैठ कर बाजी स्त्रियां पुरुष बच्चों से लापरवाह रहते हैं रेल का दरवाजा हर इटेशन पर खुलता रहता है। बच्चे दरवाजे पर खडे होकर देखने लगते हैं झट से रेल के कर्म चारी दरवाजा बन्द कर देते हैं अनेक बच्चों का हाथ किवाड में पीसा जाता है। या बाजे वक्त रेल के किवाड की चटखनी गलती से भेडनी रह जाती है। जब बच्चा चलती हुई रेल में तमाशा देखने को किवाड पकड कर खडा होता है। चटखनी के खुले रहने से एक दम किवाड बाहिर को जाकर बच्चा रेल से बाहिर आ पडता है। या गोदी में से उछल कर रेल की मोरी में से बाहिर जा पडता है एक मरतबे एक स्त्री अमृतसर से सवार हो कर लाहौर को आरही थी रेल की मोरी में बैठी बच्चे को गोद में लेकर उस से प्यार कर रही थी वह जरा दूसरी स्त्री से बातें करने लगी बच्चे का ध्यान नहीं रक्खा ज्यों ही बच्चा गोद में से उछला चलती हुई रेल से बाहिर जा पडा माता भी मुहब्बत के मारे साथ ही कूद पडी दोनों प्राण रहित हो गये ऐसीवारदात अनेक हो चुकी हैं रेल में बच्चे की बडी खबदारी रखे। जब बच्चा कवाड के पास जावे कवाड की चटखनी देख लेवें जब कवाड खुले बच्चे को पास न आने दो जब बंद करे चटखनी देख लेवे। छोटे बालक वाली स्त्री रेल में मोरी के पास न बैठे बीच में बच्चे को लेकर बैठे॥

३२—बाजी बाजी स्त्री मंजे पर बैठ कर सीना परोना शुरू कर देती हैं पास ही बच्चे को लिटा लेती हैं, बाज दफे मंजे पर सूई रख कर भूल जाती हैं, या गिरपडती है, कई मरतबे बच्चों के चुभ जाती है ऐसे मौके पर सूई वगैरा का ध्यान रखना चाहिये और छोटे बच्चों को चार पाई तखत कुरसी वगैरा पर अकेला नहीं छोडे क्योंकि गिर पडने का खौफ है॥

३३—ग्रामों के रहने वाले अकसर हुका पीते हैं घर में एक गढा खोद कर उस

में हर वक्त उपले (गासा) की आग जलती रहती है उनको धूंई बोलते हैं कितने ही बच्चे उस में हाथ पैर देकर जला लेते हैं। पस छोटे बच्चे वाला अपने मकान में धूंई नहीं डाले डाले तो ऐसी जगह पर डाले जहां बच्चे जाने का खतरा न हो॥

३४—बाजे बाजे बच्चे दुकान से उतर कर या मकान से निकल कर सडकों पर खेलने लग पड़ते हैं ऊपर से दौड़ती हुई बग्घी आजाती है ऐसे बच्चे घोड़ों के सुमों या बग्घी के पहियों के नीचे चिकले जाते हैं कितने ही बच्चे गली कूचों में भैंसादिक के नीचे आजाते हैं छोटे बच्चों को अकेला सडकों पर गलियों में नहीं जाने देना चाहिये॥

३५—कितने ही आदमियों को अपनी बग्घी या गड्डी में,हवा से बातें करने वाला (बडा तेज दौडने वाला) जानवर रखने का शौक होता है ऐसी हालत में जब घोडा बेवश हो जाता है और वाग की परवाह नहीं करता सिरतोड उड़ा चला जाता है ऐसी तेज घोडेवाली असवारी में बच्चे को साथ लेकर बैठना बडी गलतीहै। ऐसी हालत में अनेक खून हो चुके हैं। ऐसे घोडे की यदि दौडते हुए वाग टूट जावे तो बस कहर ही आजाता है भागवान घरों में जिन के बग्घी घोड़े रहते हैं एक छोटे कदका बड़ा गरीब खूब सूरत जानवर बच्चों और स्त्रियों की सवारी में जोडने को अलग रखना चाहिये॥

३६—अनेक गाडी या बघी में बच्चों को सवार करके लापरवाह हो जाते हैं कितने ही मरतबे पहियों की रगड से बच्चे के हाथ पैर रगड़े जाते हैं बच्चे को जब गाडी वगैरा में अपने पास बिठावे हर वकत उसका ध्यान रखना चाहिये॥

३७—बाजे बच्चे जेब में दीवासलाई की डबी रखनी शुरू कर देते हैं जब उन के माता पिता इधर उधर होते हैं तो उनकी गैरहाजरी में दीवासलाई बाल बाल कर देखते हैं। बाज वकत कपडों में आग लग जाने से कितने ही बच्चे जल कर मर जाते हैं। बाजे अनजान बच्चे दीवासलाई का बलने वाला सिर मुंहमें देलेते हैं उस पर फोरफरस लगा रहता है यह एक बडी जाति का विष है। ज्यादा दिवासलाई का सिर चाटने से बच्चा क्या बडा भी मरसक्ता है। छोटे बच्चों को दिवासलाई नहीं लेने देना चाहिये॥

जैनबालगुटकादूसराभाग ।

पांचवां अध्याय ।

इस पांचवें अध्याय में प्रति बिम्ब के प्रक्षालन करने की विधि तथा शुद्ध पंच कल्याणक तिथि और १३ पंथी २० पंथी दिगम्बर आम्नाय की पूजन करने की विधि का वर्णन है ॥

अथ प्रक्षालन करने की विधि ।

अब हम बच्चों को यह सिखाते हैं कि ऐ बालको जब तुम बड़े हो जाओ तो प्रतिबिम्ब का प्रक्षालन इस विधि से करो ॥

१—प्रक्षालन करने वाले को चाहिये कि प्रतिबिम्ब का प्रक्षालन प्रातःकाल ही करे ताकि प्रतिबिम्ब का स्पर्शा हुआ जल(गंधोदक) हर एक दर्शक को मिल सके क्योंकि जो स्त्री पुरुष प्रक्षालन होने से पहले दर्शन करके बगैर मिलने गंधोदक के चले जाते हैं उन के दिल में गंधोदक न मिलने का जो अफसोस होता है उस पाप के भागी वही पुरुष हैं जो प्रक्षालन करने को देरी से आते हैं ॥

२—प्रक्षालन करने वाले को चाहिये कि मंदिर में आन कर स्नान करे ताकि स्नान करके अपने गृह के कपड़े पहनने न पड़ें क्योंकि अपने गृह में कपड़े पहने हुए बाजों को घर में अनेक ऐसे काम करने पड़ जाते हैं जिन से वह कपड़े अपवित्र हो जाते हैं गोद में खेलता हुआ बच्चा बाज वकत कपड़ों पर मूत देता है या मनुष्यों की भीड में वह वस्त्र मलेच्छ या नीच से छू जाते हैं बाज वही वस्त्र पहने भोजन करते हैं या पिशाब करते हैं या टट्टी जाते हैं या स्त्री से दुनिया दारी करते हैं या कारबार में मिट्टी गरदे का काम करते हैं सो घर में स्नान करके फिर ऐसे वस्त्र पहन लेने से वह न्हाया हुआ फिर अपवित्र हो जाता है मध्य प्रदेश और राज पूताना और दक्षिण देशके जैन मंदिरों में हमने सारे यही रिवाज देखा कि प्रक्षालनकरने वाला मंदिर में ही आन कर स्नान करता है गर्मी में सरद और सरदी में गर्म जल मंदिरों में उन को तैय्यार मिलता है और सर्व दर्शक मंदिर की दहलीज में हाथ पैर धो कर फिर मंदिर में दर्शन करने

आते हैं इन को भी गरमरितु में सरद और सरद ऋतु में गर्म जल तैय्यार मिलता है उन मुलकों में यह बहुत ही उत्तम रिवाज है ॥

३—प्रक्षालन करने को जितने जल का खर्च समझे उतना जल गड़वे में ले १ थाल १ गिलास पांच छः सुफैदबारीक मलमल के छोटे छोटे अंगोछे लेकर उस मकान में आवे जहां प्रतिबिम्ब विराजमान हों जब प्रतिबिम्ब के सन्मुख आवे तो यह शब्द कहे जय जय जय निःसहि निस्सहि निस्सहि मेरा बारम्बार नमस्कार हो यह कह कर अपना मस्तक नीचे को झुका कर प्रतिबिम्ब को नमस्कार करो और प्रतिबिम्ब के पास जाकर जल वगैरः सर्व वस्तु संदली वगैरा पर रख दो फिर मंदिर के नौकर से पिछी मंगवा कर पिछी से वेदी को फोके फोके हाथ से साफ कर जीव रहित करके हाथ धो डालो फिर उस जगह उच्च स्थान पर रकाबी या थाल जो लेगये हो रख दो फिर दोनों हाथों से जो छत्र प्रतिबिम्ब के ऊपर बंधरहा हो उस को फिरकी की तरह घुमादो और मुख से जय शब्द बोल कर णमोकार मंत्र पढ कर पंच परमेष्ठि को नमस्कार करो फिर जितनी छोटी. छोटी धातु की प्रतिमा हों उन को उस थाल में विराज मान करो फिर जो धातु की बड़ी वजनी प्रतिमा और क्या छोटी क्या बडी पाषाण की प्रतिमा हों उन सब को जहां जो तहां ही रहने दो उन्हें हरगिज भी न हिलावो क्योंकि पत्थर की को हिलाने से उस का कोई अंग उपांग खंडित हो जाने का भय है फिर जो प्रतिमा सिंहासन में मुख्य विराज मान करी हुई हो सब से पहले एक साफ अंगोछा (वस्त्र) लेकर प्रतिमा के अंग को फोके फोके हाथ से साफ कर जीव जंतु रहित करे फिर इसी प्रकार तमाम प्रतिमाओं को पूंछ कर जीव रहित करे फिर एक जल का गिलास भर कर उसमें से मुख्य प्रतिबिम्ब के सिर पर जल धारा देवो और फिर इसी प्रकार दूसरी तमाम प्रतिमाओं के ऊपर जल धारा देवे और जलधारा देने के समय एक बार यह जलधारा मंत्र पढो ॥

जल धारा मंत्र।

इष्टैर्मनोरथ शतै रिवभव्य पुंसां,
पूर्णैःसुवर्ण कलशैर्जलभार युक्तैः।
संसार सागर निलंघन हेतु सेतु,
माप्लावये त्रि भुवनैकपतिंजिनेंद्रम् ॥ १ ॥

ओं ह्रीं जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे, मासोत्तममासे अमुकमासे अमुकपक्षे। अमुक तिथौ अमुक वासरे शुभ घटयां, शुभ लग्ने शुभ मुहूर्ते। श्री अमुक तीर्थङ्करं निर्मलजलेन स्नपयामि।

हर एक बालक को यह मंत्र कंठ याद कर लेना चाहिये और इस बात का ध्यान रखो कि इन्द्र एक दिन के जन्मे तीर्थंकर के शरीर पर महान् जल की जलधारा देता है, जो यह कहते हैं कि जलधारा मत दो पानी जियादा खर्च होने से पाप होता है वह बे समझ हैं उनका कहा मत मानो प्रतिबिम्ब के मस्तक पर जलधारा जरूर दो और जलधारा मंत्र जरूर पढो और जिस दिन तुम प्रक्षालन करो जो दिन मास पक्ष उस समय हो ऊपरले मंत्र में अमुक अमुक की जगह वही पढो और जिस तीर्थंकर के प्रतिबिम्ब पर जलधारा दो अमुक की जगह उसका नाम पढो मतलब तुम भाद्र पद शुक्ल पंचमी गुरुवार को ऋषभदेव के प्रतिबिम्ब पर जलधारा दे रहे हो तो इस प्रकार पढो॥

"मासोत्तमे मासे भाद्रपद मासे शुक्लपक्षे पंचमी तिथौ गुरु वासरे शुभघट्यां शुभलग्ने शुभ मुहूर्ते श्रीऋषभ देव तीर्थंकरं निर्मल जलेन स्नपयामि"।

और यदि यह मालूम न हो कि यह प्रतिमा कौन से तीर्थंकर की है तो प्रतिमा के चरण में या नीचरली पड़डी जो प्रतिबिम्ब के नीचे मजबूती के वास्ते जुड़ी रहती है उस पर प्रतिमा के मुख की तरफ चिन्ह उकरा हुवा देख कर पहचानलो कि यह कौन से तीर्थंकर की प्रतिमा का है यह २४ तीर्थंकरों के २४ चिन्हों का पाठ चित्रों सहित जैन बाल गुटके प्रथम भाग में लिखा है हर एक बालक को यह २४ चिन्हों का पाठ कंठ याद कर लेना चाहिये और अगर चिन्ह स्पष्ट न दीखने के कारण इस बात का निश्चय न हो कि यह प्रतिमा कौन से तीर्थंकर की है या केवल एक ही प्रतिमा का प्रक्षालन नहीं करते प्रतिमाओं के ऐसे समूह का प्रक्षालन करने लगे हो जिस में कई तीर्थंकरों की प्रतिमा शामिल हैं तो ऐसे वक्त में बजाय एक तीर्थंकर का नाम लेने के यह पाठ पढो॥

"चतुर्विंशति तीर्थंकरान् निर्मल जलेन स्नपयामि"

फिर यह मंत्र पढने के बाद पंच मंगल पाठ पढ़ना शुरू कर दो यह हमारे यहां

से दो पैसे में मिलता है परंतु इस बात का ध्यान रखो कि होठों के आगे जो कपड़ा तुम ओढ रहे हो उसका पल्ला लपेटलो ताकि मंत्र या पाठ पढ़ते दफे मुख में से थूक की छींटा प्रतिबिम्ब के ऊपर न पड़े, फिर एक साफा जल में भिगो भिगो कर कुल प्रतिमाओं के अंग को फोके फोके हाथ से मलो, फिर एक सूका हुआ वस्त्र (साफा) लेकर उन सब प्रतिमाओं का तमाम अंग पोंछ कर जल रहित करदो, ताकि बरचे जल की मियाद पूरी होने के बाद उस में सन्मूर्छन जीव पैदा न हों, फिर जो छोटी छोटी धातु की प्रतिमा थाल में विराजमान करी हैं उनका प्रक्षालन करके उन सब का अंग सूखे साफे से पोंछ कर जल रहित करके जहां की तहां सिंहासन में पधरादो फिर एक बार उसी प्रकार छत्र को घूमादो, फिर वह सारे साफे धो कर सूकने डाल दो और थाल में जल धारा का जल (गंधोदक) है सर्व इकट्ठा करलो, फिर पहले यह मंत्र पाठ पढ कर उस गंधोदक को अपने दाहने हाथ की अंगुलियां भिगो कर अपने मस्तक के लगाओ। वह मन्त्र पाठ यह है :—

अद्य प्रक्षालितं गात्रं नेत्रेच विमलिकृते।
मुक्तोहंसर्वपापेभ्यो जिनेन्द्रतव दर्शनात्॥ १॥
जाताद्यमे सफलता नयनद्वयस्य,देवत्वदीय चरणाम्बुज वीक्षणेन।
अद्यत्रिलोकतिलक प्रतिभासतेमे संसार वारिधिरयंचुलुकप्रमाणम्॥२
सदानिर्मली करणं पवित्रं पापनाशनम्।
जिनगंधोदकंवंदे अष्टकर्म विनाशनम्॥ ३॥

यदि यह संस्कृत पाठ नहीं पढ सकते तो नीचे लिखा भाषा पाठ पढ़ो॥

दोहा

तुमगंधोदकलेनको, क्षीरोदधिजल लाय।
इंद्रन्हलावेंमेरूपै, सो हम शक्ति है नाय।
तुमतन छूये उदक को, मस्तक लेउंचढाय।
रोग शोक भव भ्रमनहन, ज्ञान अमर पदपाय॥

इस छंद में उदक नाम जल का है, गंधोदक लगाने को यह छंद भी बच्चों को याद करलेना चाहिये, या और जो गंधोदक लगाने का पाठ याद हो वह पढ़ो, फिर

मस्तक के लगाने के बाद गंधोदक आंखों, गरदन आदि उच्च अंगों के लगाओ, फिर जितना गंधोदक मंदिर में आने वालों के वास्ते खर्च समझो उतना एक कटोरी में रखदो बाकी खुश्क करने को रेत में डाल दो, रेत अकसर मंदिरों में इस मतलब के वास्ते छत पर पड़ा रहता है। बस यह प्रक्षालन की विधि है ॥

अथ अंगहीन तथा उपांगहीन प्रतिमा का प्रक्षालन व पूजा।

जैनाचार्य्य किसी अंगहीन या उपांगहीन पुरुष को दिगम्बरी दीक्षा नहीं देते इससे कोई केवली (अर्हंत) समवशरण या गंध कुटी का धारक अंगहीन या उपांगहीन नहीं हो सकते फिर उनकी प्रतिमा अंगहीन कैसे संभवे इसलिये किसी अंगहीन प्रतिमा का प्रक्षालन तथा पूजन करना योग्य नहीं परंतु उनकी अविनय भी नहीं करनी उनका विनय सत्कार करने तथा उनको नमस्कार करने में दोष नहीं बस :—

जिन प्रतिमाओं का कोई अंग में केवल नाक न हो या खंडित हो जावे तो पूज्य नहीं रहती उसको ऐसी जगह स्थापन करदेनी चाहिये गहरे दह में या जहां उसका अविनय न हो, और जो मुनि उपसर्ग अवस्था में अंत केवली होते हैं जैसे पांडव लोहे के कड़ों वगैरा से जलाए गए थे उनके शरीर का मांस किसी कदर दझजाने जलजाने के बाद उनको केवल ज्ञान हुवा था या अनेक अंत केवली मुनि शेर वगैरा से भक्षण करते हुए अंत केवली होते हैं दुश्मन देवों से आसमान में उठाकर लेजाकर गिरादेने से आसमानमें ही गिरते गिरते अंत केवली होते हैं उनके केवल ज्ञान प्रकट होने से उसके महात्म्य से शरीर बेशक अति सुंदर शोभनीक होजाता है परंतु खड्गासन या पद्मासन नहीं होता सो यह आसन सब गौणहैं इनकी प्रतिमा नहीं होती तुम जिन प्रतिमाओं की प्रक्षाल करते हो वह प्रतिमा तीर्थंकर केवली समवशरण वालों की हैं और वज्रवृषभ नाराच संहनन होनेके कारण किसी भी केवल ज्ञानीका शरीर अंगहीन या उपांगहीन नहीं होता इसलिये अंगहीन प्रतिमा पूज्य नहीं है सांगोपांग प्रतिमा ही पूज्य होती है ॥

प्रक्षालन करते हुए सावधानी।

प्रक्षालन करते समय इस बात का ध्यान रक्खो कि उनके सिर पर इतने जल की धारा देवे कि उनके शरीर का जल इधर उधर खिंड कर दर्शकों के पैरों के नीचे न आवे और न वेदी में बहुत पानी ही पानी हो जावे परंतु यह भी न करे कि जल की कोताई करके जरा से जल से कपड़ा भिगो कर प्रतिमा के अंग के झूठो मूठो लगा कर प्रक्षाल का नाम करे नहीं प्रतिमा का अंग खूब साफ करके गरदा रहित कर देना

चाहिये, परंतु जो प्रतिमा पाषाण यानि पत्थर की हैं वोह जहां विराजमान हैं उनको वहां ही रहने दो, हिलाओ चलाओ मत, और उनको प्रक्षालन करते समय जोर से मत मलो क्योंकि उनके कान नाक गरदन आदिक बहुत ही कमजोर होते हैं हाथ का जोर डालने से खंडित हो जाने का भय है कई वार हाथ का जोर डालने से अनेक प्रतिमाओं के अंगक्षीण हो गए हैं कई बेसमझों ने प्रक्षालन करने के समय प्रतिमाओं को इस तरह से छेड़ी कि अचानक उनके हाथ का झटका लग कर प्रतिमा गिरकर खंडित हो गई सो ऐसा न हो कि बजाय पुण्य हासिल करने के प्रतिमा खंडन के महा पाप से उलटा नरक में जाना पडे इसलिये यह काम बड़ी सावधानी से करना चाहिये ॥

प्रश्न—प्रतिमाओं का प्रक्षालन क्यों करते हो।

यदि यहां कोई यह कहे कि केवली (अरहंत) कभी स्नान नहीं करते थे और सिद्धतो अशरीरी ही हैं, और जैन मुनि कहिये, आचार्य्य, उपाध्याय, साधु यदि कभी नीच आदि से स्पर्श होजावे तो केवल सिरपर जरासी जलधारा दे शुद्धि मंत्र पढ़ मंत्र से ही पवित्र होजाते थे स्नान (न्हाना धोना) कभी भी नहीं करते थे, और उन की जो अकृत्रिम प्रतिमा उनका भी कभी प्रक्षाल नहीं होता, और कृत्रिम प्रतिमा भी जो कैलाश आदि पर्वतों में हैं उनका भी नित्य प्रक्षालन नहीं होता, फिर मंदिरों में जो कृत्रिम प्रतिमा हैं उनका प्रक्षालन नित्य क्यों करते हो।

उत्तर—मंदिरोंमें प्रतिमाओं का प्रक्षालन इसलिये करते हैं।

प्रतिमाओं का रोज मरह (प्रतिदिन) प्रक्षालन जरूरी समझना या प्रक्षालन न होनेसे प्रतिमाओं को अपज्य मानना या प्रक्षालन न होने से प्रतिमाओं की तौहीन (अविनय) समझना यह तो भोले भाइयों की नावाकिफियत है॥

प्रतिमाओं का प्रक्षालन सिरफ इन कारणों के वास्ते करिये है।

१—भक्तिभावसे करिये है, देखो भक्ति भावसे इंद्र तुरत के जन्मे तीर्थंकर का सुमेरु पर्वत पर किस कदर जल से न्होन करता है अगर वह उनका न्हौन न करे तो क्या इससे उनकी तीर्थंकर पदवी थोड़ी ही हट सकती है नहीं, यह उसकी भक्तिभाव का नियोग है।

२—जैसे मुनिके चरण की रज अपने मस्तक के लगाइये है तैसे ही प्रतिबिम्ब के अंगका स्पर्शा जल अपने अंग के लगाने को प्रतिबिम्ब का प्रक्षालन करिये है, इस गंधोदक के लगाने से शरीर के अनेक प्रकार के रोग नष्ट होय हैं श्रीपालका कुष्ट इसी से दूर हुवा था।

३—इससे कर्मों की भी शांति होती है।

४—प्रति बिम्बका प्रक्षालन का जल (गंधोदक) अपने अंग के लगाने से प्रतिबिम्ब में अपनी विशेष भक्ति प्रगट होती है क्योंकि पुण्य पाप का बंध भाव भक्ति के अनुसार होता है देखो तीर्थंकर के न्हौन का जल कितना होता है पर देव देवी भक्ति भाव से उसे सारे को ही अपने मस्तकों के लगालेते हैं॥

५—प्रतिबिम्ब का प्रक्षालन प्रतिबिम्ब का स्वरूप देदिप्यमान रखने को करिये है क्योंकि गृहस्थ के परिणाम उज्ज्वल वस्तु को देखकर उज्ज्वल और मैली को देखकर मैले होते हैं, उज्ज्वल को देखकर खुश होते हैं मैली को देखकर मन में घृणा (नफरत) पैदा होती है, इत्यादिक कारणों के वास्ते प्रतिदिन प्रतिमाओं का प्रक्षालन करिये हैं।

नोट—जो प्रतिबिम्ब पीतल के हों जब उनका रंग जंगार लगने से कालासा होने लगे तब उनका स्वरूप देदिप्यमान करने को कागजी निम्बू को चनार कर उसकी फांक से प्रतिमा को खूब मलकर उसका अंग साफ जलसे धोदेना चाहिये, इसी प्रकार जब, चांदी, सोना(स्वर्ण) मूंगा, हीरा पन्ना, आदि की,प्रतिमा मैली हो जायें तो किसी जैनी जोहरी से दरयाफत करके जिस पवित्र वस्तु से वह साफ हो सके उससे जरूर साफ करके उसका अंग देदिप्यमान करदेना चाहिये।

मंदिर में गंधोदक की कटोरी।

मंदिर में दो कटोरी रखी रहती हैं एक में गंधोदक होता है दूसरी में जल, इन दो कटोरी होने का कारण अनेक भाई यह कहते हैं कि पहले दर्शक अपने मस्तक आदि उच्च अंगों के गंधोदक लगा कर फिर हाथ धो डाले, ताकि पवित्र गंधोदक से छुए हुए हाथ फिर अपवित्र वस्तु के न लगें सो ऐसा कहना उनका मिथ्या है क्योंकि गंधोदक तो मस्तक के भी लगइये हे फिर वही शरीर टट्टी में जाता है दुनियादारी की वह क्रिया भी करताहै जिसका नाम लिखना ठीक नहीं मस्तक को तो कोई नहीं धोता श्रीपाल इस गंधोदक से स्नान करताथा जो उसके चरण आदि अंगोंके भी लगता था जिनका नाम लेना ठीक नहीं पस हाथ अपवित्र वस्तु के लगने से धोया करते हैं पवित्र के लगने से नहीं।

देखो इन हाथों से जिन वाणी के शास्त्र छूते हैं जो साक्षात केवली के वचन मोक्षका मार्ग है इन हाथों से सिद्ध क्षेत्र की निशी के चरण पाद को छूते हैं इन हाथों से मुनिके चरण छूते हैं इनहाथों से प्रतिमा का प्रक्षालन करने के समय प्रतिमा छूते हैं इन हाथों से केसरियानाथ, मांगीतुंगी, मुक्तागिरी, बड़वानी, गोमटस्वामी, आदि में अनेक प्रतिमाओं के चरण छू कर अपने मस्तक के लगाते हैं इन

सब के हाथ लगाने से पहले हाथ धोते हैं पीछे नहीं अनेक भाई यह कहते हैं कि पहले हाथ धोकर फिर गंधोदक को लगाते हैं ताकि अपवित्र हाथ गंधोदक के न लगे इस का उत्तर यह है कि पहले भगवान के दर्शन कर अर्घ पुष्प फल नैवेद्य अक्षत जो मयस्सर आवे चढ़ाकर फिर गंधोदक लगाते हैं तो क्या तीन लोक के नाथ के दर्शन करना सामग्री चढ़ाना अपवित्र हाथों से करते हो यह कौनसे जैन ग्रन्थों का लेख है कि मंदिर जी में दर्शन करने अपवित्र हाथों ले जावो सब भगवान् के दर्शन करने हाथ धोकर जाते हैं ऐसा कहना कि अपवित्र हाथों से जाते हैं बिलकुल मिथ्या है।

पस समझदार भाइयों को हमारा यह लेख पढ कर जलकी कटोरी गंधोदक के पास रख छोड़नी चाहिये। क्योंकि इस से यह हानि है कि अनेक परदेशी नावाकिफ जैनी हैं उनको यह मालूम नहीं होता कि कौन सी कटोरी में जल है और कौनसी में गन्धोदक सो उन में से अनेक जलको मस्तक के लगा कर गंधोदक से हाथ धोते हैं इस से गंधोदक का अविनय होता है और उस नावाकिफ के मस्तक को गंधोदक नसीब नहीं होता अगर कोई भाई यह जिदकरे नहीं हमने तो यह बात नहीं छोड़नी सो उन भाइयों से यह अरज है कि गंधोदक वाली कटोरी पर गंधोदक जल वाली पर जल शब्द मोटे अक्षरों में ऐसे स्थान पर जहां सामनेही खूब नजर आजावे चतेरे से उकरवा देना चाहिये या एक थाल में थोड़ासा जल डाल कर उसके बीच में गंधोदक की कटोरी रखदेवें ताकि अनाड़ी से अनाड़ी भी देखते ही फौरन मालूम कर लेवे कि यह गंधोदक है यह जल, जिन दर्शकों को यह ठीक मालूम न हो कि दोनों कटोरी में गंधोदक कौनसा है वे लोग दोनों में से ही मस्तक क लगालियां करें ताकि गंधोदक से महरूम न रहें।

अथ प्रक्षालन के वास्ते जल छानकर लाने की विधि।

अब हम बच्चों को प्रक्षालन के वास्ते जल लाने की विधि सिखाते हैं। जब प्रक्षालन के वास्ते जल लेने जाओ तो जल छानने को रुई का सुफैद छलना लते जाओ छलना बहुत गाढ़ा घिनका बुनाहुआ होवे उसमें कोई छेक न होवे और इतना बड़ा होवे कि जिस बरतन में पानी छानो उसके मुखके इधर उधर काफी फालतू लटकता रहे, ऐसे वस्त्र की दो तह करके उसमें को जल छानो; जब जितना जल लेना हो उतना छान चुको तो जो जीव उस छलने में जल छाननेसे बचें वह उसी जल के स्थानक में सहज से डालदो उनके डालने की विधि यह है, कि जिस बर्तन से तुमने जल भरा है उस बर्तनमें दूसरे बर्तन में से छनाहुआ जल लेकर छलने को बायें हाथसे पकड़ कर दाहने हाथसे छनाहुवा जल छलने के उस, भाग पर डालकर जहां वह जीव उसके

लगरहे हैं ऐसी हिकमत से धोवो कि छलने के सारे जीव उतरकर जल स्थानकमें चले जावें और छलना धोने में जलकीको ताहो मतकरो जब प्रक्षालन के खर्चके अन्दाजेका जल जल स्थानमें से छान कर भरो; तब जितना जल छलना धोने में खर्च होता जानो उतना जल फालतू छान लो और इस बातका ध्यान रखो कि यदि तुमने जल नदी या बावड़ी से नहीं भरा तुमने जल कुंएं में से भरा है तो छलने के जीव कुंएं में ऊंचे से मत गिरावो अगर ऊंचेसे गिराओगे तो जितने जीव तुम कूंयें में गिराओगे ऊंचे स्थानसे पड़ने से वह सर्वजीव मरजावेंगे और उस जलकी चोट लगने से कूंएं में भी अनेकजीव मरेंगे ऐसा करने से बजाय पुण्यके महा पाप होगा, इसकी रीति यह है कि जिस बर्तनसे तुम कुएंसे जल भरते हो उस बर्तन की तलीमें एक कुन्दा ठठेरे से लगवा लेना चाहिये जब तुम जल भरो तब तो उस गड़वे (लोटे) के मूहमें बैंगना डाल कर भरो जब जल भर चुको तो उसी लोटे में एक गिलास में या किसी दूसरे बरतन में से छनाहुआ जल लेले कर सारे छलने के जीव धोदो, जब तमाम जीव उस में धोये जावें तब एक दूसरी डोरीका सिरा उस बर्तनके नीचरले कुन्देमें बांधकर वह बर्तन मुंह वाली डोरी पकड़कर कुएं में फांस दो फांसती दफे कुन्देवाली डोरी को ऐसी ढीली रक्खो कि बर्तन का मुंह ऊपरको ही रहे जब वह लोटा जिसमें जल के जीव भरे हुए हैं कुएंमें जल के समीप चला जावे तो बैंगने वाली रस्सी को तो ढीला कर दो और कुन्दे वाली डोरी को जरा खैंच लो ऐसा करने से वह लोटा उलटा हो कर सारे जीव पानी में जा पड़ेंगे फिर बैंगने वाली डोरी को खैंच कर और कुन्दे वाली को ढीली करके जल का लोटा जल स्थान से भर लो फिर बैंगने की रस्सी को ढीली करके कुन्दे की रस्सी को खैंच लो ऐसा करने से फिर वह सारा जल जलस्थान में उलट जावेगा इससे लोटा धोया जावेगा यानी यदि कोई अनछाने जल का जीव लोटेके लगा भी रहजावे तो इस प्रकार करने से धुल कर जलस्थान में ही चला जाताहै फिर कुन्दे वाली रस्सी को सहार कर लोटा मूंधा ऊपर खैंचलो यह विधि कुएं से जल छान कर लाने की है यानि जो कुएं से जल लेने जावे उसे एक गिलास भी छलना धोने को कुएं पर जरूर लेजाना चाहिये और जल भरने के बर्तन की तली में कुन्दा जरूर होना चाहिये सो कुन्देदार लोटे मिलते नहीं हैं इसलिये किसी ठठेरे से कुन्दा आप लगवालेना चाहिये जब जलस्थानक से जल छान कर ले चुको तो रास्ते में देखते हुये आओ ताके पैर के नीचे आनकर जीव न मरैं और पैर अपवित्र वस्तु में न भरे कपड़े के जूते या खड़ाऊं पहन कर जल लाना चाहिये जब जल मंदिर जी में लेआओ तो उसकी मर्याद बढ़ाने को पांच सात लौंग या काली मिरच या इलायची कूट कर डाल दो या कोई प्राशुक कसैली वस्तु डालदो।

इस को चरचा जल कहते हैं। छने हुए जल की मयाद एक मुहुर्त (दो घडी) की है चर्चे हुये की मियाद दोपहर ६ घंटे की है खूब तपाये हुए (उबाले हुए) की मयाद आठ पहर (२४ घंटे) की है॥ उसके बाद फिर उस में सन्मूर्छन जीव पैदा हो कर वह अनछने के बराबर हो जाता है॥ देखो क्रियाकोष में जल गालन विधि छंद १८ यह विधि छान कर जल लाने की है जोग अनछना जल कुएं से लाकर उसको छान कर जल के जीव जमीन पर फैंक देते हैं या छलने के ही लगे रहने देते हैं वह महा पाप के भागी हैं और जो झीने वस्त्र या छेकदार पुराने वस्त्र से छानते हैं उनका छानना ना छानना बराबर है इसलिये असल विधि जल छानने की यही है बाकी लोकि रूढता है इस प्रकार के छने हुये और चरचे हुए जल से प्रक्षालन करो और पूजन सामग्री धोने में भी इसी प्रकार का छना हुवा और चरचा हुवा जल वरतो।

नोट—हर एक नगर के जैनियों को जहां जगह मयस्सिर आसके और रुपया बरादरी में चंदे से इकट्ठा हो सके कूंवा मंदिर के खर्च के वास्ते जल भरने को मंदिर के पास ही बना देना चाहिये और उस कूवे से नीच जाती पानी न भर सके और उस कूवे में चमडे का डोल भी न पड़ सके॥

अथ शुद्ध पंचकल्याणक तिथि।

[illegible]	नाम तीर्थङ्कर	तिथि	गर्भ	जन्म	तप	ज्ञान	निर्वाण
१	ऋषभ	तिथि	आषाढकृष्ण २	चैत्र कृष्ण ९	चैत्र कृष्ण ९	फागुणकृष्ण ११	माघ कृष्ण १४
२	अजित	तिथि	जेष्ठकृष्ण ३०	माघ शुक्क १०	माघ शुक्क ९	पौष शुक्क ११	चैत्र शुक्क ५
३	संभव	तिथि	फाल्गुणशुक्क ८	कार्तिक शुक्क १५	मगशिरशुक्क १५	कार्तिककृष्ण ४	चैत्र शुक्क ६
४	अभिनंदन	तिथि	वैशाख शुक्क ६	माघ शुक्क १२	माघ शुक्क १२	पौष शुक्क १४	वैशाख शुक्क ६
५	सुमति	तिथि	श्रावण शुक्क २	चैत्र शुक्क ११	वैशाख शुक्क ९	चैत्र शुक्क ११	चैत्र शुक्क ११
६	पद्मप्रभ	तिथि	माघ कृष्ण ६	कार्तिककृष्ण १३	कार्तिककृष्ण १३	चैत्र शुक्क १५	फागुण कृष्ण ४
७	सुपार्श्व	तिथि	भाद्रपद शुक्क ६	ज्येष्ठ शुक्क १२	ज्येष्ठ शुक्क १२	फागुण कृष्ण ६	फागुणकृष्ण ७

८	चंद्रप्रभ	तिथि	चैत्र कृष्ण ५	पौष कृष्ण ११	पौष कृष्ण ११	फागुण कृष्ण ७	फागण कृष्ण ७
९	पुष्पदंत	तिथि	फाल्गुणकृष्ण ९	मार्गशिरशुक्ल १	मार्गशिरशुक्ल १	कार्तिक शुक्ल २	भद्रापद शुक्ल ८
१०	शीतल	तिथि	चैत्र कृष्ण ८	माघ कृष्ण १२	माघ कृष्ण १२	पौष कृष्ण १४	आश्विनशुक्ल ८
११	श्रेयांस	तिथि	ज्येष्ठ कृष्ण ६	फागुणकृष्ण ११	फागुण कृष्ण ११	माघ कृष्ण ३०	श्रावण शुक्ल १५
१२	वासुपूज्य	तिथि	आषाढ कृष्ण ६	फागुणकृष्ण १४	फागुण कृष्ण १४	माघ शुक्ल २	भाद्रपदशुक्ल १४
१३	विमल	तिथि	ज्येष्ठ कृष्ण १०	माघ शुक्ल ४	माघ शुक्ल ४	माघ शुक्ल ६	आषाढ कृष्ण ८
१४	अनंत	तिथि	कार्तिककृष्ण १	ज्येष्ठकृष्ण १२	ज्येष्ठकृष्ण १२	चैत्र कृष्ण ३०	चैत्र कृष्ण ३०
१५	धर्म	तिथि	वैशाखकृष्ण १३	माघ शुक्ल १३	माघ शुक्ल १३	पौष शुक्ल १५	ज्येष्ठ शुक्ल ४
१६	शांति	तिथि	भाद्रपद कृष्ण ७	ज्येष्ठ कृष्ण १४	ज्येष्ठकृष्ण १४	पौष शुक्ल १०	ज्येष्ठकृष्ण १४
१७	कुंथ	तिथि	श्रावणकृष्ण १०	वैशाख शुक्ल १	वैशाख शुक्ल १	चैत्र शुक्ल ३	वैशाख शुक्ल १
१८	अर	तिथि	फाल्गुणशुक्ल ३	मगशिरशुक्ल १४	मगशिरशुक्ल १०	कार्तिकशुक्ल १२	चैत्र कृष्ण ३०
१९	मल्लि	तिथि	चैत्र शुक्ल १	मगशिरशुक्ल ११	मार्गशिरशुक्ल ११	पौष कृष्ण २	फाल्गुण शुक्ल ५

नम्बर	नाम तीर्थङ्कर	तिथि	गर्भ	जन्म	तप	ज्ञान	निर्वाण
२०	मुनिसुव्रत	तिथि	श्रावण कृष्ण २	वैशाखकृष्ण १०	वैशाखकृष्ण १०	वैशाख कृष्ण ९	फागुणकृष्ण १२
२१	नमि	तिथि	आश्विनकृष्ण २	आषाढकृष्ण १०	आषाढकृष्ण १०	मगशिरशुक्ल ११	वैशाखकृष्ण १४
२२	नेमि	तिथि	कार्तिकशुक्ल ६	श्रावण शुक्ल ६	श्रावण शुक्ल ६	आश्विनशुक्ल १	आषाढ शुक्ल ७
२३	पार्श्व	तिथि	वैशाख कृष्ण २	पौष कृष्ण ११	पौष कृष्ण ११	चैत्र कृष्ण ४	श्रावण शुक्ल ७
२४	वर्द्धमान	तिथि	आषाढशुक्ल १२	चैत्र शुक्ल १३	मगशिरकृष्ण १०	वैशाखशुक्ल १०	कार्तिककृष्ण ३०

नोट—तीस ३० के अंक को अमावस्या जानो।

अथ जैन मंदिरों में चौबीसी पूजन पाठ।

हमारे जैन मंदिरों में १६ भाषा चौबीसी पूजन पाठ हैं सो सब में ही पंचकल्याणक तिथि गलत हैं उनके नामयह हैं १ रामचंदकृत, २ बृंदावनकृत, ३ बखतावरकृत, ४ सेवारामकृत, ५ चुन्नीलालकृत, ६ देवीदासकृत, ७ टेकचंदकृत, ८ नेमिचंदकृत, ९ सुगनचन्दकृत, १० छोटीलालकृत, ११ झूनकलालकृत, १२ हीरालालकृत, १३ जिनेश्वरदासकृत, १४ मनरंगलालकृत, १५ अमरचंदकृत, १६ थानकजीकृत ॥

भाषा चौबीसी पूजन पाठों में गलत पंचकल्याणक तिथि इस प्रकार।

अजित—के तप की शुद्ध तिथि माघ शुक्ल ९ है वृन्दावन, रामचंद, बखतावर चुन्नीलाल में माघ शुक्ल १० है सेवाराम में पोष शुक्ल ११ है ॥

अजित—के ज्ञान की शुद्ध तिथि पोष शुक्ल ११ है, बृन्दावन, बखतावर में पोष शुक्ल ४ है ॥

सम्भव—के ज्ञान की शुद्ध तिथि कार्तिक कृष्ण ४ है, चूनीलाल में चैत्रकृष्ण ४ है।

संभव—के निर्वाण की शुद्ध तिथि चैत्र शुक्ल ६ है, देवीदास में वैशाख कृष्ण ६ है ॥

अभिनंदन—के गर्भ की शुद्ध तिथि वैशाख शुक्ल ६ है रामचंद चून्नीलाल में वैशाखशुक्ल८है।

सुमति—के तप की शुद्ध तिथि वैशाख शुक्ल ९है वृन्दावन, बखतावर में चैत्र शुक्ल ११ है।

पद्मप्रभ—के जन्म की शुद्ध तिथि कार्तिक कृष्ण १३ है वृन्दावन में कार्तिक शुक्ल १३ है बखतावर में कार्तिक शुक्ल १२ है ॥

पद्मप्रभ—के तपकी शुद्धतिथि कार्तिककृष्ण १३ है वृन्दावन बखतावरमें कार्तिक शुक्ल१३है।

पद्मप्रभ—के निर्वाण की शुद्ध तिथि फाल्गुण कृष्ण ४ है सेवाराम में फाल्गुण शुक्ल ४ है देवीदास में फाल्गुण शुक्ल ७ है।

सुपार्श्व—के गर्भ की शुद्ध तिथि भाद्रों शुक्ल ६ है वृन्दावनकृत में भाद्रों शुक्ल २ है।

सुपार्श्व—के ज्ञानकी शुद्ध तिथि फाल्गुण कृष्ण६है सेवाराम देवीदासमेंफाल्गुणशुक्ल६है॥

चंद्रप्रभ—के गर्भ की शुद्ध तिथि चैत्र कृष्ण ५ है चून्नीलाल में चैत्र शुक्ल ५ है।

चंद्रप्रभ—के निर्वाण की शुद्ध तिथि फाल्गुण कृष्ण ७ है बखतावर में माघ कृष्ण ७ है। वृन्दावन रामचंद में फाल्गुण शुक्ल ७ है।

पुष्पदन्त—के ज्ञान की शुद्ध तिथि कार्तिक शुक्ल २ है, देवीदास में कार्तिक कृष्ण २ है॥ सेवाराम में फाल्गुण कृष्ण २ है।

पुष्पदन्त—के निर्वाण की शुद्ध तिथि भाद्रों शुक्ल ८ है वृन्दावन बखतावर में आश्विन शुक्ल ८ है देवीदास में भाद्रों शुक्ल ९ है।

शीतल—के निर्वाण की शुद्ध तिथि आश्विन शुक्ल ८ है सेवाराम में ज्येष्ठ कृष्ण ८ है और देवीदास में आश्विन कृष्ण अमावस्या है।

श्रेयांस—के गर्भ की शुद्ध तिथि ज्येष्ठ कृष्ण ६ है वृन्दावन वखतावर में ज्येष्ठ कृष्ण८ हैं।
श्रेयांस—के ज्ञान की शुद्ध तिथि माघ कृष्ण अमावस्या है वखतावर में माघ कृष्ण १० है।
वासुपूज्य—के ज्ञान का शुद्धतिथि माघ शुक्ल २है वृन्दावन वखतावर में भाद्रपदकृष्ण२ है।
विमल—के जन्म की शुद्ध तिथि माघ शुक्ल ४ है देवीदास रामचंद्र में माघ शुक्ल १२ है चुन्नीलाल में माघ शुक्ल १४ हैं।
विमल—के निर्वाण की शुद्ध तिथि आषाढ कृष्ण ८ है वृन्दावन में आषाढ कृष्ण ६ है देवीदास चुन्नीलाल में आषाढ शुक्ल ८ है॥
अनंत—के तप की शुद्ध तिथि ज्येष्ठ कृष्ण १२ है रामचंद्र, देवीदास, सेवाराम चुन्नीलाल कृत में पोष कृष्ण १२ है।
धर्म—के गर्भ की शुद्ध तिथि वैशाख कृष्ण १३ है वृन्दावन वखतावर में वैशाख शुक्ल ८ है देवदास, रामचंद्र, चुन्नीलाल में वैशाख शुक्ल १३ है।
धर्म—के ज्ञान की शुद्ध तिथि पौष शुक्ल १५ है चुन्नीलाल में माघशुकल १५ है देवीदास में पौष कृष्ण अमावस्या है॥
शांति—के जन्म की शुद्ध तिथि ज्येष्ठ कृष्ण १४ है देवीदास में ज्येष्ठ कृष्ण १३ है।
शांति—के ज्ञान की शुद्धतिथि पौष शुक्ल १० है रामचंद्र चुन्नीलाल में पोष शुक्ल ११ है।
शांति—के निर्वाण की शुद्ध तिथि ज्येष्ठ कृष्ण १४ है देवीदास में ज्येष्ठ शुक्ल १४ है।
कुंथु—के गर्भ की शुद्ध तिथि श्रावण कृष्ण १० है रामचंद्र में श्रावण शुक्ल १० है।
कुंथु—के तप की शुद्ध तिथि वैशाख शुक्ल १ है सेवाराम में वैशाख कृष्ण ११ है।
कुंथु—के ज्ञान की शुद्ध तिथि चैत्र शुक्ल ३ है चुन्नीलाल में चैत्र शुक्ल १३ है।
अर—के गर्भ की शुद्ध तिथि फाल्गुण शुक्ल ३ है सेवाराम में फाल्गुण कृष्ण ६ हैं॥
अर—के तप की शुद्ध तिथि मार्गशिर शुक्ल १० है वृन्दावन वखतावर में मार्गशिर शुक्ल १४ है सेवाराम में कार्तिक कृष्ण १२ है।
अर—के ज्ञान की शुद्ध तिथि कार्तिक शुक्ल १२ है वखतावर और सेवाराम में कार्तिक कृष्ण १२ है चुन्नीलाल में पौष कृष्ण २ है।
अर के निर्वाण की शुद्ध तिथि चैत्रकृष्ण अमावस्या है वृन्दावनवखतावर में चैत्रशुक्ल ११ है
मल्लि—के ज्ञान की शुद्ध तिथि पौष कृष्ण २ है चुन्नीलाल में वैशाख कृष्ण १० है।
मल्लि—के निर्वाण की शुद्ध तिथि फाल्गुण शुक्ल ५ है देवीदास में फाल्गुण शुक्ल ५ है।
मुनिसुव्रत—के गर्भ की शुद्ध तिथि श्रावण कृष्ण २ है देवीदास में श्रावण शुक्ल २ है।
मुनिसुव्रत—के जन्म की शुद्ध तिथि वैशाख कृष्ण १० है सेवाराम में वैशाख कृष्ण ५ है
मुनिसुव्रत—के ज्ञान की शुद्ध तिथि वैशाख कृष्ण ९ है देवीदास में वैशाख कृष्ण १० है चुन्नीलाल में मार्गशिर शुक्ल ११ है॥

नमि—के ज्ञान की शुद्ध तिथि मार्गशिर शुक्ल ११ है चुन्नीलाल में आश्विन शुक्ल १ है।
नमि—के निर्वाण की शुद्ध तिथि वैशाख कृष्ण १४ है देवीदास में वैशाख कृष्ण १४ है।
नेमि—के गर्भ की शुद्ध तिथि कार्तिक शुक्ल ६ है, रामचंद्र में कार्तिक कृष्ण ६ है॥
नेमि—के निर्वाण की शुद्ध तिथि आषाढ शुक्ल ७ है देवीदास वृन्दावन, वखतावर में आषाढ शुक्ल ८ है॥

पार्श्व—के गर्भ की शुद्ध तिथि वैशाख कृष्ण २ है देवीदास में वैशाख शुक्ल ३ है।
महावीर—के गर्भ की शुद्ध तिथि आषाढ शुक्ल ६ है देवीदास में आषाढ कृष्ण १० है।

नोट—इस का मतलब यह नहीं समझना कि इतनी ही तिथि गलत हैं। नहीं बहुत हैं, यह अशुद्धि तो सिरफ चार पांच पाठों की लिखी हैं अगर सारे १६ पाठ और दूसरी पुस्तक पुराणों की गलतियां लिखें तो कथन इससे बीस गुणा बढजाता, इसवास्ते नहीं लिखीं।

भाषा पाठों में इतनी गलतियें कैसे हुईं।

इतनी गलतियां भाषा पाठ रचताओं ने ज्योतिष विद्या न जानने के हेतु से संस्कृत शब्दों के अर्थ करने में करी हैं अनेक स्थानों पर संस्कृतग्रन्थों में तिथि मास नक्षत्र पक्षों के अनेक२नाम ऐसे हैं जिनको ज्योतिषी ही जानते हैं ज्योतिषि भी जो ज्योतिष के समुद्र हैं, उन का मतलब वही समझते हैं बडे से बडे व्याकरणी पंडित भी उनका पूरा अर्थ नहीं कर सकते, इस का कारण यह है कि संस्कृत ग्रंथ रचनेवाले जैन आचार्य हर विद्या में निपुण, ज्योतिष विद्या के भी सागर थे।

हमने पंच कल्याणक तिथि क्यूं और कैसे शुद्ध करी।

इस बात को अरसा २५ साल का हुआ कि इतफाक से हमने श्री मंदिरजी लाहौर में बैठे बैठे स्वतः स्वभाव वृन्दावन कृत रामचंद्र कृत वखतावर कृत तीनों पाठों की १२० तिथि का मिलान किया सो उनमें बडा फरक पाया तब हम हैरान हुए कि पूजनमें तिथि कौनसे पाठ के अनुसार पढें कई तिथि एक में कुछ दूसरे में कुछ तीसरेमें कुछ जब हमने यह सोचा कि यदि कोई और भी चौबीसी पूजापाठ होय तो उसकी साथ मिलान करने को और पाठ तलाश करना चाहिये। तब तमाम हिंदुस्तान में पंजाब अहाता इलाहाबाद बंगाल विहार बुन्देलखंड मध्यप्रदेश राजपूताना अहाता बम्बई गुजरात दक्षिण अहाता मदरास देश करनाटक रियासत मैसूर इंदौर वडोदा उदयपुर वगरा में तलाश करने से १६ भाषा चौबीसी पाठ मिले। उनके नाम इस प्रकार हैं १ रामचंद्र कृत २ सेवाराम कृत ३ चुन्नीलाल कृत ४ वखतावर कृत ५ वृन्दावन कृत ६ देवीदास कृत ७ टेकचंद कृत ८ नेमिचंद कृत ९ सुगनचंद कृत, १० छोटीलाल कृत ११ झूनकलाल कृत १२ हीरालाल कृत

१३ जिनेश्वरलाल कृत १४ मनरंगलाल कृत १५ अमरचंद कृत १६ थानजी कृत। जब इन सबकी तिथियें मिलाईं तो सब में ही फरक पाया। तब लाचार होकर और तलाश करी तब १ पंचकल्यणकं पूजा पाठ देखा इस में १२० तिथि के १२० अर्घ हैं। १ बासठ ठाणा देखा इस में एक एक भगवान की बासठ बासठ बातें हैं। एक चौरासी ठाना देखा इसमें हरएक तीर्थंकर की चौरासी बातें हैं। एक बडा शिखर माहत्म्य पाठ देखा उस में भी १२० तिथि हैं। अनेक पुराण और चारित्रों में भी तिथि देखीं परन्तु आपस में कोई भी न मिला। एक बडा आश्चर्य यह देखा कि एक पाठ भी अपनी दूसरी प्रति से नहीं मिलता एक ताज़ुब और देखा कि छंद में तो और तिथि और उस की साथ ही द्रव्य चढाने के ॐ ह्रीं मंत्र में दूसरी तिथि। उसी पूजा की जयमाल में उसी कल्याणक की और तिथि एक पूजा में एकही कल्याणक की तीन तिथि यह हमने आगरे में बडे मंदिर चूडी वाली गली में जैनी पंचों के सामने देखी इस को देख कर आगरे के भाई भी खूब हंसे॥

लाचार हमने यह विचारा कि कुल भाषा पाठ संस्कृत से बने हैं आचार्यों ने पहिले संस्कृत प्राकृत पाठ रचे थे तब उनकी तलाश करनी शुरू की सो बडी कठिनता से और बडी रकम खरच होने से १ संस्कृत चौबीसी पूजापाठ प्राप्त हुआ। फिर दिल में यह शक हुआ कि जैसे भाषा पाठ एक दूसरे से नहीं मिलते कहीं यही हाल संस्कृत पाठोंका भी न हो तब दूसरे नगर से बडी तालाश के बाद दूसरा संस्कृत चौबीसी पाठ लिखवा कर मंगाया और संस्कृत आदि पुराण और उत्तर पुराण में से १२० तिथि का संस्कृत पाठ उतरवाया फिर १ पंचकल्याणमाला संस्कृत पाठ मंगाया फिर लोहाचार्यकृत संस्कृत पाठ की तिथियों से इन सब संस्कृत पाठोंका मिलान किया तो आपस में चारों पाठ मिलगये तब बडी भारी खुशी हासिल हुई। और उनका एक १२० तिथि का शुद्ध पाठ भाषा में लिखा और भाषा पाठों से मिलान करने पर मालूम हुआ कि रामचंद कृत में १२ तिथि गलत हैं। सेवाराम कृत में १८ तिथि गलत हैं। चुन्नीलाल कृत में २० तिथि गलत हैं बखतावरकृत में २३ तिथि गलत हैं। वृन्दावन कृत में २३ तिथि गलत हैं यही हाल सब भाषा पाठों का है।

पस हमने वह शुद्ध संस्कृत चौबीसी पूजा पाठ और रामचंद वृन्दावन बखतावरकृत इन तीनों भाषा चौबीसी पूजा पाठों में जो तिथि गलत थीं, उनकी जगह संस्कृत ग्रन्थों के अनुसार शुद्ध तिथि का पाठ लिख कर यह चारों पाठ इकट्ठे इस एक चौबीसी पूजा पाठ संग्रह में छाप दिये। हर जगह आंचली और हर जगह पूरा द्रव्य चढाने का अलग अलग द्रव्य का अलग अलग मंत्र लिखने से यह एक महान् ग्रंथ बन गयाहै।

शुद्धता में २५ वर्ष कैसे लगे।

अगर किसीको यह शक हो २५ वर्ष बडा वकत है इतना समय इस ग्रंथमें कैसे लगा!

इसका उत्तर यह है मतलन् एक शब्द शुचौ आसाधर कृत पाठ में है इस के मायने आसाधर ने आषाढ के लिये हैं और संस्कृत उत्तर पुराणमें यह शब्द कई जगह उत्तर पुराण के शब्द का अर्थ भाषा कर्ताओं ने ज्येष्ठ लिया है यह शब्द ज्योतिष का है व्याकरणी पंडित इसको कम जानते हैं हमने अनेक ज्योतिषियोंसे इस का अर्थ पूछा सबने इस का अर्थ आषाढ ही किया है और संस्कृत कोष में देखा तो वहां भी इस का अर्थ आषाढ ही लिखा है देखो अमर कोष प्रथम कांड। चतुर्थ वर्ग। १६ श्लोक।

सिरफ एक महान ज्योतिषी जी जो कांशी में ३०वर्ष ज्योतिष पढ कर आये हैं उन्हों ने कहा इस शब्द के मायने आषाढ भी है ज्येष्ठ भी है तब भी हमारी तसल्ली नहीं हुई फिर हम कलकत्ते में एक ऐसे बडे विद्वान् से मिले जो अंगरेजी का और संस्कृत का दोनों इलमों का एम० ए० था उसने हमें पुराणे जमाने का अंगरेजी कोष दिखाया जो विलायत में सन् १८६६ में छपा था देखो गोल्डिगर का इंगलिश कोष पृष्ट ९५४ लंडन का छपा हुआ। और दूसरा आपटे का इंगलिश कोश पृष्ठ १०४ सन् १८९० का पूना आर्य प्रेस का छपा हुआ।

तब हमारी यह तो तसल्ली होगई कि इस शब्द के आषाढ और ज्येष्ठ दोनों अर्थ हैं परंतु यह शक बाकी रहा कि हम इसका अर्थ आषाढ करें कि ज्येष्ठ तब उस महान ज्योतिषीने हमको ज्योतिष का एक ऐसा भुत्रा बताया कि जैसे दिन में १२ अंगुली की सींच धूप में खडी करने से जब उसका साया उसके नीचे आजावे तब ही अभिजित् मुहूर्त होता है दूसरे वकत नहीं इसी तरह उस भुत्रे से फलाने मौके पर तो इसका अर्थ आषाढ होता है फलाने मौके पर ज्येष्ठ, उससे देखा तो आसाधर के पाठ में उसका अर्थ आषाढ ही होसकता है ज्येष्ठ नहीं, और उत्तर पुराणमें उसका अर्थ ज्येष्ठ ही होसकता है आषाढ नहीं तब हमारी तसल्ली हुई। इस तरह हमने संस्कृत के सैंकडों शब्दों की जिन में शक हुवा तहकीकात की है इस वास्ते इन शब्दों के अर्थ के खोज में हमारी आधी उमर गुजर गई जब खूब तसल्ली हुई तब हमने पंचकल्याणक का पाठ शुद्ध करा है॥

उन महा ज्योतिषी जी ने उत्तर पुराण का लेख देख कर यह भी कहा है कि जिन आचार्यों ने यह पाठ रचा है वह महा ज्योतिषी थे इस जमाने में ऐसे संस्कृत और ज्योतिष के जानने वाले होना ना मुमकिन है इस जमाने में ऐसी संस्कृत कोई भी नहीं लिख सकता अपनी ज्योतिष विद्या की निपुणता से उन्हों ने अनेक स्थानों पर श्लोकों में कहीं मास कहीं पक्ष का नाम गुम (understood) रक्खा है जिस को सिवाय महान ज्योतिषी के कोई भी व्याकरणी पंडित नहीं बता सकता और साथ में यह भी कहा कि

तुम कहते हो हमारे यहां भाषा उत्तर पुराण भी है सो यदि अर्थ करता ज्योतिष नहीं जानता होगा तो उसने मास पक्ष नक्षत्रों के अर्थ करने में सैंकड़ों गलती करी होंगी॥

सो उनका कहना यह ठीक है जो यह भाषा पाठों में तिथियों का फरक पड़ा है अर्थ करताओं के ज्योतिष न जानने से ही पड़ा है॥

हमने अगरचे इस तहकीकात में अपनी आधी उमर लगाई और हजारहा रुपया विद्वानों को तनखा नजर इनाम सफर खरच में लगाया फिर भी अगर हम कुछ इल्म ज्योतिष के माहिर न होते और ऐसे ऐसे महान ज्योतिषी हमको प्राप्त न होते तो हम फिर भी इस काम को पूरा न कर सकते। सिवाय इसके अगर हमारा शरीर इस काम के बीच में ही पूरा हो जाता तो जैसे सीता के पिता और नेमिनाथ जी की जन्म नगरी का फरक आज तक नहीं निकला ऐसे ही फिर यह तिथियों के फरक का विघ्न दूर होना असंभव हो जाता॥

पस हम परमात्मा का लाख लाख शुकरिया अदा करते हैं कि हमारे धर्ममें जो पंच-कल्याणक तिथियों में गड बड हो रही थी कहीं कुछ तिथि कहीं कुछ तिथि यह सर्व विघ्न दूर होकर हमारे धर्मकी पंचकल्याणक तिथि हमारी जिंदगी में ही परम शुद्ध मोती समान निर्मल होगई अब यह शुद्ध पंचकल्याणक तिथियों का पाठ सदा को जयवंत रहे॥

पूजन पाठों में स्वाहा शब्द।

बहुत से भाईयों का यह खयाल है कि स्वाहा शब्द होम आदिक में जब कोई सामग्री अग्नि में डालते हैं तब बोलते हैं इसका मतलब वह भस्म होना समझते हैं, सो ऐसे खयालात के भाइयों से प्रार्थना है कि एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं जिस स्थान पर जो अर्थ सम्भव हो वहां वही लिया जाताहै सो स्वाहा शब्दका अर्थ अर्पण करना भी है। इसी वास्ते आचार्योंने यह शब्द योग्य जानकर संस्कृत, प्राकृत पूजन पाठ मूल ग्रंथों में ग्रहण किया है पस पूजन में सामग्री चढ़ाने के वक्त इस का अर्थ अर्पण करना है अर्थात् जिनेंद्र देव के तईं जो द्रव्य चढावें स्वाहा करने से वह द्रव्य भेट करना (नजर-करना) (अर्पण करना) है, इसलिये पूजन में सामग्री चढाने के वक्त स्वाहा बोलते हैं। इस में कोई दोष नहीं है॥

अथ पूजन पाठों में पक्ष, मासों के नाम।

पूजन पाठों में जो फरक पडे हैं वह कृष्ण शुक्ल पक्ष और मासों के नाम के ठीक अर्थ न जानने से पड़े हैं इसलिये भगवान का पूजन पाठ पढने को बच्चों को निम्न लिखत नाम याद कर लेने चाहियें ताकि पंच कल्याणक तिथि सही पढने में शुक्ल कृष्ण पक्ष या मासों की गलती न हो सके॥

शुक्ल पक्ष के नाम।

शुक्ल सित शुभ, शुचि, श्वेत, पांडुर, पांड, अवदात, सित, गौर, वलक्ष, धवल, अर्जुन, हरिण, चांदनी ॥

कृष्ण पक्ष के नाम।

कृष्ण, नील, असित, श्याम, मेचक, अंधयारी, तामसी, काली ॥

पूर्णमाशी के नाम।

पक्षांत, पंचदशी, पौर्णमाशी ॥

अमावस्या के नाम।

अमावस्या, दर्श, सूर्यं दुर्सगम, ३० ॥

१२ मासों के नाम।

शुक्र, शुचि ज्येष्ठ को कहते हैं।

शुचि, आषाढ़ को भी कहते हैं।

नभस, श्रावणिक, श्रावण को कहते हैं।

नभस्य, प्रौष्टपद, भाद्र, भाद्रपद, भाद्रों को कहते हैं।

आश्विन, इष, अश्वयुज आसोज को कहते हैं।

बाहुल, उर्ज, कार्तिक को कहते हैं।

सहा आग्राहयाणिक मार्गशिर्ष मंगसिर को कहते हैं।

तैष, सहस्य, पोष को कहते हैं।

तपा माघ को कहते हैं।

तपस्य फाल्गुनिक फाल्गुण को कहते हैं।

मधु, चैत्रिक चैत्र को कहते हैं।

माधव, राध, वैशाख को कहते हैं।

पूजन पाठ स्तोत्रों में शब्द।

हे बच्चो! जब तुम भगवान का पूजन पाठ या कोई स्तोत्र पढ़ो तो जो उस में किसी छन्द में किसी शब्द में मात्रा या अक्षर न्यून या अधिक देखो तो बिना विचारे उसे ठीक करने को काट फांट मत करो क्योंकि जब कोई कवि छन्द रचता है तो अपने छन्द का वजन ठीक करने को जिस शब्द की चाहे मात्रा या अक्षर न्यून अधिक कर लेता है यह कवियों का कायदा है इस बात को वही जानते हैं जो कवि हैं और शब्द भी अनेक प्रकार के हैं ॥

१—एक प्रकार के शब्द ऐसे हैं कि कई एक शब्दों का एकही अर्थ है यानि वस्तु तो है एक और उसके नाम हैं अनेक जैसे अमरकोश प्रथम काण्ड में एक एक वस्तु के कई कई भिन्न भिन्न नाम हैं सो वह अक्सर करके शायरों यानि कवियों के काम में आते हैं जब वह कोई छन्द रचते हैं तो जो नाम उसमें गूंथना चाहैं जितनी मात्रा की गुंजायश उस चरण के वजन में देखते हैं उतनी मात्रा का नाम उन एक वस्तु के नामों में से चुनकर अपने छन्द में जोड़ लेते हैं अगर फिर भी छन्द के चरण में फरक रहै तो जिस शब्द की मात्रा चाहै न्यून या अधिक करके छन्द के चरण का वजन ठीक कर लेते हैं मसलन छन्द में एक शब्द सब है अगर सब पढ़े तो एक मात्रा छन्द में कम होने से पढने में सकता पड़ता है छंद का वजन ठीक नहीं है तो वह सब को सर्व लिखकर अपने छंद का वजन पूरा कर लेवेगा इसी प्रकार नाली की दीर्घ ई को ह्रस्व कर नालि करदेगा या नलो कर देगा इस प्रकार जिस छन्द में चाहेगा जिस शब्द की मात्रा घटा या बढ़ा कर अपने छन्द का वजन ठीक कर लेवेगा सो इसी कायदे को भले प्रकार वही समझते हैं जो कवि हैं सो जब कभी किसी छंद में किसी शब्दकी मात्रा न्यून या अधिक लिखी होवे और चरण का वजन ठीक होवे सो जो पाठक कवि नहीं हैं या थोड़ी विद्या के धारक कवि हैं उन्हें शब्द की मात्रा ठीक करने को किसी छंद के शब्द में काट छांट नहीं करनी चाहिये और यह भी वाद विवाद नहीं करना चाहिये फलाने नाम के वास्ते फलाने कवि ने फलाने ग्रन्थ के फलाने छन्द में यह शब्द लिखे हैं और दूसरे कवि ने फलाने ग्रन्थ में फलाने शब्द लिखे हैं यह आपस में नहीं मिलते। यदि उन का अर्थ एक ही है तो शब्द भेदका कुछ डर नहीं होता उस को गलत नहीं समझना चाहिये ॥

२—दूसरी जाति के शब्द ऐसे हैं जो शब्द तो है एक और उसके अर्थ हैं अनेक जैसे माई एक रंगकी वस्तु का नाम है, और माता का भी है भला नेक को भी कहते हैं और दही दाल के बड़े को भी कहते हैं सो ऐसे शब्द जिस स्थान पर आवें उनका वहां वह अर्थ समझना चाहिये जिस के आशय को लिये हुए वहां कवि ने छंद रचा है अर्थात् उसका वैसा ही अर्थ लगा कर चरण का या छन्द का अर्थ कविता के भाव और ग्रन्थ के असूल के अनुसार प्रकट होवे उसका वैसा ही अर्थ उस मौके पर लगा लेना चाहिये कार्य्य विरुद्ध शब्द का अर्थ करके ग्रन्थ के रहस्य को दूषित करना योग्य नहीं।

३—तीसरी जाति के शब्द ऐसे हैं कि जिसका वह नाम है उस के अर्थ में से उस का नाम सिद्ध होता है ॥

४—चौथी जाति के शब्द ऐसे हैं कि वह सिरफ किसी वस्तु के लिये नाम मुकर्रर

हैं उनका पदच्छेद करने से या धातु जिस को अंगरेजी में रूट बोलते हैं फारसी में मस्दर बोलते हैं इनसे उनका अर्थ सिद्ध नहीं होता ॥

५—पांचवीं जाति के शब्द ऐसे हैं कि उनकी शकल किसी चरण में तो कुछ हो जाती है किसी में कुछ अगले या पिछले शब्दों के प्रभाव से उनकी शकल बदल जाती हैं।

६—छठी जाति के शब्द ऐसे हैं कि जब वह आपस में जुड़ते हैं तो उन दोनों की ही शकल बदल जाती है ॥

७—सातवीं जाति के शब्द ऐसे हैं कि जब वह किसी चरण में आते हैं तो उन का खुद लोप हो जाता है अर्थात् वह लिखने पढ़ने में नहीं आते गुम रहते हैं जिसको अंगरेजी में अंडरस्टुड बोलते हैं ॥

८—आठवीं जाति के शब्द ऐसे हैं कि जब वह लिखे जाते हैं कभी तो अपने से पहिले को मेट देते हैं कभी पिछले को कभी अपने से पिछले या पहिले की शकल बदल देते हैं कभी अपनी शकल बदल लेते हैं। इस प्रकार शब्द अनेक प्रकार के हैं सो थोड़ी विद्या के धारकों को अपनी अक्ल से ही कथनों में शब्द भेद या मात्रा भेद देख कर उन को गलत जान के काट फांट करनी योग्य नहीं ॥

आखडी भंग महा पाप है।

अनेक जैन स्त्रियों के पंचकल्याणक तिथि में व्रत करने तथा हरी वगैरा अभक्ष न खाने तथा रात्रि भोजन नहीं करने की आखडी होती है। सो भाषा पूजन पाठों में तिथि गलत लिखि रहने से जिस दिन पंचकल्याणक तिथि नहीं होती उस दिन तो वह व्रतादि करती हैं और जिस दिन सच्ची पंचकल्याणक तिथि होती है वह तिथि भाषा पाठों में न लिखि रहने से उस दिन वह व्रत वगैरा नहीं रखतीं अर्थात् इस गलती से उन को आखडी भंग का पाप लगता है। इसलिये जो स्त्रियें आखडी भंग को पाप समझती हैं और उनके पंचकल्याणक तिथि में व्रत वगैरा करने की आखडी है वह आखडी भंग के पाप से बचने के लिये इस पुस्तक में पंचकल्याणक लिखि तिथियों के अनुसार व्रतादि किया करें ॥

मंदिर में प्रतिमा के सन्मुख झूठ बोलना महा पाप है।

भगवान का कल्याणक हुवा तो हो किसी और तिथि को और आप श्री जिन मंदिर में पूजन करते हुए प्रतिबिम्ब के सन्मुख बोले झूठ अर्थात् कहे कोई और तिथि

इस झूठ के पाप का क्या ठिकाना है दूसरे स्थानों के पाप करे मंदिर तथा तीर्थ आदि धर्म स्थानों में क्षय हो सकते हैं मंदिर में झूठ बोलना फिर प्रतिमा के सन्मुख इस पाप का क्या ठिकाना है इस का फल नरक निगोद ही है ॥

एस जो जैनी भाई मंदिर में प्रतिमा के सन्मुख झूठ बोलने को पाप समझते हैं और झूठ बोलने के पाप से बचाना चाहते हैं वह इस पुस्तक में तिथि लिखे अनुसार शुद्ध पंचकल्याणक तिथि पढ कर भगवान का पूजन किया करें ॥

छप गया मूल्य चार रुपये ४)

शुद्धपंचकल्याणक तिथियों का चौवीसी पूजन पाठ संग्रह छपगया।

इसमें ४ चौवीसी पूजा पाठ छपे हैं। १ संस्कृत चौवीसी पूजा पाठ। २ भाषा चौवीसी पूजा पाठ रामचंद्रकृत। ३ वृंदावन कृत। ४ बखतावरकृत। खुलासा आगे पढो

खुले पत्रों में ग्रंथाकार छपा है।

पहले पाठों में आंचली पहले छंद की साथ लिख रक्खी है सिरफ जलमें दूसरे द्रव्य चढाने को बार बार वरक उलट कर पहले में ही देखनी पडती हैं, सिवा इसके द्रव्य चढाने का मंत्र भी एक ही जगह दिया है। जैसे (ॐ ह्रीं श्री ऋषभतीर्थंकराय जलं निर्वपामीति स्वाहा) दूसरे द्रव्य चढाने को फिर पीछे ही देखना पड़ता है और वह एक भी गलत है जैसे यह जल का मंत्र इस प्रकार चाहिये ॥

(ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेंद्राय गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म मृत्यु जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा) ॥

इसी प्रकार चंदन में। इस में संसारताप रोग विनाशनाय। अक्षत में अक्षयपद प्राप्तये यह पाठ बदल कर पढना चाहिये। इसी प्रकार कुल द्रव्यों का अलग अलग बदल कर पढना चाहिये। सिवाय इसके जब एक वस्तु चढावे जैसे जल। उसका पाठ अलग एक वचन में होना चाहिये। जब बहुत वस्तु चढावें जैसे अक्षत। उसका बहु वचन होना चाहिये। सिवाय इसके स्थापना का पाठ जिनेंद्राय तो बिलकुल गलत है दूषित क्या पाप रूप है इस की गलती वही जानते हैं जो आला दरजे के संस्कृत व्याकरणी पंडित हैं सारस्वत चंद्रिका के पढे पंडित इन गलतियों को क्या समझें पदांत में अनेक जगह (म्) की जगह (ं) देरक्खी है। संस्कृत की तो इतनी गलती हैं अगर सब लिखें तो ग्रन्थ बन जावे जयपुर में जो १) रुपये का एक श्लोक लिखा ऐसे ग्रन्थ हैं वह संस्कृत शुद्धता का दाम है खूबसूरती का नहीं ॥

सो हमने आंचली हर छन्द की साथ छापी हैं और द्रव्य चढाने का मंत्र हर द्रव्य के साथ एक वचन बहु वचन का खियाल करके पूरा पूरा छापा है स्थापना में आव्हाननम् का सूचक पाठ लिखा है पदांत वगैरा की गलती से बचाया है॥

हर जगह आंचली और द्रव्य का मंत्र लिखने से पाठ पहले से तीन गुने हो गए हैं यह खुले पत्रे हरिवंश पुराण की तरह छपा है। चार पाठ इकट्ठे छपने से महान् ग्रन्थ बन गया है॥

विज्ञापन Notice. اشتہار

इन पंचकल्याणक तिथियों को शुद्ध करने में हमारी आधी आयु अर्थात् २५ वर्ष खरच हुए हैं इस परिश्रम में जितनी तकलीफ हम को उठानी पड़ी है उसके अलावे इस काम में हमारी एक बहुत बड़ी रकम भी खरच पड़ी है इस वास्ते सरकारी कानून के मुताबिक इस का हक्क हमने अपने स्वाधीन रक्खा है यह १२० पंचकल्याणक शुद्ध तिथि किसी पुस्तक में या किसी अखबार में या किसी अलहदे कागज पर कोई न छापे अगर कोई छापेगा तो उस पर जरूर मुकद्मा किया जावेगा॥

पंचकल्याणक तिथियों का शुद्ध कर्त्ता

हकीम ज्ञानचंद्र जैनी लाहौर (अब रोहतक में)

अथ पूजन करने की विधि।

जितने दिगम्बर जैन हैं पूजन करने की विधि सर्व ही नहीं जानते, सो बाज दुकानदार भाई या अंगरेजी फारसी पढे हुए मुलाजिम पेशे भाई जो मंदिरों में प्रति दिन नहीं जाते या बहुत कम जाते हैं या पूजन नहीं जानते, जब वह सिद्ध क्षेत्रों पर तीर्थ करने आते हैं तो वहां सिद्धक्षेत्र का या जिस तीर्थंकर का वहां कल्याणक हुवा है पूजन करना चाहते हैं तो पूजन करने की विधि न जानने से पूजन नहीं कर सकने से अपने दिल में बहुत दलगीर हो कर बड़ा पश्चाताप करते हैं और अपने आपको मंदभागी समझ कर दूसरे पूजन करने वालों के सामने शर्मिन्दा होते हैं दूसरे १३ पंथ आम्नाय में पूजन की कुछ और विधि है २० पंथ आम्नाय में कुछ और विधि है, और बाज बाज देशों में भी पूजन की विधि में भिन्नता देखी है॥

इस वास्ते हम यहां १३ पंथ बीसपंथ का पक्षपात छोड़ शास्त्रानुकूल पूजन की विधि लिखते हैं।

पूजन इस विधि से करो।

पहले स्थापना मंत्र पढ़कर पुष्पों से स्थापना करो फिर आठ द्रव्य चढ़ते हैं १पहले जल, फिर २चंदन फिर ३अक्षत फिर ४पुष्प फिर ५नैवेद्य फिर ६दीप फिर ७धूप फिर ८फल यह आठों द्रव्य चढ़ाकर फिर अर्घ चढ़ता है ॥ जो वस्तु चढ़ाते हैं पहले उसका पाठ पढ़कर फिर उसके चढ़ाने का मंत्र पढ़कर वह वस्तु चढ़ाते हैं पूजन पाठों में यह सब सिलसिले वार लिखे रहते हैं।

अर्घ—अर्घ उसे कहते हैं जिस में आठों द्रव्य थोड़े थोड़े अपनी तौफीक अनुसार किसी रकाबी में लेकर चढ़ाते हैं ॥

महा अर्घ—महा अर्घ उसे कहते हैं जिसमें आठों द्रव्य ज़ियादा ज़ियादा हों और नारिल का गोला १ हो जयमाला पढ़कर चढ़ाया जाता है फिर यदि एक तीर्थंकर की पूजन करनी है तो पंच कल्याणक का पाठ पढ़कर अलग अलग पांच अर्घ चढ़ते हैं अगर २४ तीर्थंकरों की समुच्चय पूजा करनी है तो वह यह पांच अर्घ नहीं चढ़ते। फिर जयमाला (आरति) का पाठ पढ़कर जयमाला का महाअर्घ चढ़ता है फिर आशीर्वाद का पाठ पढ़ कर आशीर्वाद का अर्घ चढ़ता है संस्कृत पूजाओं में तो यह आशीर्वाद का पाठ जयमाला से अलग लिखा है परंतु आज भाषा पूजा रचने वालों ने सिरफ जयमाला का पाठ ही रचा है आशीर्वाद की जगह पीछे से पुष्प चढ़ा देते हैं यही विधि और पूजाओं में भी जाननी उनमें हर एक में जितने अर्घ चढ़ते हैं उन सब का पाठ लिखा रहता है ॥

अथ स्थापना।

स्थापना का मतलब आह्वानन है यानी उनको बुलाना है फलाने महाराज तुम आओ तिष्ठो मेरे निकट वरती हो आपका पूजन करता हूं सो जिस वक्त नई प्रतिमा बनवा कर उसकी प्रतिष्ठा कराते हैं उसवक्त जिस तीर्थंकर की वह प्रतिमा होती है उसकी पंच कल्याणक विधि करके आह्वानन मंत्र से उस में आह्वानन किया जाता है सो जिसको सिरफ अष्टद्रव्य से पूजन करनी है वह तो स्थापना न भी करे और जिस को पंचोपचारी पूजन करनी है वह वेदी में जिस तीर्थंकर की प्रतिमा विराजमान है उसकी भी और जिस तीर्थंकर की प्रतिमा वेदी में विराजमान नहीं है उसकी भी दोनों की जरूर ही स्थापना करे पूजापाठों में जो हर तीर्थंकर की पूजा के प्रारंभ में स्थापना मंत्र लिखा रहता है उसको उच्चारण करके विनय

भाव सहित जिस तीर्थंकर की प्रतिमा सन्मुख हो उसकी भी स्थापना करो और जिस की प्रतिमा सन्मुख न हो उस की भी स्थापना करो क्योंकि जिसकी स्थापना करते हैं उसको अपनी आत्मा के निकट वर्ती करने के लिये स्थापना की जाती है इसलिये मौजूदा वे मौजूदा दोनों हालत में स्थापना करनी चाहिये किन्तु श्री जिनमंदिर तथा चैत्यालय में जहां प्रतिमा विराजमान हो उसके सन्मुख ही स्थापना करनी अन्यथा जैसे अन्य मती हर किसी जगह हर किसी द्रव्य में स्थापना करलेते हैं तिस प्रकार जिनाज्ञाके प्रतिकूल हर किसी जगह स्थापना करने का निषेध है ॥

अथ अष्टद्रव्य बनाने की विधि।

१ जल—में वही छाना हुवा चरचा हुआ जल चढाओ ॥

१ चंदन—पत्थर के चकले पर केसर काफूर चंदन इलायची आदि सुगंधित वस्तु घिस कर जल में मिला लेते हैं इस में से चढाओ ॥

३ अक्षत—चावलों को धोकर छलने से खुशक कर लेते हैं यह अक्षत की जगह चढाओ परंतु शास्त्रों में ऐसा लिखा है कि जहां तक हो चावल टूटे हुए न हों साबित नोक सहित हों और ताजे धानों में से निकाले हों ताकि उन में जीवों की उत्पत्ति न हुई हो, चौथे काल में धनवान अक्षतों में अनबिन्ध मोती भी चढाते थे ॥

४ पुष्प—तेरह पंथी केसर रगड़ कर उसमें चावल रंग कर चढाते हैं बीसपंथी उमदा सुगंधित प्रासुक फूल चढाते हैं पुष्पों की बाबत शास्त्रों में ऐसा लेख है ॥

पद्म चंपक जात्यादि स्रग्भिः संपूजयेज्जिनान्।
पुष्पा भावेच कुर्वीत पीताक्षतभवैः सुमैः ॥

कमल, चंपा, चमेली, मोगरा आदि उत्तम पुष्पों से जिनेन्द्र की पूजा करे जो कदाचित प्रासुक फूल न मिले तो केशर आदि उत्तम पीले रंग से रंगे हुये चावलों के पुष्पों के पजा करे ॥

नैव पुष्पं द्विधा कुर्यात् न छिद्यात्कलिकामपि।
चंपकोत्पलभेदेन यतिहत्यासमं फलम् ॥

न तो पुष्प के दो टुकडे करे और न पुष्प की कलिका (पांखडी) को तोडे चम्पा के और कमल पुष्प के टुकडे करने या पांखड़ी तोडने से यति हत्या के समान फल लगता है अर्थात् खण्डित फूल से पूजन नहीं करनी ॥

हस्तात्प्रस्खलितं क्षितौ निपतितं लग्नं क्वचित्पादयो
र्यत्मूर्ध्वगतं ? धृतं कुवसने नाभेरधो यद्धृतम्।
स्पृष्टं दुष्टजनै घनैरभिहतं यद्दूषितं कण्टकै-
स्त्याज्यं तत्कुसुमं वदन्ति विबुधा भक्त्याजनप्रीतये ॥

अर्थ—हाथ से गिरा हुआ जमीन पर पड़ा हुआ पांवों पर लगा हुआ............
खराब कपड़ेमें रक्खा हुआ सूंडी के नीचे लिया हुआ दुष्ट आदमियों से स्पर्शा (छूवा)
हुआ मेघ से भीगा हुआ और कांटों वाला फल त्यागना (छोड़ना) चाहिये ॥

५ नैवेद्य—तेरह पंथी खोपा (गरी) को छील कर उस की छोटी छोटी चौरस
फांक बना कर उन को धोकर साफ कर एक दो चार जैसी सामर्थ हो चढ़ाते हैं बीस
पंथी तरह तरह की प्रासुक मिठाई शुद्ध क्रिया से बनवा कर चढ़ाते हैं ॥

६ दीप—तेरह पंथी खोपा (गरी) की छोटी छोटी चौरस फांक बना कर धोकर
साफ कर केसर रगड़ उसमें रंग लेते हैं एक दो चार जैसी सामर्थ्य हो चढ़ाते हैं।
बीस पंथी काफूर जलाकर चढ़ाते हैं या घी का दीपक बाल कर चढ़ाते हैं चौथे काल
में धनवान चुन्नी (लाल) (मणी) चढ़ाते थे ॥

७ धूप—१३ पंथी बाज नगरों में तो लोग धोकर चढ़ाते हैं बाज में लोगों को
जरा कूट लेते हैं ताकि उसमें फल पने का भाव न रहे बाज नगरों में चंदन चूरा काफूर
चढ़ाते हैं बाज नगरों में सामग्री के थाल में ही चढ़ा देते हैं बाज नगरों में जो अग्नि
के कोयले पास बर्तन में रखे रहतेहैं उन में वह चंदन चूरा वगैरा चढ़ा देते हैं ताकि उस
धूप में से सुगंधि निकले। बीस पंथी चंदन चूरा आदि सुगंधित वस्तु अग्नि में ही
डालते हैं या बाज नगरों में धूप को पवित्र क्रिया सेबनी बत्ती जलाकर धूप खेते हैं ॥

८ फल—तेरह पंथी बादामों को धोकर एक दो चार जैसी सामर्थ्य हो चढ़ाते
हैं बाज नगरों में सुपारी छुहारा दाख इलायची नारियल वगैरा भी चढ़ाते हैं। बीस
पंथी प्रासुक सुन्दर रंग दार ताजे आम केला वगैरा तरह तरह के फल चढ़ाते हैं ॥

९ अर्घ—जलादिक आठों द्रव्य एक रकाबी में रख कर चढ़ाते हैं ॥

नोट—जिनेन्द्रकी पूजन पुण्य बन्ध के लिये की जाती है ॥

अथ पूजन प्रारंभ करनेके समय स्थापना मंत्र।

अनेक नावाकिफ जैनी भाई एक तीर्थंकर की और समुच्चय में बहुतसे तीर्थं-
करों की स्थापना करने के समय एकसा ही पाठ पढ़ कर स्थापना करते हैं सो यह

ठीक नहीं है। एक तीर्थंकर की पूजन में एकवचन का पाठ २४ तीर्थंकरों की पूजन में बहुवचन का पाठ, भिन्न भिन्न नीचे लिखे अनुसार मंत्र पढ़कर स्थापना करनी चाहिये॥

एक तीर्थंकर की स्थापना।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

नोट—ऋषभ की जगह जिस तीर्थंकर की स्थापना करनी हो उसका नाम पढ़ो।

चौबीस तीर्थंकरों की समुच्चय स्थापना।

अगर २४ तीर्थंकरों की समुच्चय स्थापना करनी हो तो ऐसा पाठ पढ़ो॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिनेंद्राय अत्राऽवतरताऽवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिनेंद्रा अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिनेंद्रा अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

अथ पूजन में द्रव्य चढ़ाने के मंत्र।

अनेक नावाकिफ जैनी भाई पूजन में अष्टद्रव्य चढ़ाने के समय आठों द्रव्यों के चढ़ाने का मंत्र एकसा ही पढ़ते हैं सो यह ठीक नहीं। हरएक द्रव्य चढ़ाने के समय अलग अलग मंत्र नीचे लिखे अनुसार पढ़कर द्रव्य चढ़ाना चाहिये।

जल–ओंह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म जरा मृत्यु रोग विनाशनाय,जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चन्दन–ओं ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पञ्चकल्याण प्राप्ताय संसाराताप रोग विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत–ओंह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्प–ओंह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ,जन्म, तप, ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामबाण विध्वंसनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य–ओंह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप–ओंह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धूप–ओंह्रीं श्री ऋषभनाथ, जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल–ओं ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय, मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ-ॐह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नोट—जिस भगवान की पूजा करनी हो ऋषभ की जगह उसका नाम पढो, अगर २४ तीर्थंकर की समुच्चय पूजा करते हो तो ऋषभ की जगह ऋषभादि महा वीरांत चतुर्विंशति जिनेंद्रेभ्यो या (भ्यः) पढो ॥,

अथ अष्ट द्रव्य चढाने के पाठ।

हर एक पूजा पाठ में द्रव्य चढाने का पाठ लिखा रहता है परंतु बाज दफे जब तीर्थों पर दर्शन करने के समय अपने पास पूजन पाठ नहीं होता उस समय तीर्थ पर द्रव्य चढाते हैं तो पाठ पढ कर चढाना चाहिये इसलिये आठों द्रव्यों का अलग अलग पाठ लिखते हैं जो द्रव्य चढाना हो उसका पाठ पढ कर चढावे ॥

अथ जल चढ़ावने का पाठ।

जब श्री जिन मंदिर में भगवान के प्रतिबिम्ब के सन्मुख या सिद्ध क्षेत्रपर निसहि जी के आगे नमस्कार करने के समय जल चढ़ाओ तब यह पाठ पढ़कर चढ़ाओ।

दोहा।

मलिन वस्तु उज्ज्व करै, यहस्वभाव जलमाहिं।
जलसों जिन पद पूजतें, कृतकलंक मिटजाहिं ॥
जलं निर्वपामीतिस्वाहा (जलचढ़ादो)

(चाहे यह पाठ पढ़कर चढ़ाओ)

देवेंद्र नागेंद्र नरेंद्र वंद्यान् शुंभत्पदान् शोभितसार वर्णान्।
दुग्धाब्धि संस्पर्द्धिगुणैर्जलौघैर्जिनेंद्र सिद्धान्तयतीन्यजेऽहम् ॥

चंदन चढ़ावने का पाठ।

जब श्रीजिन मंदिर में भगवान् के प्रतिबिम्ब के सन्मुख या सिद्धक्षेत्र पर निसहिजी के आगे नमस्कार करने के समय चंदन चढ़ाओ तब यह पाठ पढ़कर चढ़ाओ।

दोहा।

तप्त वस्तु शीतल करै, चंदन शीतल आप।
चंदन सों जिन पूजतैं, मिटै मोहसंताप॥
चंदन तो शीतल करे, भवाताप नहिंजाय।
भवाताप प्रभु तुम हरो, याते पूजों पाय॥

चंदन निर्वपामीति स्वाहा (चंदन चढ़ाओ)

(चाहे यह पाठ पढ़कर चढ़ाओ)

ताम्यत्रिलोको दरमध्यवर्ति, समस्तसत्त्वाऽहितहारिवाक्यान्।
श्रीचंद्नैर्गंधविलुब्धभृंगै, र्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहम्॥

अक्षत चढ़ावने का पाठ।

जब श्री जिन मंदिर में भगवान के प्रतिबिम्ब के सन्मुख या सिद्ध क्षेत्र पर निसहि जी के आगे नमस्कार करने के समय अक्षत चढ़ाओ तब यह पाठ पढ़ कर चढ़ाओ॥

दोहा।

तुम सन्मुख मोती चढ़ें, सो मुझ शक्ति है नाथ।
अक्षत लायो नाज के, सो अब देत चढ़ाय॥
अक्षत से पूजूं चरण, अक्षय पद निर्वान।
सो प्रभु मोको दीजिये, ज्ञान शरण लइ आन॥

अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा (अक्षत चढ़ावो)

सो हमने आंचली हर छन्द की साथ छापी हैं और द्रव्य चढाने का मंत्र हर द्रव्य के साथ एक वचन बहु वचन का खियाल करके पूरा पूरा छापा है स्थापना में आव्हाननम् का सूचक पाठ लिखा है पदांत वगैरा की गलती से बचाया है॥

हर जगह आंचली और द्रव्य का मंत्र लिखने से पाठ पहले से तीन गुने हो गए हैं यह खुले पत्रे हरिवंश पुराण की तरह छपा है। चार पाठ इकट्ठे छपने से महान् ग्रन्थ बन गया है॥

विज्ञापन Notice. اشتہار

इन पंचकल्याणक तिथियों को शुद्ध करने में हमारी आधी आयु अर्थात् २५ वर्ष खरच हुए हैं इस परिश्रम में जितनी तकलीफ हम को उठानी पड़ी है उसके अलावे इस काम में हमारी एक बहुत बड़ी रकम भी खरच पड़ी है इस वास्ते सरकारी कानून के मुताबिक इस का हक्क हमने अपने स्वाधीन रक्खा है यह १२० पंचकल्याणक शुद्ध तिथि किसी पुस्तक में या किसी अखबार में या किसी अलहदे कागज पर कोई न छापे अगर कोई छापेगा तो उस पर जरूर मुकद्दमा किया जावेगा॥

पंचकल्याणक तिथियों का शुद्ध कर्ता

हकीम ज्ञानचंद्र जैनी लाहौर (अब रोहतक में)

अथ पूजन करने की विधि।

जितने दिगम्बर जैन हैं पूजन करने की विधि सर्व ही नहीं जानते, सो बाज दुकानदार भाई या अंगरेजी फारसी पढ़े हुए मुलाजिम पेशे भाई जो मंदिरों में प्रति दिन नहीं जाते या बहुत कम जाते हैं या पूजन नहीं जानते, अब वह सिद्ध क्षेत्रों पर तीर्थ करने जाते हैं तो वहां सिद्धक्षेत्र का या जिस तीर्थंकर का वहां कल्याणक हुवा है पूजन करना चाहते हैं तो पूजन करने की विधि न जानने से पूजन नहीं कर सकने से अपने दिल में बहुत दलगीर हो कर बड़ा पश्चाताप करते हैं और अपने आपको मंदभागी समझ कर दूसरे पूजन करने वालों के सामने शर्मिन्दा होवे हैं दूसरे १३ पंथ आम्नाय में पूजन की कुछ और विधि है २० पंथ आम्नाय में कुछ और विधि है, और बाज बाज देशों में भी पूजन की विधि में भिन्नता देखी है॥

इस वास्ते हम यहां १३ पंथ बीसपंथ का पक्षपात छोड़ शास्त्रानुकूल पूजन की विधि लिखते हैं।

पूजन इस विधि से करो।

पहले स्थापना मंत्र पढ़कर पुष्पों से स्थापना करो फिर आठ द्रव्य चढ़ते हैं १पहले जल, फिर २चंदन फिर ३अक्षत फिर ४पुष्प फिर ५नैवेद्य फिर ६दीप फिर ७धूप फिर ८फल यह आठों द्रव्य चढ़ाकर फिर अर्घ चढ़ता है॥ जो वस्तु चढ़ाते हैं पहले उसका पाठ पढ़कर फिर उसके चढ़ाने का मंत्र पढ़कर वह वस्तु चढ़ाते हैं पूजन पाठों में यह सब सिलसिले वार लिखे रहते हैं।

अर्घ—अर्घ उसे कहते हैं जिस में आठों द्रव्य थोड़े थोड़े अपनी तौफीक अनुसार किसी रकाबी में लेकर चढ़ाते हैं॥

महा अर्घ—महा अर्घ उसे कहते हैं जिसमें आठों द्रव्य जियादा जियादा हों और नारिल का गोला १ हो जयमाला पढ़कर चढ़ाया जाता है फिर यदि एक तीर्थंकर की पूजन करनी है तो पंच कल्याणक का पाठ पढ़कर अलग अलग पांच अर्घ चढ़ते हैं अगर २४ तीर्थंकरों की समुच्चय पूजा करनी है तो वह यह पांच अर्घ नहीं चढ़ते। फिर जयमाला (आरति) का पाठ पढ़कर जयमाला का महाअर्घ चढ़ता है फिर आशीर्वाद का पाठ पढ़ कर आशीर्वाद का अर्घ चढ़ता है संस्कृत पूजाओं में तो यह आशीर्वाद का पाठ जयमाला से अलग लिखा है परंतु बाज भाषा पूजा रचने वालों ने सिरफ जयमाला का पाठ ही रचा है आशीर्वाद की जगह पीछे से पुष्प चढ़ा देते हैं यही विधि और पूजाओं में भी जाननी उनमें हर एक में जितने अर्घ चढ़ते हैं उन सब का पाठ लिखा रहता है॥

अथ स्थापना।

स्थापना का मतलब आह्वानन है यानी उनको बुलाना है फलाने महाराज तुम आओ तिष्ठो मेरे निकट वरती हो आपका पूजन करता हूं सो जिस वक्त नई प्रतिमा बनवा कर उसकी प्रतिष्ठा कराते हैं उसवक्त जिस तीर्थंकर की वह प्रतिमा होती है उसकी पंच कल्याणक विधि करके आह्वानन मंत्र से उस में आह्वानन किया जाता है सो जिसको सिरफ अष्टद्रव्य से पूजन करनी है वह तो स्थापना न भी करे और जिस को पंचोपचारी पूजन करनी है वह वेदी में जिस तीर्थंकर की प्रतिमा विराजमान है उसकी भी और जिस तीर्थंकर की प्रतिमा वेदी में विराजमान नहीं है उसकी भी दोनों की जरूर ही स्थापना करे पूजापाठों में जो हर तीर्थंकर की पूजा के प्रारंभ में स्थापना मंत्र लिखा रहता है उसको उच्चारण करके विनय

भाव सहित जिस तीर्थंकर की प्रतिमा सन्मुख हो उसकी भी स्थापना करो और जिस की प्रतिमा सन्मुख न हो उस की भी स्थापना करो क्योंकि जिसकी स्थापना करते हैं उसको अपनी आत्मा के निकट वर्त्ती करने के लिये स्थापना की जाती है इसलिये मौजूदा वे मौजूदा दोनों हालत में स्थापना करनी चाहिये किन्तु श्री जिनमंदिर तथा चैत्यालय में जहां प्रतिमा विराजमान हो उसके सन्मुख ही स्थापना करनी अन्यथा जैसे अन्य मती हर किसी जगह हर किसी द्रव्य में स्थापना करलेते हैं तिस प्रकार जिनाज्ञाके प्रतिकूल हर किसी जगह स्थापना करने का निषेध है॥

अथ अष्टद्रव्य बनाने की विधि।

१ जल—में वही छाना हुवा चरचा हुआ जल चढाओ॥

१ चंदन—पत्थर के चकले पर केसर काफूर चंदन इलायची आदि सुगंधित वस्तु घिस कर जल में मिला लेते हैं इस में से चढाओ॥

३ अक्षत—चावलों को धोकर छलने से खुशक कर लेते हैं यह अक्षत की जगह चढाओ परंतु शास्त्रों में ऐसा लिखा है कि जहां तक हो चावल टूटे हुए न हों साबित नोक सहित हों और ताजे धानों में से निकाले हों ताकि उन में जीवों की उत्पत्ति न हुई हो, चौथे काल में धनवान अक्षतों में अनविन्ध मोती भी चढाते थे॥

४ पुष्प—तेरह पंथी केसर रगड़ कर उसमें चावल रंग कर चढाते हैं बीसपंथी उमदा सुगंधित प्रासुक फूल चढाते हैं पुष्पों की बाबत शास्त्रों में ऐसा लेख है॥

पद्म चंपक जात्यादि स्रग्भिः संपूजयेज्जिनान्।
पुष्पा भावेच कुर्वीत पीताक्षतभवैः सुमैः॥

कमल, चंपा, चमेली, मोगरा आदि उत्तम पुष्पों से जिनेन्द्र की पूजा करे जो कदाचित प्राशुक फूल न मिले तो केशर आदि उत्तम पीले रंग से रंगे हुये चावलों के पुष्पों के पूजा करे॥

नैव पुष्पं द्विधा कुर्यात् न छिद्यात्कलिकामपि।
चंपकोत्पलभेदेन यतिहत्यासमं फलम्॥

न तो पुष्प के दो टुकड़े करे और न पुष्प की कलिका (पांखडी) को तोड़े चम्पा के और कमल पुष्प के टुकड़े करने या पांखड़ी तोड़ने से यति हत्या के समान फल लगता है अर्थात् खण्डित फूल से पूजन नहीं करनी॥

हस्तात्प्रस्खलितं क्षितौ निपतितं लग्नं क्वचित्पादयो
र्यन्मूर्द्धगतं ? धृतं कुवसने नाभेरधो यद्धृतम्।
स्पृष्टं दुष्टजनैर्घनैरभिहतं यद्दूषितं कण्टकै-
स्त्याज्यं तत्कुसुमं वदन्ति विबुधा भक्त्याजनप्रीतये॥

अर्थ—हाथ से गिरा हुआ जमीन पर पड़ा हुआ पांवों पर लगा हुआ..........
खराब कपड़ेमें रक्खा हुआ सूंडी के नीचे लिया हुआ दुष्ट आदमियों से स्पर्श (छूवा) हुआ मेघ से भीगा हुआ और कांटों वाला फल त्यागना (छोड़ना) चाहिये॥

५ नैवेद्य—तेरह पंथी खोपा (गरी) को छील कर उस की छोटी छोटी चौरस फांक बना कर उन को धोकर साफ कर एक दो चार जैसी सामर्थ हो चढ़ाते हैं बीस पंथी तरह तरह की प्राशुक मिठाई शुद्ध क्रिया से बनवा कर चढ़ाते हैं॥

६ दीप—तेरह पंथी खोपा (गरी) की छोटी छोटी चौरस फांक बना कर धोकर साफ कर केसर रगड़ उसमें रंग लेते हैं एक दो चार जैसी सामर्थ्य हो चढ़ाते हैं। बीस पंथी काफूर जलाकर चढ़ाते हैं या घी का दीपक बाल कर चढ़ाते हैं चौथे काल में धनवान चुन्नी (लाल) (मणी) चढ़ाते थे॥

७ धूप—१३ पंथी बाज नगरों में तो लोग धोकर चढ़ाते हैं बाज में लोंगों को जरा कूट लेते हैं ताकि उनमें फलपने का भाव न रहे बाज नगरों में चंदन चूरा काफूर चढ़ाते हैं बाज नगरों में सामग्री के थाल में ही चढ़ा देते हैं बाज नगरों में जो अग्नि के कोयले पास वर्तन में रखे रहतेहैं उन में वह चंदन चूरा वगैरा चढ़ा देते हैं ताकि उस धूप में से सुगंधि निकले। बीस पंथी चंदन चूरा आदि सुगंधित वस्तु अग्नि में ही डालते हैं या बाज नगरों में धूप की पवित्र क्रिया लेवनी बत्ती जलाकर धूप खेते हैं॥

८ फल—तेरह पंथी बादामों को धोकर एक दो चार जैसी सामर्थ्य हो चढ़ाते हैं बाज नगरों में सुपारी छुहारा दाख इलायची नारियल वगैरा भी चढ़ाते हैं। बीस पंथी प्राशुक सुन्दर रंग दार ताजे आम केला वगैरा तरह तरह के फल चढ़ाते हैं॥

९ अर्घ—जलादिक आठों द्रव्य एक रकाबी में रख कर चढ़ाते हैं॥

नोट—जिनेन्द्रकी पूजन पुण्य बन्ध के लिये की जाती है॥

अथ पूजन प्रारंभ करनेके समय स्थापना मंत्र।

अनेक नावाकिफ जैनी भाई एक तीर्थंकर की और समुच्चय में बहुतसे तीर्थंकरों की स्थापना करने के समय एकसा ही पाठ पढ़ कर स्थापना करते हैं सो यह

ठीक नहीं है। एक तीर्थंकर की पूजन में एकवचन का पाठ २४ तीर्थंकरों की पूजन में बहुवचन का पाठ भिन्न भिन्न नीचे लिखे अनुसार मंत्र पढ़कर स्थापना करनी चाहिये॥

एक तीर्थंकर की स्थापना।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिनेंद्र अत्रमम सन्निहितो भवभव वषट् सन्नधिकरणम्॥

नोट—ऋषभ की जगह जिस तीर्थंकर की स्थापना करनी हो उसका नाम पढ़ो।

चौबीस तीर्थंकरों की समुच्चय स्थापना।

अगर २४ तीर्थंकरों की समुच्चय स्थापना करनी हो तो ऐसा पाठ पढ़ो॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिनेंद्राय अत्राऽवतरताऽवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिनेंद्रा अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिनेंद्रा अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधि करणम्।

अथ पूजन में द्रव्य चढ़ाने के मंत्र।

अनेक नावाकिफ जैनी भाई पूजन में अष्टद्रव्य चढ़ाने के समय आठों द्रव्यों के चढ़ाने का मंत्र एकसा ही पढ़ते हैं सो यह ठीक नहीं। हरएक द्रव्य चढ़ाने के समय अलग अलग मंत्र नीचे लिखे अनुसार पढ़कर द्रव्य चढ़ाना चाहिये।

जल-ओंह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म,तप,ज्ञान,निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय जन्म जरा मृत्यु रोग विनाशनाय,जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चन्दन-ओं ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पञ्चकल्याण प्राप्ताय संसारताप रोग विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत-ओंह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प-ओंह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ,जन्म, तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय कामबाण विध्वंसनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य-ओंह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप-ओंह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप,ज्ञान,निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥

धूप-ओंह्रीं श्री ऋषभनाथ, जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल-ओं ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय, मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्घ-ॐह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेंद्राय, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण, पंचकल्याण प्राप्ताय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नोट—जिस भगवान को पूजा करनी हो ऋषभ की जगह उसका नाम पढो, अगर २४ तीर्थंकर की समुच्चय पूजा करते हो तो ऋषभ की जगह ऋषभादि महावीरांत चतुर्विंशति जिनेंद्रेभ्यो या (भ्यः) पढो ॥

अथ अष्ट द्रव्य चढाने के पाठ।

हर एक पूजा पाठ में द्रव्य चढाने का पाठ लिखा रहता है परंतु बाज दफे जब तीर्थों पर दर्शन करने के समय अपने पास पूजन पाठ नहीं होता उस समय तीर्थ पर द्रव्य चढाते हैं तो पाठ पढ कर चढाना चाहिये इसलिये आठों द्रव्यों का अलग अलग पाठ लिखते हैं जो द्रव्य चढाना हो उसका पाठ पढ कर चढावें ॥

अथ जल चढ़ावने का पाठ।

जब श्री जिन मंदिर में भगवान के प्रतिबिम्ब के सनमुख या सिद्ध क्षेत्रपर निसहि जी के आगे नमस्कार करने के समय जल चढ़ाओ तब यह पाठ पढ़कर चढ़ाओ।

दोहा।

मलिन वस्तु उज्ज्व करै, यहस्वभाव जलमाहिं।
जलसों जिन पद पूजतैं, कृतकलंक मिट जाहिं ॥
जलं निर्वपामीतिस्वाहा (जलचढ़ादो)

(चाहे यह पाठ पढ़कर चढ़ाओ)

देवेंद्र नागेंद्र नरेंद्र वंद्यान् शुंभत्पदान् शोभितसार वर्णान्।
दुग्धाब्धि संस्पर्द्धिगुणैर्जलौघैर्जिनेंद्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥

चंदन चढ़ावने का पाठ।

जब श्रीजिन मंदिर में भगवान् के प्रतिविम्ब के सन्मुख या सिद्धक्षेत्र पर निसहिजी के आगे नमस्कार करने के समय चंदन चढ़ाओ तब यह पाठ पढ़कर चढ़ाओ।

दोहा।

तप्त वस्तु शीतल करै, चंदन शीतल आप।
चंदन सों जिन पूजतें, मिटै मोहसंताप॥
चंदन तो शीतल करे, भवाताप नहिंजाय।
भवाताप प्रभु तुम हरो, याते पूजों पाय॥

चंदन निर्वपामीति स्वाहा (चंदन चढ़ादो)

(चाहे यह पाठ पढ़कर चढ़ाओ)

ताम्यत्रिलोको दरमध्यवर्ति, समस्तसत्त्वाऽहितहारिवाक्यान्।
श्रीचंदनैर्गंधविलुब्धभृंगै, जिनेंद्रसिद्धांत यतीन् यजेऽहम्॥

अक्षत चढ़ावने का पाठ।

जब श्री जिन मंदिर में भगवान के प्रतिबिम्ब के सन्मुख या सिद्ध क्षेत्र पर निसहि जी के आगे नमस्कार करने के समय अक्षत चढ़ाओ तब यह पाठ पढ़ कर चढाओ॥

दोहा।

तुम सन्मुख मोती चढें, सो मुझ शक्ति है नांय।
अक्षत लायो नाज के, सो अब देत चढाय॥
अक्षत से पूजूं चरण, अक्षय पद निर्वान।
सो प्रभु मोको दीजिये, ज्ञान शरण लइ आन॥

अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा (अक्षत चढादो)

(चाहे यह पाठ पढ़ कर चढ़ाओ)

तंदुल धवल पवित्र अति, नाम रु अक्षत तास।
अक्षत सो जिन पूजते, अक्षय गुण परकास॥

(चाहे यह पाठ पढ़ कर चढ़ाओ)

अपार संसार महा समुद्र,प्रोत्तारणे प्राज्यतरीन सुभक्त्या।
दीर्घाक्षतां गैर्धवलाक्षतौ घैर्जिनेंद्रसिद्धांत यतिन्यजेऽहम॥

पुष्प (फूल) चढ़ावने का पाठ।

जब श्री जिन मंदिर में भगवान् के प्रतिबिम्ब के सन्मुख या सिद्ध क्षेत्र पर निसही जी के आगे नमस्कार करने के समय पुष्प (फूल) चढ़ाओ तब यह पाठ पढ़ कर चढ़ाओ॥

दोहा।

कल्प वृक्ष के फूल ले, महा सुगंधित जान।
तुम को देव चढ़ावते, सो हम सके न आन॥
चम्पा चंवेली मोतिया, नरगस गेंदा गुलाब।
अथवा तंदुल रंग रंगे, लाओ मन कर चाव॥
ज्ञानी पुष्प चढ़ावता, तुम सन्मुख जिनराज।
वांछा मन पूरी करो, सारो सगरे काज॥

पुष्पंनिर्वपामीति स्वाहा (पुष्प चढ़ादो)

(चाहे यह पाठ पढ़ कर चढ़ाओ)

पुष्प चाप धर पुष्प शर, धारै मन्मथ वीर।
यातें पुजा पुष्प से हरै, मदन शर पीर॥

(चाहे यह पाठ पढ़ कर चढ़ाओ)

विनीत भव्याब्ज विबोध सूर्यान्,
वर्य्यान् सुचर्य्याकथनैक धुर्य्यान् ॥
कुन्दार विन्द प्रमुखैः प्रसूनै,
जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥

नैवेद्य चढ़ावने का पाठ।

जब श्रीजिन मंदिर में भगवान् के प्रतिबिम्ब के सन्मुख या सिद्ध क्षेत्र पर निसहीजी के आगे नमस्कार करने के समय नैवेद्य चढ़ाओ तब यह पाठ पढ़कर चढ़ाओ ॥

दोहा।

परम अन्न नैवेद्य विधि, क्षुधा हरण तन पोष ।
जिन पूजन नैवेद्यसों, मिटै क्षुदादिक दोष ॥

नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा (नैवेद्य चढ़ावो)

(चाहे यह पाठ पढ़ कर चढ़ाओ)

कुदर्प कंदर्पविसर्प्प सर्पं, प्रसह्यनिर्नाशन वैनतेयान् ।
प्राज्याज्य सारैश्च रूभीरसाढचै,जिनेंद्र सिद्धांतःयतीन्यजेऽहम् ॥

दीप चढ़ावने का पाठ।

जब श्रीजिन मंदिर में भगवान् के प्रतिबिम्ब के सन्मुख या सिद्ध क्षेत्र पर निसहिं जी के आगे नमस्कार करने के समय दीप चढ़ाओ तब यह पाठ पढ़ कर चढ़ाओ ॥

दोहा।

आपा पर देखै सकल, निश में दीपक जोत।
दीपक सो जिन पूजते, निर्मल ज्ञान उद्योग॥
दीपं निर्वपामीति स्वाहा (दीप चढादो)

(चाहे यह पाठ पढ़ कर चढ़ाओ)

ध्वस्तोघमांधी कृत विश्व विश्व, मोहांधकार प्रतिघात दीपान्।
दीपैः कनत्कांचन भाजन स्थैर्जिनेंद्र सिद्धांतयतीन्यजेऽहम्॥

धूप चढ़ावने का पाठ।

जब श्री जिनमंदिर में भगवान् के प्रतिबिम्ब के सन्मुख या सिद्धक्षेत्र पर निसही जी के आगे नमस्कार करने के समय धूप चढ़ाओ तब यह पाठ पढ़ कर चढ़ाओ।

दोहा।

पावक दहै सुगंधिको, धूप कहावै सोय।
खेवत धूप जिनेश को, अष्ट कर्म क्षय होय॥
धूपं निर्वपामीति स्वाहा (धूपचढ़ादो)

(चाहे यह पाठ पढ़ कर चढ़ाओ)

दुष्टाष्ट कर्मेंधन पुष्टजाल, संधूप नेभा सुर धूमकेतून्।
धूपैर्विधूतान्यसुगंधगंधै, जिनेन्द्रसिद्धान्त यतीन्यजेऽहम्॥

फल चढ़ावने का पाठ।

जब श्री जिनमंदिर में भगवान् के प्रतिबिम्ब के सन्मुख या सिद्धक्षेत्र पर निसहि जी के आगे नमस्कार करने के समय फल चढ़ाओ तब यह पाठ पढ़कर चढ़ाओ॥

दोहा।

सरदा शरीफा मालटा, अनंनास नारंग।
लीची मिट्ठे चकोतरा, केला पेले रंग॥
आंम अंगूर व आंवले, अड़ू अनार बिहसेव।
ककड़ी कमरख कमलफल, तुम ढिंग लाया देव॥
बदाम सुपारी नारियल, पिस्तालोंग खुमाण।
फल से पूजे ज्ञानचन्द, दीजे फल निर्वाण।

फलंनिर्वपामीति स्वाहा (फल चढ़ादो)

(चाहे यह पाठ पढ़कर चढ़ाओ)

जो जैसी करनी करै, सो तैसा फल लेय।
फल पूजा जिनदेवकी, निश्चय शिव फल देय॥
फल फल सब कोऊ कहै, यह फल वह फल नाय।
महा मोक्ष फल तुम लह्यो, याते पूजों पाय॥

(चाहे यह पाठ पढ़कर चढ़ाओ)

क्षभ्यद्विलुभ्यन्मनसासगभ्यान्, कुवादि वादाऽस्खलित प्रभावान्।
फलैरलंमोक्ष फलाभिसारै, जिनेंद्रसिद्धान्त यतीन् यजेऽहम्॥

जिनबाणी नमस्कार।

यह पाठ पढ़कर शास्त्रों को नमस्कार करो।

वीर हिमाचल तें निकसी गुरु गौतम के मुख कुंडढरी है,
मोह महाचल भेद चली जगकी जड़ता तप दूर करी है।
ज्ञान पयोनिधि माहिं रली बहु, भंग तरंगनि सं उछली है।

ता शुचि शारद गंग नदी प्रती मैं अंजुली निज शीस धरी है।
याजगमंदिर में अनिवार अज्ञान अन्धेर छयोअति भारी,
श्रीजिनकी धुनि दीप शिखा शुचि जो नहिं होय प्रकाशन हारा।
तो किस भांति पदारथ पांति कहां लहते रहते अविचारी।
या विधि सन्त कहें धनि हैं धनि हैं जिन बैन बडे उपकारी।
जयजिनवाणी माता को मेरा नमस्कार हो।

सभा में शास्त्र जी विराजमान होने के समय इस प्रकार वर्ताव करो।

शास्त्र जी को "हे जिनवाणी तेरे अर्थ नमस्कार हो" इस प्रकार उच्चारण करते हुए विनय सहित अष्टाङ्ग नमस्कार करो वक्ता जो ओंकार पाठ शास्त्र के शुरू में पढ़ना है वह हम अर्थ सहित पहले लिख चुके हैं उस को पढ़ कर जब शास्त्र का पढ़ना शुरू करे तब से मन वचन काय को शास्त्र के सुनने में लगाओ और शास्त्र का असली मतलब समझो किसी से बात चीत मत करो खम्भे आदि का सहारा लगा कर मत बैठो॥

एक शास्त्र बांचने के बाद यह पढ़ो।

आदि अन्त या धर्म ते सुखी होत है जीव।
ताते तन मन वचन ते सेवो भव्य सदीव॥ १॥
धर्म करत संसार सुख धर्म करत निरवान।
धर्म पंथ साधे बिना नर तिर्यंच समान॥ २॥

शास्त्र संपूर्ण होने के बाद यह पढो ।

शिखरणी छन्द ।

पहले एक उपदेशी भजन पढो बादमें जिनवाणी की स्तुति पढो ।

जिन वाणी की स्तुति ।

अकेला ही हुं मैं करम सब आये सिमट के ।
लिया है मैं तेरा शरण अब माता सटक के ॥
भ्रमावत है मोकूं करम दुःख देता जनम का ।
करूं भक्ती तेरी हरो दुःख माता भ्रमण का ॥ १ ॥
दुःखी हुआ भारी भ्रमत फिरता हुं जगत में ।
सह्या जाता नांही अकल घबराई भ्रमण में ॥
करूं क्या मा मोरी चलत बस नांही मिटण का ।
करूं भक्ती तेरी हरो दुःख माता भ्रमण का ॥ २ ॥
सुणो माता मोरी अरज करता हूं दरद में ।
दुःखी जाणो मो को डरप कर आयो शरण में ॥
कृपा ऐसी कीजे दरद मिट जावे मरण का ।
करूं भक्ती तेरी हरो दुःख माता भ्रमण का ॥ ३ ॥
पिलावे जो मोकूं सुविधि कर प्याला अमृत का ।
मिटावे जो मेरा सरव दुःख सारा फिरण का ॥
पडूं पावों तेरे सरव दुःख भागा फिकर का ।
करूं भक्ती तेरी हरो दुःख माता भ्रमण का ॥ ४ ॥

सवैया।

मिथ्या तम नाशवे कूं ज्ञान के प्रकाशवे कूं,
आपा पर भासवे कूं भानुसी बखानी है।
छहों द्रव्य जानवे को वसुविधि भानवे कूं,
स्वपर पिछानवे कूं परम प्रमानी है।
अनुभो बतायवे को जीवों को जितायवे कूं,
काहु न सतायवे को भव्य उर आनी है।
जहां तहां तारवे को पारके उतारवे कूं,
सुख वितारवे को तूही जिनवाणी है।

दोहा।

जिनवाणी की यह थुती, अल्प बुद्धि परमान।
पन्नालाल विनती करे, देहुमात मुझ ज्ञान॥
जा वाणी के ज्ञानते, सूझे लोका लोक।
सो वाणी मस्तक चढ़ो, सदा देत हूं ढोक॥

आखिरमें शास्त्र वंचने के बाद तथा भजन और स्तुति पढ़ने के बाद शास्त्रजी के विराजमान होनेके पीछे श्रीजी के प्रतिविम्ब को नमस्कार करके जाओ नमस्कार करती दफे यह पढ़ो।

अद्य मे क्षालितं गात्रं नेत्रेच विमलीकृते,
स्नातोहं धर्मतीर्थेषु जिनेन्द्र तव दर्शनात्।

सूचना—अगर सभा में दो शास्त्र न विराजमान हो एकही विराजमान हो तो उस को पढ़ चुकने के पीछे उपदेशी भजन पढ़कर जिनवाणी की स्तुति पढ़ो।

इति श्रीजैनबाल गुटका दूसरा भाग सम्पूर्णम्।